## मनुपादानुक्रमणी

सम्पादक---

डाक्टर भगवान्दास श्री राजाराम शास्त्री

प्रकाशक----

ज्ञानमण्डल, काशी।

प्रथम संस्करण ]

संवत् १९९०

[ मूल्य ॥)

प्रकाशक---श्रीमुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमण्डल, काशी।

> मुद्रक— श्री मा. वि. पराङ्कर ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी।

### प्रकाशकका वक्तृव्यू

आदिस्मृति मनुस्मृतिके वाक्योंके ठीक पतेकी अयौर अधिक अंकोंकी आवश्यकता बहुधा पड़ती है। शिकोंके पहिले पादकी अनुक्रमणी तो छपी है, पर चारो पादोंकी नहीं। हमारी आकांक्षा थी कि शब्दोंकी अनुक्रमणी बना लेते, पर अभी यह सम्भव नहीं हुआ। इस कारण केवल पादोंकी अनुक्रमणी हम प्रकाशित कर रहे हैं। काशी विद्यापीठके भूतपूर्व छात्र तथा अध्यापक श्री राजाराम शास्त्रीके द्वारा यह बनवायी गयी है।

कुछ समयसे यह तैयार रही। हम आशा कर रहे थे कि श्री भगवान्दास जी, जिनकी ही प्रेरणा और सहायतासे यह लिखी गयी, इसकी भूमिकाके रूपमें मनुस्मृतिका सार हिन्दी भाषियोंके उपयोगके लिये लिख सकेंगे। पर अन्य कार्योंमं व्यय रहनेसे वे अभी उसे पूरा नहीं कर सके। अब इसके प्रकाशनमें अधिक विलम्ब करना उचित नहीं समझा गया। हम आशा करते हैं कि श्री भगवान् दास जीकी भूमिका हमें शीघ्र मिल जायगी। तैयार हो जानेपर वह अलगमे प्रकाशित कर दी जायगी।

हमें पूरी आशा है कि इस अनुक्रमणीसे संस्कृतके विद्वान् समुचित लाभ उठावेंगे और मनुस्मृतिमें कही बातोंका पता बिना प्रयास लगानेमें सहायता पावेंगे।

मकाशक

# ॐ मनुपादानुऋमणी।

| पाद                      | अ०       | <u>স্থ</u> ী ০ | पाद                      | अ० | श्हो० |
|--------------------------|----------|----------------|--------------------------|----|-------|
| শ্ব                      |          |                | अक्रोधनाः शौचपराः        | 3  | १९२   |
| अंशं श्रुद्रासुतो हरेत्  | ९        | 949            | अक्लेदोन दारीरस्य        | 8  | Ę     |
| " "                      | <b>ዓ</b> | १५३            | अक्षतो ब्राह्मणो व्रजेत् | 6  | 328   |
| अंशमंशं यवीयांसः         | 9        | 330            | अक्षभक्के च यानस्य       | 6  | २९३   |
| अकन्येति तु यः कन्याम्   | 4        | २२५            | अक्षमाला वसिष्टेन        | ۹, | २३    |
| अकामः स्वयमर्जितम्       | <b>ς</b> | २०९            | अक्षयायोपकल्पते          | Ę  | २०२   |
| अकामतः कृतं पापम्        | 99       | ४६             | अक्षरं दुष्करं ज्ञेयम्   | 2  | 68    |
| अकामतः कृते पापे         | 99       | 84             | अक्षारलवर्ण चैव          | Ę  | २५७   |
| अकामतस्तु राजन्यम्       | 33       | १२७            | अक्षारलवणं मितम्         | 11 | 909   |
| अकामस्य किया काचित्      | 7        | ષ્ઠ            | अक्षारलवणाद्धाः स्युः    | Ŋ  | ७३    |
| अकामोपइतं नित्यम्        | १२       | ८९             | अक्षिण्वन्यासधारिणम्     | ٤  | १९६   |
| अकारं चाप्युकारं च       | <b>ર</b> | ७ ६            | अक्षिण्वन्योगतस्तनुम्    | २  | 900   |
| अकारणपरित्यक्ता          | Ę        | 340            | अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टम् | 80 | 99    |
| अकारश्चास्य नाम्नोऽन्ते  | 3        | 824            | अगम्यागमनीयं तु          | 99 | १६९   |
| अकार्यमन्यस्कुर्याद्वा   | 3 3      | ९६             | अगस्त्यो ह्याचरत्पुरा    | પ્ | २२    |
| अकाले काल एव वा          | <b>y</b> | १६४            | अगारदाही गरदः            | ¥  | 946   |
| अकाले क्रयचिकयी          | 6        | 800            | अगारमुपसंव्रजेत्         | ६  | ५१    |
| अकुर्वन्विहतं कर्म       | 33       | 88             | अगारादभिनिष्कान्तः       | ६  | 88    |
| अकृतं च कृतात्क्षेत्रात् | 30       | 118            | अगुप्तमङ्गसर्वस्वैः      | 6  | ३७४   |
| अकृतः स तु विज्ञेयः      | 6        | १९९            | अगुप्ते क्षत्रियावैश्ये  | 4  | ३८५   |
| अकृतान्नं तु शल्यकः      | 9 2      | ६५             | अभि वाहारयेदेनम्         | 6  | 998   |
| अकृतान्मनुरव्यवीत्       | 6        | १६८            | अग्निदग्धानप्तिदग्धान्   | ३  | 999   |
| अकृता वा कृता वापि       | ٩        | १३६            | अग्निदान्भक्तदांश्चैव    | ९  | २७८   |
| अकृत्वा कुरुसंततिम्      | 4        | 949            | अग्निना चोपचूलनम्        | 33 | १९९   |
| अकृत्वा भैक्षचरणम्       | ₹        | \$20           | अग्निना दम्धमेव वा       | 4  | 968   |
| अक्रव्यादान्वत्सतरीम्    | 99       | १३७            | अग्निपकाशनो वा स्यात्    | Ę  | 30    |
| अकोधना न्सुप्रसादान्     | ર        | २१३            | अग्निवर्णां सुरां पिबेत् | 33 | ९0    |
|                          |          |                |                          |    |       |

| पाद                          | अ०       | श्लो॰ | पाद                           | अ०                    | श्लो० |
|------------------------------|----------|-------|-------------------------------|-----------------------|-------|
| अग्निवायुरविभ्यस्तु          | 9        | २ ३   | अचक्षुर्विपयं दुर्गम्         | 8                     | 99    |
| अग्निष्टोमादिकान्मखान्       | २        | १४३   | अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य         | 3                     | ર     |
| अग्निष्वात्तांश्च सोम्यांश्च | 3        | १९९   | अचिरात्तं दुरात्मानम्         | 6                     | 808   |
| अग्निष्वात्ताश्च देवानाम्    | ३        | १९५   | अचिरेणैव सीदति                | 9                     | १३४   |
| अग्निहोत्रं च जुहुयात्       | 8        | २५    | अच्छलेनैव चान्विच्छेत्        | 6                     | 860   |
| अग्निहोत्रं यथाविधि          | ξ        | ९     | अजडश्चेदपोगण्डः               | 6                     | 986   |
| अग्निहोत्रं सभादाय 🧪         | ६        | 8     | अजमेपावनड्वाहम्               | 3 3                   | १३६   |
| अग्निहोत्रपरायणः             | ૪        | 30    | अजाविकं तु विषमम्             | ९                     | 999   |
| अक्षिहोत्रमुपासते            | 99       | ४२    | अजाविकं सैकशफम्               | ९                     | 999   |
| अग्निहोत्र्यपविध्यामीन्      | 33       | 83    | अजाविकबधस्तथा                 | 33                    | ६८    |
| अम्रीनात्मनि वैतानान्        | ६        | २५    | अजाविके तु संरुद्धे           | 6                     | २३५   |
| अझीन्धनं भेक्षचर्याम्        | <b>ર</b> | 306   | अजिह्मस्यागठस्य च             | 3                     | २४६   |
| अग्नेः सोमयमाभ्यां च         | ર        | 233   | अजिह्यामशठां शुद्धाम्         | 8                     | 99    |
| अक्षेः सोमस्य चेवादी         | રૂ       | 64    | अजीगर्नः सुतं हन्तुम्         | 90                    | 904   |
| अप्नेश्च वरुणस्य च           | ø        | 8     | अजीवंस्तु यथोक्तेन            | 90                    | ८१    |
| अम्रौ कुर्यादनुज्ञातः        | ३        | २१०   | अजीवन्हर्महेति                | 99                    | 96    |
| अम्रौ प्रास्ताहुतिः सम्यक्   | 3        | ७ ६   | अज्ञं हि बालमित्याहुः         | २                     | १५३   |
| अस्यभावे तु विप्रस्य         | ३        | २१२   | अज्ञातं चैव सूनास्थम्         | 99                    | १५५   |
| अझ्यगारे गवां गांष्टे        | ક        | 46    | अज्ञातभुक्तशुःखर्थम्          | Ŋ                     | २१    |
| अग्न्याधेयं पाकयज्ञान्       | २        | १४३   | अज्ञातांश्च मृगद्विजान्       | ų                     | 90    |
| अन्याधेयस्य दक्षिणाम्        | 99       | ३८    | अज्ञानभुक्तं तृत्तार्यं       | 33                    | 980   |
| अग्रं राजन्य उच्यते          | 99       | ८३    | अज्ञानाच प्रमादाच             | <b>9</b> <del>2</del> | 303   |
| अग्रतो विकिरन्भुवि           | 3        | २४४   | अज्ञानात्क्षेत्रिकस्य तु      | 6                     | २४३   |
| अग्रानीकेषु योजयेत           | ૭        | १९३   | अज्ञानात्प्राश्य विण्मृत्रम्  | 3 3                   | 940   |
| अध्याः सर्वेषु वेदेषु        | 3        | 888   | अज्ञानाद द्विशतो द्मः         | 6                     | २६४   |
| अप्रयो मध्यो जघन्यश्च        | 92       | ३०    | अज्ञानाद् हे शते पूर्णे       | 6                     | १२१   |
| अघं स केवलं भुङ्को           | ર        | 996   | अज्ञानाहालभावाच               | 6                     | 396   |
| अङ्गावपीडनायां च             | 4        | २८७   | अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्      | 99                    | २३२   |
| अङ्गुलीर्प्रनिथभेदस्य        | ९        | २७७   | अज्ञानाद्वारुणीं पीत्वा       | 3 3                   | 386   |
| अङ्गुल्योरेव वा छेदम्        | C        | ३७०   | अज्ञेभ्यो प्रन्थिनः श्रेष्ठाः | 92                    | १०३   |
| अङ्गुष्टमूलस्य तले           | <b>ર</b> | ५९    | अज्ञो भवति वै बालः            | <b>ર</b>              | १५३   |
|                              |          |       |                               |                       |       |

#### मनुपादानुकमखी।

| पाद                          | अ०        | श्लो॰ | पाद                      | अ० | श्लो॰       |
|------------------------------|-----------|-------|--------------------------|----|-------------|
| अज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ         | ક         | 998   | अतिप्रसिक्तं चैतेषाम्    | 8  | a ई         |
| अज्येष्ठवृत्तिर्यस्तु स्यात् | ९         | 390   | अतिवादांस्तितिक्षेत      | Ę  | 80          |
| अ गीयांसमणोरपि               | <b>१२</b> | १२२   | अतीतानां च सर्वेषाम्     | •  | 306         |
| अण्डजाः पक्षिणः सर्पाः       | 9         | 88    | अतीते कार्यशेषज्ञः       | •  | 309         |
| अण्ड्यो मात्रा विनाशिन्यः    | 9         | २७    | अतीते क्षपणं स्मृतम्     | 4  | 99          |
| अतः परं प्रवक्ष्यामि         | ٩         | ५६    | अतुष्टिकरमेव च           | 8  | २१७         |
| <b>,,</b>                    | 90        | 939   | अतैजसानि पात्राणि        | Ę  | ५३          |
| अतः स्वल्पीयसि द्रव्ये       | 99        | 6     | अतोऽन्यतममास्थाय         | 33 | ८६          |
| अत अर्ध्वं तु छन्दांसि       | 8         | 96    | अतोऽन्यतमया वृत्या       | 8  | १३          |
| अत अर्ध्व त्रयोऽप्येते       | <b>ર</b>  | ३९    | अतोन्यथा तु प्रहरन्      | 6  | ₹00         |
| अत ऊर्ध्व प्रवक्ष्यामि       | 6         | २१४   | अतोऽन्यथा प्रवृत्तिस्तु  | ų  | <b>ર</b> ૧  |
| "                            | 6         | २१८   | अतोऽन्यथा वर्त्तमानः     | 6  | ३९७         |
| <b>?</b> >                   | 6         | २६६   | अतो यदन्यद्विश्रयुः      | 6  | 30          |
| "                            | ૮         | २७८   | अतोऽर्थान प्रमाचन्ति     | 7  | २१३         |
| <b>&gt;&gt;</b>              | 33        | 96    | अन्युच्छ्तिं तथात्मानम्  | ø  | 300         |
| अन ऊर्ध्वं रहस्यानाम्        | 99        | २४७   | अखुष्णं सर्वमन्नं स्यात् | રૂ | २३६         |
| अत ऊर्ध्वं सक्रुख्यः स्यात   | ्ष        | 969   | अत्र गाथा वायुगीताः      | ९  | ४२          |
| अतपास्त्वनर्घायानः           | 8         | 360   | अत्रेव पश्चवो हिंस्याः   | ષ  | 83          |
| अतस्तु विपरीतस्य             | હ         | ३४    | अथ पुत्रस्य पौत्रेण      | ٩, | १३७         |
| अतिकृच्छ्रं चरन्द्रिजः       | 3 3       | २१३   | अथ मूलमनाहार्यम्         | G  | २०३         |
| अतिकृच्छ्रं निपातने          | 3 3       | २०८   | अथवा स्याच्छिखाजटः       | २  | २१९         |
| अतिक्रमं व्रतस्याहुः         | 33        | १२०   | अथो वा राजतान्वितैः      | ३  | २०२         |
| अतिकान्ते दशाहे च            | ષ્        | ७६    | अदण्ड्यान्दण्डयन् राजा   | 6  | 376         |
| अतिकामन्देशकालौ              | ૮         | १५६   | अदण्ड्यो मुच्यते राज्ञा  | C  | २०२         |
| अतिकामेत्रमत्तं या           | ९         | 96    | अदत्तानामुपादानम्        | 38 | <b>v</b>    |
| अतिथि चाननुज्ञाप्य           | 8         | 122   | अदत्तान्युपभुञ्जानः      | 8  | २०२         |
| अतिथि पूर्वमाशयेत्           | Ę         | ९४    | अदस्वा तु य एतेभ्यः      | ₹  | 334         |
| अतिथिं यस भोजयेत्            | Ę         | १०६   | अदर्शयन्स तं तस्य        | 6  | 946         |
| अतिथिभ्योऽप्र एवैतान्        | ą         | 338   | अदर्शियत्वा तन्नैव       | 4  | <b>૧</b> ૫૫ |
| अतिथिर्बाह्मणः स्मृतः        | રૂ        | १०२   | अदातरि पुनर्दाता         | 6  | 9 5 9       |
| अतिथिस्विन्द्रलोकेशः         | 8         | १८२   | अदासं दासजीवनम्          | 30 | ३२          |

| पाद                          | अ०       | श्लो० | पाद   | अ०       | श्लो०        |
|------------------------------|----------|-------|---|----------|--------------|
| <b>अ</b> दित्सस्त्यागमहति    | 90       | ११३   | अधर्मणार्थसिद्धर्थम्                        | 6        | 80           |
| अदीयमाना भर्तारम्            | ९        | ९१    | अधर्मदण्डनं लोके                            | 6        | 920          |
| अदृषितानां द्रव्याणाम्       | ٩        | २८६   | अधर्मनियमाय च                               | 6        | <b>9</b> २ २ |
| अदृष्टमद्भिर्निणिक्तम्       | ų        | 320   | अधर्मप्रभवं चैव                             | Ę        | ६४           |
| अदेश्यं यश्च दिशति           | 4        | ५३    | अधर्मादपि षड्भागः                           | 6        | ३०४          |
| अदैवं भोजयेच्छ्राद्धम्       | Ę        | २४७   | अधर्मेण च यः प्राह                          | <b>ર</b> | 333          |
| अद्भिः खानि च संस्पृशेत्     | २        | ५३    | अधर्मेणैधते तावत्                           | 8        | 908          |
| अद्भिः प्रक्षालनं प्रोक्तम्  | 99       | १९९   | अधर्मो नृपतेर्दष्टः                         | ९        | २४९          |
| अद्भिः प्राणानुपस्पृशेत्     | ક        | १४३   | अधर्मो विद्यते सुवि                         | 6        | १८६          |
| अद्भिः शौचं विधीयते          | 4        | 338   | अधस्तान्नोपद्ध्याच                          | 8        | ५४           |
| अक्रिरेव द्विजाग्र्याणाम्    | Ą        | 34    | अधार्मिकं तस्करं च                          | 8        | १३३          |
| अद्भिरेव विशुखित             | Ŋ        | 992   | अधार्मिकं त्रिभिन्यीयैः                     | 6        | ३१०          |
| अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति    | ч,       | १०९   | अधार्मिकाणां पापानाम्                       | 8        | 303          |
| अद्भिर्मूलफलेन वा            | રૂ       | २६७   | अधार्मिको नरो यो हि                         | ß        | 300          |
| "                            | 8        | २९    | अधिकं वापि विद्येत                          | 33       | •            |
| अद्भिस्तीर्थेन धर्मवित्      | <b>ર</b> | ६३    | अधिगच्छेद्यदि स्वयम्                        | ९        | 68           |
| अद्भिस्तु प्रोक्षणं शौचम्    | 4        | 996   | अधितिष्ठे <b>न्न</b> केशा <del>ंस्</del> तु | 8        | 96           |
| अद्भ्यो गन्धगुणा भूमिः       | 9        | ७८    | अधियज्ञं ब्रह्म जपेत्                       | ६        | ८३           |
| अद्भ्योऽग्निर्वहातः क्षत्रम् | g        | ३२१   | अधिविका तु या नारी                          | ९        | ८३           |
| <b>अद्याच</b> ैतदकुत्सयन्    | ₹        | ५४    | अधीत्य चानुवर्तन्ते                         | ६        | ९३           |
| अद्यात्काकः पुरोडाशम्        | હ        | २१    | अधीत्य विधिवद्वेदान्                        | ६        | ३६           |
| अद्यात्सम्यक्सुतार्थिनी      | 8        | २६२   | <b>अधीयानादवा</b> मुयात्                    | २        | 99E          |
| अद्यानामोदनस्य च             | 6        | ३२९   | अधीयानो विवर्जयेत्                          | 8        | 303          |
| अद्यान्मच्चैर्विषापहैः       | છ        | २१७   | अधीयीरंस्त्रयो वर्णाः                       | 90       | 3            |
| अद्रोहेण च भूतानाम्          | ૪        | 188   | अधीष्व भो इति ब्रुयात्                      | ₹        | ७३           |
| अद्रोहेणैव भूतानाम्          | ૪        | २     | अधैयं च मलावहम्                             | 3 3      | 90           |
| अद्वारेण च नातीयात्          | 8        | ७३    | अधोद्दष्टिनैप्कृतिकः                        | 8        | १९६          |
| अधःशय्यां गुरोहितम्          | 3        | २०४   | अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्                  | ø        | 68           |
| <b>अधम</b> र्णाद्विभावितम्   | 6        | 80    | अध्यप्न्यध्यावाह निकम्                      | ٩.       | १९४          |
| अधमानधमांस्यजेत्             | 8        | २४४   | अध्यात्मरतिरासीनः                           | ६        | ४९           |
| अधमा मध्यमाप्रया च           | 92       | 83    | अध्यापनं च कुर्वाणः                         | 8        | 303          |

| पाद                     | अ०        | श्लो०        | पाद                            | अ०       | ঞ্চী০ |
|-------------------------|-----------|--------------|--------------------------------|----------|-------|
| अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः    | Ą         | 90           | अनभ्यासेन वेदानाम्             | 4        | 8     |
| अध्यापनं याजनं च        | 30        | 99           | अनयैवावृता कार्यम्             | ર્       | २४८   |
| अध्यापनमध्ययनम्         | 9         | 22           | अनर्चितं वृथामांसम्            | 8        | २१३   |
| <b>,, ,,</b>            | 30        | رجه وي       | अनर्हान्मनुरववीत्              | ર્       | 940   |
| अध्यापयन्गुरुसुतः       | २         | २०८          | अनलप्रभवं सृगुम्               | ч        | 3     |
| अध्यापयामास पितृन्      | <b>ર</b>  | 949          | अनवासं यदासुयात्               | ዓ        | २०९   |
| अध्यायज्ञाः प्रचक्षते   | 8         | १०२          | अनस्थ्नां चैव हिंसायाम्        | 39       | 383   |
| अध्येतव्यं प्रयत्नतः    | 3         | १०३          | अनाख्याय प्रयछति               | 4        | २२४   |
| अध्येष्यमाणं तु गुरुः   | 7         | ७३           | अनाख्यायोपपादयेत्              | <b>९</b> | ७३    |
| अध्येष्यमाणस्त्वाचान्तः | २         | 90           | अनातुरः सप्तरात्रम्            | २        | 960   |
| अध्वगं सर्ववेदसम्       | 3 3       | 9            | अनातुरः स्वानि खानि            | ક        | 188   |
| अनंशौ क्षीबपतितौ        | ٩         | २०१          | अनाचरक्रकार्याणि               | 90       | ९८    |
| अनिधरनिकेतः स्यात्      | ६         | ४३           | अनाधतास्तु यस्यैते             | <b>ર</b> | २३४   |
| अनिभरिनकेतः स्यात्      | Ę         | २५           | अनादेयं नाददीत                 | 6        | 900   |
| अनडुदः श्रियं पुष्टाम्  | 8         | २३१          | अनादेयस्य चादानात्             | 4        | 909   |
| अनदन्नम्रमह्येव         | ч         | १०२          | अनाम्नातेषु धर्मेषु            | 12       | 306   |
| अनधीत्य द्विजो वेदान्   | દ્        | ३ ७          | अनारोग्यमनायुष्यम्             | २        | थु७   |
| अनध्यायमहर्निशम्        | 8         | 3 <b>२</b> ६ | अनार्य इति निश्चयः             | 90       | ५८    |
| अनध्यायवषट्कृतम्        | 2         | १०६          | अनार्यता निष्ठुरता             | 30       | 46    |
| अनध्यायानृताविप         | 8         | 904          | अनार्यमार्यकर्माणम्            | 90       | ७३    |
| अनध्यायो रुद्यमाने      | 8         | 308          | अनार्यानार्यस्टि <b>ङ्गिनः</b> | ٩        | २६०   |
| अनध्यायौ प्रयव्नतः      | 8         | १२७          | अनार्यायां समुख <b>न्नः</b>    | 9 0      | ६६    |
| अनन्तं वेदपारगे         | <b>(9</b> | 64           | अनाविष्कृतपापांस्तु            | 99       | २२६   |
| अनन्तं सुखमश्नुते       | 8         | १४९          | अनाहिताझिता स्तेयम्            | 99       | ६५    |
| अनन्तरः सपिण्डाद्यः     | ٩         | 960          | अनाहिताग्निर्भवति              | 33       | ३८    |
| अनन्तरमरिं विद्यात्     | •         | 346          | अनिक्षेप्तारमेव च              | 4        | 980   |
| अनन्तरासु जातानाम्      | 30        | <b>9</b>     | अनिच्छतः प्राभवत्यात्          | 6        | ४१२   |
| अनपत्यस्य पुत्रस्य      | ९         | २१७          | अनित्यं हि स्थितो यस्मात्      | ₹        | 902   |
| अनपाकृत्य मोक्षं तु     | ६         | <b>३</b> ५   | अनित्यो विजयो यसात्            | 9        | १९९   |
| अनपेक्षितमर्यादम्       | 4         | ३०९          | अनिधायैव तद्रव्यम्             | ų        | १४३   |
| अनभ्यर्च्य पितृन्देवान् | ч         | ५२           | अनिन्दितैः स्नीविवाहैः         | Ę        | ४२    |

|                          |          | 2 <del>-</del> | re-sr                  | 27.0     | .هـ      |
|--------------------------|----------|----------------|------------------------|----------|----------|
| पाद                      | अ०       | श्लो०          | पाद                    | अ०       | स्रो०    |
| अनिन्द्या भवति प्रजा     | 3        | ४२             | अनुव्रज्या च शुश्रूषा  | ₹<br>-   | २४१      |
| अनिपाते त्वनाशिनौ        | ૮        | १८५            | अनुव्रज्यामुपासनम्     | 3        | 900      |
| अनियुक्तासुतश्चैव        | ९        | १४३            | अनुष्ट्रांश्चेकतोदतः   | ų        | 36       |
| अनिर्देशं च प्रेतासम्    | 8        | २१७            | अनुष्णाभिरफेनाभिः      | ₹        | ६९       |
| अनिर्दशाया गोः क्षीरम्   | ખ        | 6              | अन्चाने तथा गुरौ       | ષ્યુ     | ८२       |
| अनिद्ञाहां गां सृताम्    | ૮        | २४२            | अन्पे नौद्विपेस्तथा    | ঙ        | १९२      |
| अनिर्दिष्टांश्चेकशफान्   | ч        | 3 3            | अनृचां यत्र भुञ्जते    | ३        | १३१      |
| अनिर्वृतं नियोगार्थं     | ९        | ६१             | अनृतं च समुत्कर्पे     | 33       | ષષ       |
| अनिवार्यं च शक्तितः      | 33       | ३३             | अनृतं तु वदन्दण्ड्यः   | 6        | ३६       |
| अनिष्टं चाप्यनिष्टेषु    | ૭        | १३             | अनृतस्येनसस्तस्य       | 6        | 904      |
| अनिष्ट्वा चैव यज्ञेश्च   | ६        | ३७             | अनृतावृतुकाले च        | Ŋ        | १५३      |
| अनीशास्ते हि जीवतोः      | ९        | 308            | अनृतौ चाभ्रदर्शने      | 8        | 808      |
| अनीहमानाः सततम्          | 8        | २२             | अनेकानि सहस्राणि       | ų        | १५९      |
| अनुकल्पस्त्वयं ज्ञेयः    | ર        | 380            | अनेन क्रमयोगेन         | <b>ર</b> | १६४      |
| अनुक्तिप्कृतीनां तु      | 99       | २०९            | ,, <u>,,</u>           | ६        | ८५       |
| (अ) नुगच्छेद्गाः समाहितः | 3 3      | २५७            | अनेन तु विधानेन        | ٩        | 926      |
| अनुगम्येच्छया प्रेतम्    | ø.       | १०३            | अनेन नारीवृत्तेन       | ų        | 9 & &    |
| अनुज्ञातस्तनो द्विजैः    | ર        | २५३            | अनेन विधिना नित्यम्    | 4        | १६९      |
| अनुतिष्ठन्समाहितः        | ξ        | ९४             | अनेन विधिना यस्तु      | 33       | 994      |
| अनुतिष्ठन्हि मानवः       | 3        | ९              | अनेन विधिना सर्वान्    | ξ        | ८१       |
| अनुत्पाद्य तथा सुतान्    | ६        | ३७             | अनेन विधिना राजा       | 6        | ३५३      |
| अनुद्वेगकरा नृणाम्       | <b>ર</b> | ४७             | अनेन विधियोगेन         | 6        | २११      |
| अनुपन्नन्पितृद्रव्यम्    | ९        | २०८            | अनेन विष्रो वृत्तेन    | 8        | २६०      |
| अनुपाकृतमांसानि          | ષ        | ঙ              | अन्तःपुरप्रचारं च      | હ        | १५३      |
| अनुबन्धं परिज्ञाय        | 6        | १२६            | अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते | 3        | ४९       |
| अनुभावी तु यः कश्चित्    | 4        | ६९             | अन्ततश्च समेत्युचा     | 3 3      | 119      |
| अनुमन्ता विशसिता         | ५        | બ ૧            | अन्तरप्रभवाणां च       | 9        | २        |
| अनुरक्तं स्थिरारम्मम्    | 9        | २०९            | अन्तरागमने विद्यात्    | ક        | <b>9</b> |
| अनुरक्तः शुचिद्धाः       | હ        | ६४             | अन्तरिक्षगतांश्चैव     | ø        | २९       |
| अनुरागापरागी च           | હ        | १५४            | अन्तरैव विनश्यति       | 90       | 9        |
| अनुरुन्ध्याद्घं ध्यहम्   | 4        | ६३             | अन्तर्गतशवे ग्रामे     | 8        | 308      |
|                          |          |                |                        |          |          |

| पाद                        | अ०  | श्लो०      | पाद                     | अ०  | श्लो० |
|----------------------------|-----|------------|-------------------------|-----|-------|
| अन्तर्दशाहे स्यातां चेत्   | ખ   | ७९         | अन्यां चेहरायित्वान्या  | 6   | २०४   |
| अन्तर्भवन्ति क्रमशः        | 97  | 60         | अन्यांश्च वनचारिणः      | 6   | २६०   |
| अन्तर्वेदमनि राख्यसृत्     | ٠   | २२३        | अन्यानपि प्रकुर्वीत     | 9   | ६०    |
| अन्तर्वेश्मन्यरण्ये वा     | 6   | ६९         | अन्ये कलियुगे नृणाम्    | 3   | ८५    |
| अन्त्यादपि परं धर्मम्      | २   | २३८        | अन्ये कृतयुगे धर्माः    | 3   | ८५    |
| अन्त्यानामन्त्ययोनयः       | 6   | ६८         | अन्येनेव च कारयेत्      | 6   | २०७   |
| अन्धः शत्रुकुलं गच्छेत्    | 6   | ९३         | अन्येपां चैवमादीनाम्    | C   | ३२९   |
| अन्धो जड्ः पीठसर्पी        | 6   | ३९४        | अन्येष्वपरिपूतेषु       | 6   | ३३०   |
| अन्धो मन्स्यानिवादनाति     | 4   | ९५         | अन्येष्वपि तु कालेषु    | ૭   | १८३   |
| अन्नं चैव यथाशक्ति         | રૂ  | ९९         | अन्योन्यगुणवैशेष्यात्   | ९   | २९६   |
| अन्नं वासस्तिलान्घृतम्     | B   | 966        | अन्योन्यच्यतिपकाश्च     | 30  | २५    |
| अन्नपानेन्धनादीनि          | 9   | 996        | अन्योन्यस्याब्यभीचारः   | ٩   | 303   |
| अन्नमद्यात समाहितः         | २   | ५३         | अन्वहं चाभिवादनम्       | २   | २१७   |
| अन्नमभ्युद्यतं च यत        | 8   | ÷ 80       | अन्वाधेयं च यहत्तम्     | ዓ   | १९५   |
| अन्नमश्च सर्वदा            | ખ   | १३८        | अन्वाहार्यं विदुर्बुधाः | ર   | १२३   |
| अञ्चमेव प्रयत्नतः          | ९   | ३३३        | अप एव ससर्जादी          | 3   | 6     |
| अन्नमेपां पराधीनम्         | 90  | 48         | अपः पश्यंस्तथैव गाः     | 8   | ४८    |
| असरोपं निवेदयेत्           | રૂ  | २५३        | अपः पुष्पं मणीन्दधि     | 8   | २५०   |
| असहर्तामयावित्वम्          | 3 3 | 49         | अपः शस्त्रं विषं मांसम् | 96  | 66    |
| अन्नहीनो दहेद्राष्ट्रम्    | 99  | 80         | अपः सुराभाजनस्थाः       | 33  | 380   |
| अक्रादे भ्रूणहा मार्ष्टि   | c   | ३१७        | अपकृष्टप्रसूतयः         | ९   | २४    |
| असाद्यजानां सत्वानाम्      | 3 3 | १४३        | अपण्यानां च विक्रयः     | 33  | ६२    |
| अन्नाद्येनासकृचेतान्       | ¥   | २३३        | अपत्यं दायमर्हति        | ९   | २०३   |
| अक्षाद्येनोदकेन वा         | ३   | ८२         | अपत्यं धर्मकार्याणि     | ٩   | २८    |
| अन्यं वापि तथाविधम्        | 6   | २७४        | अपत्यलोभाद्या तु स्त्री | પ્ય | १६१   |
| अन्यत्र कुरुते श्रमम्      | २   | १६८        | अपत्यस्य च विक्रयः      | 3 3 | ६१    |
| अन्यत्र पुत्राच्छिष्याद्वा | 8   | १६४        | अवत्यस्येव चापत्यम्     | ६   | २     |
| अन्यथा सन्सु भाषते         | 8   | २५५        | अपदिश्यापदेश्यं च       | 6   | 48    |
| अन्यदुत्पद्यते ध्रुवम्     | 12  | <b>1</b> & | अपदेशैश्च संन्यस्य      | 6   | 968   |
| अन्यदुसं जातमन्यत्         | ९   | 80         | अपपात्राश्च कर्तव्याः   | 90  | બ વ   |
| अन्यस्मिन्हि नियुक्षाना    | ዓ   | ६४         | अपराजितां वास्थाय       | ६   | 33    |

| पाद                      | अ          | श्लो        | पाद                      | अ०             | श्लो०          |
|--------------------------|------------|-------------|--------------------------|----------------|----------------|
| अपराह्यस्तथा दर्भाः      | ३          | २५५         | अपुण्यं लोकविद्विष्टम्   | <b>ર</b>       | ५७             |
| अपराह्नो विशिष्यते       | ३          | २७८         | अपुत्रस्य पितुई रेत्     | ९              | १३२            |
| अपरे क्षेत्रिणं विदुः    | ९          | ३२          | अपुत्रस्याखिलं धनम्      | ٩              | 333            |
| अपरे ब्रह्म शाश्वतम्     | १२         | 923         | अपुत्रायां मृतायां तु    | ९              | १३५            |
| अपविद्धः स उच्यते        | 9          | 909         | अपुत्रोऽनेन विधिना       | ९              | 120            |
| अपसन्यमग्नौ कृत्वा       | ર          | <b>२१</b> ४ | अपुष्पाः फलवन्तो ये      | 3              | ४७             |
| अपसब्यमतन्द्रिणा         | 3          | २७९         | अपूजितं तु तद्युक्तम्    | २              | પુપ્           |
| अपसब्येन हस्तेन          | ર          | 518         | अपेयश्च महोद्धिः         | ٩              | ३१४            |
| अपहत्य च निक्षेपम्       | 3 3        | 66          | अप्यकार्यशतं कृत्वा      | 33             | 90             |
| अपहत्य च विप्रस्वम्      | 3 2        | ६०          | अप्यूती स्नातको द्विजः   | 8              | १२८            |
| अपहत्य बलानरः            | <b>१</b> २ | ६८          | अप्रचोदित एव वा          | २              | १९१            |
| अपहत्य सुवर्ण नु         | 33         | २५०         | अप्रजायामतीतायाम्        | Q,             | १९६            |
| अपह्नवे तद्द्विगुणम्     | ۵          | १३९         | ",                       | ९              | 330            |
| अपह्नवेऽधमर्णस्य         | 6          | ५२          | अप्रज्ञातमलक्षणम्        | 9              | <b>u</b> g     |
| अपां समीपे नियतः         | २          | 808         | अप्रणोद्योऽतिथिः सायम्   | Ę              | 904            |
| अयां स्थानं च शाश्वतम्   | 9          | १३          | अप्रतक्यमिविज्ञेयम्      | 9              | ų              |
| अपाङ्कयो यावतः पाङ्कः    | यान् ३     | ३७६         | "                        | <sup>3</sup> २ | २९             |
| अपाङ्कदाने यो दातुः      | રૂ         | १६९         | अप्रतिष्ठं तु वार्धुषौ   | 3              | 360            |
| अपाङ्क्तेयान्द्रिजाधमान् | ३          | १६७         | अप्रत्यक्षं सभां गतः     | 6              | <b>વ</b> ષ્દ્ર |
| अपाङ्क्तेयेर्यदन्येश्च   | ą          | 900         | अप्रमोदात्पुनः पुंसः     | ą              | ६३             |
| अपाङ्क्तयानां विशोधनम्   | 9 9        | २००         | अप्रयत्नः सुखार्थेपु     | Ę              | २६             |
| अपाङ्कयोपहता पङ्किः      | ३          | \$ 5 P      | अप्रशस्तं तु कृत्वाप्सु  | 33             | २५५            |
| अपात्रीकरणं ज्ञेयम्      | 33         | ६९          | अप्राणिभिर्यक्तियते      | ९              | २२३            |
| अपामग्नेश्च संयोगात्     | ч          | 993         | अप्राप्तामपि तां तस्मै   | ٩,             | 66             |
| अपि चेत्स्युररकानि       | 30         | 60          | अप्रियेषु च दुष्कृतम्    | ६              | ७९             |
| अपित्र्य इति धारणा       | <b>९</b>   | २०५         | अप्रीतिकरमात्मनः         | १२             | २८             |
| अपां स्थानं च शाश्वतम्   | 3          | 93          | अप्सु चैनं निमज्जयेत्    | 6              | 118            |
| अपि दुष्कृतकर्मणः        | ક          | २४८         | अप्सु प्रवेश्य तं दण्डम् | ९              | २४४            |
| अपि नः स कुले जायात्     | ३          | २७४         | अप्सु प्रास्य विनष्टानि  | <b>ર</b>       | ६४             |
| अपि भूणहणं मासात्        | 99         | २४८         | अप्सु भूमिवदित्याहुः     | 6              | 900            |
| अपि यत्सुकरं कर्म        | •          | ५५          | अप्सु शुद्धबधेन वा       | 9              | २७९            |
|                          |            |             |                          | -              | • •            |

| पाद                      | अ०  | श्रो०                 | पाद                         | अ०  | श्हो •      |
|--------------------------|-----|-----------------------|-----------------------------|-----|-------------|
| अबलानां च रक्षणम्        | 6   | 902                   | अभियोक्ता दिशे देश्यम्      | ۵   | ५२          |
| अबान्धवं शवं चैव         | 90  | <b>પ્</b> ર <b>પ્</b> | अभियोक्ता न चेद् ब्रूयात्   | 6   | 46          |
| अबीजं पापरोगिणम्         | ९   | ७९                    | अभिवादं न जानते             | 2   | १२३         |
| अबीजकमपि क्षेत्रम्       | 90  | ७१                    | भभिवादनशी <b>लस्य</b>       | 7   | 929         |
| अबीजविक्रयी चैव          | g   | २९१                   | अभिवादयेद्वद्धांश्च         | 8   | 148         |
| अब्जमश्ममयं चैव          | ч   | 992                   | अभिवादात्परं विप्रः         | २   | <b>१२</b> २ |
| अब्जेषु चैव र सेषु       | 6   | 800                   | अभिवाद्य प्रसादयेत्         | 33  | २०४         |
| अब्दं हुत्वा घृतं द्विजः | 33  | २५६                   | अभिशस्तस्य षण्डस्य          | 8   | 533         |
| अञ्दर्भकं समाहितः        | 9 3 | 904                   | अभिशस्तांस्तु वर्जयेत्      | ₹   | 964         |
| अब्दार्धमिन्द्रमित्येतत् | 33  | २५५                   | अभिषद्य तु यः कन्याम्       | 6   | ३६७         |
| अब्दुर्गं वार्क्षमेव वा  | ø   | 90                    | अभीप्सितानामर्थानाम्        | 9   | २०४         |
| अब्देन स विशुद्धति       | 3 3 | १२३                   | अभीरुनविकारिणः              | 9   | १९०         |
| अबाह्यणः संप्रहणे        | 6   | ३५९                   | अभोज्यमञ्चं नात्तव्यम्      | 99  | १६०         |
| अबाह्मणादध्ययनम्         | २   | २४१                   | अभोज्यानां तु भुक्त्वान्नम् | 99  | १५२         |
| अबुवन्त्रिबुवन्वापि      | 6   | १३                    | अभ्यङ्गमञ्जनं चाक्ष्णोः     | २   | 308         |
| अभक्ष्याणि द्विजातीनाम्  | ч   | ų                     | अभ्यञ्जनं स्थापनं च         | 2   | 211         |
| अभयस्य हि यो दाता        | 6   | ३०३                   | अभ्यस्याब्दं पावमानीः       | 8 8 | २५७         |
| अभिगच्छंस्तु तिष्ठतः     | 2   | १९६                   | अभ्यस्येक्षियतेन्द्रियः     | 33  | ३०६         |
| अभिगम्य महर्षयः          | 3   | 3                     | अभ्याघातेषु मध्यस्थान्      | ९   | २७२         |
| अभिचारमहीनं च            | 3 3 | 999                   | अभ्यादध्युश्च काष्टानि      | 6   | ३७२         |
| अभिचारेषु सर्वेषु        | 9   | २९०                   | अभ्रातृकां प्रदास्यामि      | ९   | 320         |
| (अ) भिचारो मूलकर्म च     | 3 3 | ६३                    | अभ्रि कार्ष्णीयसीं दद्यात्  | 33  | १३३         |
| अभिजिद्दिश्वजिद्भ्यां वा | 33  | 98                    | अमत्या क्षपणं व्यहम्        | 8   | २२२         |
| अभिद्रोहेण कुर्वतः       | 6   | २७१                   | अमत्या च प्रमाप्य स्त्रीम्  | 33  | १३८         |
| अभिपूजितलाभांस्तु        | ६   | ५८                    | अमत्यैतानि षट् जम्ध्वा      | ч   | २०          |
| अभिपूजितलाभैश्र          | ६   | 46                    | अमित्रका तु कार्येयम्       | 3   | ६६          |
| अभिभाषेत कारणात्         | 6   | ३५५                   | अमात्याः प्राड्विवाको वा    | ९   | २३४         |
| अभिभाषेत धर्मवित्        | ₹   | १२८                   | अमात्यमुख्यं धर्मज्ञम्      | 9   | 181         |
| अभि भो रम्यतामिति        | ર   | २५१                   | अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थ-     | ø   | 340         |
| अभिमन्तारमीश्वरम्        | 3   | 18                    | अमाल्यान्सुपरीक्षितान्      | •   | ६०          |
| अभिमन्येत कहिंचित्       | 90  | <b>૧</b> ૫            | अमात्ये दण्ड आयत्तः         | 9   | ६५          |
| •                        |     |                       |                             |     |             |

|                          |          |          |                             |          | _          |
|--------------------------|----------|----------|-----------------------------|----------|------------|
| पाद                      | अ०       | श्लो०    | पाद                         | अ०       | स्रो०      |
| अमानुषीपु पुरुषः         | 99       | १७३      | अयुध्यमानस्योत्पाच          | 8        | १६७        |
| अमानुषेयु प्रथमः         | ९        | २८४      | अरक्षिता गृहे रुढाः         | ९        | 35         |
| अमाययैव वर्तेत           | •        | 808      | अरक्षितारं राजानम्          | 4        | ३०८        |
| अमावास्या गुरुं हन्ति    | ૪        | 338      | अरक्षितारमत्तारम्           | 8        | ३०९        |
| अमावास्याचतुर्देश्योः    | 8        | 993      | अर्ण्ये काष्ट्रवत्त्यक्त्वा | ų        | ६९         |
| अमावास्यामष्टमीं च       | ક        | 926      | अरण्ये निःशलाके वा          | 9        | 989        |
| अमितंरेजा महात्मभिः,     | 3        | 8        | अरण्ये वा त्रिरभ्यस्य       | 3 3      | २५८        |
| अमित्रादिप सद्वृत्तम्    | २        | २३९      | अराजके हि लोकेऽस्मिन्       | y        | ३          |
| अमुत्रार्थमुपार्जितम्    | ঙ        | ९५       | अराजन्यप्रमृतितः            | 8        | ८४         |
| अमृतं स्यादयाचितम्       | 8        | ч        | अरिराष्ट्रं प्रति प्रभुः    | 9        | 969        |
| अमृतःवाय कल्पते          | ६        | ६०       | अरिसेविनमेव च               | ૭        | 346        |
| अमृतस्येव चाकांक्षेत्    | <b>ર</b> | १६२      | अरीणां चोपजापकम्            | ९        | ३७५        |
| अमेध्यं चाशु शोधयेन्     | ૧        | २८२      | अरीन्योधयतामपि              | ৩        | 168        |
| अमेध्यङ्गणपाशी च         | १२       | ७१       | अरेरनन्तरं मित्रं           | 9        | 946        |
| अमेध्य प्रभवाणि च        | પ્       | ч        | अरोगः पृथिवीपतिः            | 9        | २२६        |
| अमेध्यलिसमन्यद्वा        | 8        | ५६       | अरोगाः सर्वसिद्धार्थाः      | 9        | ८३         |
| अमेध्याद्यि काञ्चनम्     | २        | २३९      | अगेगिःवमहिंसया              | 99       | بر ع       |
| अमेध्ये वा पतेन्मतः      | 99       | ९ ६      | अर्घसंस्थापनं नृपः          | 6        | ४०२        |
| अम्बद्यानां चिकित्सनम्   | 90       | ४७       | अर्चयेदाश्रमागतान्          | ६        | ø          |
| अम्बद्योग्री यथा समृती   | 90       | १३       | अर्च ये देवपूर्वकम्         | રૂ       | २०९        |
| अम्बद्धो नाम जायते       | 90       | 6        | अर्चिष्यन्देवतातिथीन्       | ૪        | २५१        |
| अम्भस्यवमप्त्रवेनेव      | 8        | 900      | अर्थ एवेह वा श्रेयः         | <b>ર</b> | २२४        |
| अम्मूलफलभिक्षाभिः        | ξ        | <b>9</b> | अर्थकामेप्वसक्तानाम्        | २        | १३         |
| अयं द्विजैहिं विद्वद्भिः | 9        | ६६       | अर्थशौचं परं स्मृतम्        | ų        | १०६        |
| अयःकांस्योपलानां च       | 33       | १६७      | अर्थसंपादनार्थं च           | 9        | १६८        |
| अयज्वनां तु यद्वित्तम्   | 99       | २०       | अर्थस्य संग्रहे चैनाम्      | ٩,       | 9 9        |
| अयज्वा च सहस्रगुः        | 99       | 18       | अर्थानर्थावुमौ बुद्धा       | 6        | २४         |
| अयमुक्तो विभागो वः       | ٩        | २२०      | अधिप्रत्यर्थिसंनिधौ         | 6        | <b>૭</b> ૧ |
| अयशो महदाप्रोति          | 6        | १२८      | अर्थेऽपव्ययमानं तु          | ۵        | ५१         |
| अयाज्ययाजनैश्चैव         | ર        | ६५       | अर्थ्युक्ताः साक्ष्यमहिन्ति | 6        | ६२         |
| अयुक्षु तु पितन्सर्वान्  | ર        | २७७      | अर्ध कोशे प्रवेशयेत्        | 6        | ३८         |
| ·                        |          |          |                             |          | •          |

| पाद                          | अ०       | श्लो०       | पाद                      | अ०       | श्हो०      |
|------------------------------|----------|-------------|--------------------------|----------|------------|
| <b>अ</b> र्थभाप्रक्षणाद्वाजा | C        | ३९          | अवकीणिव्रतं चरेत्        | २        | 200        |
| अर्धेन नारी तस्यां सः        | 3        | ३२          | अवकीणीं तु काणेन         | 3 3      | 996        |
| अर्धेन पुरुषोऽभवत्           | 3        | ३२          | अवगूर्य चरेत्कृच्छ्म्    | 99       | २०८        |
| अर्थमणामिति च तृचं           | 33       | 948         | अवगूर्य त्वब्दशतम्       | 99       | २०६        |
| अर्थाक् व्यव्दाद्धरेत्स्वामी | 4        | ३०          | अवजिघेच तान्पिण्डान्     | ક્       | २१८        |
| अर्वाक् संचयनादस्थ्नाम्      | مع       | ५९          | अत्रधृतमवक्षुतम्         | ч        | 320        |
| अहंणं तत् कुमारीणाम्         | ą        | ५४          | अबध्यानपि बाधते          | 33       | ३३         |
| अहंत्तमाय विप्राय            | ર        | १२८         | अवनिष्ठीवतो दर्पात्      | 4        | २८२        |
| अहंयेत् प्रथमं गवा           | ક્       | રૂ          | अवमन्ता विनश्यति         | २        | १६३        |
| अर्हयेन् मधुपर्केण           | ર        | 999         | अवमानस्य सर्वदा          | २        | १६२        |
| अर्हावभोजयन्विप्रो           | 6        | ३९२         | अवमूत्रयतो मेढ्म्        | 6        | २८२        |
| अलंकारं नाददीत               | <b>ዓ</b> | ९२          | अवरुद्याभिवाद्येत्       | २        | २०२        |
| अलंकारश्च वेश्म च            | ९        | १५०         | अवशर्घयतो गुदम्          | 4        | २८२        |
| अलंकारो धनो भवेन्            | ९        | २००         | अवशिष्टं तु दम्पती       | ३        | ११६        |
| अलंकृतश्च संपदयेन्           | 9        | २२ <b>२</b> | भवश्यं याति तिर्यक्वम्   | १२       | ६८         |
| अलंकृत्य शुचौ भूमौ           | uş       | ६८          | अवसीदन्नपि क्षुधा        | 8        | 360        |
| अलंकृत्य सुतादानम्           | २        | २८          | अवहार्यो भवेचेव          | C        | 196        |
| अरुब्धं चैव लिप्सेत          | ৩        | ९९          | अवहायौं भवेतां तो        | 6        | १४५        |
| अलब्धमिच्छेद्दण्डेन          | <b>e</b> | 909         | अवाक्शिरास्तमस्यन्धे     | 6        | <b>9</b> 8 |
| अलाबुं दारुपात्रं च          | દ્       | 48          | अवाङ्नरकमभ्येति          | 6        | ७५         |
| अऌाभे स्वन्यगेहानाम्         | 2        | 358         | अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना  | २        | १२८        |
| अलाभे न विषादी स्यात्        | ६        | ५७          | अवामोति परः परः          | 9        | २०         |
| अलिङ्गी लिङ्गिवेषेण          | 8        | २००         | अविद्यमाने सर्वस्वम्     | 3 3      | 998        |
| अल्पं वा बहु वा प्रेत्य      | હ        | ८६          | अविद्यानां तु सर्वेषाम्  | <b>લ</b> | २०५        |
| अर्ल्प वा बहु वा यस्य        | 2        | 388         | अविद्वांश्चेव विद्वांश्च | g        | ३१७        |
| अल्पद्रोहेण वा पुनः          | ß        | २           | अविद्वांसमलं लोके        | 2        | २१४        |
| अल्पानाभ्यवहारेण             | ६        | ५९          | अविद्वांसो नराधमाः       | 32       | ५२         |
| अल्पोनस्यापि कर्मणः          | 6        | २१७         | अविन्दंस्तस्वतः सत्यम्   | 6        | १०९        |
| अल्पोऽप्येवं महान्वापि       | ર        | ५३          | अविष्ठुतब्रह्मचर्यः      | ¥        | 7          |
| अवकारोपु चोक्षेषु            | Ŗ        | २०७         | अविरुद्धं प्रकल्पयेत्    | 6        | ४६         |
| अवकीर्णिवर्ज्यं शुध्यर्थम्   | 3 8      | 999         | अविशेषेण पार्थिवः        | 4        | १९२        |
|                              |          |             |                          |          |            |

| पाद                           | अ०  | श्लो० | पाद                         | क्ष०     | स्रो॰        |
|-------------------------------|-----|-------|-----------------------------|----------|--------------|
| अवीरायाश्च योषितः             | 8   | २१३   | अश्रोत्रियः पिता यस्य       | ३        | <b>93</b> &  |
| अवृत्तावेकरात्रिकम्           | ૪   | २२३   | अश्रोत्रिये त्वहः कृत्स्नम् | 4        | ८२           |
| अवृत्तिकर्षितः सीदन्          | 90  | 909   | अश्रोत्रियो वा पुत्रः स्यात | ( ३      | <b>9 3</b> & |
| अवृत्तिकर्शिता हि स्त्री      | ९   | ७४    | अश्रीलमेतत्साधूनाम्         | 8        | २०६          |
| अवेक्षेत गतीर्नुणाम्          | ६   | ६१    | अश्वश्चक्तवचं वासः          | ૪        | १८९          |
| अवेत्यचं जपेदब्दम्            | 33  | २५२   | अश्वस्तनविधानेन             | 99       | 9 ६          |
| अवेदयानो नष्टस्य              | 6   | ३२    | अश्वस्तनिक एव वा            | 8        | ঙ            |
| अवेद्यावेदनेन च               | 90  | २४    | अश्विसालोक्यमश्वदः          | 8        | २३१          |
| अब्यक्तं विषयात्मकम्          | 9 2 | २९    | अष्टकासु त्वहोरात्रम्       | 8        | 999          |
| अव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम्       | 9   | Ę     | अष्टादशसु मार्गेषु          | 6        | ३            |
| अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाष्ट्रीम् | 3   | 30    | <b>&gt;</b>                 | <b>Q</b> | २५०          |
| अञ्यासाश्चेदमेध्येन           | પ્  | 926   | अष्टानां लोकपालानाम्        | ų        | <b>९</b> ६   |
| अव्रणाः सौम्यदर्शनाः          | २   | ४७    | अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य     | 6        | ३३७          |
| अव्रतानाममन्त्राणाम्          | 32  | 118   | अष्टावष्टौ समश्रीयात्       | 99       | २१८          |
| अवतैर्यद् द्विजैर्भुक्तम्     | રૂ  | 900   | अष्टाविमान्समासेन           | ર        | २०           |
| अशक्तोऽधः शयीत वा             | 99  | २२४   | अष्टावेणस्य मांसेन          | 3        | २६ <b>९</b>  |
| अशक्कुवंस्तु शुश्रूषाम्       | 90  | ९९    | अष्टी ग्रासान्वने वसन्      | ६        | २८           |
| अशक्यं चाप्रमेयं च            | 9 २ | ९४    | अष्टौ चान्याः समाख्यात      | T: 9     | १५६          |
| अशासंस्तस्करान्यस्तु          | ९   | २५४   | अष्टौ मासान्यथादित्यः       | ९        | ३०५          |
| अशासित्वा तु तं राजा          | 6   | ३१६   | असृजन्भूरितेजसः             | 3        | ३६           |
| अशीतिभागं गृह्णीयात्          | 6   | 380   | असंस्कृतप्रमीतानाम्         | æ        | २४५          |
| अग्रुद्धा बान्धवाः सर्वे      | 4   | ५८    | असंस्कृतान्पशून्मन्त्रैः    | ų        | ३६           |
| अशुभैः केवलैश्चेव             | 9 3 | ९     | असकुद्गर्भवासेषु            | 92       | 96           |
| अशेषतोऽप्याददीत               | 6   | ३७    | असंख्या मूर्तयस्तस्य        | 92       | 914          |
| अशौचं बांघवैः सह              | 3 3 | १८३   | असंदितानां संदाता           | 6        | ३४२          |
| अश्नक्तियतस्ततः               | 33  | २६१   | असंपाठ्याविवाहिनः           | ९        | २३८          |
| अश्मकुद्दो भवेद्वापि          | Ę   | 90    | असंबद्धकृतश्चेव             | 6        | १६३          |
| अश्मनो छवणं चैव               | 30  | ६১    | असम्बद्धप्रलापश्च           | 92       | ६            |
| अशमनो लोहमुत्थितम्            | 9   | ३२१   | असम्बन्धा च योनितः          | २        | १२९          |
| अश्मनोऽस्थीनि गोबालान्        | 6   | २५०   | असंभाष्ये साक्षिभिश्च       | 6        | <b>५</b> ५   |
| अश्रेयान् श्रेयसीं जातिम्     | 30  | ६४    | असंभोज्या द्यसंयाज्याः      | ९        | २३८          |
|                               |     |       |                             |          |              |

| पाद                      | अ०  | श्लो० | पाद                           | अ०         | श्हो॰      |
|--------------------------|-----|-------|-------------------------------|------------|------------|
| असंश्रवे चैव गुरोः       | २   | २०३   | अस्थिमतां तु सत्वानाम्        | 3 3        | 380        |
| असगोत्रा च या पितुः      | ३   | ષ     | अस्थिसंचयनादृते               | <b>لغ</b>  | ६८         |
| असच्छास्त्राधिगमनम्      | 99  | ६५    | अस्थिस्यूणं स्नायुयुतम्       | ξ          | ७६         |
| असत्कार्यपरिग्रहः        | 32  | ३२    | अस्नेहाकं द्विजातिभिः         | ų          | २५         |
| भसत्पुत्रोऽपि वा भवेत्   | ९   | 148   | अस्पादप्रच्युतो विद्रः        | 9 2        | 998        |
| असत्यस्य च भाषणम्        | 33  | ६९    | असाद्धर्मान्न च्यवते          | G          | ९८         |
| असम्बिधावयं ज्ञेयः       | ų   | ७४    | अस्मिन्धर्मोऽखिलेनोक्तः       | 3          | 300        |
| असपिण्डं द्विजं प्रेतम्  | પ્  | 303   | अस्य निस्यमनुष्टानम्          | ø          | 900        |
| असपिण्डा च या मातुः      | ₹   | 4     | अस्य शास्त्रस्य धारणात्       | १२         | १२५        |
| असपिण्डेषु सर्वेषु       | Ŋ   | 900   | अस्य सर्वस्य श्रणुत           | १२         | ર          |
| असंभाष्ये साक्षिभिश्च    | 4   | પુષ   | अस्यां यो जायते पुत्रः        | ९          | 120        |
| असंभोज्या ह्यसंयाज्याः   | ९   | २३८   | अस्तं गमयति प्रेतान्          | ३          | २३०        |
| असमावर्तको द्विजः        | 9 9 | 340   | अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्याः | ९          | <b>ર</b>   |
| असमिध्य च पावकम्         | २   | 860   | अस्वर्ग्यं च परत्रापि         | G          | १२७        |
| असमीक्ष्य प्रणीतस्तु     | G   | 98    | अस्वर्यं चातिभोजनम्           | २          | ५७         |
| असम्यक्कारिणश्चैव        | 9   | २५९   | अस्वर्ग्या ह्याहुतिः सा स्या  | त्प        | 308        |
| असवर्णास्तु संपूज्याः    | २   | २१०   | अस्वस्थः सर्वमेतत्तु          | 9          | २२६        |
| असवर्णास्वय ज्ञेयः       | ર   | ४३    | अस्वामिना कृतो यस्तु          | 6          | १९९        |
| असाक्षिकेषु त्वर्थेषु    | 6   | १०९   | अहम्यहम्यवेक्षेत              | 6          | <b>४१९</b> |
| असावहमिति बुवन्          | 3   | २१६   | अहं प्रजाः सिस्ध्युस्तु       | 9          | 38         |
| असावहमिति ब्रुयात्       | २   | 130   | अहस्तत्रोदगयनम्               | 9          | ६७         |
| असिचर्मायुधैः स्थले      | ø   | १९२   | अहस्ताश्च सहस्तानाम्          | 4          | २९         |
| असिपत्रवनं चैव           | 8   | ९०    | अहार्ये ब्राह्मणद्रव्यम्      | 9          | १८९        |
| असिपत्रवनादीनि           | 9 = | ७५    | अहार्यैः परिचारकैः            | •          | २१७        |
| असुतास्तु पितुः पत्न्याः | ९   | १८६   | अहिंसया च भूतानाम्            | Ę          | ६०         |
| असूयकाय मां मा दाः       | ₹   | 118   | अहिंसयेन्द्रियासङ्गैः         | ६          | ૭૫         |
| असुजत्पूर्वमीश्वरः       | 9   | 38    | अहिंसयैव भूतानाम्             | ₹          | १५९        |
| असृजन्भूरितेजसः          | 3   | ३६    | अहिंसा गुरुसेवा च             | <b>9 २</b> | ८३         |
| असौ नामाहमसीति           | 3   | 922   | अहिंसामेव तां विद्यात्        | 4          | 88         |
| अस्तेयं मनुरब्रवीत्      | 6   | ३३९   | अहिंसां सत्यमकोधम्            | 33         | २२२        |
| अस्थिदन्तमयस्य च         | 4   | 9 2 9 | अहिंसा सत्यमस्तेयम्           | 30         | ६३         |
|                          |     |       |                               |            |            |

| पाद                        | अ०  | श्लो॰      | पाद                      | अ०       | श्लो० |
|----------------------------|-----|------------|--------------------------|----------|-------|
| अहिंस्रो दमदानाभ्याम्      | 8   | २४६        | आचशाणेन तत्स्तेयम्       | 6        | इ१४   |
| अडुतं च हुतं चैत्र         | રૂ  | ७३         | आ चतुर्विद्यातेर्विद्याः | ₹        | ३८    |
| अहोभिः सद्विगर्हितैः       | ર   | ४६         | आचम्य प्रयतो नित्यम्     | <b>ર</b> | २२२   |
| अहोरात्रं तु तावतः         | 9   | ६४         | ,, , <u>,</u>            | ч        | ८६    |
| अहोरात्रमुपासीरन्          | 99  | १८३        | आचम्य प्राङ्मुखः ग्रुचिः | २        | 49    |
| अहोरात्रे विभजते           | 3   | ६५         | आचम्येव तु निःस्नेहम्    | ų        | 67    |
| अहोरात्रं तु तावतः         | 9   | ६४         | आचम्योदक्परावृत्य        | ₹        | २३७   |
| अहा चैकेन राग्या च         | by. | ६४         | आचरन्विचरेदिह            | 8        | 96    |
| अह्ना राज्या च याञ्चन्तून् | ६   | ६९         | आचरेद्राह्मणः सह         | ₹        | 80    |
| <b>ऋ</b> ।                 |     |            | अःचरेद्यवमध्यमे          | 99       | २१७   |
| आकरान्कोशमेव च             | 6   | 836        | आचांतः ज्ञुचितामियात्    | ષ        | १४३   |
| आकारमिङ्गितं चेष्टाम्      | ø   | ६७         | अ।चान्तांश्चानुजानीयात्  | ર        | २५१   |
| आकार रिङ्गतैर्गत्या        | 4   | <b>२</b> ६ | आचामेत्प्रयतोऽपि सन्     | ч        | 884   |
| आकालिकमनध्यायम्            | ૪   | १०३        | आचामेदेव भुक्त्वान्नम्   | પ        | 188   |
| ,, <u>,,</u>               | 8   | 996        | आचारेण तु संयुक्तः       | 9        | 908   |
| अकाशं जायते तसात्          | 3   | ७५         | आचारं जगृहुः परम्        | 9        | 330   |
| आकाशमिव पङ्केन             | 90  | 308        | आचारः परमो धर्मः         | 9        | 308   |
| आकाशासु विकुर्वाणात्       | 9   | ७६         | आचारमधिकार्यं च          | <b>२</b> | ६९    |
| आकारोशास्तु विज्ञेयाः      | 8   | 358        | आचारश्चेव शाश्वतः        | 9        | 900   |
| आकीर्णा भिक्षुकेर्वान्यैः  | ६   | 49         | आचारश्रेव साध्नाम्       | २        | ६     |
| आकन्दे चाप्यपेहीति         | 4   | २९२        | आचारस्य च वर्जनात्       | 4        | 8     |
| आक्रुष्टः कुशकं वदेत्      | ६   | ১৪         | आचारहीनः क्षीवश्च        | Ę        | १६५   |
| आक्षारयञ्चतं दाप्यः        | 4   | २७५        | आचारादीप्सिताः प्रजाः    | 8        | १५६   |
| आक्षिकं संतिकं च यत्       | 6   | 949        | आचाराद्धनमक्षरयम्        | 8        | १५६   |
| अख्यातन्यं तु तत्तरमे      | 33  | 30         | आचाराद्विच्युतो विप्रः   | 4        | 909   |
| आख्यानानी तिहासांश्च       | 3   | २३२        | आचाराछभते ह्यायुः        | ક્ર      | १५६   |
| आगःसु ब्राह्मगस्यैव        | ९   | २४१        | आचारेण तु संयुक्तः       | ð        | १०९   |
| आगमं निर्गमं स्थानम्       | l   | 808        | आचारो हन्त्यलक्षणम्      | 8        | १५६   |
| आगमं वाप्यपां भिद्यात्     | ٩   | २८१        | आचार्यं स्वमुपाध्यायम्   | ч        | ९१    |
| आगमः कारणं तत्र            | ć   | २००        | आचार्यं च प्रवकारम्      | 8        | १६२   |
| आगारादभिनिष्कान्तः         | ξ   | នង         | आचार्यः शिष्य एव वा      | ९        | 160   |
|                            |     |            |                          |          |       |

| पाद                       | अ०           | श्ली०      | पाद                     | अ०  | स्रो० |
|---------------------------|--------------|------------|-------------------------|-----|-------|
| आचार्यपुत्रः ग्रुश्रूषुः  | ₹            | १०९        | आत्मानं च पशुं चैव      | 4   | ४२    |
| आचार्यश्च पिता चैव        | <b>ર</b>     | २२५        | आत्मानं चाशुचि द्विजः   | પ્ર | 370   |
| आचार्यस्त्वस्य यां जातिम् | <del>2</del> | 186        | आत्मानं चैकविंशकम्      | રૂ  | ३७    |
| आचार्यस्य च सर्वदा        | 2            | २२८        | आत्मानं ताश्च पीडयेत्   | ঙ   | १३९   |
| आचर्यस्य हितेषु च         | २            | 999        | आत्मानं शिर एव च        | 7   | ξo    |
| आचार्याणां शतं पिता       | <b>२</b>     | 184        | आत्मानं सततं रक्षेत्    | 9   | २१३   |
| आचार्ये तु खलु प्रेते     | २            | २४७        | आत्मानं स्वर्शयेखस्मै   | ९   | 300   |
| अाचार्ये संस्थिते सति     | ų            | ८०         | आत्मानमथ साक्षिणः *     | 6   | ४४    |
| आचार्यो बह्यमो मूर्तिः    | <b>ર</b>     | २२६        | अात्मानमात्मना यास्तु   | ۹,  | 35    |
| आचार्यो बह्य होकेशः       | 8            | १८२        | आत्मार्थं च क्रियारम्भो | 3 9 | ६४    |
| आच्छाद्य चार्चियत्वा च    | રૂ           | २७         | आत्मार्थमविचारयन्       | છ   | २१२   |
| आजीवनार्थं धर्मस्तु       | 30           | ७९         | आत्मा हि जनयत्येषाम्    | 33  | ६४    |
| आज्ञासिद्धानि चत्वारि     | 92           | 990        | आत्मैव देवताः सर्वाः    | 9 2 | 999   |
| आततायिनमायान्तम्          | 4            | ३५०        | आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी | 6   | 82    |
| आतिरेक्यं तु मिश्रकः      | 33           | ५०         | आत्रेयीमेव च ख्रियम्    | 3 9 | 60    |
| आतिष्ठत्यन नूयकः          | 90           | 126        | आददानः परक्षेत्रात्     | 6   | ३४१   |
| आतिष्टेय त्रमुत्तमम्      | ٩,           | २५२        | अ(ददानस्तु तल्लोभात्    | ९   | २४३   |
| "                         | ९            | ३३३        | अ(ददानो ददखेव           | 4   | २२३   |
| आतुरामभिशस्तां वा         | 33           | 992        | आददीत न शुद्रोऽपि       | ९   | ९८    |
| आत्मज्ञानं परं स्मृतम्    | 32           | ८५         | आददीत यतो ज्ञानम्       | २   | 330   |
| आत्मज्ञाने शमे च स्यात्   | 32           | ९२         | आददीताप्रयमग्रजः        | ९   | 118   |
| आत्मनः शुद्धिमिच्छता      | 33           | <b>३६०</b> | आददीताथ षड्भागम्        | G   | १३१   |
| आत्मनश्च परित्राणे        | 6            | ३४९        | ,, ,,                   | 4   | ३३    |
| आत्मनस्तुष्टिरेव च        | २            | ६          | आददीताममेवास्मात्       | 8   | २२३   |
| आत्मनस्त्यागिनां चैव      | ч            | ८९         | आददीतावरादपि            | २   | २३८   |
| आ मनेव सहायेन             | Ę            | ४९         | आदाननित्याचादातुः       | 99  | 94    |
| आत्मनो यदि वान्येषाम्     | 33           | 118        | आदानम प्रियकरम्         | ૭   | २०४   |
| आत्मनो मृत्तिमन्विच्छन्   | 8            | २५२        | आदावन्ते च सर्वदा       | 3   | ७४    |
| अत्मन्यग्नीन्समारोप्य     | Ę            | ३८         | आदावेव च रुर्युगम्      | 3   | ৩ গ্ন |
| आत्मन्यन्तद्धे भूयः       | 9            | 49         | आदिन्यमुपतिष्ठते        | ३   | ७६    |
| आत्मसंसिद्धये श्रुतीः     | ६            | २९         | आदित्याजायते वृष्टिः    | ₹   | ૭ દ્  |

| पाद                         | अ०  | श्लो॰      | पाद                       | अ०       | श्लो० |
|-----------------------------|-----|------------|---------------------------|----------|-------|
| आदिष्टी नोदकं कुर्यात्      | ų   | 46         | आपद्यपत्यप्राप्तिश्च      | 9        | १०३   |
| आदेयस्य च वर्जनात्          | 6   | 303        | आपचपि समाचरेत्            | ષ        | ४३    |
| आद्यं यत् ज्यक्षरं ब्रह्म   | 99  | २६५        | आपद्यपि हि कर्हिचित्      | <b>ર</b> | ४०    |
| आद्यन्ते द्युनिशोः सदा      | 8   | २५         | आपद्यपि हि घोरायाम्       | २        | 993   |
| आद्याद्यस्य गुणं त्वेषाम्   | 9   | २०         | आपद्यपि हि तिष्ठतोः       | રૂ       | 38    |
| आ द्वाविंशात्क्षत्रवन्धोः   | 7   | ३८         | आपचपि हि यस्तेषाम्        | ९        | ३३६   |
| आधि भुङ्कोऽविचक्षणः         | 4   | 940        | आपो नारा इति प्रोक्ताः    | 9        | 30    |
| आधिः सीमा बारूधनम्          | 4   | 186        | आपो नोत्मजायन्ति च        | 6        | 994   |
| आधिक्यं ध्रुवमात्मनः        | ૭   | १६९        | आपो रसगुणाः स्पृताः       | 9        | 96    |
| आधिदेविकसेत्र च             | ξ   | ८३         | आपो वै नरसूनवः            | 9        | 80    |
| आिश्चोपनिधिश्चोभौ           | 6   | 384        | आप्तः शक्तोऽर्थदः साधुः   | २        | 909   |
| आधिस्तेनोऽन्यथा भवेत्       | 4   | 188        | आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु    | 6        | ६३    |
| आध्यात्मिकं च सततम्         | ξ   | ८३         | आभीरोऽम्बष्टकन्यायाम्     | 90       | 9 4   |
| आनन्तर्यास्त्वयोन्यां तु    | 90  | २८         | आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यः   | Ę        | 82    |
| आनन्त्यायेव कल्पन्ते        | ३   | २७२        | आमन्त्रितस्तु यः श्राद्धे | રૂ       | 393   |
| आ निपाताच्छरीरस्य           | ६   | ३ १        | आमपात्रमित्राम्भसि        | 3        | १७९   |
| आनिपातादजिह्यगः             | 99  | 808        | आमृत्योः श्रियमन्विच्छेत् | 8        | ९३७   |
| आनुलोम्येन सम्भूता          | 30  | <b>u</b> , | आयति सर्वकार्याणाम्       | ø        | 306   |
| आनृण्यं कर्मणा गच्छेत्      | ٩   | २२९        | आयत्यां गुणदोषज्ञः        | 9        | 909   |
| आनृशंस्यं च केवलम्          | ३   | 48         | आयव्ययो च नियतो           | 6        | 836   |
| आनृशंस्यं प्रयोजयन्         | રૂ  | 992        | आयसं दण्डमेव वा           | 4        | ३१५   |
| आनृशंस्या द्वाह्यणस्य       | 3   | 303        | आयुः कीत्तिं प्रजाः पशून् | 33       | 80    |
| आन्त्रीक्षिकीं चात्मविद्याम | ् ७ | ४३         | आयुः सुवर्णकारान्नम्      | 8        | २१८   |
| आपः शुद्धा भूमिगताः         | ч   | १२८        | आयुधीयं पुनर्जनम्         | ø        | २२२   |
| आपत्करूपेन यो धर्मम्        | 33  | २८         | अ(युर्तिद्या यशो बलम्     | २        | 323   |
| आपत्काले विधीयते            | ₹   | २४१        | अ।युर्विप्रापवादेन        | 8        | २३७   |
| आपत्सु मरणाद्गीतैः          | 33  | २ ९        | अयुर्इसति पादशः           | 3        | ८३    |
| आपदर्थ धन रक्षेत्           | હ   | २१३        | आयुश्चैव प्रवर्धते        | 8        | ४२    |
| आपद्रतोऽथवा वृद्धा          | ९   | २८३        | आयुश्चेव प्रहीयते         | 8        | 83    |
| आपद्धमं च वर्णानाम्         | 9   | 338        | आयुष्कामेण वस्वयम्        | ९        | 83    |
| आपद्धर्माः प्रकीर्त्तिताः   | ð o | 130        | आयुष्मन्तं सुतं सूते      | રૂ       | २६३   |
|                             |     |            |                           |          |       |

| पाद                            | अ०  | श्ची० | पाद                       | अ०       | श्हो०     |
|--------------------------------|-----|-------|---------------------------|----------|-----------|
| आयुष्मान्भव सौम्येति           | २   | 924   | आवहेयुररक्षिताः           | ٩.       | ų         |
| आयुष्यं प्राङ्मुखो भुङ्के      | २   | ५२    | आविकं संधिनीक्षीरम्       | 14       | 4         |
| आयोगवश्र क्षता च               | 30  | ९६    | आष्ट्रतानां गुरुकुछात्    | 9        | 63        |
| आयोगव्यां तु धिग्वणः           | 30  | 34    | आवृतो नाम जायते           | 3 0      | 94        |
| आरण्यकमधीत्य च                 | 8   | १२३   | का व्रतस्य समापनात्       | ષ        | 66        |
| <b>आरण्यपञ्जहिंसनम्</b>        | 90  | 88    | आशरीरविमोक्षणात्          | २        | २४३       |
| आरण्यांश्च पश्चन्सर्वान्       | 30  | 68    | आ शासते कुटुम्बिभ्यः      | ą        | 60        |
| आरण्यानां च सर्वेपाम्          | ų   | ९     | आशिपश्चेव कर्मणाम्        | 9        | 83        |
| आरभेत ततः कार्यम्              | ९   | २९९   | आशीर्वादामिधा <b>नवत्</b> | ₹        | ३३        |
| आरमेतेव कर्माणि                | ٩,  | 300   | आञ्ज गच्छति सान्वयः       | ঽ        | १६८       |
| आरम्भरुचिताऽधैर्यम्            | 38  | ३२    | आञ्जगैर्रुक्षणान्वितेः    | 8        | ६८        |
| आरामस्य गृहस्य च               | 6   | २६२   | आञ्च पश्यन्विपर्ययम्      | 8        | 303       |
| आर्जवं च समाचरेत्              | 33  | २२२   | आश्रमादाश्रमं गत्वा       | Ę        | इध        |
| आर्तस्तु कुर्यात्स्त्रस्थः सन् | 6   | २१६   | आश्रमे बृक्षमूले वा       | 88       | 96        |
| आर्द्रपादस्तु भुञ्जानः         | ૪   | ७६    | आश्रमेषु द्विजातीनाम्     | 6        | ३९०       |
| आर्द्रपादस्तु भुन्नीत          | ષ્ઠ | ७६    | आपोडशाद्वाह्यणस्य         | २        | ३४        |
| आर्द्रवासास्तु हेमन्ते         | Ę   | २३    | आसनं चात्र कारणम्         | 45       | ९४        |
| आर्धिकः कुलमित्रं च            | 8   | २५३   | आसनं चैव यानं च           | 9        | 969       |
| आर्यं चानार्यकर्मिणम्          | 30  | ७३    | आसनावसथौ शय्याम्          | Ę        | 300       |
| आर्थता पुरुपज्ञानम्            | •   | २११   | आसनाशनशय्याभिः            | 8        | २९        |
| <b>आर्यप्रायमनाविलम्</b>       | 9   | ६९    | आसनेपूपक्छप्तेपु          | Ę        | २०८       |
| भार्यरूपिमवानार्यम्            | 30  | ७७    | आसनेष्वजुगुप्सितान्       | ३        | २०९       |
| आर्यादार्यो भवेद् गुणेः        | 80  | ६७    | आसपिण्डक्रियाकर्म         | 3        | २४७       |
| आर्यावर्तं विदुर्बुधाः         | २   | २ २   | आ समाप्तेः शरीरस्य        | २        | २४४       |
| आर्यावर्तनिवासिनः              | 90  | ३४    | आ समावर्तनाःकुर्यात्      | ?        | 808       |
| आर्षं धर्मोपदेशं च             | 85  | १०६   | आ समुद्रातु पश्चिमात्     | ₹        | २३        |
| आर्षे गोमिश्चनं ग्रुक्कम्      | રૂ  | ५३    | आ समुद्राचु वै पूर्वात्   | 3        | <b>२२</b> |
| आर्षोढाजः सुतस्रीस्त्रीन्      | ર   | ३८    | आसां महर्षिचर्याणाम्      | চ্       | ३३        |
| आर्थो धर्मः स उच्यते           | રૂ  | २९    | आसीत गुरुणा सार्धम्       | <b>ર</b> | २०४       |
| <b>आ</b> ळस्यादस्रदोपाच        | 4   | 8     | आसीताभिमुखं गुरोः         | २        | १९३       |
| आवन्त्यवाटधानौ च               | 30  | २ १   | आसीतामरणात्क्षान्ता       | ખ        | 144       |

| पाद                           | अ०       | श्लो०      | पाद                     | अ०       | श्लो० |
|-------------------------------|----------|------------|-------------------------|----------|-------|
| आसीदिदं तमोभूतम्              | 9        | પ          | इतरेभ्यो बहिर्वेदि      | 99       | ३     |
| आसीनः स्थित एव वा             | 6        | 80         | इतरेषां तु पण्यानाम्    | 90       | ९३    |
| आसीनस्य स्थितः कुर्यात्       | २        | १९६        | इतरेपां तु वर्णानाम्    | <b>ર</b> | ३५    |
| आसीनासु तथासीनः               | 99       | 199        | ,, ,,                   | 6        | ३७९   |
| आसुरं वैश्यशृद्धयोः           | 3        | २४         | ,, ,,                   | ९        | 968   |
| आसुरस्वं तदुच्यते             | 99       | २०         | इतरेषु तु शिष्टेषु      | રૂ       | 83    |
| आसुरो धर्म उच्यते 💎           | ર        | ક્ ૧       | इतरेषु त्वपाङ्क्येषु    | રૂ       | १८२   |
| आस्यतामिति चोक्तः सन्         | २        | १९३        | इतरेषु ससन्ध्येषु       | 9        | 90    |
| आहरेन् त्रीणि वा द्वे वा      | 8 9      | १३         | इतरेप्वागमाद्धर्मः      | ٩        | ८२    |
| आहरेदप्रयच्छतः                | 33       | 314        | इतिकर्त्तब्यता नृभिः    | (9       | ६९    |
| आहरेदविचारयन्                 | 33       | 18         | इतिकर्त्तव्यमात्मनः     | 9        | १४२   |
| आहरेद्यज्ञ सिद्धये            | 99       | 92         | इति चेत्संशयो भवेत्     | ९        | 325   |
| आहरेद्यावदर्थानि              | ર        | १८२        | इति धर्मस्य धारणा       | 6        | 388   |
| आहवेषु मिथोऽन्योन्यम्         | હ        | <i>د</i> ۶ | इति धर्मे व्यवस्थितिः   | ९        | 96    |
| आहिण्डिको निषादेन             | 30       | ३७         | इति धर्मो व्यवस्थितः    | ३        | २६५   |
| आहिताग्नेद्धिजन्मनः           | ર        | २८२        | "                       | ٩,       | 990   |
| आहुः शख्यवतो मृगम्            | ९        | ४४         | 3 9                     | ९        | १२०   |
| आहुरुत्पादकं केचित्           | ९        | ३२         | **                      | ९        | १७९   |
| आहूय दानं कन्यायाः            | <b>ર</b> | २७         | "                       | 90       | ६८    |
| आह्ताभ्युद्यतां भिक्षाम्      | ૪        | २४८        | इति वाचानुभाष्य च       | ર        | ३०    |
| आ हैत स नखाग्रेम्यः           | 2        | १६७        | इतीयं वैदिकी श्रुतिः    | 2        | 94    |
| <b>\(\bar{\pi}\)</b>          |          |            | इत्यस्येतिनिदर्शनम्     | ९        | २०    |
| <b>इ</b> ङ्गिताकारचेष्टज्ञ म् | હ        | ६३         | इन्युन्थायाभिवादयेत्    | <b>२</b> | 999   |
| इच्छन्त्या सह संगतः           | 6        | ३७८        | इत्येतत्तपसो देवाः      | 99       | २४४   |
| इच्छयान्योन्यसंयोगः           | ર        | ३२         | इत्येतदेनसा मुक्तम्     | 99       | २४७   |
| इज्याध्ययनमेव च               | 3        | 48         | इत्येतन्नोपपद्यते       | ९        | ४०    |
| ,, ,,                         | 3        | ९०         | इत्येतन्मानवं शास्त्रम् | 9 २      | १२६   |
| इज्याश्च प्रतिगृह्णन्त        | 33       | २४२        | इत्येषा त्रिविधा गतिः   | १२       | 80    |
| इतरानिप संख्यादीन्            | 3        | 993        | इत्येषा वैदिकी श्रुतिः  | 9        | ९७    |
| इतरे कृतवन्तस्तु              | ९        | २४२        | इत्येषा सृष्टिरादितः    | 9        | 96    |
| इतरेतरकाम्यया                 | 3        | ३५         | इदं तु वृत्तिवैकल्यात्  | 90       | ሪዓ    |

#### मनुपादानुकमणी।

| पाद                          | अ०       | श्लो॰        | पाद                        | अ०  | श्लो०       |
|------------------------------|----------|--------------|----------------------------|-----|-------------|
| इदं निःश्रेयसं परम्          | ٩        | १०६          | इमं कर्मविधि विद्यात्      | ۹,  | इ२५         |
| इदं बुद्धिविवर्धनम्          | 9        | १०६          | इमं धर्मं समाचरेत्         | 9 0 | 303         |
| इदं यशस्यमायुष्यम्           | 3        | १०६          | इमं लोकं मातृभक्त्या       | २   | २३३         |
| इदं वचनमद्युवन्              | 3        | 3            | इमं हि सर्ववर्णानाम्       | ٩,  | િ           |
| इदं शरणमञ्जानाम्             | ६        | 68           | इमाः क्षत्रियजातयः         | 90  | 88          |
| इदं शास्त्रं तु कृत्वासी     | 3        | 46           | इमाः श्रणुत निष्कृतीः      | 33  | 303         |
| इदं शास्त्रमकल्पयत्          | ٩        | 305          | इमाः स्युः क्रमशो वराः     | ર   | १२          |
| इदं शास्त्रमधीयानः           | 3        | 308          | इमानप्यनुयुक्तीत           | 6   | २५९         |
| इदं सर्वं चराचरम्            | 3        | مزه          | इमास्रित्यमनध्यायान्       | 8   | 303         |
| इदं सामासिकं ज्ञेयम्         | 35       | ३४           | इयं भूमिर्हि भूतानाम्      | ९   | ३७          |
| इदं स्वस्त्ययनं श्रेष्टम्    | 3        | १०६          | ंइयं विद्युद्धिरुदिता      | 99  | 48          |
| इदमन्विच्छतां स्वर्गम्       | Ę        | ८8           | इयं स्यादंशकल्पना          | ९   | 338         |
| इदमानन्त्यमिच्छताम्          | ६        | ८४           | इष्टि वैश्वानरीं नित्यम्   | 33  | २७          |
| इदमूचुर्महात्मानम्           | 43       | 3            | इष्टीः पार्वयनान्तीयाः     | 8   | 30          |
| इदमेव विजानताम्              | Ę        | 82           | इष्ट्रा च शक्तितो यज्ञेः   | ξ   | ३६          |
| इन्द्रमेके परे प्राणम्       | 92       | १२३          | इह कंक्तिमवामोति           | ?   | ९           |
| इन्द्रस्यार्कस्य वायोश्च     | Q,       | ३०३          | इह चानुत्रमां कीर्त्तिम्   | 4   | ८१          |
| इन्द्रानिलयमार्काणाम्        | <b>9</b> | 8            | इह चामुत्र वर्धते          | ९   | ३२२         |
| इन्द्रान्तकाप्पतीन्दुभ्यः    | ર        | ८७           | इह चामुत्र वा काम्यम्      | १२  | ८९          |
| इन्द्रियाणां च संयमः         | 92       | ८३           | इह दुश्चरितैः केचित्       | 33  | ३४          |
| इन्द्रियाणां च सर्वेषाम्     | २        | ९९           | इहाप्रयां कीर्तिमामोति     | પ્  | १६६         |
| इन्द्रियाणां जये योगम्       | •        | 88           | इहैव लोके तिष्ठन् सः       | 12  | १०२         |
| इन्द्रियाणां निरोधेन         | ६्       | ६०           | इहैवास्ते तु सा लोके       | ર્  | 383         |
| इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन       | 2        | ९३           | 2                          |     |             |
| इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन       | 33       | 45           | <b>*</b>                   |     |             |
| इन्द्रियाणां विचरताम्        | ર        | 66           | <b>ई</b> ष्यास्यार्थदृषणम् | •   | 86          |
| इन्द्रियाणि निवर्तयेत्       | ६        | <b>પ</b> ુષ્ | ईशः सर्वस्य जगतः           | ९   | <b>२</b> ४५ |
| इन्द्रियाणि यशः स्वर्गम्     | 99       | 80           | ईशो दण्डस्य वरुणः          | ٩   | २४५         |
| इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु      | B        | 98           | ईश्वरं चैव रक्षार्थम्      | 8   | १५३         |
| इन्द्रियेष्वेव जुह्नति       | 8        | २२           | ईश्वरः सर्वभूतानाम्        | 9   | ९९          |
| <b>इ</b> न्धनार्थमशुष्काणाम् | 99       | ६४           | ईहातश्चेद्धनं भवेत         | ٩   | २०५         |

| पाद                        | अ०  | श्लो०      | पाद                                  | अ०       | श्लो० |
|----------------------------|-----|------------|--------------------------------------|----------|-------|
| उ                          |     |            | उत्कृष्टां जातिमशुते                 | <b>Q</b> | ३३४   |
| उक्तं च न विभावयेत्        | 6   | ५६         | <b>उ</b> त्कृष्टायाभिरूपाय           | <b>લ</b> | 66    |
| उक्तः कर्मविधिः शुभः       | ٩,  | ३३६        | उत्कोचकाश्चोपधिकाः                   | ९        | २५८   |
| उक्तो वः सर्ववर्णानाम्     | чç  | १६४        | उत्तमर्णेन चोदितः                    | 6        | ४७    |
| उक्तवाक्यस्य साक्षिणः      | 4   | 208        | उत्तमणेंऽधमणिकात्                    | 4        | 40    |
| उक्ताः प्रत्यंगदक्षिणाः    | 6   | २०८        | उत्तमां सास्विकीमेताम्               | 12       | ५०    |
| उक्तो धर्मस्त्वयाऽनघ       | 3 7 | 9          | उत्तमां सेवमानस्तु                   | 6        | ३६६   |
| उक्तो राज्ञः सनातनः        | Q,  | ३२५        | उत्तमाङ्गोद्भवाज्यैष् <b>ट्या</b> त् | 9        | ९३    |
| उक्त्वा चैवानृतं साक्ष्ये  | 99  | 66         | <b>उत्तमाधममध्यमाः</b>               | 15       | 3     |
| उग्रान्नं सूतिकान्नं च     | 8   | २१२        | उत्तमानां च वाससाम्                  | 6        | ३२१   |
| उग्रो नाम प्रजायते         | 90  | ٩,         | उत्तमानुत्तमान्गच्छन्                | ४        | २४५   |
| उचावचानि भूतानि            | 97  | 813        | उत्तमेषूत्तमं कुर्यात्               | 3        | 300   |
| उद्यावचेषु भूतेषु          | ६   | ७३         | उत्तमेष्वधमेषु च                     | ६        | ६५    |
| ,, ,,                      | 92  | 18         | उत्तमैरुत्तमेर्नित्यम्               | 8        | २४४   |
| उच्चैः स्थानं घोररूपम्     | 9   | 353        | उत्तरः प्रतिलोमतः                    | 30       | ६८    |
| उच्छिन्दन्ह्यात्मनो मूलम्  | ø   | १३९        | उत्तिष्ठेच गतक्रमः                   | 9        | २२५   |
| उच्छिष्टं भागधेयं स्यात्   | ર   | २४५        | उत्तिष्टेट्यथमं चास्य 🕝              | २        | 988   |
| उच्छिष्टः श्राद्धभुक्चैव   | В   | 909        | उत्थाय पश्चिमे याभे                  | •        | 184   |
| डिच्छिष्टमन्नं दातन्यम्    | 90  | १२५        | उन्थायावश्यकं कृत्वा                 | 8        | ९३    |
| उच्छिष्टान्नं निषेकं च     | Я   | 949        | उल्पत्तिरेव विप्रस्य                 | 3        | ९८    |
| उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टः   | ų   | १४३        | उत्पत्तिब्यक्षकः पुण्यः              | 7        | ६८    |
| उच्छीर्घके श्रिये कुर्यात् | 3   | ८९         | उत्पत्स्यते हि तत्पात्रम्            | 8        | २२८   |
| उच्छेषण तु तत्तिप्ठेत्     | ર   | २६५        | उत्पद्यते गृहे यस्य                  | <b>९</b> | 900   |
| उच्छेषणं भूमिगतम्          | ¥   | २४६        | उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च               | 32       | ९ ६   |
| उच्छ्वसम्न स जीवति         | રૂ  | ७२         | उत्पन्नो वेण उच्यते                  | 30       | 99    |
| उतथ्यतनयस्य च              | ર   | <b>९ ६</b> | उत्पादकब्रह्मदात्रोः                 | २        | १४६   |
| उत्कर्षं चापकर्षं च        | 30  | ४२         | उत्पादनं च गात्राणाम्                | २        | २०९   |
| उत्कर्षं योषितः प्राप्ताः  | Q   | २४         | उत्पादनमपत्यस्य                      | ९        | २७    |
| उस्कृत्याधाय चाञ्चली       | 3 3 | 308        | उत्पादयति साविश्या                   | 7        | 388   |
| उस्कृष्टं या निषेवत        | પ્  | 9 & 3      | उत्पाद्येत्पुनर्भूत्वा               | ९        | १७५   |
| उत्कृष्टस्यापकृष्टजः       | S   | 363        | <b>उ</b> त्पाद्यापुश्चराचरम्         | 3        | ६३    |

| पाद                             | अ०       | श्लो०      | पाद                            | अ०       | श्हो॰ |
|---------------------------------|----------|------------|--------------------------------|----------|-------|
| उत्सर्ग छन्दसां बहिः            | ß        | ९७         | <b>उद्वेजनकरैर्नुपः</b>        | 9        | 588   |
| उत्सिक्तमनसां तथा               | 6        | 9          | उन्मत्तं पतितं क्षीवम्         | <b>Q</b> | 98    |
| उत्सृष्टमपि केनिवत्             | ६        | 3 ह        | उन्मत्तज्ञस्काश्च              | 9        | 201   |
| उदकं निनयेच्छेषम्               | Ę        | २१८        | उन्मत्तोऽन्धश्च वर्ज्याः स्युः | Ę        | 3 € 3 |
| उदकस्यागमेन च                   | G        | २५२        | उपकारादिति स्थितिः             | 4        | २६५   |
| उदकुम्भं सुमनसः                 | २        | 962        | उपकुर्वीत धर्मवित्             | २        | २४५   |
| उदके मध्यरात्रे च               | 8        | 508        | उपगृह्यास्पदं चैव              | 9        | 198   |
| उद <del>व</del> यायामयोनिषु     | 33       | १७३        | उपघातं परस्य च                 | 3        | 303   |
| उदङ्मुखान् प्राङ्मु-            |          |            | उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या      | ď        | 148   |
| खान् वा                         | 4        | ८७         | उपचारक्रिया केलिः              | 4        | ३५७   |
| उदासीनं तयोः परम्               | •        | 946        | उपच्छन्नानि चान्यानि           | 4        | २४९   |
| उदासीनगुणोद् <b>यः</b>          | •        | २११        | उपजप्यानुपजपेत्                | •        | 330   |
| उदासीनप्रचारं च                 | 9        | 944        | उपजीवन्ति बान्धवाः             | 3        | ५२    |
| उदिनं दैविकं युगम्              | 9        | ७९         | उपतिष्ठन्ति तानिद्वजान्        | 3        | १८९   |
| उदितेऽनुदिते चैव                | २        | 9 4        | उपिष्टं मनीषिभिः               | २        | 190   |
| उदितोऽयं विस्तरशः               | <b>९</b> | २५०        | उपधर्मोऽन्य उच्यते             | ?        | २३७   |
| उदितं दैविकं युगम्              | 9        | <b>৩ ৎ</b> | <b>&gt;</b> 2                  | 8        | 380   |
| उदित्युचा वा वारुण्या           | 6        | १०६        | उपधाभिश्च यः कश्चित्           | 6        | 365   |
| उद्गाता चाप्यनः क्रये           | 4        | २०९        | उपनीतो द्विजोत्तमः             | 3        | ४९    |
| उद्धारं ज्यायसे दत्त्वा         | ९        | ૧૫૬        | उपनीय गुरुः शिष्यम्            | 3        | ६९    |
| उद्धारेऽनुद्धते त्वेषाम्        | ९        | 998        | उपनीय तु तत्सर्वम्             | 3        | २२८   |
| उद्धारो न दशस्वस् <del>ति</del> | ९        | 994        | उपनीय तु यः शिष्यम्            | <b>ર</b> | 380   |
| उद्धते दक्षिणे पाणौ             | २        | ६३         | उपपन्नो गुणैः सर्वैः           | ९        | 183   |
| उद्घबर्हात्मनश्चेव              | 3        | 18         | उपन्यासं निबोधत                | 9        | ₹ 9   |
| उद्भिजाः स्थावराः सर्वे         | 3        | ४६         | उपपातकसंयुक्तः                 | 33       | 308   |
| उच्चतैराहवे शस्त्रेः            | ų        | 86         | उपपातकिनस्त्वेवम्              | 33       | 800   |
| उद्वर्तनमपस्नानम्               | 8        | १३२        | उपपातिकनो द्विजाः              | 33       | 330   |
| उद्वहन्तो द्विजातयः             | 3        | 94         | उपभुङ्क्ते ग्रुभाग्नुभम्       | 98       | 6     |
| उद्वहेत द्विजो भार्याम्         | <b>3</b> | 8          | उपभोगेन शाम्यति                | ₹        | 88    |
| उद्विजेत विषादिव                | ₹        | १६२        | उपभोगो यथा यथा                 | 6        | २८५   |
| उद्वेजनकरैदंग्डैः               | 6        | ३५२        | उपरुष्यारिमासीत                | ٩        | 984   |
|                                 |          |            |                                |          |       |

| पाद                          | अ०       | श्लो०        | पाद                                | अ०       | श्लो० |
|------------------------------|----------|--------------|------------------------------------|----------|-------|
| उपलभ्य पृथक् पृथक्           | <b>v</b> | 49           | उपासीत यथाविधि                     | ₹        | २२२   |
| उपवासकृशं तं तु              | 3 3      | 994          | उपेक्षकोऽसंकुसुकः                  | ६        | ४३    |
| उपवाससमा स्मृता              | <b>ર</b> | 338          | (उपेक्षकोऽसंचयिकः वा )             | 99       | **    |
| उपर्वातं कमण्डलुम्           | ₹        | ६४           | उपेतारमुपेयं च                     | 9        | 80    |
| उपवीतमलंकारम्                | ક        | ६६           | उप्यते यद्धि यद्वीजम्              | 9,       | २५    |
| उपवीत्युच्यते हिजः           | ą        | ६३           | उभयं तु समं यत्र                   | <b>Q</b> | ३४    |
| उपवेश्य तु तान्विप्रान्      | 3        | २०९          | उभयं नाशयेदिदम्                    | 7        | ५५    |
| उपसंप्रहणं गुरोः             | २        | ७२           | उभयत्र विवर्जयेत्                  | રૂ       | १६७   |
| उपसर्जनं प्रधानस्य           | Q,       | 979          | उभयोः सप्त दातच्याः                | 4        | १३६   |
| उपसेवेत तं नित्यम्           | હ        | 904          | उभयोई स्तयोर्मुक्त <b>म्</b>       | 3        | २२५   |
| उपस्थ मुद्रं जिह्ना          | G        | 9 <b>२</b> ५ | <b>उभाभ्याम</b> प्यजीवंस्तु        | 90       | ८२    |
| उपस्थाय च भास्करम्           | २        | 88           | उभावपि तु तावेव                    | 6        | ३७७   |
| उपस्थित गृहे विद्यात्        | 3        | १०३          | उभावपि हि तौ धमौं                  | २        | 38    |
| उपस्पृशंक्षिपवणम्            | ξ        | २४           | उभे तु एक जुल्केन                  | 4        | २०४   |
| ,, ,,                        | 33       | १२३          | उभे यानासने चैव                    | ø        | १६२   |
| ,, <u>,</u> ,                | 33       | २१६          | उभे संध्ये समाहितः                 | २        | २२२   |
| उपस्पृशेत्स्रवन्त्यां वा     | 33       | ९३२          | उभौ तौ नाईतो भागं                  | o,       | १४३   |
| उपस्पृश्य द्विजो नित्यम्     | २        | ५३           | उभौ निगृह्य दाप्यः स्यात्          | 6        | 188   |
| उपस्पृश्य पिता शुचिः         | ષ        | ६२           | उल्कानिर्घातकेन्श्र                | 3        | ३८    |
| उपस्पृश्येव गुज्यति          | ધ્યુ     | ६३           | उषित्वाद्यं गुरौ द्विजः            | 8        | 3     |
| उपस्पृष्टोदकान् सम्यक्       | રૂ       | २०८          | उपित्वा परिवत्सरम्                 | 9        | 97    |
| उपांञ्ज स्थाच्छतगुणः         | २        | ८५           | उष्ट्रं हत्वा तु कृष्णलम्          | 99       | १३७   |
| उपाकर्मणि चोत्सर्गे          | ૪        | 339          | उष्ट्रयानं समारुद्य                | 3 3      | २०१   |
| उपाकृत्य यथाविधि             | ૪        | ९५           | उच्जे वर्षति शीते वा               | 99       | ११३   |
| उपाध्यायः स उच्यते           | 2        | 383          | <b>इ</b> .                         |          |       |
| <b>ऊपा</b> ध्यायान्दशाचार्यः | २        | १४५          | ऊनद्विवार्षिकं प्रेतम्             | ч        | ६८    |
| <b>उपान</b> च्छत्रधारणम्     | 7        | 308          | ऊर्ध्वं विभागा <del>जातस्</del> तु | ९        | २३६   |
| उपानही च वासश्च              | 8        | ६६           | <b>ऊर्ध्वं तु कालादेतस्मात्</b>    | <b>ς</b> | ९०    |
| उपायैः प्रथमैस्त्रिभिः       | હ        | 306          | ऊर्ध्व नाभेर्मध्यतरः               | 3        | ९२    |
| उपासते ये गृहस्थाः           | ३        | 308          | <b>ऊ</b> ध्वं नाभेर्यानि खानि      | ч        | १३२   |
| उपासर्पंडु अक्षितः           | 30       | 904          | ऊर्घ्व पिनुश्च मानुश्च             | ९        | 308   |
| <del>-</del>                 |          |              |                                    |          |       |

| पाद                                | अ०       | श्लो०      | पाद                        | अ०       | <b>স্টা</b> ০ |
|------------------------------------|----------|------------|----------------------------|----------|---------------|
| <b>ऊ</b> ध्वं प्राणा ह्युस्कामन्ति | <b>२</b> | 920        | ऋत्विजस्ते हि श्रूद्राणाम् | 33       | ४२            |
| <b>ऊर्ध्वं</b> विभागाजातस्तु       | ٩        | २१६        | ऋत्विजे कर्म कुर्वते       | Ę        | ८०            |
| ऊर्ध्वं संवत्सरास्वेनाम्           | <b>ς</b> | <b>66.</b> | ऋषयः पितरो देवाः           | Ę        | 60            |
| <b>ऊ</b> ष्मणश्चोपजायन्ते          | 9        | ४५         | ऋषयः संयतात्मानः           | 33       | २३६           |
| ऋ                                  |          |            | ऋपयश्चित्ररे धर्मम्        | <b>२</b> | १५४           |
| ऋक्षेष्ट्याग्रयणं चैव              | Ę        | 90         | ऋषयो दीर्थसंध्यत्वात्      | ક        | ९४            |
| ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य             | 99       | २६२        | ऋपिभिर्वाह्मणेश्चैव        | ६        | ३०            |
| ऋग्यजुःसामलक्षणम्                  | 9        | २३         | ऋषिभ्यः पितरो जाताः        | ર        | २०१           |
| ऋग्वेदं धारयन्विप्रः               | 9 9      | २६१        | ऋषियज्ञं देवयज्ञम्         | 8        | २१            |
| ऋग्वेद्विद्यजुर्वि <b>च</b>        | 92       | 335        | प्                         |          |               |
| ऋग्वेदो देवदैवत्यः                 | 8        | 128        | एकं गोभिथुनं द्वे वा       | 3        | २९            |
| ऋचो यजूंषि चान्यानि                | 99       | २६४        | एकं वृषभमुद्धारम्          | 9        | १२३           |
| ऋजवस्ते तु सर्वे स्युः             | २        | ४७         | एकः प्रजायते जन्तुः        | 8        | २४०           |
| ऋणं दातुमशको यः                    | 6        | 348        | एकः शतं योधयति             | <b>9</b> | ७४            |
| ऋणं दाप्यो दमं च सः                | 6        | 306        | एकः शयीत सर्वत्र           | 2        | 960           |
| ऋणादिषु नरोऽगदः                    | 4        | 909        | एक एव च दुष्कृतम्          | 8        | २४०           |
| ऋणानामनपिकया                       | 99       | ६५         | एक एव चरेन्नित्यम्         | ξ        | ४२            |
| ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य               | ξ        | ३५         | एक एव प्रलीयते             | 8        | २४०           |
| ऋणे देये प्रतिज्ञाते               | 4        | १३९        | एक एव सुहृद्धर्मः          | 6        | 90            |
| ऋणे धने च सर्वस्मिन्               | ९        | २१८        | एक एवीरसः पुत्रः           | ९        | १६३           |
| ऋतं भुङ्के ह्युदङ्मुखः             | 7        | ५२         | एककालं चरेन्द्रेक्षम्      | ६        | ५५            |
| ऋतमुञ्छिश्चिं ज्ञेयम्              | 8        | ų          | एकजातिर्द्विजातींस्तु      | 4        | २७०           |
| ऋतामृताभ्यां जीवेतु                | 8        | 8          | एकदेशं तु वेदस्य           | <b>ર</b> | 181           |
| ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणाम्         | ર        | ४६         | एकमप्याशयेद्विप्रम्        | Ę        | ८३            |
| ऋतुकालाभिगामी स्यात्               | ३        | ४५         | एकमुत्पादयेत्पुत्रम्       | 9        | ६०            |
| ऋतूनां प्रतिरोधनात्                | <b>Q</b> | ९३         | एकमेव तु शूद्रस्य          | 3        | 93            |
| ऋत्वन्तासु च रात्रिषु              | 8        | 999        | एकमेव दहत्यग्निः           | 9        | ٩             |
| ऋत्विक्पुरोहिताचार्यः              | 8        | ३७९        | एकरात्रं तु निवसन्         | ર        | १०२           |
| ऋत्विग्यदि वृतो यज्ञे              | 4        | २०६        | एकरात्रोपवासश्च            | 3 3      | २१२           |
| ऋत्विग्याज्यौ च भोजयेत्            | ३        | 188        | एकविंशतिमा जातीः           | 8        | १६६           |
| ऋस्विजं यस्त्यजेद्याज्यः           | 4        | ३८८        | एकश्चेत्पुत्रवान्भवेत्     | 9        | १८२           |
|                                    |          |            |                            |          |               |

#### मनुपादानुकमणी।

| पाद                              | अ०        | ঞ্চাণ     | पाद                          | अ०        | स्हो० |
|----------------------------------|-----------|-----------|------------------------------|-----------|-------|
| <b>एक</b> स्तान्मन्त्रविस्त्रीतः | ર         | 939       | एतं सामासिकं धर्मम्          | 90        | ६३    |
| एकांशश्च प्रधानतः                | <b>લ</b>  | 840       | एतच्चतुर्विधं प्राहुः        | ?         | 12    |
| एकाकिनश्चात्ययिके                | ø         | 9 & 4     | एतच्चतुर्विधं विद्यात्       | ę         | 300   |
| एकाकी चिन्तयानो हि               | 8         | २५८       | एतचान्द्रायणं स्मृतम्        | 33        | ₹3€   |
| एकाकी चिन्तयेकित्यम्             | 8         | २५८       | एतच्छोचं गृहस्थाना <b>म्</b> | ч         | 330   |
| एकाक्षरं परं ब्रह्म              | २         | ८३        | एतत्तु न परे चकुः            | ٩         | ९९    |
| एका चेत्पुत्रिणी भवेत्           | ९         | १८३       | एतत्रयं समाश्रित्य           | હ         | २१५   |
| एकादशं मनो ज्ञेयम् 🥣             | 7         | ९२        | एतत्रयं हि पुरुषम्           | 8         | १३६   |
| एकादश यथोदितान्                  | ٩         | 300       | एतदक्षरमेतां च               | २         | 96    |
| एकादशेन्द्रियाण्याहुः            | २         | ८९        | एतदन्तास्तु गतयः             | 9         | yo    |
| एकादशे स्त्रीजननी                | Q         | 63        | एतदुक्तं द्विजातीनाम्        | ч         | २६    |
| एकाधिकं हरेज्ज्येष्टः            | ९         | 999       | एतदेव चरेदब्दम्              | 33        | १२९   |
| एकान्तरे त्वानुलोम्यात्          | 90        | <b>१३</b> | एतदेव विधि कुर्यात्          | 33        | 388   |
| एकान्ते प्रागुदङ्मुखः            | २         | ६१        | एतदेव व्रतं कुर्युः          | 99        | 130   |
| एकापायेन वर्तन्ते                | 3         | 90        | एतदेव व्रतं कृत्स्नम्        | 99        | १३०   |
| प्का लिङ्गे गुदे तिस्तः          | ч         | १३६       | एतदेव व्रतं चरेत्            | 33        | 60    |
| एकाहं चोदके वसेत्                | 99        | 940       | <b>,,</b>                    | 99        | १५५   |
| एकेनाङ्गेन यज्वनः                | 99        | 33        | एतदण्डविधि कुर्यात्          | 6         | २२१   |
| एके श्रुतिनिदर्शनात्             | 3 3       | ४५        | एतद्शप्रसृतस्य               | <b>ર</b>  | २०    |
| एकैकं कारयेत्कर्म                | 9         | १३८       | एतद् हादशसाहस्रम्            | 3         | ७३    |
| एकैकं ग्रासमश्नीयात्             | 9 4       | २१३       | एतद्धि जन्मसाफल्यम्          | <b>१२</b> | ९३    |
| एकैकं द्वासयेत्पिण्डम्           | 99        | २१६       | पुतिद्ध मत्तोऽधिजगे          | 9         | ५९    |
| एकैकमि विद्वांसम्                | ¥         | १२९       | एतद्वद्रास्तथादित्याः        | 33        | २२१   |
| एकैकमुभयत्र वा                   | ર         | १२५       | एतद्वः सारफल्गुत्वम्         | ९         | ५ ६   |
| एकैकशश्चरेत्कृच्छूम्             | 99        | १३९       | एतद्विदन्तो विद्वांसः        | ૪         | ९१    |
| एकैकशो युगानां तु                | 3         | ६८        | "                            | ષ્ઠ       | १२५   |
| एकोदिष्टस्य कंतनम्               | 8         | 330       | <b>प</b> तद्विचात्समासेन     | 8         | १६०   |
| एकोऽनुभुङ्को सुकृतम्             | 8         | २४०       | एतद्विधानं विज्ञेयम्         | ९         | 186   |
| एकोऽपि वेदविद्धर्मम्             | <b>१२</b> | 333       | पुनद्विधानमातिष्ठेत्         | હ         | २२६   |
| एकोऽलुब्धस्तु साक्षी स्य         | ात् ८     | ७७        | 37 95                        | 6         | २४४   |
| पुकोऽहमसीत्यात्मानम्             | 6         | 63        | एतद्वोऽभिहितं शौचम्          | ષ         | 900   |

| पाद                                 | अ०         | श्लो॰      | पाद                              | अव         | श्लो०       |
|-------------------------------------|------------|------------|----------------------------------|------------|-------------|
| एतहोऽभिहितं सर्वम्                  | Ę          | २८६        | एते मन्ंस्तु सप्तान्यान्         | 9          | इ६          |
| 73 93                               | 9 २        | ११६        | एते राष्ट्रे वर्तमानाः           | ९          | २२६         |
| एतद्वोऽयं भृगुः शास्त्रम्           | •          | ५९         | एते शुद्रेषु भोज्याशाः           | 8          | २५इ         |
| एतद्या <b>सिमदेतेपाम्</b>           | 9 २        | २६         | एते षट् सदृशान्वर्णान्           | 30         | २७          |
| एतन्मांसस्य मांसत्वम्               | ъ,         | ५५         | एतेषां निग्रहो राज्ञः            | 4          | १८७         |
| एतन्मुक्तस्य छक्षणम्                | ¦ <b>ξ</b> | 88         | एतेपामेव जन्तुनाम्               | <b>५</b> २ | ६९          |
| एतमेके वदन्स्यिम्                   | 98         | १२३        | एतेपामेव वर्णानाम्               | 3          | 89          |
| एनमेव विधि कृत्स्नम्                | 99         | २१७        | एतेषु मनुरव्रवीत्                | 8          | १०३         |
| एतयर्चा विसंयुक्तः                  | <b>ર</b>   | 60         | एतेष्वविद्यमाने <b>प</b>         | <b>ર</b>   | २४८         |
| एतस्मिन्नेनसि प्राप्ते              | 99         | १२२        | एते सर्वे पृथम्ज्याः             | ९          | २३५         |
| एतां <b>स्त्वभ्युदितान्विद्यात्</b> | 8          | 308        | <b>एतैरु</b> पाययोगेस्तु         | ९          | 30          |
| एताः प्रकृतयो मूलम्                 | છ          | १५६        | प्तैरुपायं <i>र</i> न्येश्च      | ९          | ३१२         |
| एता द्य्वास्य जीवस्य                | 92         | २३         | एतेर्द्धिजातयः शोध्याः           | 9 9        | २२६         |
| एतानाकालिकान्विद्यात्               | ß          | 904        | <b>एतै</b> र्छिङ्गैर्नयेन्सीमाम् | 4          | २५२         |
| एतानाहुः कौटसाक्ष्ये                | 6          | 322        | <b>एतैर्विवादान्सं</b> त्यज्य    | 8          | 858         |
| एतानि मानस्थानानि                   | २          | १३६        | <b>एतैर्घतेरपोहे</b> त           | 99         | १०२         |
| एतानि यतिपात्राणि                   | ξ          | 48         | ) 1                              | 3 3        | १६९         |
| एतानेके महायज्ञान्                  | 8          | २३         | <b>एतैर्वतैरपोहे</b> युः         | 99         | 300         |
| एतानेव महायज्ञान्                   | દ્         | ч          | एतैर्वतेरपोद्यं स्यात्           | 33         | 184         |
| एतान्दाषानवेक्ष्य त्वम्             | 6          | 309        | एतौ वर्षास्वनध्यायौ              | 8          | १०२         |
| एतान्द्रिजातयो देशान्               | 3          | २४         | एतत्कष्टतमं विद्यात्             | ঙ          | 40          |
| एतान्यपि सतां गेहे                  | Ę          | 303        | एघोदकं मूलफलम्                   | 8          | २४७         |
| एतान्येनांसि सर्वाणि                | 33         | 90         | एनसः स्यानुरीयभाक्               | В          | २०२         |
| <b>एतान्विग</b> हिताचारान्          | 3          | 360        | एनसां स्थूलसूक्ष्माणाम्          | 3 3        | २५ <b>२</b> |
| एतावानेव पुरुषः                     | ٩          | <b>ક</b> પ | <b>एन</b> स्विभिरनिर्णिक्तैः     | 8 8        | 968         |
| एताश्चान्याश्च लोकेऽस्मिन्          | ٩          | २४         | एनस्वी सप्तकं जपेत्              | 99         | २५५         |
| एताश्चान्याश्च सेवेत                | ६          | २९         | एनो गुच्छति कर्तासम्             | ٤          | 38          |
| एतास्तिस्तरतु भार्यार्थे            | 3 3        | १७२        | एनो विख्याप्य शुद्ध्यति          | 99         | ८३          |
| एते गृहस्थप्रभवाः                   | ६          | <b>60</b>  | एक हिंसासमुद्भवम्                | 99         | 984         |
| पुते चतुर्णां वर्णानाम्             | • 0        | 130        | एभिजितिश जयति                    | <b>.</b> 8 | 161         |
| एतेभ्यो हि द्विजाम्येभ्यः           | 33         | 3          | एभिमेचि विदेवती                  | 99         | 909         |

| पाद   | अ०              | श्लो ०       | पाद                          | अ०         | શ્કોલ          |
|---|-----------------|--------------|------------------------------|------------|----------------|
| एवं कर्मविशेषेण                               | 3 9             |              | एवमेतैरिदं सर्वम्            | 9          | 88             |
| एवंकर्मास्मि शाधि माम्                        |                 | 318          | एप ज्ञेयस्त्रिवृद्धेदः       | 99         | २६४            |
| एवं गृहाश्रमे स्थित्वा                        | Ę               | 3            | एष दण्डविधिः प्रोक्तः        | ٠.         | २७८            |
| एवं चरति यो विष्रः                            |                 | <b>२४९</b>   | एष दैवा विधिः स्मृतः         | uş<br>Uş   | <b>39</b>      |
| एवं चरन्सदा युक्तः                            | 9               | ३२४          | एप धर्मः परः साक्षात्        | २          | २३ <i>७</i>    |
| एवं दृढवतो नित्यम्                            | 33              | 63           | एष धर्मः सनातनः              | 8          | 936            |
| एवं धम्याणि कार्याणि                          | g               | २५१          | एप धर्मः समासेन              | 9          | 909            |
| एवं निर्वपणं कृत्वा                           | ર               | २६०          | एप धर्मविधिः कृत्स्नः        | 33         | 939            |
| एवं प्रयतं कुर्वीत                            | 9               | २२०          | एप धर्मोऽखिलेनोक्तः          | ٠.         | <br>२१८        |
| एवं यः सर्वभूतानि                             | ર               |              | एष धर्मी गवाश्वस्य           | 9          | ५५५            |
| एवं यः सर्वभूतेषु                             | \$ <del>2</del> | १२५          | एष धर्मोऽनुशिष्टो वः         | Ę          |                |
| एवं यथोक्तं विप्राणाम्                        | પુ              | <b>२</b>     | एष नौयायिनामुक्तः            | 6          | ८६             |
| एवं यद्यप्यनिष्टेषु                           | ુ<br>૧          | ३ <b>१</b> ९ | एष प्रोक्तो द्विजातीनाम्     |            | ४०९            |
| एवं विजयमानस्य                                | હ               | 300          | एष ब्रह्मर्षिदेशो वै         | <b>ર</b>   | € <i>&amp;</i> |
| एवंविधात्रूपो देशान्                          | ९               | २६६          | एष वै प्रथमः कल्पः           | ۶<br>ء     | 99             |
| एवं वृत्तस्य नृपतः                            | -<br>ب          | <b>३</b> ३   | एप वोऽभिहितो धर्मः           | 3          | 880            |
| एवंबृत्तां सवणा स्त्रीम्                      | ų,              | १६७          | एप शोचविधिः कृत्स्नः         | Ę          | 90             |
| एवं संचिन्त्य मनसा                            | 93              | २३१          | एप शोचम्य वः प्रकाः          | <b>13</b>  | 3,4 £          |
| एवं स जाग्रत्न्वप्ताभ्याम्                    | 3               | 40           | <b>_</b>                     | <b>.</b> v | 990            |
| एवं सन्यस्य कर्माणि                           | •<br>•          | ९६           | एष सर्वः समुद्दिष्टः<br>,, , | 92         | 48             |
| एवं स भगवान्देवः                              |                 | •            |                              | १२         | ८२             |
| एवं समुद्धताधारे                              | 3 2             | 999          | एप सर्वाणि भूतानि            | १२         | १२४            |
| एवं सम्यग्घविर्ह्तवा                          | ٩<br>ء          | 998          | एष सामासिको नयः              | ૭          | 960            |
| उन सम्बन्धायहुत्त्वा<br>एवं सर्व विधायेदम्    | ₹<br>           | ৫৩           | एष खीपुंसयोरुकः              | ९          | १०३            |
| •   | 9               | 385          | एषां हि बाहुगुण्येन          | 9          | 99             |
| एवं सर्वे स सृष्ट्वेदम्<br>एवं सर्विमेदं राजा | 3               | ५१           | एषां हि विरहेण स्त्री        | ч          | 188            |
| एवं सर्वानिमात्राजा                           | 9               | २१६          | एपा धर्मस्य वो योनिः         | २          | २५             |
|   | <b>Q</b>        | ४२०          | एपा पापकृतामुका              | १३         | ३७९            |
| एवं सह वसेयुर्वा                              | 9               | 3 9 9        | एषामन्यतमो यस्य              | 3          | १४६            |
| एवं स्वभावं ज्ञात्वासाम्<br>प्रमाणचान्ये करू  | 9               | 9 ६          | एषामन्यतमे स्थाने            | 4          | 339            |
| रुवमाचरतो दृष्ट्वा                            | 3               | 330          | एषा विचित्राभिहिता           | 99         | 96             |
| रुवमादीन्विजानीयात्                           | ९               | २६०          | एपु स्थानेषु भूविष्ठम्       | 6          | 4              |

| पाद                          | अ०   | श्लो॰ | पाद                          | अ०       | श्लो०      |
|------------------------------|------|-------|------------------------------|----------|------------|
| एषोऽखिलः कर्मविधिः           | ዓ    | ३२५   | कक्षं धान्यं च रक्षति        | 9        | 330        |
| एषोऽखिलेनाभिहितः             | ૮    | २६६   | कट्यां कृताङ्को निर्वास्यः   | 6        | २८१        |
| "                            | 6    | 303   | कणान्वा भक्षयेदब्दम्         | 33       | ९२         |
| एषोदिता गृहस्थस्य            | પુ   | २५९   | कण्टकानां च शोधनम्           | 9        | 994        |
| एषोदिता लोकयात्रा            | ९    | २५    | कण्टकानां च शोधनात्          | ९        | २५३        |
| <b>एषोऽना</b> द्यादनस्योक्तः | 99   | 3 € 9 | कण्टकोन्द्ररणे नित्यम्       | ९        | २५२        |
| एषोऽनापदि वर्णानाम्          | 30   | ३३६   | कण्ठगाभिस्तु भूमिपः          | २        | ६२         |
| ष्पोऽनुपस्कृतः प्रोक्तः      | છ    | 96    | कण्ठे वाबध्य वाससा           | 33       | २०५        |
| एष्वर्थेषु पशून् हिंसन्      | Ŋ    | ४२    | कण्डनी चोदकुम्भदच            | ક્       | ६८         |
| पे                           |      |       | कण्डूयेदात्मनः शिरः          | 8        | ८२         |
| ऐन्द्रं स्थानमभित्रेष्सुः    | 6    | ३४४   | कथंचिद्प्यतिकामन्            | રૂ       | 190        |
| ऐन्द्रं स्थानमुपासीना        | 4    | ९३    | कथं तत्र विभागः स्यात्       | ९        | 422        |
| ऐश्वर्यमभयप्रदः              | 8    | २३२   | कथं मृत्युः प्रभवति          | ષ્       | 7          |
| श्रो                         |      |       | कथं स्यादिति चेद्रवेत्       | 30       | ८२         |
| ओंकारपूर्विकास्तिस्रः        | ?    | ८१    | **                           | १२       | 306        |
| ओघवाताहृनं बीजम्             | ९    | ५४    | कथमन्यो धनं हरेत्            | ९        | 930        |
| ओषध्यः पशवो द्यक्षाः         | ų    | 80    | कदाचिद्पि भोजने              | 8        | ६५         |
| ओषध्यः फलपाकान्ताः           | 9    | ४६    | कनिष्ठायां च पूर्वजः         | ९        | 922        |
| श्री                         |      |       | कन्यां दद्याद्यथाविधि        | ९        | 66         |
| औदकेनेव विधिना               | ३    | २१५   | कन्यां भजन्तीमुत्कृष्टम्     | G        | ३६५        |
| औपनायनिको विधिः              | २    | ६८    | कन्यादातुर्दुरात्मनः         | <b>Q</b> | ७३         |
| औरभ्रिको माहिषिकः            | ર    | १६६   | कन्यादानं विशिष्यते          | 3        | ३५         |
| औरञ्रेणाथ चतुरः              | 3    | २६८   | कन्यादूषक एव च               | 3        | १६४        |
| औरसः क्षेत्रजश्चेव           | ९    | १५९   | कन्यानां संप्रदानं च         | ૭        | 345        |
| औरसक्षेत्रजो पुत्री          | ९    | १६५   | कन्याप्रदानं विधिवत्         | ર        | २९         |
| औरसक्षेत्रजौ सुती            | 9    | १६२   | कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यात् | <b>ર</b> | <b>3</b> 3 |
| औरसो विभजन्दायम्             | ٩,   | १६४   | कन्याप्रदानमभ्यर्च्य         | ३        | ३०         |
| औषधान्यगदो विद्या            | 33   | २३७   | कन्यामृतुमतीं हरन्           | ς,       | ९३         |
| ओष्ट्रमैकशफं तथा             | પ    | 4     | कन्यायां दत्तशुल्कायाम्      | ९        | ९७         |
| <u>ক</u>                     |      |       | कन्याया दूषणं चैव            | 3 3      | ६१         |
| कः क्षिण्वंस्तान्समृध्नुया   | त् ९ | ३१५   | कन्यायाश्च वरस्य च           | ર        | ३२         |

| पाद                       | अ०       | श्लो०      | पाद                       | अ०        | श्लो०      |
|---------------------------|----------|------------|---------------------------|-----------|------------|
| कन्याये चैव शक्तितः       | ą        | <b>३</b> १ | कर्मणां प्रेत्य चेह च     | 9 2       | ८६         |
| कन्यास्त्रेव प्रतिष्ठिताः | 6        | २२६        | कर्मगां फलनिर्वृत्तिम्    | 35        | 3          |
| कन्येव कम्यां या कुर्यात् | 6        | २६९        | कर्मगां वः फलोदयः         | <b>१२</b> | ८२         |
| कपालं वृक्षमूलानि         | ६        | 88         | कर्मगां समतिक्रमे         | 3 3       | २०३        |
| करं शुल्कं च पार्थिवः     | 6        | ३०७        | कर्मणापि समं कुर्यात्     | 4         | 900        |
| करणं परिवर्तयेत्          | 4        | 348        | कर्मणा बाह्यणा धनम्       | 99        | १९३        |
| करणं वान्यदुहिशेत्        | 6        | ५२         | कर्माण्यारभमाणं हि        | <b>९</b>  | ३००        |
| करणेन विभावितम्           | 6        | પ ૧        | कर्मदोषसभुद्भवाः          | ६         | ६१         |
| करम्भवालुकानापान्         | 92       | ७६         | कर्मदोषानपानुदन्          | Ę         | ९५         |
| करिप्यंश्चेत्र राजाति     | 92       | ३५         | कर्मदोषेर्न लिप्यते       | 9         | 308        |
| करीषमिष्टकाङ्गारान्       | 6        | २५०        | कर्मनिष्ठास्तथाऽपरे       | 3         | १३४        |
| कर्णश्रवेऽनिले रात्रौ     | 8        | १०२        | कर्मभिः स्वैर्विभावयेत्   | 90        | ५७         |
| कर्णों चर्म च बालांश्र    | 8        | 902        | कर्मभिने निबध्यते         | ६         | હ પ્ર      |
| कणों तत्र पिधातच्यी       | २        | 200        | कर्भयागं निबोधत           | २         | ६८         |
| कर्त्तव्यं परिरक्षणम्     | ૭        | २          | "                         | ξ         | ८६         |
| कर्त्तन्यं रक्षता प्रजाः  | ড        | इ६         | कर्मयोगं शरीरिणाम्        | ५२        | 999        |
| कर्त्तव्यं श्रुतिचोदनात्  | ą        | ३५         | कर्मयोगश्च वैदिकः         | २         | 2          |
| कर्त्तव्यः स्वयमन्वहम्    | 33       | २२२        | कर्मयोगस्य निर्णयम्       | 92        | २          |
| कर्त्तव्यांशप्रकल्पना     | ૮        | २११        | कर्मविद्या विशेषतः        | 85        | કક         |
| कर्त्तन्यो द्विशतो दमः    | ९        | २९०        | कर्म शारीरमेव च           | 6         | २७३        |
| कर्तव्योऽनुपरोधतः         | ક        | ३२         | कर्मम्बभ्युद्यतस्रेता     | ९         | ३०२        |
| कर्त्तुं पापविनिग्रहः     | <b>Q</b> | २६३        | कर्माणि च पृथक् पृथक्     | 9         | २९         |
| कर्तुं वर्षशतैरपि         | 2        | २२७        | कर्मात्मनां च दैवानाम्    | 8         | २२         |
| कर्तुमिच्छेखनः कियाम्     | 4        | १५४        | कर्मात्मानः शरीरिणः       | 9         | ५३         |
| कर्त्तुर्भवति निष्फलः     | 8        | १७३        | कर्मान्तान्वाहनानि च      | 8         | 836        |
| कर्तुर्मूलानि कृन्तति     | 8        | १७२        | कर्मारस्य निषादस्य        | 8         | २१५        |
| कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः      | 3        | ९७         | कर्मेन्द्रियाणि पञ्चेषाम् | ₹         | ९१         |
| कर्मचेष्टास्वहः कृष्णः    | 3        | ६६         | कर्मोक्तं पुरुषं प्रति    | 35        | ८४         |
| कर्मजं दोषमात्मनः         | 9 2      | 303        | कर्मोपकरणाः शूद्धाः       | 30        | १२०        |
| कर्मजा गतयो नृणाम्        | १२       | ३          | कर्पन्ति च महद्यशः        | Ę         | <b>६ ६</b> |
| कर्मणां च विवेकार्थ       | 3        | २६         | कर्पयत्यनवेक्षया          | O         | 333        |
|                           |          |            |                           |           |            |

| पाद                     | अ०       | श्लो॰  | पाद                          | अ०       | श्लो०      |
|-------------------------|----------|--------|------------------------------|----------|------------|
| करूविङ्कं प्रवं हिंसन्  | ų        | 92     | कामं तु क्षपयेद्देहम्        | ч        | 140        |
| कलां नार्हन्ति षोडशीम्  | 2        | ८६     | कामं तु खलु धर्मार्थम्       | 90       | 199        |
| किलः प्रसुप्तो भवति     | ९        | ३०२    | कामं तु गुरुपत्नीनाम्        | २        | २१६        |
| कल्पयित्वास्य वृत्ति च  | 3 3      | २३     | कामं वा समनुज्ञातः           | ¥        | २२२        |
| कल्पयेत्सततं करान्      | ૭        | १२८    | कामं विस्तारयेद्वहून्        | 9        | 191        |
| कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् | 3        | ६०     | कामं शुद्रस्य वेश्मनः        | 99       | 13         |
| कल्याणे विंशतिद्विजे    | 6        | ३९२    | कामं श्राद्धेऽर्चयेन्मित्रम् | ३        | 188        |
| कच्यानि च हर्वीषि च     | ¥        | १३२    | कामं स्याद्वाह्मणबुवः        | 4        | २०         |
| कब्यानि खेव पितरः       | 9        | ९५     | कामकारकृतेऽप्याहुः           | 3 3      | <b>૪</b> ५ |
| कश्चिदप्यभिवीक्षितुम्   | છ        | ६      | कामकोधवशानुगम्               | <b>ર</b> | २१४        |
| कश्चिदस्ति परिग्रहः     | 99       | २३     | कामकोधौ तु संयम्य            | 6        | १७५        |
| कश्यपाय त्रयोदश         | ९        | १२९    | ,, ,,                        | 92       | 33         |
| कष्टमाहुररिं बुधाः      | 9        | 210    | कामजानितरान्विदुः            | ९        | 909        |
| कष्टमेतञ्जिकं सदा       | •        | પ્યુ ૧ | कामजेषु प्रसक्तो हि          | 9        | ४६         |
| कस्तस्मात्तदपोहति       | 6        | 818    | कामजो दशको गणः               | 9        | ४७         |
| कस्मिश्चिदपि वृत्तांते  | ३        | 18     | कामतस्तु कृतं कर्म           | 92       | ८९         |
| कस्मैचिद्याचते धनम्     | ۵        | २१२    | कामतस्तु कृतं मोहान्         | 33       | ४६         |
| कस्यचिद्दर्शयेद् बुधः   | 8        | ५९     | कामतस्तु प्रवासनम्           | ९        | २४२        |
| कांस्यं हंसो जलं प्रवः  | <b>3</b> | ६२     | कामतस्तु प्रवृत्तानाम्       | રૂ       | 97         |
| काकतां वा शतं समाः      | 11       | २५     | कामतो ब्राह्मणबधे            | 3 9      | 68         |
| काकोलं खंजरीटकम्        | ષ        | 38     | कामतो रेतसः सेकम्            | 3 3      | 320        |
| काकोल्दकैश्च भक्षणम्    | 12       | ७६     | काममभ्यर्थितोऽश्रीयात्       | ₹        | 168        |
| कांक्षन्गतिमनुत्तमाम्   | २        | २४२    | काममामरणात्तिष्ठेत्          | 9        | ८९         |
| कांक्षन्ती तमनुत्तमम्   | ષ        | 146    | काममुत्पाच कृष्यां तु        | 30       | ९०         |
| काणं वाप्यथवा खञ्जं     | 4        | २७४    | कामान्कोधात्तर्थेव च         | ઢ        | 996        |
| काणो निर्वापको भवेत्    | 33       | 49     | कामात्मता न प्रशस्ता         | २        | <b>ર</b>   |
| कानीनश्च सहोदश्च        | ९        | १६०    | कामात्मा विषमः क्षुद्रः      | 9        | २७         |
| कामं क्रोधं च लोभं च    | २        | 308    | कामाद्वरवर्णजम्              | ٩        | २४८        |
| कामं क्रोधमनार्जवम्     | <b>९</b> | 19     | कामादुत्पादयेत्सुतम्         | 4        | 306        |
| कामं च कोधमेव च         | 3        | २५     | कामाइशगुणं पूर्वम्           | 6        | १२१        |
| कामं तमपि भोजयेत्       | ક્       | 999    | कामाद्धि स्कन्दयनरेतः        | २        | 960        |

| पाद                               | अ०        | श्लो०       | पाद                        | अ०       | શો૦                 |
|-----------------------------------|-----------|-------------|----------------------------|----------|---------------------|
| कामान्माता पिता चैनम्             | २         | 180         | कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्     | ₹        | 149                 |
| कामान्संवर्धयन्ति च               | 9 9       | २४२         | कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिं च | ø        | 30                  |
| कामार्थं त्रींस्तु वस्सरान्       | ९         | <b>૭</b> દ્ | कार्यः शारीरसंस्कारः       | २        | २ ६                 |
| कामार्थी धर्म एव च                | ?         | २२४         | कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभो   | 3        | ३                   |
| कामिनीषु विवाहेषु                 | 4         | 312         | कार्यदर्शनमारभेत्          | 6        | २३                  |
| कामैरिन्द्रवतं चरन्               | ९         | ३०४         | कार्यशेषं तथैव च           | હ        | १५३                 |
| कामापहतचेतनः                      | ९         | ६७          | कार्याः कार्येषु साक्षिणः  | 4        | ६३                  |
| काम्बोजा यवनाः शकाः               | 30        | 88          | कार्याणां च विनिर्णयम्     | 3        | 338                 |
| काम्यो हि वेदाधिगमः               | 7         | 2           | कार्याणि समतां नयेत्       | 6        | 308                 |
| कायक्केशांश्च तन्मूलान्           | 8         | ९२          | कार्यार्थं शपथाः कृताः     | 6        | 990                 |
| किंचिदामौक्षिवन्धना <del>त्</del> | २         | 109         | कार्या विप्रस्य मेखला      | २        | ४२                  |
| किंचिदेव तु दाप्यः स्यात्         | 6         | ३६३         | कार्ये प्राप्ते यहच्छया    | હ        | <b>१</b> ६५         |
| कायत्रेदशिकाभ्यां वा              | 2         | 46          | कार्ये विवदतां मिथः        | 6        | ३९०                 |
| कायदंडस्तथेव च                    | 92        | 10          | कार्येऽस्मिश्चेष्टितं मिथः | 4        | 60                  |
| कायमंगुलिमूलेऽग्रे                | 2         | ५९          | कार्यो मध्यमसाहसः          | ९        | २४१                 |
| कायेनैव च कायिकम्                 | 97        | C           | कार्पापणं भवेदंड्यः        | 6        | ३३६                 |
| कारयेत्क्रयविक्रयौ                | G         | 803         | कार्पापणस्तु विज्ञेयः      | 4        | १३६                 |
| कारयेद् गृहमात्मनः                | ø         | ७६          | कार्प्णरीरवज्ञास्तानि      | <b>₹</b> | 83                  |
| कारवः शिल्पिनस्तया                | 90        | 350         | कार्णायसमलंकारः            | 90       | ५२                  |
| कारावरो निपादात्तु                | 80        | ३६          | कालं कालविभक्तीश्च         | 9        | २४                  |
| कारिता काथिका च या                | 6         | १५३         | कालं कालेन पीडयन्          | 3        | પ ૧                 |
| कारुकाञ्छिल्पनश्चैव               | 9         | १३८         | कालपक्रभुगेव वा            | Ę        | 99                  |
| कारकान्नं प्रजां हन्ति            | 8         | २१९         | कालपकेः स्वयंशीर्षैः       | ξ        | २ १                 |
| कारुकावेशनानि च                   | ९         | २६५         | कालमासाद्य कार्यं च        | C        | ३२४                 |
| कारुषश्च विजन्मा च                | 90        | २३          | ,, ,,                      | ९        | २९३                 |
| कार्यासकीटजोर्णानाम्              | 3 3       | १६८         | कालमेव प्रतीक्षेत          | ६        | 84                  |
| कार्पासतान्तवं कौञ्चः             | 82        | ६४          | कालशाकं महाशल्काः          | ą        | २७२                 |
| कार्पासमुपवीतं स्यात्             | 2         | 88          | कालसूत्रमुवाक्शिराः        | 3        | <b>२</b> ४ <b>९</b> |
| कार्य विष्रस्य पञ्चमे             | 2         | ३७          | कालाङ्ग्सिनं भक्षयेत्      | 4        | २५१                 |
| कार्यं वीक्ष्य प्रयुक्तीत         | (9        | 9 & 9       | काले च क्रियया स्वया       | 2        | 60                  |
| कार्यं वीक्ष्य महीपतिः            | <b>(9</b> | 180         | कालेऽदाता पिता वाच्यः      | ٩        | B                   |
|                                   |           |             |                            |          |                     |

#### मनुपादानुक्रमणी।

| पाद                          | अ०       | श्लो॰ | पाद                          | अ०       | श्चो०    |
|------------------------------|----------|-------|------------------------------|----------|----------|
| काले प्राप्तस्त्वकाले वा     | Ę        | 304   | कुटुम्बाद्व हुमध्यगात्       | ९        | १९९      |
| काले युक्तं प्रशस्यते        | ø        | २०४   | कुटुम्बार्थे कृतो व्ययः      | 6        | ५६६      |
| कालोसानि कृषीबलैः            | Q        | ३८    | कुटुम्बार्थेऽध्यधीनोऽपि      | 6        | 989      |
| काच्यान्बर्हिषदस्तथा         | ą        | १९९   | कुटुम्बेऽतिथिधर्मिणौ         | ş        | 892      |
| काष्टलोष्टमयेषु च            | 6        | २९८   | कुड्मलं प्रतिमूर्त्तिकम्     | 8        | ८९       |
| काष्ठलोष्टसमं क्षितौ         | ક        | 181   | कुण्डाशी सोमविकयी            | 3        | १५८      |
| काष्टा त्रिंशत्तु ताः कलाः   | 9        | ६४    | कुतपं चासने दद्यात्          | 3        | २३४      |
| किंचिच्छ्रेयस्करतर <b>म्</b> | <b>9</b> | 82    | कुतपानामरिष्टकैः             | 4        | 120      |
| किंचित्कार्यं गृहेण्वपि      | 4        | 180   | कुनखी श्यावदन्तकः            | ર        | १५३      |
| किंचिदात्मनि लक्षयेत्        | १२       | २ ७   | कुपुत्रैः संतरंस्तमः         | ९        | 9 & 9    |
| किंचिदेव तु विप्राय          | 11       | 181   | कुष्ठवैः संतरञ्जलम्          | 9        | १६१      |
| किंचिद्द्वोपजीवनम्           | ९        | २०७   | कुबेररच धनैश्वर्यम्          | •        | ४२       |
| किंचिद्राजनि धर्मविन्        | 3 3      | : 9   | कुमारब्रह्मचारिणाम्          | પ        | १५९      |
| किं नु राज्यं महादयम्        | હ        | ખુખ   | कुमाराणां च रक्षणम्          | ૭        | 145      |
| किं भूतमधिकं ततः             | 9        | 9,4   | कुमारीभाग एव सः              | ٩        | 139      |
| कितवान्कुशीलवान्क्रुशान्     | ९        | २२५   | कुमारीप्वन्त्यजासु च         | 3 3      | 46       |
| कितवो मद्यपस्तथा             | <b>ર</b> | १५९   | <b>3</b> 3                   | 99       | 900      |
| किन्नरान्वान रान्मत्या न्    | 1        | ३९    | कुमायुतुमती सती              | <b>९</b> | ९०       |
| किराता दरदाः खशाः            | 30       | 88    | कुम्भीधान्यक एव वा           | ૪        | <b>9</b> |
| किल्बिपात्प्रतिमुच्यते       | 30       | 996   | कुम्भीपाकांश्च दारुणान्      | 12       | ७ ६      |
| किल्बिपी नरकं व्रजेत्        | 6        | 98    | कुरुक्षेत्रं च मत्स्यारच     | ₹        | १९       |
| कीटाश्चाहिपतङ्गाश्च          | 9 9      | २४०   | कुरुक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च | S        | १९३      |
| कीटो भवति मत्सरी             | <b>ર</b> | २०१   | कुरुते धर्ममन्बहम्           | 9        | १३६      |
| कीनाशो गोवृषो यानम्          | 9        | 940   | कुरुते धर्मसिद्धर्थम्        | 9        | 10       |
| कीर्तयन्ति पुराविदः          | 9        | ४२    | कुरुतेऽनापदि द्विजः          | 3 3      | २८       |
| कीर्तयेत्प्रिवतामहम्         | ¥        | २२१   | कुरुते फलभागिनः              | ર        | १४३      |
| कुक्कुटः श्वा तथैव च         | ર        | २३९   | कुरुते योऽग्रजे स्थिते       | ર        | 103      |
| कुक्कुटानां च भक्षणे         | 9 9      | १५६   | कुर्याच समयकियाम्            | •        | २०२      |
| कुचेलमसहायता                 | ६        | १५६   | कुर्यात् कार्यविनिर्णयम्     | 6        | 4        |
| कुटीं कृत्वा वने वसेत्       | 99       | ७२    | कुर्यात्पर्वसु नित्यशः       | 8        | 940      |
| कुटुम्बात्तस्य तद्द्रब्यम्   | 99       | 112   | कुर्यात्पिष्टपशुं तथा        | ų        | ३७       |

| पाद                          | अ०       | श्लो॰      | पाद                                     | अ०         | श्लो०        |
|------------------------------|----------|------------|---|------------|--------------|
| कुर्यात्प्रियहिते रतः        | २        | २३५        | कुलमात्मानमेव च                         | ٩          | •            |
| कुर्यात्सर्वार्थचितकम्       | 4        | 929        | कुलसंख्यां च गच्छन्ति                   | રૂ         | ६६           |
| कुर्यात्साक्ष्यं विवादिनाम्  | 6        | ६९         | कुलानि परिवर्जयेत्                      | Ę          | Ę            |
| कुर्यादध्ययने यसं            | ₹        | 199        | कुलान्यकुलतां यान्ति                    | 3          | ६३           |
| कुर्यादन्यम वा कुर्यात्      | २        | ८७         | कुलान्यल्पधनान्यपि                      | 3          | ६६           |
| कुर्यादहरहः श्राद्धं         | Ę        | ८२         | कुलान्याञ्ज विनक्यन्ति                  | ३          | ६५           |
| कुर्यादित्यविचारयन् 🥟 🕆      | 9 9      | 33         | कुलान्येव नयन्त्याशु                    | 3          | 94           |
| कुर्याद्पेण मानवः            | 6        | ३६७        | कुले महति संभूताम्                      | 9          | 99           |
| कुर्यात् घृतपशुं सङ्गे       | ų        | ३७         | कुले मुख्येपि जातस्य                    | 90         | ६०           |
| कुर्याद् योऽरिबलस्य च        | ٩        | १५५        | कुविवाहैः क्रियालोपैः                   | 3          | ६३           |
| कुर्याद् राष्ट्रस्य संग्रहम् | ø        | 118        | कुशवारि पिबेश्यहम्                      | 3 3        | 186          |
| कुर्यान्मासानु मासिकम्       | ३        | १२२        | कुशाश्मन्तकबल्वजैः                      | २          | ४३           |
| <b>कुर्युरप्रतिवारिताः</b>   | 6        | ३६०        | कुशीलवोऽवर्काणीं च                      | ą          | 944          |
| कुर्युरर्घ यथापल्यम्         | 6        | ३९८        | कुसीदं कृपिमेव च                        | 6          | 830          |
| कुर्युचैंतानिकानि च          | 9        | 50         | कुसीदपथमा हु <b>स्तं</b>                | 6          | 942          |
| कुर्युस्तस्य परिग्रहम्       | 3 3      | १९६        | कुसीद <b>वृ</b> द्धिंद्वेंगुण्यम्       | 6          | 843          |
| कुर्युस्तेषां समागमम्        | <b>९</b> | २६८        | कुमूलधान्यको वा स्यात्                  | ક          | e.           |
| कुर्वता हिसमात्मनः           | 6        | ३१२        | कुह्वै चैवानुमत्ये च                    | 3          | 48           |
| कुर्वदिरिह मानवेः            | 8        | <b>२११</b> | कूटशासनकर्तश्च                          | ۹,         | २३२          |
| कुर्वन्ति क्षेत्रिणामर्थम्   | ३        | 43         | कूपवापोजर्छानां च                       | 3 3        | 983          |
| कुर्वन् स्वीश्रद्भनम्        | 8        | 388        | कूपोद्यानगृहाणि च                       | 8          | २०२          |
| कुर्वाणः स्तेननिग्रहम्       | 6        | ३४३        | कूष्माण्डेर्वापि जुहुयात्               | 6          | १०६          |
| कुर्बाणा निष्कृतिं पराम्     | 6        | १०५        | कृच्छ्रं चान्द्रायणं चैव                | 33         | 100          |
| कुर्वीत चेषां प्रत्यक्षम्    | Ġ        | ४०२        | कृच्छूं सांतपनं चरेत्                   | ų          | २०           |
| कुर्वीत धनसंचयम्             | ß        | ३          | 97 99                                   | 99         | १७३          |
| कुर्वीत प्रायणं रणे          | ዔ        | ३२३        | कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतम्                | 99         | २१२          |
| कुर्चीत शासनं राजा           | ९        | २६२        | कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ कुर्वीत <sup>े</sup> | 11         | २०८          |
| कुलं दहित राजािः             | 9        | ď          | कृच्छाद् प्राहाद् विमुच्यते             | ो <b>६</b> | ७८           |
| कुलगोत्रे निवेदयेत्          | 3        | १०९        | क्रच्छ्राब्देन विद्युध्यति              | 9 9        | <b>1 ६</b> २ |
| कुलजे वृत्तसंपन्ने           | 4        | 109        | कृतं चाप्यकृतं भवेत्                    | 6          | 199          |
| कुरुधर्माश्च शाश्वतान्       | 9        | 116        | कृतं तद्धर्मतो विद्यात्                 | ٩          | २३३          |

| पाद                          | अ०         | स्रो० | पाद                         | अ०          | श्हो॰ |
|------------------------------|------------|-------|-----------------------------|-------------|-------|
| कृतं त्रेतायुगं चैव          | 9          | ३०१   | कृत्वा दारपरिप्रहम्         | 3           | इ२६   |
| कृतझस्यान्नमेत च             | 8          | 218   | <b>कृ</b> त्वान्यतमभिष्छया  | 3 3         | 858   |
| कृतचूड़े च संस्थिते          | 4          | 46    | कृत्वा पापं हि संतप्य       | 33          | २३०   |
| कृतज्ञं धतिमंतं च            | 4          | 210   | कृत्वा पापानि मानवाः        | 6           | ३१८   |
| कृतदारो गृहे वसेत्           | ધ્યુ       | १६९   | कृत्वाप्यायनमादितः          | 3           | २११   |
| कृतदारोऽपरान्दारान् <b></b>  | 9 3        | ų     | कृत्वा मुत्रं पुरीषं वा     | 4           | 936   |
| कृतदुर्गश्च शास्त्रतः        | ٩          | २५२   | कृत्वा विधानं मूस्रे तु     | •           | 358   |
| कृतनिर् <u>णें</u> जनांश्चेच | 99         | 969   | कृत्वा शवशिरोध्यजम्         | 33          | ७२    |
| कृतं त्रेतायुगं चेव          | ९          | ३०१   | कृत्वा सत्येन संविदम्       | 6           | २१९   |
| कृतबुद्धिषु कर्तारः          | 9          | ९७    | कृत्वैतद्वलिकमैंवम्         | 3           | ९४    |
| कृतवापनो निवसेत्             | • •        | 96    | कृत्स्नं चाष्टविधं कर्म     | 9           | 348   |
| कृतवापो वसेद्रोष्टे          | 3 3        | 906   | कृत्स्नमुद्धिजते जगत्       | છ           | १०३   |
| कृतशौचः समाहितः              | 8          | ९३    | कृत्स्नमेव छभेतांशम्        | 4           | २०७   |
| 1, 11                        | •          | 184   | कृत्स्नामेकोऽपि सोर्हति     | 3           | 204   |
| कृतसंज्ञान्समंततः            | 9          | 190   | कृमयोऽ <b>भक्ष्यभक्षिणः</b> | 3 7         | ५९    |
| कृताञ्जलिरुपा <b>सी</b> त    | 8          | १५४   | कृमिकीट <b>पतङ्गांश्च</b>   | 9           | ४०    |
| कृताञ्चं च तिलैः सह          | ९०         | ८६    | कृमिकीटपतङ्गानाम्           | १२          | ५६    |
| कृतामं चाकृतामेन             | 90         | 98    | कृमिकीटवयोहत्या             | 33          | 90    |
| कृतान्नं देयमुच्यते          | 33         | રૂ    | कृमिभूतः श्वविष्ठायाम्      | 30          | 93    |
| कृतानुसारादधिका              | 6          | १५२   | क्रशमप्यायतिक्ष <b>म</b> म् | ٩           | २०८   |
| कृताचमुदकं स्त्रियः          | ९          | २१९   | क्रशानपि कदाचन              | ક           | १३५   |
| कृतायामस्य धर्मतः            | 3          | २४८   | कृषिं यक्षेन वर्जयेत्       | 30          | ८३    |
| कृतावस्थो धनैषिणा            | 4          | ६०    | कृषिं साध्विति मन्यन्ते     | 30          | 82    |
| कृते त्रेतादिषु ह्येषाम्     | 9          | ८३    | कृषिगोरक्षमास्थाय           | 90          | ८२    |
| कृतोपनयनस्यास्य              | <b>ર</b>   | १७३   | कृषिजीवी श्रीपदी च          | Ę           | १६५   |
| कृतोपनयनो द्विजः             | 7          | 308   | कृष्टजानामोष <b>धी</b> नाम् | 33          | 188   |
| कृत्यासु विविधासु च          | ९          | २९०   | कृष्णपक्षे दशस्यादी         | 3           | २७६   |
| कृत्वा कर्म विगहितम्         | 3 3        | २३२   | कृष्णपञ्जेषु संपठेत्        | , 8         | ९८    |
| कृत्वा कामाद् द्विजोत्तमः    | 3 9        | १६२   | कृष्णसारस्तु चरति           | <b>,  २</b> | २३    |
| कृत्वा च खीसुहद्वधम्         | 33         | 86    | कृष्णे शुक्के च वर्धयेत्    | 99          | € 8   |
| कृत्वा चैचावसक्यकाम्         | <b>. ર</b> | ११२   | कृष्या राजीपसेवया           | ٠ ٦         | ६४    |

|                            |       | •          |                           |          | _      |
|----------------------------|-------|------------|---------------------------|----------|--------|
| पाद                        | अ०    | श्लो०      | पाद                       | अ०       | श्ची ॰ |
| ह्रमकेशनखश्मश्रुः          | 8     | ३५         | कौशेयाविकयोरूषैः          | 4        | 150    |
| >> > <sub>2</sub>          | ६     | ५२         | कौसीदीं वृद्धिमाप्नुयाव्  | 6        | १४३    |
| क्षानां पशुसोमानाम्        | 33    | २७         | ऋतुविक्रयिणस्तथा          | 8        | २१४    |
| केचित्पूर्वकृतस्तथा        | 33    | 88         | क्रमतः पुर्वमभ्यस्य       | 8        | १२५    |
| केचिदाहुर्मृषैव तत्        | રૂ    | ५३         | क्रमयोगं च जन्मनि         | 3        | ४२     |
| केतितस्तु यथान्यायम्       | રૂ    | 190        | क्रमशः क्षेत्रजादीनाम्    | <b>ς</b> | २२०    |
| केवलं स्थण्डिलं भवेत् 🕆    | 90    | ও গ্ব      | क्रमशः परिकीर्तिताः       | 8        | २२३    |
| कंवला निर्वपेत्सदा         | 8     | 30         | क्रमशस्तिषाधित            | 3        | ६८     |
| केवलैर्वर्तयेत्सदा         | ξ     | २ १        | "                         | ९        | ३३६    |
| केशकीटावपन्नं च            | 8     | २०७        | क्रमशो गुणलक्षणम्         | 9 2      | ३४     |
| <b>*</b> > <b>*</b> *      | 33    | १५९        | क्रमशो याति लोकेऽस्मिन्   | 32       | ५३     |
| केशग्रहान्प्रहारांश्च      | ૪     | <b>/3</b>  | क्रमशो वर्धयंस्तपः        | Ę        | २३     |
| केशानां च प्रसाधनम्        | 7     | २११        | क्रमशो वैश्यश्रद्धयोः     | ९        | ३२५    |
| केशान्तः षोडशे वर्षे       | २     | ६५         | क्रमेण विधिपूर्वकम्       | <b>ર</b> | १७३    |
| केशान्तिको ब्राह्मणस्य     | २     | <b>४</b> ६ | क्रयविक्रयमध्वानम्        | 9        | १२४    |
| केशेषु गृह्णतो हस्ती       | 6     | २८३        | क्रयविक्रयमेव च           | g        | ३३२    |
| कैवर्त्तमिति यं प्राहुः    | 30    | ३४         | क्रयविकयानुशयः            | 4        | પ્     |
| कैवर्तान्मूलखानकान्        | 6     | २६०        | क्रयेण स विशुद्धं हि      | 6        | २९१    |
| को न नश्येत् प्रकोप्य ता   | ान् ९ | ३१४        | कव्यादस्करोष्ट्राणाम्     | 3 3      | १५६    |
| कोपोऽरीननृतं शुनः          | ર     | २३०        | कव्यादां दंष्ट्रिणामपि    | 3 2      | ५८     |
| कोयष्टिनखविष्करान्         | ч     | 13         | कव्यादांस्तु मृगान्हत्वा  | 11       | १३७    |
| कोशदण्डी सुहत्तथा          | ς,    | २९४        | क्रव्यादाञ्छकुनान्सर्वान् | ч        | 3 3    |
| कोंशहीनोऽपि पार्थिवः       | ø     | 388        | कव्यादिश्च हतस्यान्यैः    | ų        | 333    |
| कोष्ठागारायुष्रागार        | ९     | २८०        | क्रान्ते विष्णुं बले हरम् | ३ २      | 979    |
| ्को हिंस्यात्ताञ्जिजीविषुः | 9     | ३१६        | क्रिययैव च कर्मणाम्       | ٩,       | २९८    |
| कौटसाक्ष्यं कृतं भवेत्     | 4     | 330        | कियाफल <b>मुपा</b> श्नुते | ६        | ८२     |
| कौटसाक्ष्यं तु कुर्वाणान्  | 6     | 123        | क्रियाभ्युपगमात्त्वेतत्   | <b>Q</b> | પર     |
| कौटसाक्ष्यं सुहद्रधः       | 33    | ५६         | क्रियालोपान्मनी षिणः      | ९        | 960    |
| कौत्सं जण्वाप इत्येतत्     | 3 3   | २४९        | <u> </u>                  | 90       | 990    |
| कौशीलब्यस्य च किया         | 33    | ५५         | क्रीडिशियैतत्कुरुते       | 3        | 60     |
| कौशेयं तित्तिरिर्हत्वा     | 35    | ६४         | क्रीणीयाद्यस्वपत्यार्थम्  | 9        | 308    |
|                            |       |            | · · ·                     |          | •      |

| पाद                                  | अ०       | श्लो॰ | पाद                        | अ०  | स्रो॰ |
|--------------------------------------|----------|-------|----------------------------|-----|-------|
| कीतः पौनर्भवस्तथा                    | 9        | 160   | क्षत्रवैदेहकौ तद्वत्       | 30  | 18    |
| कीतमकीतमेव वा                        | 6        | 813   | क्षत्रशूद्रवयुर्जन्तुः     | 90  | 8     |
| कीत्वा विकोय वा किंचित्              | 3        | २२२   | क्षत्रस्य चतुरोऽवरान्      | Ę   | २३    |
| कीत्वा विकीय वा पण्यम्               | 6        | २२३   | क्षत्रस्याति प्रश्वदस्य    | 4   | ३२०   |
| कीत्वा स्वयं वाप्युत्पाध             | ч        | ३२    | क्षत्रियं चैव वैश्यं च     | 6   | 833   |
| कुद्धो नैव निपातयेत्                 | 8        | 388   | क्षत्रियं चैव सर्पं च      | 8   | 934   |
| कुद्यन्तं न प्रतिकुद्येत्            | ६        | 88    | क्षत्रियं तु सहन्निणम्     | 6   | ३७६   |
| क्र्रकर्मकृतां चैव                   | 15       | 46    | क्षत्रियं वाहनायुधैः       | 6   | ११३   |
| क्रुरता निष्क्रियात्मता              | 30       | 46    | क्षत्रियः कटपूतनः          | 12  | 9     |
| क्र्रस्योच्छिष्टभोजिनः               | 8        | 535   | क्षत्रियस्य च रक्षणम्      | 30  | 60    |
| क्र्राचारविहारवान्                   | 90       | 9     | क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या | ?   | ४२    |
| क्राचारैरसंवसन्                      | 8        | २४६   | क्षत्रियस्य परो धर्मः      | •   | 188   |
| क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत्         | 8        | १६३   | क्षत्रियस्य बलान्वितम्     | ₹   | ₹ 9   |
| क्रोधजेऽपि गणे विद्यात्              | ড        | 49    | क्षत्रियस्य बधे स्पृतः     | 33  | 126   |
| कोधजेष्वात्मनैव तु                   | 9        | ४६    | क्षत्रियस्य समासतः         | 3   | ८९    |
| क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः                 | •        | 86    | क्षत्रियस्य हि बालिश्यात्  | 3 3 | 21    |
| क्रोधात्तु त्रिगुणं परम्             | 6        | 929   | सत्रियस्याभिशंसने          | c   | २६८   |
| क्रोशन्तीं रुदतीं गृहात्             | 3        | ३३    | क्षत्रियाच्छुद्रकन्यायाम्  | 90  | ९     |
| कौद्धं हत्वा त्रिहायनम्              | 33       | १३४   | क्षत्रियाजातमेवं तु        | 30  | ६५    |
| क्षीबस्य व्याधितस्य वा               | ς.       | १६७   | क्षत्रियाणां तु वीर्यतः    | ?   | 344   |
| क्षीबादीनां कथञ्चन                   | ९        | २०३   | क्षत्रियाणां हविर्भुजः     | Ę   | 190   |
| क्षेशांश्च विविधांस्तांस्तान्        | 15       | 60    | क्षत्रियात्सूत एव तु       | 30  | 30    |
| क्रचिद्धर्त्तोपदिश्यते               | ч        | १६२   | क्षत्रियाद्विप्रकन्यायाम्  | 30  | 9 9   |
| क्षणाद्भवति निर्मेलः                 | 33       | २५०   | क्षत्रियायामगुप्तायाम्     | 6   | ३८४   |
| क्ष <del>पु</del> र्जातस्तथोप्रायाम् | 90       | 18    | क्षत्रियेण कदाचन           | 11  | 96    |
| क्षत्रं हि बह्मसंभवम्                | <b>९</b> | ३२०   | क्षत्रियेण यथाविधि         | •   | ?     |
| क्षत्रधर्महतस्य च                    | ч        | 98    | क्षत्रिये त्वेव मध्यमः     | 6   | २७६   |
| क्षत्रबन्धुमनामयम्                   | 7        | 150   | क्षत्रियो गृहमात्रजेत्     | Ę   | 111   |
| क्षत्रमाराध्येचदि                    | 10       | 121   | क्षत्रियो क्षत्रणे रिपृत्  | •   | 96    |
| क्षत्रविट्शूद्रयोनयः                 | 6        | ६२    | क्षत्रियो दण्डमईति         | 4   | १६७   |
| क्षत्रविद्शूदयोनिस्तु                | 9        | २२९   | क्षत्रियो दण्डमेव वा       | 6   | ₹८४   |

| पाद                            | अ०  | श्लो०      | पाद                          | अ०         | श्लो॰      |
|--------------------------------|-----|------------|------------------------------|------------|------------|
| क्षत्रियो बाहुवीर्येण          | 99  | રૂ         | श्चवतीं जुम्भमाणां वा        | 8          | ४३         |
| क्षत्रियो भागमापदि             | 90  | 996        | क्षेत्रं वा भीषया हरन्       | 6          | २६४        |
| क्षत्रियो वाटखादिरौ            | २   | ४५         | क्षेत्रं हिरण्यं गामश्रम्    | ₹          | २४६        |
| क्षत्रियो वाहनायुधम्           | 4   | ९९         | क्षेत्रकूपतङ्गानाम्          | 6          | २६२        |
| श्रमुप्रकुसानां तु             | 90  | ४९         | क्षेत्रजादीन्सुतानेतान्      | ९          | 350        |
| क्षन्तव्यं प्रभुणा नित्यम्     | 4   | ३१२        | क्षेत्रज्ञो नाभिशङ्कते       | 6          | ९६         |
| क्षपेयुरुयहमेव च               | ų   | ६९         | क्षेत्रदोषगुणस्य च           | ९          | ३३०        |
| श्रयी चाप्यायितः सोमः          | ९   | <b>398</b> | क्षेत्रबीजसमायोगात्          | ९          | ३३         |
| क्षच्यामयाव्यपस्मारि           | 3   | ٧          | क्षेत्रभूता स्मृता नारी      | ९          | ३३         |
| क्षरन्ति सर्वा वैदिक्यः        | २   | 82         | क्षेत्रमन्ये मनीिषणः         | 90         | 90         |
| क्षात्रं धर्ममनुस्मरन्         | હ   | ८७         | क्षेत्रिकस्य तु तद्वीजम्     | <b>લ્</b>  | 384        |
| क्षान्त्या शुध्यन्ति विद्वांस  | પ   | 300        | क्षेत्रिकस्येति धारणा        | 6          | २४३        |
| क्षाराम्लोदकवारिभिः            | ч   | 338        | क्षेत्रिकस्यैव तद्वीजम्      | ९          | પ્રષ્ઠ     |
| क्षिपतां कार्यिणां नृणाम्      | 6   | ३१२        | क्षेत्रिणां बीजिनां तथा      | ९          | ५२         |
| क्षिपेदप्स्वद्भ्य इत्यपि       | 3   | 22         | क्षेत्रियास्यात्यये दण्डः    | 6          | २४३        |
| क्षिप्तं छोष्टं विनश्यति       | 99  | २६३        | क्षेत्रे कालोपपादिते         | ९          | <b>३</b> ६ |
| क्षिप्रं नश्यति सान्वयः        | 3   | २०५        | क्षेत्रेष्वन्येषु तु पशुः    | 6          | २४३        |
| क्षिप्रं निर्वासयेत्पुरात्     | ९   | २२५        | क्षेम्यां सस्यप्रदां नित्यम् | 9          | २१२        |
| क्षिप्रमेव प्रवासयेत्          | ९   | २८९        | क्षोभयेतामिदं जगत्           | 6          | 83%        |
| ",                             | 30  | ९६         | भौमं हत्वा तु दर्दुरः        | १२         | ६४         |
| क्षिप्रमेव विनइयति             | 3 0 | ६१         | क्षौमवच्छङ्कश्रङ्गाणाम्      | ખ          | 353        |
| क्षीणस्य चैव क्रमशः            | 9   | १६६        | क्षीमाणां गौरसर्पपेः         | <b>u</b> g | 980        |
| क्षीणेऽल्पे च विपर्ययः         | 3   | ४९         | ख                            |            |            |
| भ्रीयन्ते प्राणिनां यथा        | ø   | 992        | स्वं सिन्नवेशयेत्खेषु        | १२         | 950        |
| क्षीयन्ते सष्ट्रकर्पणात्       | હ   | 992        | खङ्गलोहामिषं मधु             | B          | २७२        |
| भीरं भौदं दिध घृतम्            | 90  | 66         | खओं वा यदि वा काणः           | 2          | २४२        |
| क्षीरिणश्चैव पादपान्           | 6   | २४६        | खट्टाङ्गी चीरवासा वा         | 3 9        | 904        |
| श्रुव्यतीकारमाचरन्             | 30  | 3 0,5      | खङ्गकूर्म सशांस्तथा          | ų          | 96         |
| क्षुद्रकाणां पश्चनां तु        | ć   | २९७        | खरं हत्वैकहायनम्             | 99         | १३६        |
| <b>शुधार्तश्चातुम</b> भ्यागात् | 90  | 308        | सरयानं सु कामतः              | 9 9        | २०१        |
| क्षुचा शकः कथंचन               | 8   | \$8        | खरा <b>योष्ट्रमृगेभानाम्</b> | 33         | ६८         |
|                                |     |            |                              |            |            |

| पाद                            | अ•  | स्रो०      | पाद                       | अ •         | स्रो० |
|--------------------------------|-----|------------|---------------------------|-------------|-------|
| खरेणोद्वहर्म तथा               | 6   | 300        | मत्वारण्यं समाहितः        | 3           | 108   |
| ख् <b>राक्षेत्रादगारा</b> द्वा | 99  | 3 10       | गम्सच्यं का ततोऽन्यसः     | ą           | २००   |
| खसो द्रविड एव च                | 90  | २२         | गन्धं मास्यं रसान्धियः    | <b>ર</b>    | 100   |
| खादकश्चेति घातकाः              | ч   | 41         | गन्धमात्राथ सोमपः         | 33          | 185   |
| खादन्मांसं न दुष्यति           | ч   | ३२         | गम्बमाल्यैः सुरभिभिः      | ફ           | २०९   |
| खानि चैव स्पृशेदद्धिः          | २   | <b>ξ</b> ο | गम्धर्वा गुह्मका यक्षाः   | 98          | 80    |
| खान्याचान्त उपस्पृशेत्         | 4   | १३८        | गम्बर्वाप्सरसोऽसुरान्     | 4           | ξø    |
| खिन्नः कार्येक्षणे नृणाम्      | 9   | 181        | गन्धर्वोरगरक्षसाम्        | Ę           | १९६   |
| खे विद्धमनुविद्यतः             | ዓ   | ४३         | गन्धवर्णस्सान्विताः       | 4           | 186   |
| ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम्        | 38  | ३६         | गन्धानां च रसानां च       | 9           | ३२९   |
| ख्यापनेनानुतापेन               | 3 3 | २२७        | गम्धो छेपश्च तत्कृतः      | <b>પ્</b> ર | १२६   |
| ख्यापयेदभयानि च                | •   | २०१        | गन्धो छेपश्च तिष्ठति      | 8           | 333   |
| ग                              |     |            | गन्धीषधिरसानां च          | 9           | 121   |
| गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात्        | 8   | 148        | गमनीयतमो भवेत्            | •           | 308   |
| गच्छत्यमरलोकताम्               | ₹   | ų          | गमयत्युत्तमां गतिम्       | 4           | ४२    |
| गच्छत्यासप्तमाद्युगात्         | 30  | ६४         | गरीयान् ब्रह्मदः पिता     | ?           | 38€   |
| गच्छेतां वैश्यपार्थिवी         | 6   | ३७६        | गरीयो यद्यदुसरम्          | ₹           | 986   |
| मणानां चैव याजकः               | ३   | १६४        | गर्तप्रस्रवणेषु च         | 8           | २०३   |
| गणामं गणिकान्नं च              | 8   | २०९        | गर्दभाजाविकानां तु        | 6           | २९८   |
| ,,                             | 8   | २१९        | गर्दभेन चतुष्पथे          | 99          | 114   |
| गणाभ्यन्तर एव च                | Ę   | १५४        | गर्भभर्तृद्वहां चैव       | 4           | 90    |
| गतप्रत्यागतापि वा              | ९   | १७६        | गर्भस्रावे विशुच्यति      | ų           | ६६    |
| गतप्रत्यागते चैव               | હ   | 388        | गर्भाचु द्वादशे विशः      | <b>ર</b>    | ३६    |
| गतिभाषितचेष्टितम्              | २   | १९९        | गर्भादेकादशे राज्ञः       | २           | ३६    |
| गतिमस्यान्तरात्मनः             | ६   | ७३         | गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत   | २           | 3 8   |
| गतिमाहुर्मनीषिणः               | 98  | ५०         | गर्भिणी 🖫 द्विमासादिः     | 4           | 800   |
| गतिरात्मा तथात्मनः             | 6   | 82         | गर्भिणी <b>बा</b> छ एव वा | g           | २८३   |
| गतीः स्वेनैव चेतसा             | 15  | २३         | गर्भो भूत्वेह जायते       | ९           | 6     |
| गत्वा कक्षान्तरं त्वन्यत्      | 9   | २२४        | गईणां याति साधुषु         | ₹           | 60    |
| गत्वा चान्द्रायणं चरेत्        | 8 8 | 999        | गर्हिताद्वा प्रतिप्रदात्  | 90          | १०३   |
| गत्वानृण्यं यथाविधि            | 8   | २५७        | गर्हितानाचयोर्जिभः        | 33          | ५६    |

| पाद                      | अ०  | श्लो॰      | पाद                         | अ०       | क्को० |
|--------------------------|-----|------------|-----------------------------|----------|-------|
| गर्हिताकाशनासु च         | 30  | રૂપ        | गुणान्सर्वान्प्रचोदयन्      | Ę        | २२८   |
| गर्ह्यन्से ब्रह्मवादिभिः | 8   | 199        | गुणिद्वैधे द्विजोत्तमान्    | 6        | ७३    |
| गहीं कुर्यादुभे कुले     | 44, | 188        | गुजैर्वा परिवर्जितः         | ų        | 348   |
| गवां च परिवासेन          | ч   | 128        | गुणैश्च परिचोदयेत्          | 3        | २३३   |
| गवां च यानं पृष्ठेन      | 8   | ७२         | गुप्तं सर्वर्त्तुकं शुभ्रम् | ø        | હ દ્  |
| गवां भक्ष्ये तथेन्धने    | E   | 992        | गुप्तं सर्वेण हीयते         | 6        | इ७४   |
| गवा चान्नमुपाद्यातम्     | 8   | २०९        | गुप्तां विप्रां बलाइजन्     | 6        | हे७८  |
| गां दस्वा विधिवद् गुरोः  | 3   | ९५         | गुप्त्यर्थं स महाद्युतिः    | 9        | 49    |
| रा विप्रमजमिनं वा        | 3   | २६०        | गुरवे प्रीतिमावहेत्         | २        | २४६   |
| गात्राणि चैव सर्वाणि     | 8   | 183        | गुरुं पावकमेव च             | 3 3      | 923   |
| गात्रोत्सादनमेव च        | २   | २११        | गुरुं वा बालवृद्धी वा       | 4        | इ५०   |
| गान्धर्वः स तु विज्ञेयः  | 3   | ३२         | गुरुणानुमतः स्नात्वा        | ३        | 8     |
| गान्धर्वो राक्षसश्चैव    | Ŗ   | २ १        | गुरुतल्पव्वतं कुर्यात्      | 99       | 900   |
| "                        | इ   | २६         | गुरुतल्पसमं विदुः           | 3 3      | 46    |
| गामाछभ्य विशुध्यति       | 9 9 | २०२        | गुरुतल्पापनुत्तये           | 99       | १०६   |
| गामालभ्याकमीक्ष्य वा     | પ્  | ८७         | गुरुतस्पे भगः कार्यः        | <b>Q</b> | २३७   |
| गार्भेंहींमैर्जातकर्म    | 2   | २७         | गुरुतरुप्यभिभाष्यैनः        | 99       | १०३   |
| गिरिदुर्ग विचिष्यते      | v   | 99         | गुरुदारेषु कुर्वीत          | २        | २१७   |
| बिरिदुर्गं समाश्रयेत्    | ø   | 9          | गुरुदारे सपिण्डे वा         | <b>ર</b> | २४७   |
| गिरिपृष्ठं समारुद्ध      | •   | 380        | गुरुदेवद्विजार्चकः          | 33       | २२४   |
| गुच्छगुरुमं तु विविधम्   | 3   | 88         | गुरुपक्षी सु युवतिः         | ₹        | २१२   |
| गुणदोषपरीक्षणम्          | 3   | 330        | गुरुपत्न्यनुजस्य सा         | 9        | 40    |
| गुणदोषविचक्षणम्          | ९   | १६९        | गुरुपत्न्या न कार्याणि      | ₹        | २११   |
| गुणदोषौ च कर्मणाम्       | 3   | 300        | गुरुपुत्रे गुणान्विते       | <b>ર</b> | २४७   |
| गुणदोषौ च तत्त्वतः       | •   | 198        | गुरुपुत्रेषु चार्येषु       | <b>ર</b> | २०७   |
| गुणदोषौ च यस्य यौ        | 3   | <b>२</b> २ | गुरुमातृपितृत्यागः          | 33       | ५९    |
| गुणदोपौ विजानता          | 3   | २१२        | गुरुराहवनीयस्तु             | 7        | २३१   |
| गुणहीनाय कर्हिचित्       | ९   | ८९         | गुरुवच स्नुषावच             | 9        | ६२    |
| गुणांश्च सूपशाकाद्यान्   | 3   | २२६        | गुरुवत्प्रतिपूज्याः स्युः   | <b>ર</b> | 230   |
| गुणानां त्रिषु तिष्ठताम् | 35  | <b>३</b> ४ | गुरुवद्वतिमाचरेत्           | <b>ર</b> | २०५   |
| गुणानां यः फलोदयः        | 35  | ३०         | ,, ,,                       | <b>ર</b> | २४७   |

| पाद                       | अ०           | स्रो॰          | पाद                       | स०       | स्रो०      |
|---------------------------|--------------|----------------|---------------------------|----------|------------|
| गुरुवन्मानमर्हति          | 7            | २०८            | गृहनः कीतद्विमौ           | C        | 834        |
| गुरुगुश्रूषया त्वेवम्     | ₹            | २३३            | गृहदोऽप्रयाणि वेशमानि     | ß        | 280        |
| गुरोश्चालीकनिबंधः         | 33           | <b>પ્</b> યુપ્ | गृहमेधिषु चान्येषु        | Ę        | २७         |
| गुरुषु स्वभ्यतीतेषु       | 8            | २५२            | गृहसंवेशको दूतः           | ર        | 183        |
| गुरुद्धीगमनीयं तु         | 33           | 908            | गृहस्यः शेषभुग्भवेत्      | Ę        | 990        |
| गुरूनेव च पर्वसु          | 8            | १५३            | गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः    | Ę        | 68         |
| गुरून्सत्यांश्चोजिहीर्षन् | 8            | २५१            | गृहस्थस्तु यदा पश्येत्    | Ę        | <b>ર</b>   |
| गुरोः कुले न भिक्षेत      | <b>ર</b>     | 826            | गृहस्थानां यशस्विनाम्     | ९        | ३३४        |
| गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु  | ч            | ६५             | गृहस्थाश्रममावसेत्        | 3,       | 7          |
| गुरोर्गुरी संनिहिते       | 3            | २०५            | गृहस्थेनैव धार्यंते       | 3        | 30         |
| गुरोर्यत्र परीचादः        | <del>2</del> | २००            | गृहस्ये यान्ति संस्थितिम् | É        | 90         |
| गुरोश्चेव स्वबन्धुपु      | <b>ર</b>     | २०७            | गृहस्थैरेव सेविताः        | ६        | ३०         |
| गुरोस्तु चक्षुर्विषये     | 7            | 388            | गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया    | <b>ર</b> | ६७         |
| गुरौ त्रैवेदिकं वतम्      | ३            | 9              | गृहिणः पुत्रिणो मौलाः     | 6        | ६२         |
| गुरौ वसन् संचिनुयात्      | 3            | 1 £ 8          | गृहीतो मिथ एव वा          | 6        | 194        |
| गुरौ शिष्यश्च याज्यश्च    | 6            | ३१७            | मृहीक्वा मुसर्छ राजा      | 6        | २ <b>२</b> |
| गुर्वर्थं पितृमात्रर्थम्  | 3 3          | 3              | गृहे कन्यर्तुमत्यपि       | <b>९</b> | ८९         |
| गुल्मवल्लीनगेषु च         | 6            | ३३०            | गृहे क्षेत्रेऽथवा खले     | 33       | 118        |
| गुल्मवल्लीलतानां च        | 9 9          | 185            | गृहे गुरावरण्ये वा        | 4        | ४३         |
| गुल्मांश्च स्थापयेदासान्  | •            | १९०            | गृहेभ्यः प्रयतोऽन्वहम्    | २        | १८३        |
| गुल्मान्वेणूंश्च विविधान् | 6            | २४७            | गृहे राजन्य उच्यते        | 3        | 990        |
| गुल्मैः स्थावरजङ्गमैः     | ٩            | २६६            | गृह्णं राष्ट्रकं हि लोभेन | ३        | 49         |
| गृहे युक्ततरो भवेत्       | •            | १८६            | गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि     | 3        | 43         |
| गूडेस्तत्कर्मकारिभिः      | ٩            | २६१            | गृह्धीतान्यानि मंत्रवत्   | २        | €8         |
| गृहोत्पन्नोऽपविद्यश्च     | ٩            | 349            | गृह्णीयात् कुलसंनिधी      | 6        | २०१        |
| गृहेत्कूर्म इवाङ्गानि     | U            | १०५            | गृह्धीयात् साधुतः सदा     | 8        | २५२        |
| गृध्रोच्छिप्टेन जीवति     | 33           | २६             | गृह्यीयुः पापचेतसः        | <b>9</b> | १२४        |
| गृहं तडागमारामम्          | 6            | २६४            | मृद्यं कर्म यथाविधि       | 3        | ६७         |
| गृहं वा सपरिष्छदम्        | 99           | ७६             | गृह्यं चान्निपरिच्छदम्    | ξ        | 8          |
| गृहकारी द्युपस्करम्       | 12           | ६६             | मृह्यतेऽन्तर्गतं मनः      | 6        | २६         |
| गृहकार्येषु दक्षया        | ч            | 940            | मृद्योऽग्नौ विधिपूर्वकम्  | 3        | 68         |

| पाद                       | अ०       | श्लो॰ | पाद                                | अ०       | स्रो० |
|---------------------------|----------|-------|------------------------------------|----------|-------|
| गोगजोष्ट्रह्यादिषु        | 4        | २९६   | गोरक्षकान्वाणिजिकान्               | 4        | १०२   |
| गोमो गामनुगच्छति          | 99       | 994   | गोरक्ष्यं विषणिः कृषिः             | 3 0      | 33€   |
| गोलो मासं यवान् पिनेत्    | 99       | 308   | गोवघोऽयाज्यसंयाज्य                 | 33       | ષ્    |
| गोजाविधनधान्यतः           | ą        | Ę     | गोव्रजात्पुनरागतम्                 | 99       | 384   |
| गोजाविमृगपक्षिणाम्        | 12       | षुष   | गोशकृद्रसमेच वा                    | 99       | 93    |
| गोत्ररिक्थांशभागिनः       | ९        | १६५   | गोदाकुन्मृत्तिकाकुशान्             | ₹        | १८२   |
| गोत्ररिक्थानुगः पिण्डः,   | <b>९</b> | १४२   | गोऽश्वोष्ट्रयानप्रासाद             | <b>ર</b> | २०४   |
| गोत्रविक्थे जनयितुः       | 9        | १४२   | ग्तेषु ब्राह्मणसंस्थासु            | 6        | ३२५   |
| गोदो ब्रधस्य विष्टपम्     | 8        | २३१   | गोस्वाम्यनुमते भृत्यः              | 6        | २३१   |
| गोधा गां वाग्गुदो गुड्म्  | 97       | ६४    | गौडी पैष्टी च माध्वी च             | 99       | 68    |
| गोपः क्षीरश्वतो यस्तु     | 6        | २३१   | गौरजाविकमेव च                      | 90       | 338   |
| गोपालो दासनापितौ          | 8        | २५३   | गौरन्धेवैक <b>वे</b> दमनि          | ३        | 383   |
| गोप्ता गोर्बाह्मणस्य च    | 33       | ७९    | गौरवेणातिरिच्यते                   | 2        | १४५   |
| गोक्षारं धर्ममात्मजं      | ঙ        | 38    | गौरश्वः सूर्यरत्रमयः               | 4        | १३३   |
| गीर्बाजकाञ्चनैवैंश्यम्    | 6        | 66    | ग्रंथिभ्यो धारिणो वराः             | 98       | १०३   |
| "                         | 6        | ११३   | प्रसेदर्थं कथंचन                   | 6        | ४३    |
| गोमूत्रमग्निवर्णं वा      | 33       | ५३    | प्रहणान्तिकमेव च                   | 3        | 9     |
| गोब्राह्मणस्य चैवार्थे    | ų        | ९५    | ग्रहीता यदि नष्टः स्यात्           | 4        | १६६   |
| गोब्राह्मणहिते रतः        | 99       | 96    | ग्रामं ग्रामञ्जताध्यक्षः           | •        | 999   |
| गोभिः प्रवर्त्तिते तीर्थे | 33       | १९६   | ग्रामं वा वेश्म वाऽ <b>ऽ</b> रृतम् | 8        | ७३    |
| गोभिरश्रेश्च यानैश्च      | 3        | ६४    | <b>त्राम</b> घाते हिताभक्ने        | ९        | २७४   |
| गोमयस्य गुडस्य च          | 6        | ३२६   | <b>यामजातिसमूहे</b> षु             | 6        | २२१   |
| गोमयेनोपलेपयेत्           | Ę        | २०६   | ग्रामदोषान्समुत्प <b>न्ना</b> न्   | 9        | 998   |
| गोमायुविरुते तथा          | 8        | 994   | यामम <b>न्नार्थमाश्रयेत्</b>       | Ę        | ४३    |
| गोमायोः कपिकाकयोः         | 3 3      | 348   | प्रामयाजिकृते तथा                  | 8        | २०५   |
| गोमिनामेव ते वत्साः       | ९        | 40    | यामस्य स्यात्समन्ततः               | 4        | २३७   |
| गोमुत्रं गोमयं क्षीरम्    | 99       | २१२   | प्रामस्याधिपतिं कुर्यात्           | •        | 994   |
| गोमुत्रेणाचरेत्स्नानम्    | 3 3      | १०९   | य्रामाः सामन्तवासिनः               | 6        | २५८   |
| गोमूत्रेणोदकेन वा         | ષ        | 151   | प्रामादरण्यं निःसत्य               | દ્       | 8     |
| गोयानेऽप्सु दिवा चैव      | 3 3      | 108   | मामादाहत्य वाश्वीयात्              | Ę        | २८    |
| गोरकृत्वा सु शक्तितः      | 33       | 333   | प्रामान्तीबेऽथवा पुनः              | ઢ        | 380   |
|                           |          |       |                                    |          |       |

| पाद                              | अ०       | श्लो० | पाद                        | अ०       | श्लो॰      |
|----------------------------------|----------|-------|----------------------------|----------|------------|
| ग्रामान्ते गोन्रजेऽपि वा         | 8        | 998   | भ्रन्धर्मेण न दुष्यति      | 6        | 388        |
| <b>)</b>                         | 33       | 96    | ष्राणेन सुकरो हन्ति        | Ę        | २४१        |
| ग्रामदोषान्स <b>मुत्पन्नान्</b>  | •        | 398   | <b>ब्रातिर</b> घेयमचयोः    | 33       | ē 3        |
| ग्रामिकः शनकैः स्वयम्            | <b>9</b> | 998   | অ                          |          |            |
| <b>ग्रामिक्स्तान्यवाप्नुगात्</b> | <b>v</b> | 396   | चक्रभङ्गे तथैव च           | 4        | २९१        |
| यामीयक्कुलानां च                 | c        | २५४   | चक्रवृद्धि समारूढः         | 6        | १५६        |
| प्रामेषु नगरेषु च                | 8        | 800   | चकवृद्धिः कालवृद्धिः       | 6        | १५३        |
| "                                | 90       | 48    | चकाह्यं ग्रामकुक्कुटम्     | ų        | 9 २        |
| ग्रामेष्वपि च ये केवित्          | ९        | २७१   | चक्रिणो दशमीस्थस्य         | <b>ર</b> | १३८        |
| प्रास्यैः ऋष्याद्भिरेव च         | 99       | १९९   | चक्षुर्नासा च कर्णी च      | c        | 354        |
| या <b>साच्छादनमत्यन्तम्</b>      | ९        | २०२   | चक्षुषा चेष्टितेन च        | 6        | <b>३</b> ५ |
| ग्रीवायां भृषणेषु च              | 6        | २८३   | चक्षूंपि च मनांसि च        | હ        | ६          |
| ग्रीष्मे पञ्चतपास्तु स्यात्      | ६        | २३    | चण्डालः प्रेत्य जायते      | 33       | 85         |
| घ                                |          |       | चण्डालपु <b>क्</b> सानां च | 12       | પ્         |
| घंटाता ड़ोऽरुणोदये               | 90       | ३३    | चण्डालश्च नराधमः           | 30       | 78         |
| घातयेदविचारयन्                   | ٥,       | २७०   | चण्डालश्चाधमो नृणाम्       | 30       | १२         |
| घातयेद्धार्मिको नृपः             | 9        | २७०   | ,, ,,                      | 30       | १६         |
| घातयेद्विविधैर्दण्ड <u>ै</u> ः   | ዓ        | २७५   | चण्डालश्वपचानां तु         | 30       | પ્યુ ધુ    |
| घुष्टान्नं च विशेषतः             | 8        | २०९   | चण्डालहस्तादादाय           | 30       | 308        |
| घृतं तेजस्तिलाः प्रजाः           | 8        | 358   | चण्डालात्पाण्डुसोपाकः      | 30       | ३ ७        |
| घृतं प्राश्य विद्युद्धयति        | 4        | १०३   | चण्डालाद्येश्च दस्युभिः    | 4        | 939        |
| <b>3</b> 1 <b>3</b> 5            | 33       | 188   | चण्डालान्स्यस्त्रियो गत्वा | 33       | 994        |
| घृतं मधु <b>चतुष्पथम्</b>        | 8        | ३९    | चण्डालेन तु सोपाकः         | 30       | ३८         |
| घृतकुम्भं वराहे तु               | 33       | १३४   | चतस्रस्तु यदि स्त्रियः     | ९        | 386        |
| <b>घृतप्राशनमाचरे</b> त्         | ષ        | 188   | चतुःसुवर्णान्षण्निष्कान्   | ૮        | २२०        |
| घृतप्राशो विशोधनम्               | 3 3      | १४३   | चतुःसौवर्णिको निष्कः       | 6        | 930        |
| <b>घृतबिन्दुरिवास्भ</b> सि       | g        | ₹8    | चतुरः प्रातरश्रीयात्       | 33       | २१९        |
| घृतमग्नी यथाविधि                 | 4        | 308   | चतुर्रोऽशान्हरेद्विप्रः    | ٩,       | १५३        |
| घृताको वाग्यतो निशि              | ९        | ६०    | चतुरो बाह्मणस्याचान्       | ¥        | २४         |
| घोरस्तस्य परिम्रहः               | 8        | ८६    | चतुरो व्यतिनोऽभ्येति       | 33       | 3 5 3      |
| घोरेऽस्मिन्भूतसंसारे             | 3        | ५०    | चतुरोऽत्तमिते सूर्ये       | 99       | २९१        |

| पाद                    | अ०  | ঞ্চা৹       | पाद                        | अ०  | श्लो०      |
|------------------------|-----|-------------|----------------------------|-----|------------|
| चतुर्णामपि चैतेषाम्    | ષ્ઠ | 4           | चत्वार्याहुः सहस्राणि      | 9   | ६९         |
| <b>27</b>              | ९   | २३६         | चन्द्र विसेशयोश्चैव        | y   | ૪          |
| चतुर्णामपि निष्कृतिः   | 99  | 309         | चंद्रस्याघ्नेः पृथिष्याश्च | ٩   | ३०३        |
| चतुर्णामपि पण्डिताः    | G   | 908         | चंद्रस्यैति सलोकताम्       | 3 3 | २२०        |
| चतुर्णामपि वर्णानाम्   | 3   | 900         | चंद्राकों झियमानिलाः       | 6   | ८६         |
| 77 77                  | ક્  | २०          | चमसानां प्रहाणां च         | 4   | 9 9 E      |
| <b>,</b>               | 4   | <i>પ</i> ુછ | चमसानामिवाध्वरे            | Ę   | ५३         |
| "                      | 6   | ३५९         | चरंश्चांद्रायणं वतम्       | 3 3 | २१७        |
| "                      | 33  | १३८         | चरं स्थाण्वनुपृवेशः        | રૂ  | २०१        |
| चतुर्णामाश्रमाणो च     | ø   | 99          | चरन्तीनां च कामतः          | ч   | ९०         |
| चतुर्थः संप्रदातेषाम्  | ९   | १८६         | चरन्तीनां मिथो वने         | 6   | २३६        |
| चतुर्थ एकजातिस्तु      | 30  | 8           | चरमं चैव संविशेत्          | 2   | 188        |
| चतुर्थकालमभीयात्       | 99  | 909         | चराणाम <b>ज</b> मचराः      | ч   | २९         |
| चतुर्थकाछिको वा स्यान् | Ę   | 38          | चरितब्यमतो नित्यम्         | 33  | ५३         |
| चतुर्थमाददानोऽपि       | 30  | 388         | चरूणां सुक्खुवाणां च       | ч   | 990        |
| चतुर्थमायुषो भागम्     | 8   | 3           | चरेत्कृच्छ्रं द्विजोत्तमः  | 4   | २१         |
| <b>57</b> 97           | ६   | ३३          | चरेत्सान्तपनं कृच्छ्रं     | 99  | १२४        |
| चतुर्थाशाश्च पादिनः    | 6   | २१०         | "                          | 33  | १६४        |
| चतुर्थे मासि कर्तव्यम् | २   | 8 8         | चरेद् बह्यहणो वतम्         | 33  | 303        |
| चतुर्भिरपि चैवैतैः     | Ę   | ९ १         | चरेद्धेक्षं यथाविधि        | 3   | ४८         |
| चतुर्भिरितरैः सार्धम्  | 3   | ४६          | चरेद्वे मूल्यतोऽपि वा      | ९   | २८७        |
| चतुर्वर्षशतायुषः       | 3   | ८३          | चरेयुः पृथिवीं दीनाः       | ९   | २३८        |
| चतुर्वेदसमं पुण्यं     | 35  | 30          | चर्मकारः प्रध्यते          | 30  | <b>३</b> ६ |
| चतुष्वेवानुपूर्वशः     | ₹   | ३९          | चर्मचार्मिकभाण्डेषु        | 4   | २८९        |
| चतुष्कं कामजे गणे      | 9   | ५०          | चर्मणां वैदलस्य च          | G   | १३२        |
| चतुष्पथारचेत्यसृक्षाः  | ς.  | २६४         | चर्मणा तेन संवृतः          | 33  | 306        |
| चतुष्पात्सकलो धर्मः    | 3   | 69          | चर्माणि ब्रह्मचारिणः       | ?   | 83         |
| चत्वारः पृथगाश्रमाः    | Ę   | 60          | चर्मावनद्धं दुर्गन्धि      | ६   | ७६         |
| चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् | १२  | ९७          | चाक्षुषश्च महातेजाः        | 3   | ६२         |
| चत्वारस्तूपचीयन्ते     | 6   | १६९         | चाण्डालश्च वराहश्च         | ३   | २३९        |
| चत्वारि तस्य वर्धन्ते  | 7   | 923         | चाण्डाख्या तावदेव तु       | 6   | ३७३        |

| पाद                          | अ० | स्रो० | पाद                    | अ०       | श्हो॰      |
|------------------------------|----|-------|------------------------|----------|------------|
| चातुर्मास्यानि चाहरेत्       | Ę  | 10    | चेलचर्माभिषाणां च      | 11       | 3 € 19     |
| चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाः     | 12 | ९७    | चेलवचर्मणां ञुद्धिः    | 4        | 338        |
| चातुर्वर्ण्यस्य कीर्तितः     | 90 | 939   | चेष्टनस्पर्शनेऽनिलम्   | 98       | 120        |
| चातुर्वर्ण्यस्य कृत्स्नोऽयम् | 12 | 9     | चेष्टया भाषितेन च      | 6        | २ ६        |
| चातुर्वर्ण्येप्रसूय ते       | 90 | ३०    | चेष्टायै कर्मणामहः     | 3        | ६५         |
| चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः    | 90 | ६३    | चेष्टाश्चैव विजानीयात् | •        | 188        |
| चान्द्रायणं चरेन्मासम्       | 99 | 81    | चैत्यद्वमश्मशानेषु     | 30       | 40         |
| चान्द्रायणं वा श्रीन्मासान्  | 99 | १०६   | चैलनिर्णेजकस्य च       | 8        | २१६        |
| चान्द्रायणमथापि वा           | 33 | 330   | चैठाशकश्च भवति         | 98       | ७२         |
| चान्द्रायणविधानैर्वा         | Ę  | २०    | चोदितो गुरुणा नित्यम्  | 7        | 363        |
| चारचक्षुर्महीपतिः            | 9  | २५६   | चोद्यमानं सिसृक्षया    | 3        | 64         |
| चारणाश्च सुपर्णाश्च          | 12 | 88    | चोरैरुपप्छते ग्रामे    | 8        | 336        |
| चारान्सम्यग्विधाय च          | •  | 388   | चौद्रमौक्षीनिवन्धनैः   | 2        | २७         |
| चारेणोत्साहयोगेन             | 9  | २९८   | चौरवत् किल्बिषं भवेत्  | ૮        | २९६        |
| चारेश्वानेकसंस्थानेः         | ९  | २६१   | चौरध्याञ्चादिभिर्भयैः  | 3 3      | 332        |
| चारैश्चाप्य नुचारयेत्        | ९  | २६६   | चौरस्यामोति किल्बिषम्  | 6        | 80         |
| चाषं मण्डूकमेव च             | 33 | १३१   | चौराणां भक्तदायकाः     | 9        | २७६        |
| चिकित्सकस्य मृगयोः           | 8  | २१२   | चौरिकानृतमायाभिः       | 3        | ८२         |
| चिकित्सकानां सर्वेषाम्       | ९  | २८४   | चौरैर्हतं जलेनोढम्     | 4        | १८९        |
| चिकित्सकान्देवलकान्          | 3  | १५२   | च्युता वर्णा द्यनापदि  | १२       | <b>9</b> 0 |
| चिकीर्षन्नपनोदनम्            | 99 | २५२   | छ                      |          |            |
| चिकीर्षन् हितमात्मनः         | 6  | ३९०   | छत्राकं विड्वराहं च    | 4        | 98         |
| चित्तं निश्चय उच्यते         | 33 | 80    | छत्रोपानहमासनम्        | <b>ર</b> | २४६        |
| चिन्तयेद्धर्मकामार्थान्      | 9  | 343   | छद्मनाचरितं यश्व       | 8        | १९९        |
| चिरं तिष्ठति सेन्द्रियः      | 3  | 44    | छग्रना चोपपादितम्      | 9,       | ७२         |
| चिरस्थितमपि त्वाद्यम्        | 4  | २५    | छन्दोगं तु समाप्तिकम्  | Ę        | 384        |
| चिह्निता राजशासनैः           | 90 | ५५    | छन्नं दुहितृविक्रयम्   | 9        | ९८         |
| चीरवासा द्विजोऽरण्ये         | 11 | 303   | <b>37 27</b>           | ९        | 900        |
| चीरीवाकस्तु लवणम्            | 92 | ३६    | <b>छ</b> लेनाचरितेन    | 6        | ४९         |
| चुल्ली पेषण्युपस्करः         | Ę  | ६८    | छाग्निको लोकदभ्भकः     | 8        | 384        |
| चूडाकर्म द्विजातीनाम्        | २  | ३५    | छायायामन्धकारे वा      | 8        | 43         |
|                              |    |       |                        |          |            |

| पाद                          | अ०  | श्लो०  | पाद                        | अ०       | श्लो० |
|------------------------------|-----|--------|----------------------------|----------|-------|
| छाया स्वो दासवर्गश्च         | 8   | 164    | जननेऽप्येवसेव स्यास्       | 4        | ह ३   |
| छिद्रं च वारयेत्सर्वम्       | 6   | २३९    | जनन्यां संस्थितायां तु     | ९        | १९२   |
| छिष्ननास्ये भग्नयुरी         | 6   | २९१    | जनयन्ति विगर्हितान्        | 90       | २९    |
| छिम्रयिखा प्रवासयेत्         | 6   | ३५२    | जनयन्ति स्वयोनिषु          | 30       | २७    |
| खुच्छुन्दरिः ग्रुभान्गन्धान् | 98  | ६५     | जनयन्त्यव्रतांस्तु यान्    | 90       | २०    |
| खुरिकायाश्च भेदने            | 6   | ३२५    | जनियस्वा सुतं तस्याम्      | ₹        | 90    |
| छेत्तब्यं तत्तदेवास्य        | 6   | २७९    | जन्यज्येष्ठेन चाह्नानम्    | ९        | १२६   |
| छेदने चैव यंत्राणाम्         | 4   | २९२    | जन्मतो ज्येष्टता स्मृता    | <b>९</b> | १२६   |
| छेदने जप्यमृक्शतम्           | 93  | १४२    | जन्मतो ज्यैष्ट्यमुच्यते    | ९        | 124   |
| छेदयेत्प्रथमे ग्रहे          | ٩   | २७७    | जन्मनाम्नोरवेदने           | ų        | ६०    |
| <b>छेद्</b> येदविचारयन्      | C   | २८३    | जन्मन्येकोदकानां तु        | 4        | ও 💲   |
| छेदयेक्षवज्ञाः क्षुरैः       | ९   | २९२    | जन्मप्रमृति यिकचित्        | 6        | ९०    |
| छेदवर्जं प्रणयनम्            | 6   | २७७    | जन्मचृद्धिक्षयैर्नित्यम्   | १२       | १२४   |
| ज                            |     |        | जपंस्तरत्समन्दीयम्         | 99       | २५३   |
| जगतश्च समुत्पत्तिम्          | 9   | 999    | जपतां जुह्नतां चैव         | ß        | १४६   |
| जगद्गोगाय कल्पते             | ø   | २२     | जपन्नुपवसेहिनम्            | ₹        | २२०   |
| जगामाभ्यहंणीयताम्            | Ŗ   | २३     | जपन्वान्यतमं वेदम्         | 33       | ७५    |
| जग्ध्वा चैवाहुतं हविः        | 92  | ६८     | जपन्च्याहतिपूर्विकाम्      | ₹        | 96    |
| जम्धाश्वनकुलस्य च            | 3 9 | १५९    | जपहोमैरपैत्येनः            | 90       | 999   |
| जग्ध्वा ह्यविधिना मांसम्     | ų   | ३३     | जपहोमैर्द्विजोत्तमः        | 33       | ३४    |
| जघन्यं सेवमानां तु           | 6   | ३६५    | जिपत्वा त्रीणि सावित्र्याः | 33       | १९४   |
| जद्यम्यप्रभवो हि सः          | 6   | 200    | जित्वा पौरुषं सूक्तम्      | 33       | २५१   |
| जवन्या तामसी गतिः            | 98  | ४२     | जपेच जुहुयाचैव             | 8        | १४५   |
| जघन्या राजसी गतिः            | 98  | ४५     | जपेदशुचिदर्शने             | ď        | ८६    |
| जघन्यो बधमहति                | 6   | ३६६    | जपेद्वा नियताहारः          | 33       | ७७    |
| जटाश्च बिश्टयासित्यम्        | Ę   | ६      | जपोऽहुतो हुतो होमः         | 3        | હ છ   |
| जटिलं चानधीयानम्             | રૂ  | 3 14 3 | जप्तवा वा नम इत्यृचम्      | 33       | २५६   |
| जटी बहाहणो वतम्              | 33  | 126    | जप्येन तपसैव च             | 9 9      | १९३   |
| जडमूकान्धबधिराः              | 33  | ५२     | जप्येनैव तु संसिध्येत्     | 2        | ৫৩    |
| जडमुकान्धबधिरान्             | •   | 186    | जयप्रेप्सुरपेतभीः          | •        | 390   |
| जडवल्लोक आचरेत्              | 7   | 330    | जयेत्स्वर्गं तथाव्रतः      | 8        | २४६   |

| पाद                      | अ०       | श्हो० | पाद                         | अ०        | श्चो०     |
|--------------------------|----------|-------|-----------------------------|-----------|-----------|
| जरया चाभिभवनम्           | ६        | ६२    | जामयोष्सरसां स्रोके         | 8         | 308       |
| जरां चैवाप्रतीकाराम्     | <b>3</b> | ८०    | जामयो यानि गेहानि           | 3         | 46        |
| जराशोकसमाविष्टम्         | ६        | 99    | जायते जीवजावकः              | 92        | ६६        |
| जलक्षीरघृतानिलान्        | 33       | २१४   | जायते वर्णसंकरः             | 6         | ३५३       |
| जलबुक्षसमन्वितम्         | •        | ७६    | जायते हेमकर्तृषु            | 9 2       | ६९        |
| जाङ्गलं सस्यसंपन्नम्     | <b>S</b> | ६९    | जायन्ते दुर्विवाहेयु        | ३         | 83        |
| जातं संपद्यते यथा        | 90       | ६९    | जायन्तेऽनिष्कृतैनसः         | 3 3       | <b>43</b> |
| जातः पुत्रो यथौरसः       | <b>Q</b> | 184   | जायन्ते वर्णदूषकाः          | 30        | ६९        |
| जातकर्म विधीयते          | २        | २९    | जायन्ते वर्णसंकराः          | 30        | 92        |
| जातदन्तस्य वा कुर्युः    | 4        | 90    | "                           | 80        | २४        |
| जातबाह्यणशब्दस्य         | 30       | १२२   | जायन्ते शिष्टसंमताः         | 3         | ३९        |
| जातस्य परिपालनम्         | ९        | २७    | जायन्ते सद्घिगर्हिताः       | 33        | ५२        |
| जातानां च स्वयं वने      | 33       | 188   | जायां रक्षन्हि रक्षति       | ९         | 9         |
| जाति स्मरति पौर्विकीम्   | 8        | 188   | जायायास्तद्धि जायात्वम्     | ९         | 6         |
| जातिजानपदान्धर्मान्      | 6        | 83    | जारजातककामजी                | ९         | 183       |
| जातिभ्रंशकरं कर्म        | 33       | १२४   | जालान्तरगते भानौ            | 6         | १३२       |
| जातिभ्रंशकरं स्मृतम्     | 33       | ६७    | जिघांसन्तो महीक्षितः        | હ         | ८९        |
| जातिमात्रोपजीविनाम्      | 98       | 338   | जिघांसया ब्राह्मणस्य        | 33        | २०६       |
| जातिमात्रोपजीवी वा       | 6        | २०    | जितकोधो जितेन्द्रियः        | 6         | १७३       |
| जातिहीनांश्च नाक्षिपेत्  | 8        | 383   | जितेन्द्रियो हि शक्रोति     | <b>'9</b> | 88        |
| जातिहीनाः पृथक्त्रयः     | 30       | 34    | जित्वा संपूजयेद्देवान्      | 9         | २०१       |
| जातो नार्यामनार्यायाम्   | 30       | ह् ७  | जिह्वायाः प्राप्तुयाच्छेदम् | c         | २७०       |
| जातो निषादाच्छूद्रायाम्  | 90       | 96    | जीनकार्मुक्खस्तावीन्        | 33        | १३८       |
| जातोऽप्यनार्यादार्यायाम् | 30       | € છ   | जीर्णानि चैव वासांसि        | Ę         | 94        |
| जात्यन्धबधिरौ तथा        | ٩,       | २०१   | जीर्णानि वसनानि च           | 30        | १२५       |
| जात्या ज्ञेयास्त एव ते   | 30       | 4     | जीर्णाश्चेव परिष्छदाः       | 90        | १२५       |
| जात्या भवति पुक्कसः      | 30       | 16    | जीर्जोद्यानान्यरण्यानि      | 9         | २६५       |
| जानकपि हि मेधावी         | 2        | 330   | जीवंस्तु स्नातको द्विजः     | ૪         | 93        |
| जानसप्यम्यथा नरः         | G        | १०३   | जीवतश्च मृतस्य च            | 33        | 30        |
| जानीयादस्थिरां वाचम्     | 16       | 9     | जीवतो वा सृतस्य वा          | ખ         | १५६       |
| जानीयाम्यसनं महत्        | 9        | २९५   | जीवन्ति च शतं समाः          | 3         | 80        |

## मनुपादानुकमखी।

| पाद                            | अ    | ० स्रो० | पाद   | अ               | ० स्रो     |
|--------------------------------|------|---------|---|-----------------|------------|
| जीवन्तीनां तु तासां ये         | ٠    | : २९    | ज्ञानं तपोऽग्निराहारः   | ·               |            |
| जीवसंज्ञोऽन्तरास्मान्यः        | 9 =  | १ १३    | र ज्ञानं तपोऽग्निराहारः  र ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि वा  श ज्ञानदो धार्मिकः ग्रुखिः  श ज्ञाननिष्ठा द्विजाः केचित्  श ज्ञाननिष्ठेषु कन्यानि  श ज्ञानमूलां कियामेषाम्  श ज्ञानविज्ञानवेदिना  श ज्ञानाञ्चानकृतं कृत्स्नम्  श ज्ञानात्साम्यं तु गच्छति |                 | 266        |
| जीविताच सवान्धवः               | 9    | 111     | •   | Ę               |            |
| जीवितात्ययमाप <b>न्नः</b>      | 30   | ४०१     |   |                 |            |
| जीवेच्छिल्पेरगर्हितैः          | ९    | . હપ્   |   | `<br>` <b>3</b> |            |
| जीवेत्कारुककर्मभिः             | 30   | ९९      | _   | ૪               | २ <i>४</i> |
| जीवेत्क्षत्रियधर्मेण           | . 90 | 63      |   | 9               | 8.8        |
| र्जावेदुत्कृष्टकर्मभिः         | 30   | ९६      |   | 99              | १४५        |
| जीवेदेतेन राजन्यः              | ە 3. | ९५      | •   | 33              | १७५        |
| जीवेद् बाह्यणजीविकाम्          | 8    | 33      | ज्ञानिभ्यो ब्यवसायिनः   | 3 2             | १०३        |
| जीवेद्वापि पितामहः             | ३    | २२१     | ज्ञानेन परिगृह्य तान्   | 2               | 949        |
| जीवेद्वैश्यस्य जीविकाम्        | 90   | ८२      | ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्  | ર               | 96         |
| जीवेश्वियममास्थिता             | ९    | ७५      | ज्ञानेनैवापरे विधाः   | 8               | २४         |
| जुगुप्सेतैव सर्वशः             | Ę    | ५८      | ज्ञानोत्कृष्टाय देयानि  | ą               | 132        |
| जुहु <b>यात्सर्पिषा</b> ऽहुतीः | 3 9  | 336     | ज्ञेयः स्त्रीपुंसयोः परः  | 9               | 909        |
| जुहोतियजतिकियाः                | २    | 82      | ज्ञेयो नान्यस्य कस्यचित्  | <b>ર</b>        | 3 €        |
| गुह्नन्तः स च यस्य तत्         | 19   | ३७      | ज्यायसे मानवर्धनम्  | ९               | 394        |
| जैक्षयं च मैथुनं पुंसि         | 33   | ६७      | ज्यायस्यां च स्वसर्यपि  | <b>ર</b>        | १३३        |
| ज्ञातयो गुरुरेव च              | Ę    | 990     | ज्यायांसमनयोर्विद्यात्  | 3               | १३७        |
| ज्ञातयो न स विक्रयः            | ą    | 48      | ज्यायांसमभिवादनम्   | ,<br>2          | 322        |
| ज्ञातस्य तु विशेषतः            | 4    | २१      | ज्यायान्परः परो ज्ञेयः  | 8               | 6          |
| ज्ञाताज्ञातापि वा सती          | ٩,   | १७३     | उथेष्ठः कुर्वीत यौतकम्  | 9               | 238        |
| ज्ञातित्वेनानुपेयास्ताः        | 33   | १७२     | ज्येष्ठः कुलं वर्धयति   | 9               | 909        |
| ज्ञातिप्रायं प्रकल्पयेत्       | ₹    | २६४     | ज्येष्टः पूज्यतमो लोके  | g.              | 909        |
| ज्ञातिभ्यः सत्कृतं दस्वा       | ₹    | २६४     | ज्येष्ठः सद्भिरगर्हितः  | 9               | 909        |
| ज्ञातिभ्यो द्रविणं दस्वा       | ર    | ३१      | ज्येष्ठ एव तु मृह्णीयात्  | 9               | 304        |
| ज्ञातिमज्ञातिमेव च             | ч    | १०३     | ज्येष्टता च निवर्तेत  | 99              | 164        |
| ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः         | 8    | 309     | ज्येष्ठता नास्ति हि स्त्रियः  | 3               | 138        |
| ज्ञातिसंबन्धिभरत्वेते          | 9    | २३९     | ज्येष्टावाप्यं च यस्नम्   | 3 9             | १८५        |
| ज्ञातिसंबन्धियोषितः            | 2    | 133     | ज्येष्ठश्चेव कनिष्ठश्च  | 9               | 112        |
| शास्त्रित्वगुरुसंनिधौ          | 33   | 165     | ज्येष्ठसामग एव च  | § .             | १८५        |
|                                |      |         | <del>-</del>  | 7               | 4 - 3      |

| पाद                           | अ०  | श्लो॰ | पाद                         | अ०         | स्रो० |
|-------------------------------|-----|-------|-----------------------------|------------|-------|
| ज्येष्टस्तु जातो ज्येष्टायाम् | ९   | 128   | तं ज्यायास विचालमेत्        | 6          | 950   |
| ज्येष्टस्य विंश उद्धारः       | ९   | 112   | तं देवनिर्मितं देशम्        | 2          | 99    |
| ज्येष्ठस्यैव विधीयते          | ९   | 119   | तं देवाः स्थविरं विदुः      | ₹          | १५६   |
| ज्येष्ठांशं प्राप्त्याचास्य   | 3 3 | 164   | तं देशकालौ शक्ति च          | 9          | 3 8   |
| ज्येष्टेन जातमात्रेण          | ٩,  | 905   | तं न हुद्धेत् कदाचन         | २          | 388   |
| ्येष्ठे ञ्रातरि धर्मतः        | 9   | 306   | तं धर्मं न विचालयेत्        | •          | 93    |
| ज्येष्ठे मासि नयेत्सीमाम्     | 6   | २४५   | 79 59                       | 12         | 110   |
| ज्येष्ठो ञ्चातृन्यवीयसः       | ٩   | 308   | तं पुत्रं परिगृह्णीयात्     | ۹,         | 303   |
| ज्येष्ठो यर्वायसो भार्याम्    | ٩   | ५८    | तं पूर्वमभिवादयेत्          | २          | 990   |
| ज्येष्ट्यं तत्र न विद्यते     | 9   | २१०   | तं प्रतीतं स्वधर्मेण        | Ę          | Ę     |
| उयैष्ट्यं पूजा च वेश्म च      | ९   | ८५    | तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः       | 32         | ३०    |
| ज्यं।तिरुत्पद्यते भास्वत्     | 9   | 99    | तं मां वित्तास्य सर्वस्य    | 3          | 33    |
| ज्योतिपश्च विकुर्वाणात्       | 3   | 50    | तं यक्षेन जयेह्वोभम्        | •          | ४९    |
| ज्योतिषां चोपसर्जने           | 8   | 304   | तं यस्तु द्वेष्टि संमोहात्  | •          | १२    |
| ज्योतींष्युचावचानि च          | 3   | ३८    | तं राजा निर्धनं कृत्वा      | 30         | ९ ६   |
| ज्वलनाम्बुसमा हि ते           | 30  | १०३   | तं राजा प्रणयन्सम्यक्       | •          | २७    |
| ज्वस्रकास्ये दशाङ्गुरुः       | 4   | २७१   | तं राष्ट्राद्विप्रवासयेत्   | 6          | २१९   |
| भ                             |     |       | तं विगर्हम्ति साधवः         | 9          | ६८    |
| त्रह्या नटाश्चेव मह्याः       | 92  | ४५    | तं शुश्रुपेत जीवन्तम्       | ч          | 949   |
| झला मला नटाश्चैव              | 9 २ | 84    | तं श्राद्धे भोजयेद् द्विजम् | 3          | १३८   |
| सहो महश्च राजन्यात्           | 30  | २२    | तं सहायैरनुगतैः             | 9          | २६७   |
| ट                             |     |       | तं हि स्वयम्भुः स्वादास्या  | <b>T</b> 9 | ९४    |
| टिप्टिमं च विवर्जयेत्         | ч   | 3 3   | तं ह्यस्याहुः परं धर्मम्    | 8          | 180   |
| ड                             |     |       | त एव त्रय आश्रमाः           | <b>ર</b>   | २३०   |
| डिम्भाहबहतानां च              | ખ   | ९५    | त एव हि त्रयो लोकाः         | <b>ર</b>   | २३०   |
| त                             |     |       | त एव हि त्रयो वेदाः         | 2          | २३०   |
| तं करोति शरीरिणम्             | 12  | २५    | त एवोक्तास्त्रयोऽप्रयः      | २          | २३०   |
| त कानीनं वदेशान्ता            | 9,  | 302   | तक्ष्णो वार्धुषिकस्य च      | 8          | 210   |
| तं कामजमरिक्थीयं              | ९   | 180   | तच तसिन्समाहरेत्            | 4          | ३१९   |
| तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते      | 35  | 92    | तच शोध्यमिति स्थितिः        | 9          | २८३   |
| तं चेदभ्युदियाभ्यूर्यः        | ₹   | २२०   | तचामिषेण कर्तस्यम्          | ą          | 128   |

| पाद                       | স্ঠ <u>া</u> ০ | अ०  | पाद                       | अ ७       | श्लो०      |
|---------------------------|----------------|-----|---------------------------|-----------|------------|
| तचैनां चारयेद् वतम्       | 3 3            | १७६ | तत्तत् कामस्य चेष्टितम्   | २         | 8          |
| तजावेताबुभौ गणी           | G              | 88  | तत्तत् कार्यं निवर्त्तेत  | 4         | 990        |
| तज्जेयं विदुषा सर्वम्     | <b>९</b> २     | ३५  | तत्तत् तेनैव भावेन        | 8         | २३४        |
| तडागभेदकं हन्यात्         | ९              | २७९ | तत्तत् पितृणां भवति       | 3         | २७५        |
| तडागस्योदकं हरेत्         | ९              | २८१ | तत्तत् फलमुपाश्रुते       | 12        | ८१         |
| तडागान्युदपानानि          | 4              | २४८ | तत्तत् सर्वं निबोधत       | <b>१२</b> | ५३         |
| तडागारामदाराणाम्          | 99             | ६१  | तत्तत् सेवेत यवतः         | 8         | 949        |
| तडागेषु सरःसु च           | 8              | २०३ | तत्तथा वोऽभिधास्यामि      | ð         | ४२         |
| ततः कर्म समारभेत्         | 9              | ५९  | तत्तथा स्थापयेद्राजा      | ۵         | २६१        |
| ततः प्रभृति यो मोहात्     | ९              | ६८  | तत्तदङ्गं विशिष्यते       | ९         | २९७        |
| ततः सपत्नाञ्जयति          | 8              | १७४ | तत्तदस्य व्रतेष्वपि       | <b>ર</b>  | 308        |
| ततः सिद्धिं नियच्छति      | २              | ९३  | तत्तदेव प्ररोहति          | ९         | 80         |
| "                         | १२             | 33  | तत्तदेव हरेत्तस्य         | 6         | ३३४        |
| ततः स्वमातृतः शेषाः       | ९              | 158 | तत्तद्याद्मत्सरः          | ३         | २३१        |
| ततः स्वयंभूभंगवान्        | 3              | ξ   | तत्तद्यन्नेत वर्जयेत्     | 8         | 948        |
| तत ओंकारमहीत              | २              | ७५  | तत्तद्वोऽहं प्रवक्ष्यामि  | •         | ३६         |
| ततस्तथा स तेनोक्तः        | 3              | ६०  | तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यः     | 7         | २३६        |
| ततो गृहबिंछ कुर्यात्      | 3              | २६५ | तत्तस्मिज्श्रेष्ट मुच्यते | 9         | 290        |
| ततो दुर्गं च राष्ट्रं च   | •              | २९  | तत्तस्मिन् प्रतिपादयेन्   | 9         | 990        |
| ततोऽन्यो नास्त्वपुण्यकृत् | 4              | ५२  | तत्तस्य स्वयमाविशत्       | 3         | २९         |
| ततोऽपरे ज्येष्ठवृषाः      | ९              | १२३ | तत्तस्यैव धनं भवेत्       | ९         | २०६        |
| ततोऽप्यधिकदूषितान्        | 30             | २९  | तत्ते सर्व शुनो गच्छेत्   | 6         | <b>९</b> o |
| ततोऽप्युज्छः प्रशस्यते    | 90             | 992 | तत्पयुर्षितमप्याद्यं      | 4         | २४         |
| ततो भद्राणि पश्यति        | 8              | 308 | तत्पापं शतधा भूत्वा       | 12        | 994        |
| ततो भुक्तवतां तेषाम्      | ર              | २५३ | तत्पापमपसेघति             | 33        | 996        |
| ततोऽर्धं मध्यमस्य स्यात्  | ዓ              | 335 | तित्पण्डाग्रं प्रयच्छेत   | ₹         | २२३        |
| ततोऽर्धदण्डो भृत्यानाम्   | 4              | २४३ | तरपुण्यफलमामोति           | 3         | ९५         |
| ततो विंशं नृपो हरेत्      | 6              | 386 | तस्प्रधानानि यस्य तु      | ર         | 38         |
| ततो विस्तारयेद्वलम्       | •              | 366 | तस्प्रयत्नेन कुर्वीत      | 8         | 3 € 3      |
| तत्कर्ता नरके वसेत्       | 33             | २०७ | तस्रवक्ष्याम्यशेषतः       | ३         | १७९        |
| तत्कार्य पुनरुद्धरेत्     | 9              | २३३ | <b>&gt;&gt;</b>           | ₹         | २६६        |
|                           |                |     |                           |           |            |

| पाद                         | अ०       | <b>স্থা</b> ০ | पाद -                     | <b>810</b> . | स्रो॰ |
|-----------------------------|----------|---------------|---------------------------|--------------|-------|
| तत्याज्ञेन विनीतेन          | <b>Q</b> | 88            | तत्सर्वं विनिवर्तयेत्     | 6            | 984   |
| तत्र कालेन जायन्ते          | 9        | २४६           | तत्सर्व समतां नयेत्       | <b>Q</b>     | 233   |
| तत्र तत्र विपश्चितः         | 9        | 69            | तत्सर्वमाचरेषुकः          | ₹            | २२३   |
| तत्र दण्डोऽविचारितः         | 6        | २९५           | तस्यादायुधसंपन्नम्        | •            | 100   |
| तत्र दह्येत पापकृत्         | 4        | ३७२           | तत्त्वयं नृपतिः कुर्यात्  | 9            | २३४   |
| तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ       | 2        | , 38          | तथर्त्वन्ते द्विजोऽध्वरैः | 8            | २६    |
| तत्र भुक्त्वा पुनः किञ्चित् | 6        | २२५           | तथा कर्माणि देहिनः        | 3            | 30    |
| तत्र यद्यीतिसंयुक्तम्       | 92       | २७            | तथा कारुकुशीलवान्         | 6            | १०२   |
| तत्र यद्रह्मजन्मास्य        | 3        | 300           | तथाकंदं च मण्डले          | 9            | २०७   |
| तत्र यदिक्थजातं स्यात्      | ٩        | 990           | तथा गुरुगतां विद्याम्     | 3            | २१८   |
| तत्र ये भोजनीयाः स्युः      | ર્       | 128           | तथा गृहस्थमाश्रित्य       | 3            | ७७    |
| तन्न राजा भवेदण्ड्यः        | 6        | ३३६           | तथा ग्रामनिवासिनः         | لو           | 33    |
| तत्र वक्तव्यमनृतम्          | 6        | 808           | तथा ग्रामशतानां च         | 9            | 118   |
| तत्र विद्या न वक्तव्या      | ३        | 998           | तथाऽघमर्षणं सूक्तम्       | 3 3          | २६०   |
| तत्र सत्यं बुवन्साक्षी      | 6        | ७४            | तथा च श्रतयो बह्वयः       | ९            | 99    |
| तत्र स्थितः प्रजाः सर्वाः   | ૭        | १४६           | तथा चारैः प्रवेष्टब्यम्   | ٩            | ३०६   |
| तत्र स्वामी भवेदण्ड्यः      | 6        | २९३           | तथा ज्ञानाऽभिना पापम्     | 99           | २४६   |
| तत्रात्मभूतैः कालज्ञैः      | •        | २१७           | तथा तथा कुशलता            | 12           | ७३    |
| तत्रापरिवृतं धान्यम्        | 6        | २३८           | तथा तथा त्वचेवाहिः        | 33           | 216   |
| तत्रासीनः स्थितो वापि       | 6        | 3             | तथा तथा दमः कार्यः        | 6            | २८५   |
| तत्रास्य माता सावित्री      | २        | 9.00          | तथा तथा विजानाति          | · 8          | ₹ 0   |
| तत्रेयं तु व्यवस्थितिः      | 30       | 90            | तथा तथा शरीरं तत्         | 33           | २२९   |
| तत्संसर्गविशुद्धये          | 13       | 989           | तथा तथेमं चामुं च         | 30           | 926   |
| तत्स गृह्णीत नेतरः          | g        | 163           | तथात्मानं निवेदयेत्       | 8            | २५४   |
| तत्सच्चगुणलक्षणम्           | 92       | ३७            | तथा त्यज्ञिमं देहम्       | Ę            | 96    |
| तत्समं दण्डमहित             | 6        | ३२            | तथा दहति वेदज्ञः          | ३ २          | 109   |
| तत्समं दापयेद्दमम्          | 6        | १९२           | तथा दानेन चापदि           | 33           | २२७   |
| तत्समुत्थो हि लोकस्य        | 4        | ३५३           | तथा दुश्चरितं सर्वं       | 3 3          | २६३   |
| तत्सर्व निर्दहन्त्याञ्च     | 33       | 583           | तथा घरिममेयानाम्          | 6            | ३२१   |
| तत्सर्वं प्रतिपद्यते        | •        | ९४            | तथा धर्मो न हीयते         | 9            | 166   |
| <b>33 33</b>                | રૂ       | 399           | तथाऽध्यास्मिकमेव 🖼        | २            | 330   |

| पाद                          | अ०         | श्लो॰ | पाद                       | अ०       | स्रो०      |
|------------------------------|------------|-------|---------------------------|----------|------------|
| तया नश्यति वै क्षिप्रम्      | •          | 8ई    | तथासीनानुपासते            | ¥        | 169        |
| तथा नित्यं यतेयाताम्         | ٩          | 702   | तथा सीमा न नश्यति         | 4        | 280        |
| तथा निमजतोऽधस्तात्           | 8          | 998   | तथा स्यां वीर्यवत्तमा     | ₹        | 118        |
| तथाऽनृचे हविद्ग्वा           | 8          | 185   | तथा स्त्रिष्टकृतेऽन्ततः   | 3        | ८६         |
| तथा पापांकिगृह्धीयात्        | ٩          | ३०४   | तथा हरेत्करं राष्ट्रात्   | ९        | ३०५        |
| सथा पौनर्भवे द्विजे          | Ę          | 969   | तथेदं यूयमप्यय            | 3        | 119        |
| तथा प्रकृतयो यस्मिन्         | •          | ३०९   | तथेन्द्रियःणां दह्यते     | Ę        | 9          |
| तथा प्रयक्षमातिष्ठेत्        | 9          | ६८    | तथैकत्र करे दश            | ч        | १३६        |
| तथा प्रवजितो मुनिः           | 6          | ४०७   | तथैव तृणजातयः             | 9        | 88         |
| तथा प्रहुतमेव च              | 3          | ७३    | तथैव वेदानृषयः            | 3 3      | २४३        |
| तथा बाह्यतरं बाह्यः          | 90         | ३०    | तथैव सप्तमे भक्ते         | 33       | 9 &        |
| तथा बाह्येष्विप क्रमात्      | 90         | २८    | तथैवाक्षेत्रिणे बीजम्     | ९        | પ ૧        |
| तथाऽभिवर्षेःस्त्रं राष्ट्रम् | ዓ          | ३०४   | तथैवाध्यापनादपि           | 30       | 909        |
| तथा यशोऽस्य प्रवते           | 3 3        | 94    | तथैवान्याङ्गनास्वपि       | ९        | 88         |
| तथा युध्येत सम्पन्नो         | <b>v</b>   | 200   | तथैवाप्सरसः सर्वाः        | 97       | 80         |
| सथाऽऽयोगव एव च               | 30         | २६    | तथैवाश्रमिणः सर्वे        | ξ        | ९ •        |
| तथा रक्षेत्रपो राष्ट्रम्     | 9          | 330   | तथोपनिधिहत्त्रीरम्        | 6        | १९२        |
| सथाऽरयो न हिंसन्ति           | •          | ७३    | तथ्येनापि द्युवन् दाप्यः  | 6        | २७४        |
| तथा राज्ञा नियन्तव्याः       | ९          | ३०७   | तदण्डमकरोद् द्विधा        | 3        | <b>१</b> २ |
| तथा राज्ञामपि प्राणाः        | •          | 997   | तदण्डमभवद्धैमम्           | 9        | ९          |
| सथार्याजात आर्यायाम्         | 90         | ६९    | तदध्यास्योद्वहेर्द्वायाम् | 9        | ৩৩         |
| तथाल्पाल्पो ग्रहीतब्बः       | ø          | 929   | तदसं द्विगुणं दाप्यः      | 6        | ३९३        |
| सथा वित्रोध्नुचोऽफ्लः        | 2          | १५८   | तदपत्यतया भृगोः           | Ę        | 3 8        |
| तथा वृद्धिक्षयावुभौ          | 6          | 803   | तद्पत्यस्य वा भवेत्       | ९        | 996        |
| सथा वीक्ष्य नृपो राष्ट्रे    | ø          | 126   | तदप्यक्षयमेव स्यात्       | Ę        | २७३        |
| तथा शस्त्रावकाशदान्          | 9          | २७८   | तदप्येकेन दुष्करम्        | <b>v</b> | ષુષ        |
| तथा शौचमिति स्थितिः          | <b>u</b> g | ९८    | तदर्धिकं पादिकं वा        | ş        | ì          |
| तथा श्राद्धस्य पूर्वाह्मात्  | ¥          | २७८   | तदर्धेनार्धिनोऽपरे        | 6        | २१०        |
| तथाष्ट्री कोधजानि च          | 19         | 84    | तद्वामोस्ययत्नेन          | 4        | 80         |
| तथा सर्व संविदध्यात्         | ø          | 960   | सद्खं सर्ववर्णानाम्       | 3 3      | <b>३</b> ३ |
| तथा सर्चाणि भूतानि           | ٩          | 871   | तदस्याः पावनं स्मृतम्     | 3 3      | 300        |

| पाद                                | अ॰         | श्लो०        | पाद                         | भ          | स्को०          |
|------------------------------------|------------|--------------|-----------------------------|------------|----------------|
| तदहर्योऽधिगच्छति                   | Ŗ          | 240          | सदेषु सर्वभप्येतत्          | 6          | 130            |
| तदा कुर्वीत विग्रहम्               | •          | 900          | तदोकामति मूर्तितः           | 3          | igiq           |
| सदाझेयं वर्त स्मृतम्               | 9          | <b>390</b>   | तद्ग च्छत्य ब्रक्षातथम्     | Ą          | of F.          |
| तदा तु संश्रवेत्श्रिप्रम्          | •          | 108          | त्रद्भाद्यं श्यावहारिकम्    | 6          | 44             |
| सदात्वं च विचारयेत्                | •          | 308          | तदाशीरेव दातव्यम्           | 4          | 308            |
| तदात्वायतिसंयुक्तः                 | 9          | १६३          | त्रदेशकुळजातानाम्           | 4          | ક દ્           |
| तदास्त्रे क्षिप्रनिश्चयः           | 9          | 309          | तद्दोषगुणविद्धि सः          | 6          | ३३८            |
| तदात्वे चाहिपकां पीडाम्            | 9          | १६९          | तस्ररेयुः स्वबान्धवाः       | 6          | 23             |
| सदा द्विधा <del>ब</del> र्ल कृत्वा | 9          | १७३          | तिद्ध कुर्वेन् यथाशकि       | 3 9        | 東北             |
| त्रदा नियुक्ष्याद् विद्वांसम्      | 4          | ९            | "                           | 8          | 18             |
| तदानेन विधानेन                     | 9          | 161          | तिद्धरण्यं यथाविधि          | 6          | 828            |
| तदा मूर्ति विमुद्धति               | 9          | ५६           | ति इ सत्याद् विशिष्यते      | 6          | 308            |
| तदायं सर्वभूतात्मा                 | 9          | 48           | तच्यप्रयं सर्वविद्यानां     | 12         | 64             |
| तदा यायाद् रिपुं प्रति             | •          | 301          | सद्राह्मणेन नात्तव्यम्      | 99         | 94             |
| तदा यायाद् विगृह्येव               | •          | 163          | तद्भुत सर्वं सत्येन         | c          | 60             |
| तदारण्यं समाश्रयेत्                | Ę          | <b>ર</b>     | तद्भवत्यसुखोदकम्            | 99         | 90             |
| तदाळभ्याप्यनध्यायः                 | 8          | 3:0          | तक्कवत्यस्य निष्फछम्        | 30         | 125            |
| तदा विद्यादनध्यायम्                | 8          | 308          | तद्भेक्ष भुग्जपन्नित्यम्    | 9 9        | 306            |
| तदाविशन्ति भूतानि                  | 9          | 96           | तद्रजो प्रतिपं विद्यात्     | २२         | 26             |
| तदा संधि समाश्रयेत्                | •          | १६९          | <b>तद्रपगुण</b> मुच्यते     | 3          | 19:19          |
| तदा सर्व निमीकति                   | 3          | ५२           | तद्वः सर्वं प्रवक्ष्यामि    | Ę          | २२             |
| तदासीत प्रयत्नेन                   | 9          | <b>१७</b> २  | तद्वक्तृननुगच्छति           | 12         | 234            |
| तदा सुखमवामोति                     | Ę          | ८०           | तद्वदन्धर्मतोऽर्थेषु        | 6          | 308            |
| त्तदिस्यूचोऽस्याः साविभ्याः        | <b>ર</b>   | <b>19</b> 19 | सिंहज्ञेयं तु राजसम्        | 32         | 3.5            |
| तदूनानां स्वमातृतः                 | 9          | १२इ          | तद्विप्रलुम्पस्यसुराः       | 3          | 224            |
| तदणं प्राप्तुयात्सर्वम्            | ૮          | 900          | तद्भिसृष्टः स पुरुषो        | 9          | 39             |
| तदेकसप्तिगुणम्                     | 9          | ७९           | सहै युगसहस्रान्तम्          | y <b>9</b> | 13-8           |
| तदेदं चेष्टते जगत्                 | 9          | 45           | सद्धे रक्षांसि भुअते        | , <b>ą</b> | \$400          |
| त्रदेव द्विगुणं भवेत्              | 6          | २६९          | <b>?</b> > <b>!</b> ?       | , <b>ફ</b> | 深浸化            |
| सदेवास्य धनं भवेत्                 | ٩.         | 304          | सद्मतो रतिकाम्यया           | æ          | 1814           |
| सदेवैकमहर्मिशम्                    | <i>8</i> , | 8,6          | <del>राहुकोमकेशदशनाम्</del> | ą          | , 1 <b>1</b> 0 |

| पाद                      | भ०        | स्रो•      | पाद                        | अ०        | स्रो० |
|--------------------------|-----------|------------|----------------------------|-----------|-------|
| तन्तुवायो दशपलम्         | Ŀ         | <b>३९७</b> | तपसेव विशुद्धस्य           | 11        | २४२   |
| तिक्रमेपुरसंनिधौ         | 4         | 969        | तपसैव सुतसेन               | 33        | २३९   |
| तिश्वर्यात्मशुद्धये      | 33        | १६४        | तपसैवासृजद्यभुः            | 19        | २४३   |
| तिक्विषेवेत यो नरः       | 9         | २२८        | तपस्तप्रवादितोऽसृजत्       | 1         | ९४    |
| तन्मनोरनुशासनम्          | 4         | ११९        | तपस्तत्प्वा सुदुश्चरम्     | •         | ३४    |
| 77 77                    | 6         | २७९        | तपस्तप्खासृजद्यं तु        | 3         | ३३    |
| "                        | 9,        | २३९        | तपस्तप्स्यन्द्विजोत्तमः    | <b>२</b>  | १६६   |
| तन्मम स्यात्स्वधाकरम्    | g         | 320        | तपस्तेषां हि साधनम्        | 33        | २३७   |
| तन्मूल्याद् द्विगुणो दमः | 6         | ३२९        | तपोनिश्चयसंयुक्तम्         | 99        | 80    |
| तन्मे रेतः पिता वृङ्काम् | 9         | २०         | तपोनिष्टास्तथापरे          | ર         | १३४   |
| तपःक्षत्रस्य रक्षणम्     | 3 9       | २३५        | त्तपोऽन्तं वेददर्शिभिः     | 33        | २३४   |
| तपः क्षरति विस्मयात्     | 8         | २३७        | तपोबीजप्रभावैस्तु          | 90        | ४२    |
| तपः परं कृतयुगे          | 3         | ८६         | तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तम्   | 3 3       | २३४   |
| तपः परिमहोच्यते          | <b>ર</b>  | 988        | तपोमूलमिदं सर्वम्          | 99        | २३४   |
| तपः शुद्रस्य सेवनम्      | 33        | २३५        | तपो वाचं रति चैव           | 9         | २५    |
| तपः सर्वं समाप्यते       | <b>ર</b>  | २२८        | तपो विद्या च विप्रस्य      | <b>१२</b> | 308   |
| तपः स्वाध्यायनिष्ठाश्च   | 3         | १३४        | तपोविशेषैर्विविध <u>ैः</u> | २         | १६५   |
| तपत्यादित्यवच्चेषः       | ø         | ६          | तपोवीर्यप्रभावेण           | 33        | ३३    |
| तपनं संप्रतापनम्         | 8         | ८९         | तपोवृद्यर्थमात्मनः         | २         | 304   |
| तपश्चरंश्चोघ्रतरम्       | ६         | २४         | तपो हि दुरतिक्रमम्         | 99        | २३८   |
| तपसः पुण्यमुत्तमम्       | 33        | २४४        | तप्तः स्याद्यावकैस्ध्यहम्  | 33        | ૧૨૫   |
| तपसश्चरणैश्चोग्रैः       | ξ         | હખ         | तसकुच्छ्रं चरन्विप्रः      | 99        | २१४   |
| तपसा किल्बिषं हन्ति      | 12        | 308        | तप्तकृच्छ्रं विशोधनम्      | 3 3       | १५६   |
| तपसाऽध्ययनेन च           | 33        | २२७        | तप्तमासेचयेत्तैलम्         | ٠ ٧       | २७२   |
| तपसापनुनुत्सुस्तु        | 33        | 303        | तप्ते स्वप्यादयोमये        | 33        | १०३   |
| तपसा प्रतिपेदिरे         | 33        | २४३        | तमनेन विधानेन              | 6         | २२८   |
| तपसा वेदविसमाः           | <b>Ly</b> | 300        | तमपीह गुरुं विद्यात्       | ₹         | 186   |
| तपसा इतकिल्बिषम्         | 8         | २४३        | तमप्यापानयेत्पुनः          | Ę         | २४२   |
| तपसैव तपोधनाः            | 33        | २४१        | तमर्थं प्रीतिपुर्वकम्      | 6         | 969   |
| तपसैव प्रपश्यन्ति        | 33        | २३६        | तमसा बहुरूपेण              | 3         | ४९    |
| तपसैव प्रसिच्यन्ति       | 11        | २३७        | तमसो छक्षणं कामः           | 98        | 36    |

| पाद                         | अ०       | श्लो०     | पाद                          | अ०       | स्रो॰     |
|-----------------------------|----------|-----------|------------------------------|----------|-----------|
| तमस्तदुपधारयेत्             | 15       | २९        | तस्मात्तरपरिवर्जयेत्         | 8        | २०६       |
| तमस्तरति दुस्तरम्           | 8        | २४२       | <b>,,</b>                    | 6        | 350       |
| तमाचार्यं प्रचक्षते         | 3        | 180       | तसात्तत्राहतो भवेत्          | •        | 140       |
| तमाद्यं दण्डयेद्राजा        | 6        | ३३३       | तस्मात्तयोः स्वयोन्यैव       | 4        | 112       |
| तमाहुः सर्वलोकस्य           | 4        | ३०८       | तस्मात्तस्याञ्जिचर्ष्वनिः    | 8        | 358       |
| तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः    | 12       | ` ९५      | तस्मात्तां परिवर्जयेत्       | 8        | Ę         |
| तमोऽयं तु समाश्रिश्य        | 3        | પુષ       | तस्मात्ताः परिवर्जयेत्       | 8        | 118       |
| तमौरसं विजानीयात्           | 9        | 388       | तसात्पापाट्यमुच्यते          | 3 3      | २३०       |
| तया स काये निर्देग्धे       | 33       | ९०        | तस्मात्पारशवः स्मृतः         | <b>९</b> | 306       |
| तयोः पुण्यफर्लं समम्        | પ્યુ     | ५३        | तसात्पुत्र इति प्रोक्तः      | 9        | १३८       |
| तयोरन्यतरः प्रैति           | <b>ર</b> | 999       | तसास्रजाविशुचर्थम्           | ٩.       | ٩,        |
| तयोरन्यतरेण वा              | ९        | 303       | तसाव्यामोति रक्षितात्        | 33       | २३        |
| तयोरपि कुटुम्बाभ्याम्       | 3 3      | 18        | तसात्सत्यं हि वक्तन्यम्      | 4        | ८३        |
| तयोरेव च याजनम्             | 33       | ६०        | तस्मान्समागमे तेषाम्         | 3 3      | ८३        |
| तयोरेवान्तरं गिर्योः        | ₹        | <b>२२</b> | तस्मात्सर्वाणि भूतानि        | 9        | १०३       |
| तयोर्पडः शतं शतम्           | 6        | ३८८       | तस्मात्साक्ष्यं वदेदतम्      | 6        | ८२        |
| तयोदीनं च कन्यायाः          | 33       | ६०        | तसात्साधारणो धर्मः           | <b>९</b> | ९६        |
| तयोदें वमचिन्त्यं तु        | 9        | २०५       | तस्मात्स्वेनैव वीर्येण       | 33       | ३२        |
| तयोर्नित्यं प्रतीघाते       | 9        | २२२       | तस्मादतिथिरुच्यते            | ર        | 103       |
| तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यात् | 2        | २२८       | तस्मादभिभवत्येष              | છ        | ષ         |
| तयोर्यं स्यात्              | 9        | 191       | तस्मादर्थात्स हीयते          | 6        | પક્       |
| तयोर्हि मातापितरौ           | 9        | 933       | तसादविद्वान् बिभियात्        | 8        | 191       |
| तयोश्चैव विवादिनोः          | 4        | २५४       | तसादसान् सदा युक्तः          | 3        | 306       |
| तयोश्चैव समस्तयोः           | Ę        | ८५        | तस्मादस्य वधं राजा           | 6        | ३८१       |
| तरेदापदमात्मनः              | 33       | इष्ट      | तसादेतत्रयं नित्यं           | 8        | 138       |
| तरूलभेतैव वेतनम्            | 6        | २१६       | तसादेतत्परं मन्ये            | 3 2      | ९९        |
| तरुलोके चूतमुच्यते          | •        | २२३       | तस्मादेताः सदार्षपुज्याः     | 3        | ५९        |
| तस्करप्रतिषेधार्थम्         | 9        | २६६       | तस्मादेतैरधिक्षिप्तः         | 8        | १८५       |
| तस्माच्छरीरमित्याहुः        | 3        | 30        | तस्माद् दुर्गं विधीयते       | •        | <b>48</b> |
| तसाज्येष्ठाश्रमो गृही       | 3        | 30        | तस्माद् चतं न सेवेत          | 9        | २२७       |
| तसासत्परिवर्जयेत्           | ₹        | પુષ્      | तस्माद् द्विजेभ्यो दस्वार्धम | Į 6      | ३८        |

| पाक्                       | अ०  | स्रो०        | पाद                         | अ०         | स्रो०      |
|----------------------------|-----|--------------|-----------------------------|------------|------------|
| तस्माद् धर्म न लोपबेत्     | 6   | 3 8          | तस्मै मां ब्रुहि विप्राय    | ₹          | 114        |
| तस्माद्धमं यमिष्टेषु       | •   | 93           | तसी हव्यं न वातव्यस्        | 3          | 186        |
| तस्माद्धमें सहायार्थम्     | 8   | २४२          | तस्य कर्मविवेकार्थम्        | 9          | 308        |
| तस्माद्धर्मेण तं भजेत्     | 9   | 353          | तस्य कर्मानुरूपेण           | 6          | २०६        |
| तस्माद्धमेरि न हम्तब्बः    | 6   | 94           | तस्य कुर्याष्ट्रपो दण्डम्   | 6          | २२४        |
| तस्माद्धर्या पृथक्षिया     | g   | 999          | तस्य तद्वधंते नित्यम्       | ९          | २५५        |
| तस्माद्वीजं प्रशस्यते      | 90  | ७२           | तस्य तद्वितथं कुर्यात्      | 9          | 50         |
| तस्माद् बाह्मणराजन्यौ      | 99  | ९३           | तस्य तस्य धनं भवेत्         | 9          | 960        |
| तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः       | ч   | ३९           | तस्य ताक्च्छती संध्या       | 3          | <b>६ ९</b> |
| तस्माद्यम इव स्वामी        | C   | 303          | तस्य तेजोमया छोकाः          | Ę          | इ९         |
| तस्माचुग्मासु पुत्रार्थी   | 3   | 86           | तस्य ते नेतरस्य तु          | <b>९</b>   | 969        |
| तस्माचुद्धं विवर्जयेत्     | G   | 399          | तस्य दण्डविकल्पः स्यात्     | <b>Q</b>   | २२८        |
| तस्माद् राज्ञा निधातण्यः   | •   | ८३           | तस्य दण्डविशेषांस्तु        | L          | 199        |
| तस्माद् विमुक्तिमन्बिष्छन् | 99  | २३२          | तस्य देहाद्विमुक्तस्य       | Ę          | 80         |
| तस्माद् वैसानकुशलः         | 99  | ३७           | तस्य नित्यं क्षरत्येष       | ₹          | 300        |
| तस्माञ्च देवाः श्रेयांसम्  | 6   | <b>९</b> ह   | तस्य पुत्रे च पत्न्यां च    | ч          | ८०         |
| तस्माभाष्यधनो यजेत्        | 3 3 | 80           | तस्य प्रक्षुभ्यते राष्ट्रम् | g          | २५४        |
| तस्माश्चिन्यान् विवर्जयेत् | ₹   | ४२           | तस्य प्रेत्य फलं नास्ति     | Ę          | 939        |
| तस्माओहेत विस्तरम्         | 3   | <b>9 २</b> ६ | तस्य भागो न छुप्यते         | 9          | 233        |
| तस्मान्मत्स्यान्विवर्जयेत् | ч   | 94           | तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा      | 99         | २२         |
| तस्मान्मांसं विवर्जयेत्    | Ŋ   | ४८           | तस्य भोगस्य निष्कृतिः       | 6          | 340        |
| तस्मान्मेध्यतमं त्वस्य     | 3   | ९२           | तस्य मध्ये सुपर्याप्तं      | 6          | હ ફ        |
| तस्मिंस्तावत्तपः कुर्यात्  | 9 1 | २३३          | तस्य मूर्ति मनीषिणः         | 9          | 30         |
| तस्मिअज्ञे स्वयं ब्रह्मा   | 3   | ९            | तस्य यः कुरुते द्यलं        | 6          | १६         |
| तस्मिस्तस्मिन्कियाविधौ     | 35  | 60           | तस्य वारि प्रसीदति          | ६          | € છ        |
| तस्मिन्देशे य आचारः        | 7   | 36           | तस्य व्यपैति ब्राह्मण्यं    | 99         | 90         |
| तस्मिष्ठण्डे स भगवान्      | 9   | 12           | तस्य शब्दं गुणं विदुः       | 3          | 94         |
| तस्मिन्युक्तस्यैति नित्यम् | ą   | \$20         | तस्य शास्रेऽधिकारोऽस्मिन    | <b>१</b> २ | 9 €        |
| तस्मिन्स्वपति सुस्थे तु    | \$  | પક્          | तस्य षड्भागभाप्राजा         | 6          | ३०५        |
| ससी दत्तं महाफलम्          | ź   | १२८          | तस्य सर्वाणि भूतानि         | 9          | 9 19       |
| तस्मै नाकुशकं व्यात्       | 3 3 | ३५           | तस्य सीदति तदाष्ट्रम्       | 6          | २१         |

| पाक्                        | अ०          | क्षो॰ | पाद                           | अ•         | <b>₩</b> )•  |
|-----------------------------|-------------|-------|-------------------------------|------------|--------------|
| तस्य सोऽइर्निशस्यान्से      | 3           | 98    | तां रवभिः खाद्येदाचाः         | 6          | <b>3+1</b>   |
| तस्य स्तेयस्य निष्कृतिः     | ઢ           | २१३   | तां साध्वीं विश्ववाश्वित्वा   | <b>, 9</b> | 94           |
| तस्य स्याग्रस्य तख्पजः      | 9           | 9 90  | तांस्तु देवाः प्रपश्यक्ति     | 4          | 44           |
| तस्य स्युर्निर्मणानि च      | Ę           | ५३    | ताः प्रवक्ष्यास्यकेषतः        | 6          | 121          |
| तस्य ह्याञ्ज विनाशाय        | 9           | 95    | ताञ्चिष्याचीरदण्डेन           | 6          | २९           |
| तस्यां चैव प्रसृतस्य        | રૂ          | 9 &   | ताडियस्वा तृणेनापि            | 8          | 3 € €        |
| तस्यां जाताः समांशाः स्य    | ુઃ <i>૬</i> | 940   | 13 93<br>#79mmm               | 3 9        | २०५          |
| तस्यां त्वरोचमानःयां        | Ę           | ६२    | तादमुणा सा भवति               | a q        | <b>२२</b>    |
| तस्याः पुरीषे तन्मासम्      | 3           | २५०   | तारघोहति तत्तस्मिन्           | 9          | 3 &          |
| तस्याः स्याद् हिशतो दम      | : 4         | ३६९   | तादशं फलमामोति                | 9,         | 3 € 3        |
| तस्याददति षड्भागम्          | 6           | રૂપ   | तादशान्सम्प्रवक्ष्यामि        | 4          | ६९           |
| तस्यादोषमदर्शयन्            | 6           | २२५   | ताहरोन शरीरेण                 | 98         | 69           |
| तस्यापि तत्क्षुधा राष्ट्रम् | 9           | १३४   | ताननन्तरनाम्न <del>स्तु</del> | 10         | 38           |
| तस्याप्यन्नं यथाशक्ति       | Ę           | 308   | तानववीरषीन्सर्वान्            | 3          | Ę o          |
| तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्याम्  | ٩           | १३०   | सानानयेद्वशं सर्वान्          | •          | 300          |
| तस्यार्थे सर्वभूतानाम्      | 9           | 3.8   | तानि कारुककर्माणि             | 30         | 300          |
| तस्याशु कत्ये अंगुल्यो      | 4           | इ६ ७  | तानि कृत्याहतानीव             | 3          | 46           |
| तस्यास्यनिर्गतं धर्मम्      | 9 3         | १२६   | तानि निर्हरतो छोभात्          | 6          | <b>३९</b> ९  |
| तस्याहुः संप्रणेतारम्       | 9           | २६    | तानि पश्येदतन्द्रितः          | •          | <b>9 2</b> 0 |
| तस्येमान्बाश्रयन्ति षट्     | 3           | 90    | तानि मेध्यानि सर्वशः          | ч          | १३२          |
| तस्येह त्रिविधस्यापि        | 9 2         | ર     | तानि संधिषु सीमायाम्          | C          | २५१          |
| तस्येह भागिनौ दृष्टौ        | 9           | ५३    | तानि सम्यक्त्रवक्ष्यामि       | 2          | ८९           |
| तस्येव वा निधानस्य          | C           | ३६    | तानि सम्बङ्गिबोधत             | 33         | २३१          |
| तस्यैष व्यभिचारस्य          | ९           | २१    | तान्निबोधत कात्स्न्येन        | Ę          | १८३          |
| तस्योत्सर्गेण शुद्धन्ति     | 33          | १९३   | तान्निःस्वान्कारयेन्नृपः      | 9          | २३१          |
| तां तु यः स्तेनयेद्वाचम्    | 8           | २५६   | तान्प्रजापतिराहै स्य          | 8          | २२५          |
| तां व्याद्भवतीत्येवम्       | <b>ર</b>    | १२९   | तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः        | ર          | 158          |
| तां विवर्जयतस्तस्य          | 8           | ४२    | <b>&gt;&gt;</b>               | 90         | २५           |
| तांत्रच श्राद्धे न भोजयेत्  | 3           | 343   | तान्प्रसद्धा नृपो हन्यात्     | ٩          | २,६९         |
| तांत्रच सम्यक् परीक्षयेत्   | 9           | 198   | तान्प्राञ्चोऽहमिति ब्रुयात्   | ą          | १२३          |
| तांशचारियत्वा त्रीन्कुच्छ्र | •           | 999   | तान्यर्वाकालिकतया             | ६२         | 9.5          |

## मनुपादानुकमणी।

| पाद                        | अ०       | श्रो॰      | पाद                         | अ०       | स्हो० |
|----------------------------|----------|------------|-----------------------------|----------|-------|
| ताम्येव पञ्चमूतानि         | 92       | २२         | तावतां न फर्ल तत्र          | ₹        | 305   |
| वान्राजेभेन घातयेत्        | 6        | ३४         | तावतां न भवेदातुः           | ₹        | 308   |
| तान्विदित्वा सुचरितैः      | 9        | २६९        | तावतीं दातुमहित             | 4        | ૧૫૫   |
| तान्बोऽभ्युपायान्वक्ष्यामि | 9 9      | 210        | तावतीं रात्रिमेव च          | 9        | ७२    |
| तान्समासेन वक्ष्यामि       | 92       | ३९         | तावतो ग्रसते प्रेत्य        | 3        | १३३   |
| तान्सर्वानभिसंदध्यात्      | •        | 349        | तावतोऽतन्द्रितान् दक्षान्   | •        | ६१    |
| तान्सर्वान्धातयेद्राज्ञा   | ९        | २२४        | तावतोऽब्दानमुत्रान्यैः      | 8        | १६८   |
| तान्सहस्रं च दण्डयेत्      | 9        | २३४        | तावत्कृत्वो ह मारणम्        | પ્ય      | 36    |
| तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान्   | 90       | २०         | तावत्स्यादशुचिर्विप्रः      | ų        | ७९    |
| तान्हञ्यकञ्ययोर्विप्रान्   | ঽ        | 940        | तावदेवा <b>ञ्जचिर्भवेत्</b> | પ        | ७५    |
| तापसा यतयो विप्राः         | 92       | 88         | तावद् ब्रह्म न कीर्सयेत्    | 8        | 999   |
| तापसेष्वेव विप्रेषु        | Ę        | २७         | तावद् भवत्यप्रयतः           | 99       | १५३   |
| ताभिः सार्धमिदं सर्वम्     | 9        | ₹ ७        | तावद्राजानुपालयेत्          | ૮        | २७    |
| ताभिरग्निमतन्द्रितः        | 2        | १८६        | तावन्त्यब्दसहस्राणि         | 99       | २०७   |
| ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ   | 3        | 90         | तावबान्यं समाचरेत्          | २        | २३५   |
| ताभ्यां स शकलाभ्यां च      | 3        | 33         | तावन्मृद्वारि चादेयम्       | 4        | १२६   |
| तामनेन विधानेन             | 9        | ६९         | तावानेव स विज्ञेयः          | 6        | 998   |
| तामसं गुणलक्षणम्           | 9 8      | ३३         | तावान् बध्यस्य मोक्षणे      | Q        | २४९   |
| 99 99                      | <b>9</b> | <b>ર</b> પ | ताबुभावप्यसंस्कार्यों       | 90       | ६८    |
| तामसीपूत्तमा गतिः          | 98       | 88         | ताबुभौ गच्छतः स्वर्गम्      | 8        | २३५   |
| तामसो रैवतस्तथा            | 1        | ६२         | तावुभौ चौरवच्छास्यौ         | 6        | १९१   |
| तामिस्रमन्धतामिस्रम्       | 8        | 66         | तावुभौ दंडमहतः              | 6        | ३८२   |
| तामिस्रादिषु चोप्रेषु      | 92       | હપ         | ताबुभौ पतितौ स्याताम्       | <b>Q</b> | ६३    |
| ताम्ररूप्यसुवर्णानाम्      | ¢        | 939        | ताबुभौ भूतसंपृक्तौ          | . 9 २    | 18    |
| ताम्रस्य रजतस्य च          | 3 3      | 980        | तावेवोभौ महौजसौ             | 92       | 96    |
| ताम्राय:कांस्यरैत्यानां    | ų        | 338        | ताश्च स्वा चाप्रजन्मनः      | 3        | १३    |
| तास्रिकः कार्षिकः पणः      | ć        | 938        | तासां क्रमेण सर्वासाम्      | ર        | ६९    |
| ता यदस्यायनं पूर्व         | 9        | 30         | तासां चेदवरुद्धानाम्        | 4        | २३६   |
| ता राजसर्पपस्तिसः          | 6        | 133        | तासां पुत्रेषु जातेषु       | ९        | 189   |
| तार्थं दाप्यानि सारतः      | C        | ४०५        | तासां वर्णक्रमेण स्यात्     | ٩        | 63    |
| तावतः संख्यया तस्मिन्      | 4        | 90         | तासां श्रणुत निष्कृतीः      | q        | 99    |

| पाद                         | अ०       | <b>স্থা</b> • | पाद                         | क्ष | <b>स्हो</b> ० |
|-----------------------------|----------|---------------|-----------------------------|-----|---------------|
| तासामपि यथाईतः              | <b>९</b> | १९३           | तीर्थेऽरण्ये वनेऽपि वा      | 8   | 348           |
| तासामाद्याश्चतस्रस्तु       | ₹        | 80            | तुभ्यं कन्यामलंकृताम्       | 3   | 320           |
| तासु तास्विह योनिषु         | 3 2      | 98            | तुरायणं च क्रमशः            | ६   | 3 0           |
| तासु बीजमवासुजत्            | 3        | 6             | तुरीयं तु यवीयसः            | 9   | 992           |
| तास्वेव भूतमात्रासु         | १२       | 99            | तुरीयी ब्रह्महत्यायाः       | 33  | १२६           |
| तिरश्चां चाम्बुचारिणाम्     | 8 2      | <b>પ</b> ્ર   | तुकामानं प्रतीमानम्         | 6   | ४०३           |
| तिरस्कृत्योधरेत्काष्टम्     | 8        | ४९            | तुलायोगांश्च सर्वशः         | ۹,  | ३३०           |
| तिर्यक्वं तामसा नित्यम्     | १२       | 80            | तुषान् भस्म कपालिकाः        | 6   | २५०           |
| तिर्यक्प्रतिमुखागते         | L        | २९१           | तुर्यघोषैः प्रहर्षितः       | 9   | २२५           |
| तिर्यग्जा ऋषयोऽभवन्         | 10       | ५०            | तृचेनाब्दैवतेन वा           | 6   | 90€           |
| तिर्यग्योनिषु जायते         | 92       | q             | तृणं च गोभ्यो प्रासार्थम्   | ઢ   | ३३९           |
| तिर्यग्योनी च जायते         | 8        | २००           | तृणकाष्ठद्रमाणां च          | 33  | 366           |
| तिर्यञ्चः पक्षिणस्तथा       | ų        | 80            | तृणगुल्मलतानां च            | 12  | 46            |
| तिलकाञ्चनसर्पिषाम्          | 8        | २३३           | तृणाझिरिव शाम्यति           | ą   | 986           |
| तिलद्रोणं तु तित्तिरी       | 33       | १३४           | तृणानि भूमिरुदकम्           | 3   | 303           |
| तिरुप्रदः प्रजामिष्टाम्     | 8        | २२९           | तृतीयं तिष्तुः पितुः        | 9   | 380           |
| तिला धान्येन तत्समाः        | 90       | ९४            | तृतीयं धनदण्डं तु           | 6   | १२९           |
| तिला माषास्तथा यवाः         | ९        | ३९            | तृतीयं भागमायुषः            | Ę   | ३३            |
| तिलैर्झीहियवैर्माषेः        | 3        | २६७           | तृतीयं यज्ञदीक्षायाम्       | ₹   | <b>१६</b> ९   |
| तिलैश्च विकिरेन्महीम्       | 3        | २३४           | तृतीयं च प्रतिप्रहः         | 30  | 99            |
| तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेतु      | 33       | 999           | तृतीयिन <b>स्तृतीयांशाः</b> | 6   | २१०           |
| तिष्ठक्रध्व रजः पिबेत्      | 33       | 330           | तृतीये वधमहति               | ٩   | २७७           |
| तिष्ठेतेषां च शासने         | 9        | ३७            | <b>तृ</b> क्षानाचामयेत्रतः  | ¥   | २५१           |
| तिष्टेयुक्तेरधिष्ठितम्      | 6        | 38            | तृ सिद्वीदशवार्षिकी         | 3   | २७१           |
| तिष्ठेद्वा प्रपदैर्दिनम्    | Ę        | २२            | वे गच्छन्ति परं स्थानम्     | 12  | 124           |
| तिस्रोऽशीतीः समाहितः        | 3 3      | २२०           | ते गच्छन्ति युगे युगे       | 10  | ४२            |
| तीक्ष्णश्चेव सृदुश्च स्यात् | <b>y</b> | 980           | ते चापि बाह्यान् सुबहून्    | 9 0 | २९            |
| तीक्ष्णश्चैव मृदुश्चैव      | <b>6</b> | 980           | तेजस्कामो द्विजोत्तमः       | 8   | 88            |
| सीक्ष्णे श्रू छे निवेशयेत्  | ९        | २७६           | तेजोमूर्ति पथर्जुना         | ₹   | ९३            |
| तीरितं चानुशिष्टं च         | ٩        | २३३           | तेजोवृत्तं नृपश्चरेत्       | 9   | ३०३           |
| तीर्थं तद्धस्यकन्यानाम्     | Ę        | 930           | ते तमर्थमपृच्छन्त           | ₹   | 345           |

| पाद                       | अ०  | श्लो०       | पाद                        | अं०        | श्चो०        |
|---------------------------|-----|-------------|----------------------------|------------|--------------|
| ते ते स्युर्कवतो सृषा     | 6   | 48          | तेऽभासात्कर्मणां तेषाम्    | 92         | ७४           |
| ते ऋयो गौरसर्पपः          | 6   | 333         | तेभ्योऽधिमच्छेद्विनयम्     | •          | <b>3 9</b>   |
| तेन गच्छन रिष्यते         | 8   | 106         | तेभ्यो रक्षेत्माः प्रजाः   | •          | 923          |
| तेन चेदविचादस्ते          | 6   | ९२          | तेभ्यो लब्धेन भैक्षेग      | 3 3        | १२३          |
| तेन चैवापि जीव्यते        | 8   | Ę           | ते यान्ति परमां गतिम्      | Ę          | ९३           |
| तेन तुल्यः स्मृतो राजा    | 8   | ८६          | ते वनस्पतयः स्मृताः        | 9          | 80           |
| तेन ते प्रेत्य पशुताम्    | Ę   | 308         | ते वै सस्यस्य जातस्य       | ९          | 28           |
| तेन नारायणः स्मृतः        | 9   | 90          | ते शिष्टा ब्राह्मणा जेगाः  | 12         | 909          |
| तेन दोषेण लिप्यते         | 9   | २४३         | तेषां ग्राम्याणि कार्याणि  | •          | 120          |
| तेन पापेन कर्मणा          | 8   | 990         | तेषां च समुपार्जनम्        | 9          | 142          |
| तेन यद्यत्सभ्टत्येन       | 9   | ३६          | तेषां चावरणे रतः           | 3          | 3 & 3        |
| तेन यायात्सर्ता मार्गम्   | 8   | 306         | तेषां छित्वा नृपो हस्तौ    | ٩          | २७६          |
| तेन सार्घ विनिश्चित्य     | •   | ५९          | तेषां तु समवेतानाम्        | ₹          | 138          |
| तेन स्वर्गे महीयते        | 4   | 944         | तेषां तेषूपजायते           | <b>3</b> R | ७३           |
| ** ;*                     | 4   | <b>333</b>  | तेषां त्रयाणां शुश्रृषा    | <b>ર</b>   | २२९          |
| तेन हन्यादरीन् द्विजः     | 3 3 | ३३          | तेषां स्वगस्थिरोमाणि       | B          | 221          |
| तेनाधर्मेण मुच्यते        | 3 3 | २२८         | तेषां त्ववयवानसूक्ष्मान्   | 3          | 9 &          |
| "                         | 33  | २२ <b>९</b> | तेषां दत्त्वा तु हस्तेषु   | 3          | २२३          |
| तेनानुभूय ता यामीः        | १ २ | 5 9         | तेषां दोषानभिख्याप्य       | 9          | २६२          |
| तेनायुर्वर्धते राज्ञः     | •   | 9 2 6       | तेषां धर्म्यान्यथोदितान्   | 9          | २०३          |
| तेनार्धवृद्धिर्मोक्तव्या  | 6   | 340         | तेषां न दद्याद्यदि तु      | 6          | 828          |
| तेनास्य क्षरित प्रज्ञा    | 2   | ९९          | तेषां निष्ठा तु विज्ञेया   | 6          | २२७          |
| ते निन्दितैर्वर्त्तयेयुः  | 30  | ४६          | तेषां वृत्तं परिणयेत्      | 9          | 3 <b>२ २</b> |
| तेनैव कृत्समामोति         | 3   | २८३         | तेषां वेदविदो ब्रूयुः      | 3 3        | ८५           |
| तेनैव विद्रानासीनान्      | Ę   | २१९         | तेषां षड् बंधुदायादाः      | ९          | 346          |
| तेनैव सार्घ प्रास्येयुः   | 3 3 | 308         | तेषां सततमञ्चानाम्         | 99         | ४३           |
| ते पतन्त्यन्धतामिस्रे     | ¥   | 190         | तेषां सर्वत्रगं तेजः       | ९          | ३२१          |
| ते पापा यान्त्यधोगतिम्    | ३   | ५२          | तेषां सर्वस्वमादाय         | •          | १२४          |
| तेऽपि भोगाय कल्पन्ते      | •   | २३          | तेषां स्नात्वा विशुष्यर्थं | Ę          | ६९           |
| ते पृष्टास्तु यथा व्र्युः | 4   | २६१         | तेषां स्यान्मध्यमं धनम्    | 9          | 313          |
| तेभ्यः कार्यं विजानता     | Ę   | 60          | तेषां स्वं स्वमभिप्रायम्   | •          | 40           |

| पाद                         | अव       | स्रो० | पाद                       | भ०   | स्रो०      |
|-----------------------------|----------|-------|---------------------------|------|------------|
| तेषामजिः स्मृतं शौचम्       | Ę        | 43    | तैर्भूतैः स परित्यकः      | 12   | <b>₹</b> 3 |
| तेषामनुपरोधेन               | <b>२</b> | २३६   | तैर्यम्योनाम्बयोतिगान्    | ø    | 186        |
| तेषामपीह विज्ञेयम्          | ₹        | २००   | तैर्यग्योनास्तथैव च       | •    | 940        |
| तेषामप्येतदादिशेत्          | 3 3      | 198   | तैलं तैलपकः खगः           | 12   | ६३         |
| तेषामर्थे मियुङजीत          | •        | ६२    | तैलं मधु गुडं कुशान्      | 90   | 66         |
| तेषामाद्यमृणादानम् '        | 6        | 8     | तैलबिन्दुरिवाम्भसि        | 9    | 33         |
| तेषामारक्षभूतं तु           | ¥        | २०४   | तैलस्य च घृतस्य च         | 6    | ३२८        |
| तेषामिदं तु सप्तानाम्       | 9        | 19    | तैलिकः कृटकारकः           | 3    | 946        |
| तेषामुत्पन्नतन्त्नाम्       | 9        | २०३   | तैस्तैरुपायैः संगृद्य     | ઢ    | 86         |
| तेषामुकदकमानीय              | 3        | 330   | तोयं हरति रिमिभः          | 9    | ३०५        |
| तेषामृषीणां सर्वेषाम्       | 3        | 998   | तौ तु जाती परक्षेत्रे     | 3    | 904        |
| तेषु तेषु तु कृत्येषु       | 9        | २९७   | तौ धर्म पश्यतस्तस्य       | 9 2  | 98         |
| तेषु दर्भेषु तं हस्तम्      | Ę        | २१६   | तौ नृपेण श्रधर्मज्ञी      | C    | ५९         |
| तेषु सम्यग्वर्तमानः         | ₹        | ч     | तीर्यत्रिकं वृथाट्या च    | 9    | 80         |
| ते षोडश स्याद्धरणम्         | 6        | १३६   | तौ हि च्युती स्वकर्मभ्यः  | 6    | 288        |
| तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु     | <b>ર</b> | २२८   | त्यक्तव्याः कृतलक्षणाः    | 9    | २३९        |
| तेप्वेव नित्यं शुश्रूषां    | 7        | २३५   | त्यक्ताग्निर्वार्धिषस्तथा | Ę    | 343        |
| ते सम्यगुपजीवेयुः           | 90       | 98    | त्यक्ता वा स्यादकारणात्   | 9    | 100        |
| ते सर्वार्थे प्वमीमांस्ये   | )        |       | त्यक्कान्यतमया तनुम्      | Ę    | ३२         |
| (ते सर्वार्थेषु मीमांस्ये,  |          |       | त्यस्का सङ्गाञ्छनैः शनैः  | ६    | 63         |
| मीमांसाशास्त्रानुसारेण      | े २      | 90    | त्यका सङ्गान् परिवजेत्    | Ę    | <b>३३</b>  |
| विचारणीये,                  |          |       | त्यजतो धर्मनैपुणम्        | 90   | ८५         |
| इति वा पाठः)                | j        |       | त्यजन्नपतितानेताम्        | 6    | ३८९        |
| ते सुवर्णस्तु षोडश          | 6        | १३४   | त्यजेकन्यां विगर्हिताम्   | 9    | ७२         |
| तेऽस्य गृह्याणि कर्माणि     | •        | 96    | त्यजेदाश्व्युजे मासि      | Ę    | 94         |
| तेऽस्य सर्वाण्यवेक्षेरन्    | •        | 68    | त्यागिनां कुलयोषिताम्     | Ą    | २४५        |
| तेऽहोराम्रविदो जनाः         | 9        | ७३    | त्यागेन तपसैव च           | 30   | 999        |
| ते होनं कुपिता हन्युः       | ९        | 313   | त्याज्या वा कुलसंनिधौ     | 9    | ૮३         |
| तैः सार्धं चिन्तयेश्वित्यम् | •        | ५६    | त्रपुणः सीसकस्य च         | પ્યુ | 118        |
| तैजसानां मणीनां च           | 4        | 333   | त्रयं व्रह्म सनातनम्      | 9    | २३         |
| तैरेव चावृतो भूतैः          | 92       | २०    | त्रयं सुविदितं कार्यम्    | 9 2  | 904        |

| पाद  | अ०        | स्रो०      | पाद                                     | अ०         | स्रो०      |
|--|-----------|------------|---|------------|------------|
| त्रयः परार्धे क्लिश्यन्ति                    | 6         | १६९        | त्रिभिर्मा <b>सै</b> ब्यंपोहति          | 3 3        | 814        |
| त्रय एवाधनाः स्मृताः                         | 4         | ४१६        | त्रिभिर्व पेंब्यपोहति                   | 33         | 308        |
| त्रयश्चाश्रमिणः पूर्वे                       | १२        | 999        | त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः                  | २          | 99         |
| त्रयस्ते नाम विभ्रति                         | 3         | 840        | त्रियवं त्वेककृष्णलम्                   | 6          | ४३४        |
| त्रयाणामपि चैतेषाम्                          | 3 2       | ३४         | त्रिरब्दस्येह निर्वपेत्                 | Ę          | २८१        |
| त्रयाणामप्युपायानाम्                         | 19        | २००        | त्रिरहिक्किनिशायां च                    | 33         | २२३        |
| त्रयाणामविशेषतः                              | 33        | १३८        | न्निर <b>ह्नो</b> ऽभ्युपयन्नपः          | 33         | २५९        |
| त्रयीनिष्कर्ष <b>मन्व</b> हम्                | 8         | १२५        | त्रिराचामेदपः पूर्वम्                   | <b>ર</b>   | ६०         |
| त्रयी यस्मिन्प्रतिष्ठिता                     | 19        | ' २६५      | त्रिरात्रं क्षेपणं स्मृतम्              | 8          | 999        |
| त्रयोदशी च शेषास्तु                          | Ę         | 80         | त्रिरात्रं स्यादभोजनम्                  | 33         | १६६        |
| त्रयो धर्मा निवर्तन्ते                       | 90        | 99         | त्रिरा <b>न्र</b> मञ्जिचभवेत्           | ų          | ७ ६        |
| त्रयोऽपि विधिवत्कृताः                        | ६         | 90         | त्रिरात्रमशुचि <b>र्भवेत्</b>           | ષ          | 68         |
| त्रयोऽप्येनःसुनिष्कृति <b>म्</b>             | 8 8       | <b>ሪ</b> ዓ | त्रिरात्रमाहुराशौचम्<br>-               | ų          | ८०         |
| त्रयो वर्णा द्विजःतयः                        | 90        | 8          | त्रिरात्राच् <mark>छुद्धिरिष्यते</mark> | ų          | <b>৩</b> গ |
| <b>,,</b>                                    | 33        | 940        | त्रिरात्रेणैव शुद्ध्यति                 | ષ          | 66         |
| त्रसरेणवोऽष्टौ विज्ञेयाः                     | 4         | १३३        | त्रिरात्रैरेव च त्रिभिः                 | પ          | ६४         |
| <del>त्र</del> सरेणुं प्र <del>च</del> क्षते | 6         | १३२        | त्रिरायम्य शनैरसून्                     | 3          | २१७        |
| त्रायते पितरं सुतः                           | ٩         | १३८        | त्रिवे वेदस्य संहिताम्                  | 9 9        | ७७         |
| त्रिंशत्कला मुहूर्तः स्यात्                  | 9         | ६४         | त्रिर्जिपिस्वाघमर्षणम्                  | 3 3        | २५९        |
| त्रिंशद्वर्षों <u>द्वह</u> ेत्कन्याम्        | ٩         | ९४         | त्रिवर्ग इति तु स्थितिः                 | २          | २२४        |
| त्रिगुणं स्याद्वनस्थानाम्                    | ų         | 130        | त्रिवर्गेणाभिवर्धते                     | છ          | २७         |
| त्रिगुणो नगरस्य तु                           | 6         | २३७        | त्रिवारं प्रतिरोद्धा वा                 | 3 3        | 60         |
| त्रिणाचिकेतः पञ्चाग्निः                      | Ę         | १८५        | त्रिविधं कर्म मानसम्                    | 92         | ષ          |
| त्रिदण्डमेतिसिक्षिप्य                        | 35        | 3 9        | त्रिविधं कर्मसंभवम्                     | 3          | 110        |
| त्रिदण्डीति स उच्यते                         | 3 2       | 30         | त्रिविधं च शरीरेण                       | <b>१</b> २ | 4          |
| त्रिपक्षादबुवन्साक्ष्यम्                     | 6         | 909        | त्रिविधिस्त्रिविधः कृत्स्नः             | 12         | પવ         |
| त्रिपदा चैव सावित्री                         | 7         | ८१         | त्रिविधा त्रिविधैषा तु                  | १२         | 83         |
| त्रिप्रकारस्य कर्मणः                         | <b>१२</b> | 48         | त्रिवृताभिष्टुतापि वा                   | 99         | ७४         |
| त्रिभिः कुच्छ्रैर्ध्यपोहति                   | 3 8       | 390        | त्रिष्टता ग्रन्थिनैकेन                  | <b>ર</b>   | ४३         |
| त्रिभिः पञ्चभिरेव वा                         | <b>ર</b>  | ४३         | त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते                 | 9          | १८६        |
| त्रिभिरन्यः प्रवर्तते                        | 8         | Q          | त्रिषु वर्णेषु यानि स्युः               | 6          | १२४        |
|  |           |            |   |            |            |

| पाद                             | अ०  | स्रो०        | पाद                               | स •      | श्लो०      |
|---------------------------------|-----|--------------|-----------------------------------|----------|------------|
| त्रिष्वप्येतेषु दत्तं हि        | 8   | 193          | श्यवरा परिषज् <b>ज्ञेया</b>       | 17       | 992        |
| त्रिष्वप्रमाचन्नेतेषु           | २   | २३२          | त्र्यवरा वापि <b>वृ</b> त्तस्था   | 3 8      | 330        |
| त्रिष्वेतेष्वितकृत्यं हि        | 2   | २३७          | ञ्चवरैः साक्षिभिर्भाष्यः          | ` &      | ξo         |
| त्रिसुपर्णः षडङ्गवित्           | ३   | १८५          | त्र्यष्टवर्षोऽष्टवर्षो वा         | ٩        | ९४         |
| त्रींल्लोकान्विजयेद् गृही       | २   | २३२          | ( अष्टिवर्षां, इति वा पाट         | :)       |            |
| त्रींस्तु तस्माद्धविःशेषात्     | 3   | २१५          | भ्यहं चोपवसेदन्त्यम्              | 33       | २१३        |
| श्रीणि कर्माणि जीविका           | 10  | ७६           | <b>ध्यहं तूपवसेद्युक्तः</b>       | 33       | २५६        |
| त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति         | 3   | २३५          | <b>ध्यहं न कीर्तयेद्रहा</b>       | 8        | 330        |
| श्रीणि देवाः पवित्राणि          | ų   | 920          | त्र्यहं परं च ना <b>श्नीयात्</b>  | 33       | 211        |
| त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः        | २   | ८२           | त्र्यहं प्रातस्थ्यहं सायम्        | 99       | 233        |
| त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत         | 9   | ९०           | <b>घ्यहमद्यादियाचितं</b>          | 33       | २११        |
| त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि       | Ę   | २३५          | <b>त्र्यहमेंकाहमेव वा</b>         | ч        | ५६         |
| त्रीण्याद्यान्याश्रितास्तेषाम्  | 9   | ७२           | ज्यहाच्छु <b>द्धन्ति बान्धवाः</b> | ų        | ७२         |
| त्रीण्युत्तराणि क्रमशः          | 9   | ७२           | त्र्यहाणि त्रीणि पूर्ववत्         | 3 3      | २१३        |
| त्रीण्येतानि सतां सकृत्         | ९   | 8 ७          | त्र्यहादुदकदायिनः                 | ų        | ६४         |
| त्रीनंशान् क्षत्रिया सुतः       | 9   | १५३          | व्यहेण शुद्रो भवति                | 90       | ९२         |
| त्रीन् मासान् हारिणेन तु        | 3   | २६८          | व्यहैहिको वापि भवेत्              | ષ્ઠ      | 9          |
| त्रीन्वर्णान्धार्मिको नृपः      | 6   | १२३          | त्वंकारं च गरीयसः                 | 99       | २०४        |
| त्रीन्विद्यादात्मनो गुणान्      | 32  | २४           | त्वक्सारव्यवहारवान्               | 30       | ३७         |
| त्रेतायां ज्ञानमुच्यते          | 9   | ८६           | त्वग्भेदकः शतं दण्ड्यः            | 6        | २८४        |
| त्रेतायां द्वापरेऽपरे           | 3   | ८५           | त्वचेवाहिर्विमुच्यते              | ₹        | ७९         |
| त्रेेलोक्यं सचराचरम्            | 99  | २३६          | त्वबलानां च रक्षणात्              | G        | 902        |
| <b>त्रै</b> विद्यवृद्धान्विदुषः | •   | ३७           | त्वब्देन स विशुच्यति              | 99       | १२३        |
| श्रैविद्याः शुचयो दान्ताः       | ٩   | 366          | त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य            | 9        | 3          |
| त्रैविद्येनेज्यया सुतैः         | 7   | २८           | त्वष्टिस्त्वायोगवस्य च            | 10       | 28         |
| श्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्याम्  | •   | ४३           | त्वाहूतः पालयन्प्रजाः             | 9        | 69         |
| त्रैविद्यो हैतुकस्तर्की         | 92  | 333          | द्                                |          |            |
| त्र्यंशं दायाद्धरेद्विप्रः      | 9   | 343          | दंष्ट्रिणश्च वयांसि च             | 30       | 48         |
| त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः          | 12  | 8            | दंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः          | પ્       | २ <b>९</b> |
| <b>त्र्यब्दं चरेद्वा नियतः</b>  | 3 3 | 126          | दक्षं दातारमेव च                  | <b>9</b> | २१०        |
| त्र्यब्दपूर्व श्रोत्रियाणाम्    | ₹   | <b>1 3</b> 8 | दक्षिणं पाणिमुद्धरेत्             | B        | 46         |
|                                 |     |              |                                   |          |            |

| पाद                         | अ० | श्लो०       | पाद                      | अ०       | स्रो०       |
|-----------------------------|----|-------------|--------------------------|----------|-------------|
| दक्षिणां दिशमाकांक्षन्      | R  | २५८         | दण्डलेशं च शक्तितः       | 6        | 41          |
| दक्षिणानां च संगरे          | 4  | ₹8 <b>₹</b> | दण्डम्यूहेन तन्मार्गम्   | •        | 926         |
| दक्षिणाप्रवणं चैव           | 3  | २०६         | दण्डशुल्कावशेषं च        | 6        | 343         |
| दक्षिणाभिमुखो रात्रौ        | 8  | 40          | दण्डश्चरति पापहा         | 9        | २५          |
| दक्षिणासु च दत्तासु         | 4  | २०७         | दण्डस्य पातनं चैव        | ø        | 49          |
| दक्षिणेन च दक्षिणः          | ?  | ७२          | दण्डस्य हि भयास्सर्वम्   | 4        | २२          |
| दक्षिणेन मृतं शूद्रम्       | ų  | ९२          | दण्डस्येति विनिश्चयः     | 6        | २७७         |
| दग्धच्यौ वा कटाग्निना       | ઢ  | ३७७         | दण्डाख्याः पञ्च चापराः   | 9        | 140         |
| दण्डं कार्षापणावरम्         | 6  | २७४         | दण्डानहंन्ति धर्मतः      | <b>ર</b> | 8પ          |
| दण्डं कुर्यात्तथा तथा       | 6  | २८६         | दण्डेनेव च हिंसतः        | 6        | ३४५         |
| दण्डं चाहति षट् शतम्        | 6  | ३६७         | दण्डेनैव तमप्योषेत्      | ٩        | २७३         |
| दण्डं दण्ड्येषु पातयेत्     | 6  | १२६         | दण्डेनैव निपीडिताः       | Q        | २३          |
| दण्डं दण्ड्येष्ट्रतन्द्रितः | 9  | २०          | दण्डेनेव निहन्यते        | છ        | २७          |
| दण्डं दातुमशक्रुवन्         | 9  | २२९         | दण्डे वेनयिको क्रिया     | 9        | ६५          |
| दण्डं धर्मे विदुर्बुधाः     | •  | 16          | दण्डो हि पुमहस्रेजः      | •        | २८          |
| दण्डं धर्म्यं प्रकल्पयेत्   | ९  | २३६         | दण्ड्यांदचेवाण्यदण्डयन्  | 6        | 926         |
| दण्डं राजा प्रकल्पयेत्      | 4  | ३२४         | दसं च प्रीतिकर्मणि       | ९        | 368         |
| दण्डः कार्यः प्रमाणतः       | २  | ४६          | दत्तः कृत्रिम एव च       | ९        | 349         |
| दण्डः कार्यो विजानता        | 6  | २७६         | दत्तस्यानपकर्म च         | 6        | 8           |
| दण्डः प्रथमसाहसः            | ٩  | २८६         | दत्तस्यैषोदिता धर्म्या   | 6        | २१४         |
| दण्डः प्राणान्तिको भवेत्    | 6  | ३७९         | दत्तानि हब्यकव्यानि      | 3        | 904         |
| दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः  | 9  | 16          | दस्तेन पितरः सदा         | ą        | २०७         |
| दण्डः सुप्तेषु जागर्ति      | 9  | 96          | दसेन मासं तृष्यन्ति      | 3        | २६७         |
| दंढः स्यात् पञ्च कृष्णलः    | 6  | ३३०         | दस्वाग्नीमन्त्यकर्मणि    | ų        | १६८         |
| दंड स्यात्पञ्चमाषिकः        | 6  | २९८         | द्क्वा धनं तु विप्रेभ्यः | ९        | ३२३         |
| दण्ड एवाभिरक्षति            | Ġ  | 16          | दस्वा पुनः प्रयच्छन्हि   | ٩        | ७१          |
| दण्डनीति च शाश्वसीम्        | •  | 83          | द्दात्यर्चितमेव च        | 8        | <b>२३</b> ५ |
| दण्डनेतृत्वमेव च            | 35 | 300         | ददौ स दशधमाय             | ९        | १२९         |
| वण्डपारुष्यनिर्णयः          | ૮  | 至01         | दद्याच सर्वभूतानाम्      | ٩        | 338         |
| दण्डपारुष्यनिर्णयम्         | 6  | 205         | व्याच्चेकशतं गवाम्       | 3 3      | 129         |
| दण्डमहित माषकम              | 6  | <b>₹</b> 9२ | व्याच्चेबाददीत बा        | 4        | २२२         |

| पाद                        | अ०  | स्रो०      | पाद                       | अ०  | श्हो॰ |
|----------------------------|-----|------------|---------------------------|-----|-------|
| द्याचैवासनं स्वकम्         | 8   | 948        | दशचकसमी ध्वजः             | 왕   | 64    |
| दद्याच्छ्रेयांस्तु तच्छनैः | 4   | 900        | एका जीवनहेतवः             | 30  | 995   |
| द्यात्तस्यैव तस्नम्        | 9   | 388        | द्शतश्रामुबाद्वरम्        | 4   | 118   |
| दद्यात्पापीयसेऽहिपकाम्     | 90  | 110        | दशाधर्मपथांस्यजेत्        | 12  | 6     |
| द्यात्पिण्डं हरेद्धनम्     | 9   | 138        | दशधा परिकल्प्य च          | ٩   | १५२   |
| द्यात्सुचरितवतः            | 33  | 336        | दशध्वजसमो वेशः            | 8   | 64    |
| <b>,,</b> ,,               | 99  | 120        | दश पूर्वापरान्वंश्यान्    | 3   | ₹ ७   |
| दद्यादस्थिमतां वधे         | 99  | 383        | दशबन्धं च सर्वतः          | 6   | 300   |
| द्याद्वोगान्धनानि च        | 9   | ७५         | दशमं द्वादशं वापि         | 6   | ३३    |
| दद्याद्विप्राय गाः सिताः   | 33  | १३०        | दशमासांस्तु तृप्यन्ति     | 3   | २७०   |
| दिधि भक्ष्यं च शुक्तेषु    | 4   | 30         | दशमे तु मृतप्रजा          | 9   | ८१    |
| दिधि सिपिः कुशोदकम्        | 99  | २१२        | दशरात्रेण शुद्धयति        | ષ   | ६५    |
| द्रघः क्षीरस्य तकस्य       | 6   | ३२६        | दशलक्षणकं धर्मम्          | Ę   | ९४    |
| दन्तजातेऽनुजाते च          | ષ   | ५८         | दशलक्षणको धर्मः           | ξ   | ९१    |
| <b>द</b> न्तधावनमञ्जनम्    | ક   | १५२        | दशलक्षणयुक्तस्य           | 3 5 | 8     |
| दन्तैर्नोत्पाटयेश्वखान्    | 8   | ६९         | दशस्रकानि धर्मस्य         | Ę   | ९३    |
| दन्तैर्विद्छितस्य च        | 9 9 | 199        | दशवर्षाणि पञ्च च          | 8   | २४९   |
| दन्तोॡखिकोऽपि वा           | ξ   | 50         | द्शवेशसमो नृपः            | 8   | ८५    |
| दरिदाणां च रोगिणाम्        | ९   | २३०        | दशसूनासमं चक्रम्          | 8   | ८५    |
| दर्पात्कर्म यथोदितम्       | 6   | २१५        | दशसूनासहस्राणि            | ૪   | ८६    |
| दर्पाल्लोभेन वा पुनः       | 6   | २१३        | दश स्थानानि दण्डस्य       | 6   | १२४   |
| दर्भाः पवित्रं पूर्वाह्यः  | ર   | २५६        | दश हन्ति गवानृते          | 6   | ९८    |
| दर्भेषु विकिरश्च यः        | ३   | २४५        | दशातिवर्तनान्याहुः        | 6   | २९०   |
| ष्टर्शनप्रातिभाव्ये तु     | 6   | 980        | दशापरे सु क्रमशः          | ९   | १६५   |
| दर्शनायेष्ट मानवः          | 6   | 346        | दशाब्दाख्यं पौरसख्यम्     | ₹   | १३४   |
| दर्भनेन विश्वीनस्तु        | Ę   | 98         | दशार्धानां तु याः स्मृताः | 3   | ₹ છ   |
| दर्शमस्कन्द्य-पर्व         | Ę   | 8          | दशावरा वा परिषत्          | 18  | 110   |
| वर्शेन चार्धमासान्ते       | ß   | ર્પ        | दशाहं भावमाशीचम्          | 4   | ५९    |
| दशकं धर्मलक्षणम्           | Ę   | 92         | दशाहेनैव अन्यति           | 4   | 102   |
| दश कामसमुत्थानि            | •   | 84         | दशी कुरुं तु अअित         | 9   | 113   |
| वश्यामपति तथा              | IJ  | . B : B et | द्वीशो चिंशतीशिने         | •   | 135   |

| पाद                        | <b>হ্টা</b> ০ | अ०    | पाद                          | अ०             | स्रो० |
|----------------------------|---------------|-------|------------------------------|----------------|-------|
| दस्युनिष्किययोस्तु स्वम्   | 11            | 38    | दानस्य फलमश्तुते             | <b>9</b>       | ८६    |
| दहते कर्म नेतरत्           | 12            | 909   | दानेन वधनिर्णेकम्            | 9 9            | १३९   |
| दहत्याद्वानपि द्रमान्      | 32            | 303   | दानेनाकार्यकारिणः            | V <sub>3</sub> | 300   |
| दह्यन्ते भाषमानानाम्       | Ę             | હ ૧   | दान्तः ग्रुक्काम्बरः ग्रुचिः | 8              | ३५    |
| दाक्षस्यायनमेव च           | ६             | 30    | दान्तो मैत्रः समाहितः        | ६              | 6     |
| दातच्यं गृहमेधिना          | 8             | ३२    | दापयेत्करसंज्ञितम्           | 13             | 130   |
| दातब्यं बान्धवैस्तत्स्यात् | 6             | 9 & & | दापयेदधमर्णिकम्              | 4              | 84    |
| दातस्यं सर्ववर्णेभ्यः      | 6             | 80    | दापयेद्धनिकस्यार्थम्         | 6              | 80    |
| दातब्यमप्रथग्जितम्         | 9             | 30    | ** **                        | ć              | 49    |
| दाता दुर्गाणि संतरेत्      | 3 3           | ४३    | दाप्यः स्यादिद्वशतं दमम्     | 6              | २७३   |
| दाता नित्यमनादाता          | Ę             | Ŀ     | दाप्यस्तस्य च तद्धनम्        | 6              | १७६   |
| दाता प्राप्तोति बालिशः     | ર             | १७६   | ,, ,,                        | 6              | ३२०   |
| दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्     | ર             | २ प ९ | दाप्यस्तूत्तमसाहसम्          | ९              | २४०   |
| दातुं शक्त्या मनीषिणा      | 8             | २०२   | <b>,,</b>                    | ९              | २९७   |
| दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत् | 3             | २४२   | दाप्याः स्युर्ह्विशतं दमम्   | 6              | २५७   |
| दातुर्नाशयते फलम्          | 3             | 300   | दाप्यो गुप्ते तु ते व्रजन्   | 4              | ३८३   |
| दातुर्भवत्यनर्थाय          | 8             | १९३   | दाप्यो द्वादशकं दमम्         | 4              | ३९७   |
| दातुर्येइष्कृतं किंचित्    | 3             | 383   | दाप्योष्टगुणमन्ययम्          | 6              | 800   |
| दातृयाजकपञ्चमाः            | 3             | १७२   | दाप्यो तद्द्विगुणं दमम्      | 6              | ५९    |
| दातृन्प्रतिग्रहीतृंश्च     | ३             | 185   | दाप्यौ वा तत्समं दमम्        | 4              | 999   |
| दात्युहं शुकसारिके         | 4             | 35    | दाम्भिको रसविक्रयी           | ą              | 949   |
| दात्रा पृष्टा हविर्गुणान्  | ą             | २३६   | दायं हत्वा न संवसेत्         | q              | 99    |
| दानं च परिकीर्तनात्        | 8             | २३७   | दायभागं निबोधत               | ٩              | १०३   |
| दानं च प्रियकारकम्         | હ             | २०४   | दायादानपि दापयेत्            | 4              | 9 6 0 |
| दानं प्रतिप्रहं चैव        | 3             | 66    | दायादा बान्धवाश्च षट्        | 9              | 949   |
| दानं प्रतिग्रहश्चेव        | 30            | ७५    | दायाद्यस्य प्रदानं च         | 3 3            | 168   |
| दानं विद्याविशेषतः         | 3 3           | २     | दायो लाभः क्रयो जयः          | 90             | 994   |
| दानधर्म निषेवेत            | 8             | २२७   | दायो विक्रय एव वा            | 4              | 198   |
| दानप्रतिभुवि प्रेते        | 6             | १६०   | दारकर्मणि मैथुने             | Ę              | પ્    |
| दानमध्यवनं यजिः            | 30            | ७९    | दारवाणां च तक्षणम्           | ч              | 994   |
| दानमेकं करूरी युगे         | 1             | ८६    | दाराग्निहोत्रसंयोगम्         | 3              | 101   |
|                            |               |       | •                            |                |       |

| पाद                      | अ•  | स्रो० | पाद                      | अ  | स्को० |
|--------------------------|-----|-------|--------------------------|----|-------|
| दाराधिगमनं चैव           | 9   | 992   | दिशेखुक्तो दिशेश यः      | 6  | 40    |
| दाराधीनस्तथा स्वर्गः     | Q   | २८    | दीक्षा विद्यो वने वसन्   | Ę  | २९    |
| दारान् रक्षेज्नैरपि      | 9   | २१३   | दीक्षितं दक्षिणाहीनः     | 99 | 80    |
| दारा रक्ष्यतमाः सदा      | 6   | ३५९   | दीक्षितस्य कदर्यस्य      | 8  | 230   |
| दारैरपि धनैरपि           | હ   | २१३   | दीक्षिताः कारवस्तथा      | 6  | ३६०   |
| दार्बग्न्यर्थं तथैव च    | 4   | ३३९   | दीपदश्रक्षुरुत्तमम्      | 8  | २२९   |
| दाशापराधतस्तोये          | 6   | ४०९   | दीप्यमानः स्ववपुषा       | ₹  | २३२   |
| दासं नौकर्मजीविनम्       | 90  | ३४    | दीपहर्ता भवेदन्धः        | 99 | 48    |
| दासवर्गस्य तिवन्ये       | 3   | २४६   | दीप्तश्रूलष्ट्ययोगुड़ान् | 3  | १३३   |
| दासाश्वरथहर्त्ता च       | 6   | ३४२   | दीर्घकालमवस्थितौ         | 6  | 184   |
| दासी घटमपां पूर्ण        | 99  | १८२   | दीर्घमायुरवाप्नुयात्     | 8  | ও হ্  |
| दासेन सृतकेन वा          | 6   | 90    | दीर्घमायुरवामुयुः        | 8  | ९४    |
| दास्यं तु कारयेल्लोभात्  | 6   | ४१२   | दीर्घमायुर्जिजीविषुः     | 8  | २७    |
| दास्यं शूदं द्विजन्मनाम् | 4   | 830   | 22 23                    | 8  | 96    |
| दास्यां वा दासदास्यां वा | ९   | 309   | दीर्घमायुर्हिरण्यदः      | ક  | २३०   |
| दास्यायैव हि सृष्टोऽसं   | 4   | ४६३   | दीर्घोल्लघूंश्चेव नरान्  | •  | १९३   |
| दास्युष्ट्राजाविकस्य च   | ९   | ५५    | दीर्घाध्वनि यथादेशम्     | 4  | ४०६   |
| दाहयेदग्निहोत्रेण        | ٧   | १६७   | दुःखं सुमहदामोति         | Я  | 3 € 0 |
| दिनमेकं पयोव्रतः         | 99  | 188   | दुःखप्रायासु नित्यशः     | 92 | 99    |
| दिवं गतानि विप्राणाम्    | ષ   | 948   | दुःखभाग च सततम्          | 8  | 140   |
| दिवं भूमिं च निर्ममे     | 9   | १३    | दुःखमूलं विपर्ययः        | 8  | 12    |
| दिवं यान्ति तपोबलात्     | 3 3 | २०४   | दुःखयोगं शरीरिणाम्       | Ę  | ६४    |
| दिवाकीर्तिमुदक्यां च     | પ્  | ८५    | दुःखाय प्रहृते सति       | ઢ  | २८६   |
| दिवा कुर्यादुङ्मुखः      | 8   | ५०    | दुःखिता यत्र दृश्येरन्   | ९  | २८८   |
| दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यः     | ş   | ९०    | दुदोह यज्ञसिच्चर्थम्     | 1  | २६    |
| दिवा चरेयुः कार्यार्थम्  | 90  | ५५    | दुराचारो हि पुरुषः       | 8  | 340   |
| दिवानुगच्छेद्रास्तास्तु  | 33  | 990   | दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः    | Ę  | હ ક્  |
| दिवा पांसुसमूहने         | 8   | १०२   | दुर्धरश्चाकृतात्मभिः     | •  | २८    |
| दिवा रात्रमिति स्थितिः   | ч   | 60    | दुर्बलं कितवे तथा        | Ę  | 141   |
| दिवा वक्तस्यता पाले      | 6   | २३०   | दुर्बलान् बलवत्तराः      | •  | २०    |
| दिवा वाह्रत्य शक्तितः    | Ę   | 99    | दुर्भिक्षव्याधिपीडितम्   | 6  | ર રે  |

| - पाद                       | अ०       | श्लो॰ | . पाद                     | अ०       | श्लो॰      |
|-----------------------------|----------|-------|---------------------------|----------|------------|
| बुर्मतेर्विद्यते फलम्       | 33       | ३०    | दृष्यते नेह कर्हिचित्     | ₹        | 8          |
| दुर्छभो हि शुचिर्नरः        | •        | २२    | दृश्यते युष्यमानयोः       | <b>y</b> | 999        |
| बुष्कृतं कर्म गर्हति        | 3 3      | २२९   | दृष्टं वैरकरं महत्        | 9        | २२७        |
| दुष्कृतांशेन लिप्यते        | 8        | २०१   | दृष्टस्तत्रापि तद्र्यात्  | 6        | ७६         |
| <b>बुष्कृ</b> तीनवध्ननम्    | ¥        | २३०   | दृष्टिपूर्तं न्यसेत्पादम् | Ę        | ४६         |
| <b>दुष्टसामन्त</b> हिसश्च   | ९        | ३१०   | दृष्ट्या हृष्यन्ति मानवाः | ९        | ३०९        |
| दुष्टस्य द्विगुणो दमः       | 6        | ३७३   | दृष्ट्या हृष्येखसीदेख     | ₹        | ५४         |
| दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च      | હ        | २४    | देयं स्याद् भिन्नभाजने    | 30       | બ્રષ્ટ     |
| दुहिता कृपणं परम्           | 8        | 964   | देयमन्नं सदक्षिणम्        | 99       | ३          |
| दुहित्रा दासवर्गेण          | 8        | 960   | देयोंऽशः सह कर्तृभिः      | 6        | २०६        |
| दृतं चैव प्रकुर्वीत         | ٠        | ६३    | देवकार्याद् द्विजातीनाम्  | ¥        | २०३        |
| बूत एव हि संधत्ते           | <b>v</b> | ६८    | देवतागारभेदकान्           | ९        | २८०        |
| दूतसंप्रेषणं चैव            | •        | १५३   | देवतातिथिभृत्यानाम्       | 3        | ७२         |
| वृतस्तत्कुरुते कर्म         | હ        | ६६    | देवतानां गुरो रा तः       | 8        | १३०        |
| हुते संधिविपर्ययौ           | v        | ६५    | देवतानां च कुत्सनम्       | ૪        | १६३        |
| दृतो राज्ञः प्रशस्यते       | <b>y</b> | ६४    | देवतानां च पुजनम्         | 8        | १५२        |
| दूरतः परिवर्जयेत्           | 8        | ७३    | देवताभ्यर्चनं चैव         | 2        | ३७६        |
| दृरस्थस्येत्य चान्तिकम्     | २        | १९७   | देवताभ्यस्तु तद्धत्वा     | ξ        | ५२         |
| वृरस्थो नाच येदेनम्         | 3        | २०२   | देवतायतनानि च             | 6        | २४८        |
| <b>दृ</b> शत्पादावसेचनम्    | ૪        | 949   | देवत्वं सात्विका यान्ति   | 38       | ४०         |
| <b>बूरादावसधान्म्</b> त्रम् | 8        | १५१   | देवदत्तां पतिर्भार्याम्   | ९        | ९५         |
| दूरादाहृत्य समिधः           | २        | १८६   | देवदानवगन्धर्वाः          | ø        | २३         |
| बूरादेव परीक्षेत            | 3        | १३०   | देवनद्योर्यदन्तरम्        | ₹        | 9 9        |
| दूरादेव समाचरेत्            | ક        | १५१   | देवबाह्यणसांनिध्ये        | 6        | 60         |
| दूरे सन्तोऽपि मानवाः        | 6        | ४२    | देवराद्वाप्यवाप्नुयात्    | ९        | 180        |
| बूषणे भेदने तथा             | ९        | २८६   | देवराद्वा सपिण्डाद्वा     | <b>९</b> | ५९         |
| दूषयेचास्य सततम्            | હ        | १५९   | देवराय प्रदातब्या         | ९        | <b>९</b> ७ |
| वृषितं केशकीटैश्च           | ч        | १२५   | दंवर्षिपितृतर्पणम्        | 7        | १७६        |
| दूषितोऽपि चरेद्धर्मम्       | ६        | ६६    | देवर्षिपितृसेवितान्       | 33       | २१०        |
| रहकारी सृदुर्दान्तः         | 8        | २४६   | देवलोकस्य चर्त्विजः       | ß        | १८२        |
| द्रतेः पादादिवोदकम्         | ₹        | ९९    | देवविद्वि मोदते           | <b>ર</b> | २३२        |

| पाद                       | अ०       | श्लो० | पाद्                       | अ०  | श्होद     |
|---------------------------|----------|-------|----------------------------|-----|-----------|
| देवस्त्रं तद्विदुर्बुधाः  | 3 3      | २०    | दैवं धर्म प्रचक्षते        | Ą   | 26        |
| देवस्यं ब्राह्मणस्यं वा   | 33       | २६    | दैवं पित्र्यं तयोरधः       | ર   | 48        |
| देवानां प्रियमाचरन्       | ९        | ९५    | दैवं हि पितृकार्यस्य       | ą   | २०३       |
| देवानां युगमुच्यते        | 9        | 9     | दैवकर्मणि युक्तो हि        | Ę   | 94        |
| देवानागतमन्यवः            | <b>ર</b> | १५२   | दैवतान्यभिगच्छेस           | 8   | 943       |
| देवानामपि देवतम्          | 99       | 68    | दैवपिश्यातिथेयानि          | Ą   | 36        |
| देवानामश्जुता हविः        | 33       | 94    | दैवमानुषकं सुखम्           | 33  | २३४       |
| देवानामेति साम्यताम्      | १२       | 90    | दैवात्पूर्वकृतेन वा 💎      | v   | १६६       |
| देवानृषीन्मनुष्यांश्च     | ર        | 999   | "                          | 33  | 80        |
| देवान्कुर्युरदेवांश्च     | ٩        | ३१५   | दैवाद्यन्तं तदीहेत         | Ę   | २०५       |
| देवान्देवनिकायांश्च       | 9        | ३६    | दैविकानां युगानां तु       | 3   | ७२        |
| देवासानि हर्वाधि च        | પ્ય      | હ     | दैविकं नास्ति निग्रहः      | 6   | ४०९       |
| देवान्पिर्वृश्चार्चयित्वा | ч        | ३२    | दैवीं वाचं वदन्ति ताम्     | 6   | १०३       |
| देवाश्चैतान्समेत्योचुः    | ₹        | १५२   | दैवी च विविधा स्थितिः      | 3 3 | २३७       |
| देवेभ्यस्तु जगत्सर्वम्    | રૂ       | २०१   | दैवे कर्मणि धर्मवित्       | 3   | 189       |
| देशं कार्ल च तत्त्वतः     | 6        | ३२    | दैवे कर्मणि पित्र्ये वा    | ર   | २४०       |
| देशं रूपं च कालं च        | 6        | ४५    | देवे चैबेह कर्मणि          | ર   | <b>૭૫</b> |
| देशकालब्यवस्थितः          | C        | १५६   | दैवे पित्र्ये च भोजयेत्    | ર   | १२९       |
| देशकाळार्थदर्शिनः         | 6        | 340   | दैवे राज्यहनी वर्षम्       | 3   | ६७        |
| देशकाली च तत्त्वतः        | 9        | 30    | दैवे रुचितमित्यपि          | Ę   | २५४       |
| 77 27                     | 6        | १२६   | दैवे हिविषि पित्र्ये वा    | Ę   | 189       |
| देशधर्माञ्जातिधर्मान्     | 3        | 116   | दैवोढाजः सुतश्चैव          | R   | ३८        |
| देशानलब्धांल्लिप्सेत      | 9        | २५१   | दैहिकानां मलानां च         | Ŋ   | 858       |
| देशानां च गुणागुणान्      | ٩        | ३३१   | दोषं संश्रयकारितम्         | 9   | 198       |
| देशे संभाषते मिथः         | 6        | 44    | दोषमृच्छत्यसंशयम्          | २   | ९३        |
| देहस्यागोऽनुपस्कृतः       | 90       | ६२    | दोषाः प्राणस्य निप्रहात्   | ६   | 93        |
| देहाच्चेव मलाश्र्युताः    | 4        | १३२   | दोषान् विषयसंगजान्         | १२  | 96        |
| देहादुकामणं चैव           | Ą        | ६३    | दोषेश्चान्येऽपि ये वृताः   | 4   | 99        |
| देहीत्युक्तस्य संसदि      | 6        | ५२    | दोषो भवति विप्राणास्       | 10  | 903       |
| देहेषु च समुत्पत्तिम्     | Ę        | ६५    | दौर्बस्यं स्याप्यते राज्ञः | 6   | 303       |
| दैत्यदानवयक्षाणाम्        | Ę        | 388   | दीश्रम्यं गुरुतस्पगः       | 8 8 | 86        |
|                           |          |       |                            |     |           |

| पाद                         | अ०   | स्रो० | पाद                                | अ० | श्लो॰ |
|-----------------------------|------|-------|------------------------------------|----|-------|
| दौहित्रं विट्पतिं बंधुम्    | Ę    | 288   | द्वयोर्हि कुलयोः शोकम्             | 9  | ષ્ય   |
| दौहित्रं कुतपास्तिलाः       | 2    | २३५   | द्वयोद्ययाणां पञ्जानाम्            | ø  | 998   |
| दौहित्र एव च हरेत्          | 9    | 939   | द्वात्रिंशत्क्षत्रियस्य च          | 6  | ३३७   |
| दौहिलोऽपि हामुन्नैनम्       | ९    | १३९   | द्वादशाहं कणास्रता                 | 99 | १६७   |
| दौहित्रो हास्त्रिलं रिक्थम् | ९    | १३२   | द्वादशाहमभोजनम्                    | 33 | २१५   |
| युतधर्म निबोधत              | ۹,   | २२०   | द्वादशाहेन भूमिपः                  | ષ  | ८३    |
| <b>चूतपानप्रस</b> क्ताश्च   | 92   | ४५    | द्वादशैते नृणां मलाः               | 4  | १३५   |
| चूतं समाह्ययं चैव           | ९    | २२१   | द्वादशैव तु ताः स्मृताः            | ঙ  | १५६   |
| चूतं च जनवादं च             | २    | 309   | द्वादशैव व्यतिक्रमे                | 6  | २६९   |
| चूतमाह्मय एव च              | 6    | હ     | द्वादश्यां वास्य कारयेत्           | २  | ३०    |
| <b>चूतमेतत्पु राकल्पे</b>   | ९    | २२७   | द्वापरं कलिरेव च                   | ९  | ३०१   |
| चौभूमिरापो हृदयम्           | 6    | ८६    | द्वापरे यज्ञमेवाहुः                | 9  | ८६    |
| द्रवाणां चैव सर्वेषाम्      | 4.00 | 994   | द्वाभ्यां जातौ ख्रिया धने          | ९  | 999   |
| द्रविणं राष्ट्रमेव च        | 9    | १३६   | हाभ्यामेकश्चतुर्थस्तु              | Я  | ९     |
| द्रव्यदातुरतु संततिः        | 33   | 4     | द्वाराणां वैव भङ्कारम्             | ٩, | २८९   |
| द्रव्यशुद्धि तथैव च         | ч    | ५७    | द्वावंशो क्षत्रियासुतः             | ९  | 949   |
| द्रव्यञ्जिद्धस्तथैव च       | પ    | १४६   | द्वावधम्यौं स्मृताविह              | ર  | २५    |
| द्रव्यहस्तः कथंचन           | 4    | १४३   | द्वाविक्ष् द्वेच मूलके             | 6  | ३४१   |
| द्रन्याणां शुद्धिमेव च      | 9    | 993   | द्रावेव वर्जयेकित्यम्              | 8  | १२७   |
| द्रव्याणां स्थानयोगांश्च    | ९    | ३३२   | द्वावोष्ठौ छेदयेष्ट्रपः            | 6  | २८२   |
| द्रव्याणामल्पसाराणाम्       | 9 3  | १३४   | हिः प्रमृज्यात्ततो मुखम्           | ₹  | ६०    |
| द्रव्याणि स्तेनयेन्नरः      | 6    | ३३३   | "                                  | ч  | १३९   |
| द्रम्याणि हिंस्याची यस्य    | 6    | २८८   | द्विकं ग्रिकं चतुष्कं च            | 6  | 185   |
| द्रव्यार्जनं च नाशं च       | ९ २  | ७९    | द्विकं शतं वा गृह्धीयात्           | 6  | 383   |
| द्रञ्योपादानमाचरेत्         | 6    | 810   | द्धिकं शतं हि गृह्णानः             | 6  | 181   |
| हुमांसमधुसर् <u>पिषाम</u> ् | 9    | 353   | द्विगुणं दण्डमास्थाय               | 9  | २३३   |
| <b>हुमाणामवपातनम्</b>       | 8 8  | ६४    | द्विगुणं ब्रह्मचारिणाम्            | 4  | १३७   |
| द्रोहभावं कुचर्या च         | ९    | 3 10  | द्रिगुणं ब्राह्मणड् <del>य</del> े | •  | ८५    |
| द्वन्द्वरयोजयचेमाः          | 1    | २६    | द्विगुणा वा चतुष्पष्टिः            | 4  | ३३८   |
| द्वयोरप्येतयोर्मूलम्        | •    | ४९    | द्विजः पापापनुत्तये                | 99 | 935   |
| द्वयोरात्मास्य जायते        | 30   | २८    | द्विजः गुक्रमकामतः                 | २  | 969   |

## मनुपादानुकमणी।

|                             |             | _            | t                                |          |              |
|-----------------------------|-------------|--------------|----------------------------------|----------|--------------|
| पाद                         | <b>8</b> 70 | स्रो०        | पाद                              | अ०       | श्री०        |
| द्विजश्चान्द्रायणं चरेत्    | 99          | 848          | द्विविधं कर्म वैदिकस्            | 9 २      | 66           |
| द्विजस्य श्रुतिचोदनात्      | 3           | 3 & 9        | द्विविधं की त्यते द्वैधम्        | 9        | 160          |
| द्विजाग्र्यान् पङ्क्तिपावना | न् ३        | १८३          | द्विविधं यानमुख्यते              | 9        | <b>9</b> & 4 |
| द्विजातयः सवर्णासु          | 90          | २०           | द्विविधं स्पृतमासनम्             | •        | १६६          |
| द्विजातय इवेज्याभिः         | 4           | <b>₹</b> 9 9 | द्विविधः संश्रयः स्पृतः          | 9        | १६२          |
| द्विजातिः पूर्वमारिणीम्     | ų           | 399          | "                                | ø        | 366          |
| द्विजातिप्रवरो विद्वाम्     | 3           | १६७          | द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्      | <b>९</b> | २५६          |
| द्विजातिमुख्यषृत्तीनाम्     | Ę           | २८६          | द्विविधो विघ्रहः स्मृतः          | ৩        | 3 & 8        |
| द्विजातिर्वधकाम्यया         | 8           | १६५          | द्विशतं तु दमं दाप्यः            | 4        | ३६८          |
| द्विजातीनां च वर्णानाम्     | 6           | ३४८          | द्विशफैकशफस्य च                  | 33       | १६८          |
| द्विजातेः संस्थितस्य तु     | Ę           | २४७          | द्विषता हि हविर्भुक्तम्          | Ę        | 188          |
| द्विजानां गृहमेधिनाम्       | 8           | 6            | द्विषदन्नं नगर्यन्नम्            | 8        | २१३          |
| द्विजानां सदशा द्विजाः      | 6           | ६८           | द्विषन्तीं योषितं पतिः           | 9        | 99           |
| द्विजानामपसृज्यते           | २           | २७           | हे कृष्णले समध्ते                | 6        | १३५          |
| द्विजानामेव कर्मभिः         | 80          | ४६           | द्वेषं दम्भं <del>च</del> मानं च | ૪        | १६३          |
| द्विजासोत्पद्यते भयम्       | ६           | 80           | हैजातं वर्णभावसन्                | 6        | ३७४          |
| द्विजेषु वनवासिषु           | ६           | २७           | द्वैषं संश्रयमेव च               | •        | 1 & 1        |
| द्विजैरुत्पादितान् सुतान्   | 30          | ६            | द्वैधीभावं संश्रयं च             | •        | 940          |
| द्विजोच्छिष्टं च भोजनम्     | પ           | 180          | द्रौ तु यौ विवदेयाताम्           | 9        | 191          |
| द्विजोऽध्वगः क्षीणवृत्तिः   | 6           | ३४१          | द्वौ दैवे पितृकार्थे स्रीन्      | 3        | १२५          |
| द्विजो भवति नान्यथा         | <b>9 २</b>  | ९३           | द्वी दोषौ पृथिवीक्षिताम्         | <b>९</b> | २२१          |
| द्विजो युक्तो द्यनापदि      | B           | 300          | द्वौ मासौ नियतेन्द्रियः          | 33       | 308          |
| द्वितीयं तु पितुस्तस्याः    | ٩           | 180          | द्वी मासी मत्स्यमांसेन           | ર        | २६८          |
| द्वितीयं न समाचरेत्         | 9 9         | २३२          | ह्री सुती कुण्डगोलकी             | 3        | 308          |
| द्वितीयं मौक्षिबन्धने       | ą           | 9            | येकान्तरासु जातानाम्             | 30       | <b>y</b>     |
| द्वितीयमायुषो भागम्         | 8           | 9            | ঘ                                |          |              |
| 99 99                       | 4           | 189          | धनं ज्येष्ठोऽधिगच्छति            | ٩        | २०४          |
| द्वितीयमेके प्रजनम्         | <b>٩</b> ُ  | Éà           | घनं तत्पुन्निका भत्ती            | 9        | 934          |
| द्वितीया सास्विकी गतिः      | 9 2         | 88           | धनं देहस्तथैवच                   | 6        | १२५          |
| द्वितीये इस्तचरणौ           | 9           | २७७          | धनं धान्यं पञ्जन्मियः            | •        | ९६           |
| द्विधा कृत्वात्मनो देहम्    | 1           | ३२           | धन यो विश्वयाद्वातुः             | ९        | 184          |
|                             |             |              |                                  |          |              |

## मनुपादानुकमणी।

| पाद                     | अ०       | श्लो०      | पाद                        | अ०       | श्लो०       |
|-------------------------|----------|------------|----------------------------|----------|-------------|
| धनं वा जीवनायालम्       | 33       | ७ इ        | धर्मः सीमाविनिर्णये        | 6        | २६६         |
| धनं शक्तः स्वकर्मणा     | 9        | २०७        | धर्म एव हतो इन्ति          | 6        | ٩٧          |
| धनघान्येन वाहनैः        | 9        | 10 13      | धर्मकामार्थकोविदम्         | 9        | २६          |
| धनमेषां श्वगद्भम्       | 90       | પ ૧        | धर्म कार्य च नैत्यकम्      | g        | ८६          |
| धनवन्तं प्रजावन्तम्     | Ę        | <b>३६३</b> | धर्मकोशस्य गुप्तये         | \$       | ९९          |
| घनवन्तो यशस्विनः        | 3        | 80         | धर्मक्रियात्मचिन्ता च      | 12       | ३१          |
| धनानि तु यथाशकि         | , 9 9    | ६          | धर्मज्ञं च कृतज्ञं च       | 9        | २०९         |
| धनिकायाधमर्णिकः         | 6        | 900        | . धर्मज्ञानं विधीयते       | २        | 3 ई         |
| भनिनं वाप्युपाराध्य     | 30       | 979        | धर्मज्ञा ब्रह्मवादिनः      | 9 9      | 320         |
| धनुःशतं परीहारः         | 6        | २३७        | धर्मज्ञे सत्यवादिनि        | 6        | १७९         |
| धनुःशराणां कर्ता च      | 3        | 9 6 0      | धर्मतः प्रसवश्च सः         | ९        | 384         |
| धनेन वैश्यशूदी तु       | 33       | ३४         | <b>धर्मतोऽधर्मतश्चैव</b>   | ५ २      | २३          |
| धने वा पृथिवीपतिः       | 30       | 333        | धर्मतो नोपपचते             | Q,       | 528         |
| घनैः कार्योऽस्य संग्रहः | Ę        | 936        | ** **                      | 30       | १०२         |
| धनोष्मणा पच्यमानाः      | ९        | २३१        | धर्मतो बाह्यणः प्रभुः      | 3        | ९३          |
| धन्य यशस्यमायुष्यम्     | 3        | १०६        | धर्मतो लोकजित्तमः          | 8        | 4           |
| धम्यानि च हितानि च      | 8        | 98         | धर्मध्वजी सदा लुन्धः       | ૪        | <b>૧९</b> ५ |
| धन्वदुर्गं महीदुर्गम्   | 9        | 90         | धर्मनैपुण्यकामानाम्        | 8        | 900         |
| धन्वन्तरय एवं च         | ર        | 613        | धर्मप्रधानं पुरुषं         | 8        | २४३         |
| धरणानि दश श्रेयः        | C        | 930        | धर्मप्रवक्ता नृपतेः        | 6        | २०          |
| धरा धारयते समम्         | ९        | इवव        | धर्ममन्यं समाचरेत्         | २        | २२९         |
| धर्मं चाप्यसुखोदकैम्    | 8        | ३७६        | धर्ममूलं निषेवेत           | 8        | <i>૧૫૫</i>  |
| धर्म जिज्ञासमानानाम्    | २        | 3 3        | धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः | <b>ર</b> | 30          |
| धर्म प्रति पराजितः      | 6        | 46         | धर्मशास्त्राणि चैव हि      | Ę        | २३२         |
| धर्म शनैः संचिनुयात्    | 8        | २३८        | धर्मश्रद्धिमभीप्सता        | १२       | 804         |
| धर्म शाश्वतमाश्रित्व    | ૮        | 4          | धर्मश्चापैति पादशः         | 3        | ८२          |
| धर्मं समयभेदिनाम्       | 6        | २१८        | धर्मश्चैव प्रवर्धते        | 33       | 94          |
| धर्म स्त्री पुंसयोरपि   | 3        | 994        | धर्म संशयनिणं ये           | 9 2      | 998         |
| धर्म हन्युः सनातनम्     | 9        | <b>§</b> 8 | <b>धर्मस्तमनुगच्छ</b> ति   | 8        | २४३         |
| धर्मः शौचं सुभाषितम्    | <b>ર</b> | २४०        | धर्मस्तिष्ठति केवलः        | 8        | २३९         |
| धर्मः सत्येन वर्धते     | ઢ        | ८३         | धर्मस्तु विनियच्छतः        | ९        | २४९         |

| पाद                        | अ०       | श्लो० | पाद                            | अ•         | <b>স্টা</b> ০ |
|----------------------------|----------|-------|--------------------------------|------------|---------------|
| धर्मस्थः कारणैरेतैः        | 6        | 49    | धर्मेणापि नियुक्तायाम्         | 3          | 305           |
| धर्मस्य नृपतिः पदम्        | 6        | 88    | धर्मे द्रध्यात्सदा मनः         | 15         | 天子            |
| धर्मस्य परमं गुह्मम्       | 92       | 990   | धर्मे पथि निवेशयेत्            | 6          | २२८           |
| धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः    | 9        | 9 19  | धर्मेप्सवस्तु धर्मज्ञाः        | 10         | 320           |
| धर्मस्य ब्राह्मणो मूलम्    | 3 3      | ८३    | धर्मे वर्त्मनि तिष्ठतोः        | ९          | 3             |
| धर्मस्य मुनयो गतिम्        | 9        | 330   | धर्में सीदति सत्वरः            | 9          | ९४            |
| धर्मस्याध्यभिचारार्थम्     | 6        | 977   | धर्मो नैश्रयसः परः             | ९          | ३३४           |
| धर्मस्यासेवनेन च           | १२       | ५२    | धर्मोपदेशं दर्पेण              | 6          | २७२           |
| घर्मार्थं तदपार्थकम्       | 6        | ७८    | धर्मो यत्रोपरुध्यते            | 6          | 388           |
| धर्माद्विचलितं हन्ति       | •        | २८    | धर्मो रक्षति रक्षितः           | 6          | 14            |
| धर्माधर्मविचक्षणः          | 30       | ९०६   | धर्मो विद्यस्त्वधर्मेण         | 4          | 9 2           |
| "                          | 30       | 308   | धर्मो वो रतिसंहितः             | ९          | 903           |
| धर्माधर्मावृतानृते         | 9        | २९    | धर्म्यं विद्यादिमं विधिम्      | 10         | <b>'9</b>     |
| धर्माधर्मी च केवली         | 6        | २४    | धर्म्यं विभागं कुर्वीत         | ९          | 348           |
| धर्माधर्मी ब्यवेचयत्       | 3        | २६    | धर्म्यमाहारयेद्वलिम्           | 90         | 998           |
| धर्मान्नो वक्तुमहसि        | 9        | 2     | धम्यों क्षत्रस्य तो स्मृती     | <b>R</b> . | २६            |
| धर्मान्वक्ष्यामि शाश्वतान् | ९        | 9     | धातूनां हि यथा <b>म</b> रूाः   | इ          | 99            |
| धर्मार्थं चैव विप्रेभ्यः   | •        | ७९    | धातूनामेव च क्षितौ             | 6          | ३९            |
| धर्मार्थ येन दत्तं स्यात्  | 6        | २१२   | धान्नैव सृष्टा द्याद्याश्च     | <b>'</b>   | ३०            |
| धर्मार्थप्रभवं चैव         | ξ        | ६४    | धाना मःस्यान्पयो मांसम्        | 8          | २५०           |
| धर्मार्थमचिरस्थितान्       | 90       | ९०    | धान्यं दशभ्यः कुम्भेभ्यः       | 6          | <b>3 ?</b> •  |
| धर्मार्थाभ्यां न हीयते     | 6        | 98    | धान्यं शाकं च वासांसि          | 8          | २४६           |
| धर्मार्थावुच्यते श्रेयः    | 2        | २२४   | धान्यं हत्वा भवत्या <b>खुः</b> | 9 2        | ६२            |
| धर्मार्थी चानुचिन्तयेत्    | 8        | ९२    | धान्यकुप्यप <b>ञ्जस्तेयम्</b>  | 99         | ६६            |
| धर्मार्थीं यत्र न स्याताम् | <b>ર</b> | 335   | धान्यचौरोऽङ्गहीनत्व <b>म्</b>  | 33         | 40            |
| धर्मासनमधिष्ठाय<br>-       | 6        | २३    | धान्यदः शाश्वतं सौख्यम्        | 8          | २३२           |
| धर्मेण ग्रामयोर्द्धयोः     | 6        | २६१   | धान्यद्रोणस्तु मासिकः          | 9          | १२६           |
| धर्मेण च द्रव्यवृद्धी      | ९        | ३३३   | धान्यवच्छुद्धिरिष्यते          | 4          | 138           |
| भर्मेण स्यवहारेण           | 6        | 88    | धान्यानामष्टमो भागः            | 9          | १३०           |
| धर्मेण हि सहायेन           | ß        | २४२   | धान्यास्रधनचौर्याण             | 99         | 182           |
| धर्मेणाधिगतो यैस्तु        | 9 8      | 908   | धान्येऽष्टमं विशां शुल्कम्     | 30         | 350           |

| पाद                             | अ०         | श्लो॰  | पाद                         | अ०       | स्रो० |
|---------------------------------|------------|--------|-----------------------------|----------|-------|
| धान्यं सदे लवे वाह्ये           | 4          | 343    | न कन्यायाः पिता विद्वान्    | 3        | 14.3  |
| धारणाभिश्च किल्बिषम्            | ६          | ७२     | म कर्णिभिर्नापि दिग्धैः     | •        | ९०    |
| धारिस्यो ज्ञानिनः श्रेष्ठाः     | 12         | १०३    | न कर्तब्यी कदाचन            | ₹        | ३५    |
| धार्मिकं बछिनं नृपम्            | •          | 308    | न कर्म निष्फलं कुर्यात्     | 8        | 90    |
| भार्मिकः पृथिवीपतिः             | ć          | २९     | न कश्चित्पचयतीति नः         | 4        | 64    |
| 29 99                           | ć          | २२१    | न कश्चिद्योषितः शक्तः       | ९        | 90    |
| ** ** .                         | 6          | २४४    | न कारुककुशीलवी              | 6        | ६५    |
| 11 55                           | 33         | २१     | न कार्पासास्थि न तुषान्     | 8        | 96    |
| धार्मिकांश्च द्विजोत्तमान्      | 8          | १५३    | न कार्यो धनसंचयः            | 30       | 929   |
| धार्मिके सति राजनि              | 3 3        | 19     | न कालात्ययमहेतः             | 4        | 184   |
| धार्मिकश्च हिजातिभिः            | 6          | ४६     | न किंचिदतिरिच्यते           | ९        | २७६   |
| धिग्दण्डं तदनन्तरम्             | L          | १२९    | न किंचिदपि कीर्त्तयेत्      | २        | २०३   |
| धिग्वणानां चर्मकार्यम्          | 90         | ४९     | न किंचिदपि दापयेत्          | 6        | ३६५   |
| भीर्विद्या सत्यमकोधः            | ξ          | ९२     | न कुप्येशानृतं वदेत्        | 3        | २२९   |
| धतमन्यैर्न धारयेत्              | 8          | ६६     | न कुर्यात्केनचित्सह         | ß        | १३९   |
| ष्टतिं बद्गाति यत्र च           | ч          | ४७     | न कुर्याद् गुरुपुत्रस्य     | <b>ર</b> | २०९   |
| ष्टतिः क्षमा दमोऽस्तेयम्        | ६          | ९२     | न कुर्वीत वृथा चेष्टाम्     | 8        | ६३    |
| धतिभेंक्ष्यं कुसीदं च           | 30         | 99E    | न कुर्वीतात्मनस्राणम्       | 3 1      | ११३   |
| धेनुं दद्यात्पयस्विनीम्         | 33         | १३७    | न कूटैरायुधेई न्यात्        | 9        | ९०    |
| धेनुरुष्ट्रो वहस्रधः            | 4          | 186    | नक्तं चान्नं समदनीयात्      | ξ        | 38    |
| ध्यानयोगेन संपश्येत्            | ६          | હ ફ્રે | नक्तं चारिभ्य एव च          | રૂ       | ९ ०   |
| ध्यानिकं सर्वमेवैतत्            | ધ્         | ८२     | नका मत्स्याश्च कच्छपाः      | 9        | 88    |
| <b>ध्यानेना</b> नीश्वरान्गुणान् | ६          | ७२     | न कुद्धो नान्तिके स्त्रियाः | २        | २०२   |
| ध्यायत्यनिष्टं यत्किचित्        | 9          | २ १    | न कुद्धो नापि तस्करः        | 3        | ६७    |
| धियमाणे तु पितरि                | ३          | २२०    | न क्लीबं न कृताञ्जलिम्      | •        | 63    |
| ध्वजाह्रतो भक्तदासः             | 6          | ४१५    | न क्वचित्सुखमेघते           | Ŋ        | ४५    |
| <b>न</b>                        |            |        | नक्षत्राणि ग्रहांस्तथा      | 9        | २४    |
| न कथंचन दुर्योनिः               | 90         | ५९     | नक्षत्राणामिव ग्रहम्        | 9        | 353   |
| न कथंचन मायया                   | •          | 308    | नक्षत्राणि च दैत्याश्च      | १२       | 88    |
| न कदाचन कुर्वीत                 | 8          | ४८     | नक्षत्रे वा गुणान्विते      | <b>ર</b> | ₹•    |
| न कदाचिद् द्विजे तस्मार         | <b>1</b> 8 | १६९    | नक्षत्रैर्यश्च जीवति        | ર        | १६२   |

| पाद                        | 9 <b>7</b> 0 | स्रो० | पाद                           | 到っ         | स्रो० |
|----------------------------|--------------|-------|-------------------------------|------------|-------|
| न क्षुतृष्णोपपीडितः        | 6            | ६७    | न च संस्कारमहित               | 30         | 125   |
| नखखादी च यो नरः            | 8            | 9     | न च स्नायाद्विना ततः          | B          | 63    |
| न गच्छमापि च स्थितः        | 8            | 80    | न च स्वं कुरुते कर्म          | 3          | ષ્ષ   |
| न गच्छेन्नापि संविशेत्     | 8            | ષ્ય   | न च स्वर्गे स गच्छति          | 3          | 96    |
| नगरे नगरे चैकम्            | હ            | 9 2 9 | न च हन्यास्थलारू दम्          | 9          | ९१    |
| न गात्रास्त्रावयेदस्क्     | ß            | १६९   | न च हव्यं वहत्यग्निः          | 8          | २४९   |
| नग्नां नेक्षेत च स्त्रियम् | 8            | ५३    | न चाचभीत कस्यचित्             | 8          | ५९    |
| नम्रो सुण्डः कपालेन        | 6            | ९३    | न चाण्डारीनं पुरुकसैः         | ક          | ७९    |
| न ग्रामजातान्यात्तींऽपि    | ६            | ९ ६   | न चादत्वा कनिष्ठेभ्यः         | ९          | २१४   |
| न च कार्योदकक्रिया         | ų            | ६९    | न चादेयं समृद्धोऽपि           | 6          | 100   |
| न च श्रुद्धाधिपीडितैः      | 8            | ६७    | न चादष्टां पुनर्हरेत्         | 6          | १५३   |
| न च क्षुधास्य संसीदेत्     | •            | १३२   | न चाधेः कालसंरोधात्           | 6          | 183   |
| न च छंदांस्यधीयीत          | ३            | 366   | न चानिसृष्टो गुरुणा           | २          | २०५   |
| न च ज्ञायेत कस्य सः        | ٩            | 990   | न चान्यायेन पृच्छतः           | 3          | 110   |
| न च तत्कर्म कुर्वाणः       | 4            | ८४    | न चापि पश्येदशुचिः            | 8          | 185   |
| न च दायापवर्त्तनम्         | ٩            | ७९    | न चाप्यन्यपरिग्रहे            | <b>u</b> g | १६२   |
| न च द्विजातयो ब्रुयुः      | Ŗ            | २३६   | न चाभ्यकामनावृताम्            | 8          | 88    |
| न च नग्नः शयीतेह           | 8            | ७५    | न चार्त्तिमुच्छति क्षिप्रम्   | 6          | 994   |
| न च पर्वतमस्तके            | 8            | 80    | न चालिप्यत पापेन              | 90         | १०५   |
| न च पादौ प्रतापयेत्        | 8            | ५३    | न चासारं न च न्यूनम्          | 6          | २०३   |
| न च पूर्वापरं विद्यात्     | 6            | ५६    | न चासीनां यथासुखम्            | 8          | ४३    |
| न च प्राणिबधः स्वर्ग्यः    | પ્           | 88    | न चास्य वतमादिशेत्            | 8          | 60    |
| न च प्रापितमन्येन          | 4            | ४३    | न चास्योपदिशेद्धर्मम्         | 8          | 60    |
| न च भीषणनामिकाम्           | ર            | ९     | न चित्यांन च पर्वते           | 8          | ४६    |
| न च यं साधिगच्छति          | 9            | ९१    | न चिरं पर्वते वसेत्           | 8          | ξo    |
| न च या स्पृष्टमैथुना       | 6            | २०५   | न चेत्तस्मिन् गृहे वसेत्      | પ          | १०२   |
| न च योनिगुणान्कांश्चित्    | 9            | ३७    | न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु        | ષ્ઠ        | १७३   |
| न च रक्तो विरावयेत्        | 8            | ६४    | न चेत् त्रिपक्षात्प्रब्रुयात् | 6          | 46    |
| न च वासांसि वासोभिः        | 4            | ३९६   | न चेमं देहमाश्रित्य           | ξ          | 80    |
| त च वैश्यस्य कामः स्याम    | <b>म् ९</b>  | ३२८   | न चेहाजायते पुनः              | ₹          | २४९   |
| न च शोचत्यसम्पसौ           | 12           | ३६    | न चैतदवधूनयेत्                | 3          | २२९   |

| पाद                       | अ०       | श्चो• | पाद                          | अ०       | स्रो०        |
|---------------------------|----------|-------|------------------------------|----------|--------------|
| न चैनं पादतः कुर्यात्     | 8        | ५४    | न तन्त्र प्रणयेदण्डम्        | ૮        | २३८          |
| न चैनं अवि शकोति          | 9        | Ę     | न तत्र विद्यते किंचित्       | 6        | १८इ          |
| न चैनमभिलङ्क्षयेत्        | 8        | 48    | न तथैतानि शक्यन्ते           | 2        | ९६           |
| न चैव प्रलिखेद् भूमिम्    | 8        | પુષ   | न तद्भयो निवर्तयेत्          | 9        | २३३          |
| न चैवात्यशनं कुर्यात्     | <b>ર</b> | ५६    | न तमंह इतीति च               | 33       | २५१          |
| न चैवात्राशयेत्कंचित्     | ź        | ८३    | न तवास्मीति वादिनम्          | 9        | ९१           |
| न चैवास्यानुकुर्वीत       | <b>ર</b> | १९९   | न तस्मिन्धारयेद्ण्डम्        | 33       | २१           |
| न चैवैनां प्रयच्छेत्तु    | ٩        | ८९    | न तस्य निष्कृतिः शक्या       | 3        | २२७          |
| न चोच्छिष्टः कचिद् व्रजेत | ( २      | ५६    | न तस्य वेतनं देयम्           | 6        | <b>२१७</b>   |
| "                         | 8        | ७५    | न तस्यामोति तत्फलम्          | 3 3      | 6            |
| न चोत्पातनिमित्ताभ्याम्   | ६        | ५०    | न ताडयेचुणेनापि              | 8        | १६९          |
| न चोदके निरीक्षेत         | 8        | ३८    | न ताद्यां भवत्येनः           | પ્યુ     | ₹8           |
| न च्छिन्द्यात्करजैस्तृणम् | 8        | 90    | न तापसैर्घाह्यणैर्वा         | ६        | 43           |
| न च्छिन्धाञ्चखलोमानि      | 8        | ६९    | न तिष्ठति तु यः पूर्वी       | <b>ર</b> | १०३          |
| न जहाति न हीयते           | ६        | ४२    | न तिष्ठन्न पराङ्मुखः         | <b>ર</b> | १९५          |
| न जातु कामः कामानाम्      | २        | ५४    | न तु तृप्येत्स्वयं ततः       | 8        | २५१          |
| न जातु परयोषिति           | ९        | 83    | न तु नामापि गृह्धीयात्       | 4        | 340          |
| न जातु ब्राह्मणं हन्यात्  | 6        | ३८०   | न तु यानासनाशनात्            | 99       | 360          |
| न जातु विषमं भजेत्        | ٩        | 999   | न तु ज्ञुद्रः कथंचन          | 6        | २०           |
| न जातु स्यान्कुत्हली      | 8        | ६३    | न तेन वृद्धो भवति            | 3        | १५६          |
| न जीर्णदेवायतने           | 8        | ४६    | न तैः समयमन्विच्छेत्         | 30       | ५३           |
| न जीर्णमलवद्वासाः         | 8        | ₹8    | न तैरभ्यननुज्ञातः            | ₹        | २२९          |
| न जुगुप्सेत किंचित्       | 33       | 969   | न तैरप्रयतो भवेत्            | ч        | 185          |
| न ज्ञातिकुलबन्धुषु        | 3        | 828   | न तौ प्रति हि तान् धर्मान    | 130      | 30           |
| नटश्च करणश्चेव            | 30       | २२    | न त्यागोऽस्ति द्विषन्त्याश्च | 9        | ७९           |
| न तं नयेत साक्ष्यं तु     | 4        | 300   | न त्वन्यत इति स्थितिः        | 8        | ३३           |
| न तं भजेरन्दायादाः        | ९        | २००   | न त्वयज्ञ इति स्थितिः        | 3        | 350          |
| न तं स्तेना न चामित्राः   | 9        | ८३    | न त्वरूपदक्षिणैर्यज्ञैः      | 33       | ३९           |
| म तत्पुत्रैर्भजेत्सार्धम् | ९        | २०९   | न त्वेनामिरिणे वपेत्         | 2        | 335          |
| न तत्फलमबाप्नुयात्        | 6        | १५६   | न खेव ज्यायसीं वृत्तिम्      | 90       | . <b>૧</b> ૫ |
| न तत्फलमवामोति            | 4        | e'B   | न खेव तु कृतोऽधर्मः          | ß        | १७३          |

| पाद                       | भ०       | श्लो॰ | पाद                         | अ०   | श्लो०    |
|---------------------------|----------|-------|-----------------------------|------|----------|
| न त्वेव तु वृथा हम्तुम्   | ų        | ३७    | न द्वितीयं कथंचन            | 9    | Ęo       |
| न स्वेव लवणं रसैः         | 90       | ९४    | न द्वितीयश्च साध्वीनाम्     | ધ્યુ | 9 & ?    |
| न त्वेवाधी सोपकारे        | 6        | 182   | न धर्मस्यापदेशेन            | 8    | 196      |
| न दण्डं दातुमहित          | 4        | इ४१   | न धर्मात्प्रतिषेधनम्        | 90   | 928      |
| न दण्डं मनुरव्रवीत्       | 6        | २९२   | न नक्षत्रांगविद्यया         | Ę    | ५०       |
| न दण्ड्यान्मनुरव्यति      | 6        | २४२   | न नम्नं न निरायुधम्         | •    | ९२       |
| न दत्वा कस्य चित्कन्याम्  | ٩        | 99    | न नग्नः स्नानमाचरेत्        | 8    | ૪૫       |
| न दत्वा परिकीर्त्तयेत्    | 8        | २३६   | न नदीतीरमासाच               | 8    | ४७       |
| न द्याकापि दापयेत्        | 6        | २२३   | न नश्यन्ति कदाचन            | 6    | 185      |
| न दद्याद्यदि तस्मात्सः    | 6        | 969   | न नामग्रहणादेव              | Ę    | ६७       |
| न दन्तान्तरधिष्टितम्      | ų        | 181   | न नावं न खरं नोष्ट्रम्      | 8    | 120      |
| न दर्शेन विना श्राद्धम्   | 3        | २८२   | न निक्षेप्तुश्च बन्धुभिः    | 6    | १८६      |
| न दस्युर्न विकर्मकृत्     | 6        | ६६    | न निर्हारं स्त्रियः कुर्युः | ९    | १९९      |
| न दाता रूभते फरुम्        | <b>ર</b> | 183   | न नित्यं नियमान् बुधः       | 8    | २०४      |
| न दाप्याः केनचित्करम्     | 6        | ३९४   | न निर्वपति पञ्चानाम्        | ¥    | ७२       |
| न दाप्यास्तारिकं तरे      | 6        | ४०७   | न निवर्तेत संप्रामात्       | •    | ८७       |
| न दिवीन्द्रायुधं दृष्ट्वा | 8        | ५९    | न निशान्ते परिश्रान्तः      | 8    | ९९       |
| नदीकूलं यथा मृक्षः        | ६        | ७८    | न निष्क्रयविसर्गाभ्याम्     | 9    | ४६       |
| नदीतीरेषु चैव हि          | ३        | २०७   | न नृत्येदथवा गायेत्         | 8    | ६९       |
| नदीतीरेषु तद्विचात्       | 6        | ४०६   | न नेता शासिता च सः          | હ    | 30       |
| नदीनां वापि संभेदं        | 4        | ३५६   | न नेत्रचपस्रोऽनृजुः         | 8    | 999      |
| नदी वेगेन शुद्धयति        | ч        | 106   | न परद्रोहकर्मधीः            | 8    | 300      |
| नदीषु देवखातेषु           | 8        | २०३   | न पश्येत्प्रसवन्तीं च       | ક્ર  | 88       |
| न वूरेण तिरोहितम्         | 6        | २०३   | न पक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीम्   | ३    | <b>९</b> |
| न दृत्रयेतागमः कि चित्    | ሪ        | २००   | न परद्रोहकर्मधीः            | 2    | १६१      |
| न दृष्टदोषाः कर्त्तव्याः  | S        | ६४    | न परीक्षेत साक्षिणः         | 6    | ७२       |
| न देयं चास्य वेतनम्       | 4        | २१५   | न परेण समागतम्              | •    | ९२       |
| न देयं तस्य तद्भवेत्      | ઢ        | २१२   | न पाणिपादचपलः               | 8    | 300      |
| न देयौ प्रत्यनन्तरे       | 6        | 964   | न पाणिस्थं न चासने          | 8    | હ        |
| न दोषं प्राप्तुयार्किचित् | 6        | ३५५   | न पातब्या द्विजोस्तमैः      | 3 3  | ९४       |
| न द्रम्याणामविज्ञाय       | 8        | 350   | न पादेन स्पृशेदन्नम्        | ¥    | २२९      |

| पाद                    | अ०       | श्लो०      | पाद                        | अ०           | श्लो॰ |
|------------------------|----------|------------|----------------------------|--------------|-------|
| न पादी भावयेत्कांस्ये  | 90       | 90         | न भजेत्सी स्वतन्त्रताम्    | 4            | 286   |
| न पारक्यः स्वनुष्ठितः  | 10       | ९०         | न भवत्यर्धकिल्बिषी         | 4            | 181   |
| न पालस्तत्र किल्विषी   | 6        | २३६        | न भस्मनि न गोवने           | 8            | ४५    |
| न पाछो दातुमहति        | ૮        | २३३        | न भस्मास्थिकपालिकाः        | 8            | 30    |
| न पाषण्डिगणाकांते      | 8        | ६९         | न भावप्रतिवृषिते           | 8            | ६५    |
| न पित्र्येण कदाचन      | <b>ર</b> | ५८         | न भिन्नभाण्डे भुञ्जीत      | 8            | ६५    |
| न पुत्रदारा न ज्ञातिः  | 8        | २३९        | न भिन्नश्रंगाक्षित्तुरैः   | 8            | ६७    |
| न पुत्रभागं विषमम्     | ٩.       | २१५        | न भुक्तमात्रे नाजीर्णे     | 8            | 353   |
| न पुत्रो दातुमहित      | ۵        | 949        | न भुञ्जीतोद्धृतस्त्रेहम्   | 8            | ६२    |
| न पूर्व गुरवे किचित्   | २        | २४५        | न भीतं न परावृत्तम्        | <b>&amp;</b> | ९३    |
| न पुत्रस्यागमहति       | 6        | ३८९        | न भुञ्जीत कदाचन            | 8            | २०७   |
| न पैतृयज्ञियो होमः     | 3        | २८२        | न भोक्तव्यो बलादाधिः       | 6            | 388   |
| न प्रधावेच्च वर्षति    | 8        | ३८         | न भोगेन प्रणश्यति          | 4            | 186   |
| न प्रपद्देत कर्हिचित्  | 8        | 99         | न भोजनार्थं स्वे विप्रः    | ३            | 909   |
| न प्रसज्येत कामतः      | 8        | <b>१</b> ६ | न भ्रातरो न पितरः          | 9,           | 364   |
| न प्रसञ्जेत विस्तरे    | ફ        | १२५        | न मद्ये न च मैथुने         | 4            | ५ ६   |
| "                      | ६        | ५५         | न मध्यं नभसो गतम्          | 8            | ३ ७   |
| न प्राणाबाधमाचरेत्     | 8        | ५४         | न मांसभक्षणे दोषः          | ч            | ५६    |
| न फालकृष्टमश्नीयात्    | દ્       | <b>५</b> ६ | न माता न पिता न स्त्री     | 6            | ३८९   |
| न फालकृष्टे न जले      | 8        | 8 ६        | न मातृतो ज्येष्ट्यमस्ति    | ९            | १२५   |
| न बकझतिके विप्रे       | 8        | १९२        | न मित्रकारणाद्राजा         | 6            | ३४७   |
| न बाहुभ्यां नदीं तरेत् | 8        | 99         | न मुक्तकेशं नासीनम्        | 9            | ९१    |
| न बीजी लभते फलम्       | 9        | 43         | न मूत्रं पिथ कुर्वीत       | 8            | 83    |
| न ब्राह्मणं परीक्षेत   | Ę        | १४९        | न मुखैंर्नाविलसैश्च        | 8            | ७९    |
| न ब्राह्मगक्षत्रिययोः  | Ę        | 38         | न मृद्वारिश्चचिः शुचिः     | ખ            | १०६   |
| न बाह्मणवधान्यान्      | 6        | ३८१        | न मुल्लोष्टं च मृद्रीयात्  | 8            | 90    |
| न ब्राह्मणस्य त्वतिथिः | ર        | 330        | न यज्ञार्थे घनं श्रुद्रात् | 33           | २४    |
| न ब्राह्मणो वेदयेत     | 33       | ₹ 3        | न यथेष्टासनो भवेत्         | २            | 386   |
| न ब्रुयास्सस्यमप्रियम् | ષ્ઠ      | १३८        | नयन्ति परमां गतिम्         | ६            | 66    |
| न भक्षयति यो मांसम्    | 4        | ५०         | न युद्धेन कदाचन            | <b>9</b>     | 196   |
| न भक्षयेदैकचरान्       | ય        | 30         | न ये केचिदनापदि            | 6            | ६२    |
|                        |          |            |                            |              |       |

| े पाद                    | ঙা৹ | श्चो० | पाद                      | স্ত      | श्हो॰      |
|--------------------------|-----|-------|--------------------------|----------|------------|
| नयेत्रथानुमानेन          | 6   | 88    | नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः | 1        | ९ ६        |
| नयेयुस्ते समअसम्         | 6   | २५६   | नरेष्वन्यायवर्तिषु       | •        | <b>1</b> & |
| नरं कलुषयोनिजम्          | 90  | 40    | नरो भवति किल्बिषी        | 6        | १३         |
| नरं दुरुपसर्पिणम्        | •   | Q     | नरो मध्यममेव वा          | 9        | २८७        |
| नरकं कालसूत्रं च         | 8   | 66    | नरोऽरूपमपि वा बहु        | 30       | ६०         |
| नरकं चैव गच्छति          | 6   | १२८   | नरो वार्यधिगच्छति        | ą        | २१८        |
| नरकं तु विपर्यये         | ૪   | २३५   | नर्भबृक्षनदीनान्नीम्     | 3        | ٩,         |
| नरकं तेन गच्छति          | 4   | ३१३   | नर्तनं गीतवादनम्         | <b>ર</b> | 308        |
| नरकं प्रतिपद्यते         | २   | 998   | न लङ्घयेद्वत्सतन्त्रीम्  | 8        | ३८         |
| "                        | 93  | २०६   | न लभन्ते फलं कचित्       | ٩        | ४९         |
| नरकाकखराणां च            | 99  | १५६   | न लिङ्गं धर्मकारणम्      | ६        | ६६         |
| नरकानेकविंशतिम्          | ક   | 63    | न लोकष्टुत्तं वर्तेत     | 8        | 3 3        |
| नरकान्माप्य तत्क्षयात्   | 9 २ | 48    | न वधं प्राप्तुयान्नरः    | 6        | ३६४        |
| नरके परिवर्तते           | 8   | ५६५   | न वप्ता लभते फलम्        | 3        | १४२        |
| नरकेषु विवर्तनम्         | 92  | 94    | "                        | ९        | ५४         |
| नरके हि पतन्त्येते       | 33  | ३७    | न विमित्वान शुक्तके      | ષ્ઠ      | 929        |
| न रक्षेयं पश्चनीति       | 9   | ३२८   | न वर्धयेदवाहानि          | 4        | 48         |
| नरदेवसमागमे              | 99  | ८२    | न वल्मीके कदाचन          | 8        | ४६         |
| नररूपेण तिष्ठति          | •   | 4     | न वाचमनृतां वदेत्        | ६        | 88         |
| नरस्य ह्युपगच्छतः        | 8   | 83    | न वाचालां न पिक्नलाम्    | રૂ       | 6          |
| न राजा श्रोत्रियात्करम्  | •   | १३३   | न वादित्राणि वादयेत्     | ¥        | ६४         |
| न राज्ञः प्रतिगृह्धन्ति  | 8   | 93    | नवासमद्यान्मांसं वा      | 8        | २७         |
| न राज्ञः प्रतिगृह्णीयात् | ક   | 82    | नवासामिषगर्धिनः          | 8        | २८         |
| न राज्ञामघदोषोऽस्ति      | 4   | ९३    | न वारयेद्गां धयन्तीम्    | 8        | પ્યુ જુ    |
| नराणामविजानताम्          | ş   | 99    | न वार्यञ्जिलिना पिबेत्   | 8        | ६३         |
| नराणामिह दूचणम्          | 7   | २१३   | न वार्यपि प्रयच्छेतु     | 8        | १९२        |
| नरा रूपविपर्ययम्         | 33  | 88    | न वारुधिवरूपितैः         | 8        | ६७         |
| नराघवरज्तस्य च           | 33  | 40    | न वासोभिः सहाजस्रम्      | 8        | १२९        |
| नराश्वोष्ट्रवराहैश्च     | 3 3 | १९९   | न विगद्धं कथां कुर्यात्  | 8        | ७२         |
| न रेतः स्कन्दयेत् कचित्  | २   | 960   | न विज्ञायेत वा पिता      | Ę        | 33         |
| मरेन्द्राखिदिवं यान्ति   | ९   | २५३   | न विण्मूत्रमुदिक्षेत     | 8        | 99         |

| पाद                        | अ०        | स्रो० | पाद                       | अ० | श्लो०       |
|----------------------------|-----------|-------|---------------------------|----|-------------|
| न विसेन न बन्धुभिः         | २         | 81.8  | न श्रद्धजनसंक्रिधी        | 8  | ९९          |
| न विद्यमानेष्वर्थेषु       | 8         | 94    | न श्रुद्रराज्ये निवसेत्   | 8  | ६१          |
| न विनश्यति कर्हिचित्       | ف         | ३९    | न शुद्राय मति दद्यात्     | 8  | 60          |
| ,, ,,                      | و         | 48    | न शूद्रे पातकं किंचित्    | 90 | १२६         |
| न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सु  | ų         | 908   | न शोचन्ति तु यत्रैताः     | ર  | <b>પુ</b> છ |
| न विप्रदुष्टभावस्य         | २         | ९७    | न रमश्रुणि गतान्यास्यम्   | ષ  | 383         |
| न विद्यान्तृपो धर्मम्      | 6         | ३९०   | नश्यतीषुर्यथा विद्धः      | Q  | ४३          |
| न विभाज्यं प्रचक्षते       | ٩,        | २१९   | नश्यतो विनिपाते तौ        | 6  | 964         |
| न विरुद्धेन कर्मणा         | ૪         | 84    | नश्यन्ति हृध्यक्ष्यानि    | ą  | ९७          |
| न विवादे न कलहे            | 8         | 121   | न श्रमार्तो न कामार्तः    | 4  | ६७          |
| न विवाहविधावुक्तम्         | ९         | ६५    | न श्राद्धे भोजयेन्मित्रम् | ą  | १३८         |
| न विविक्तासनो भवेत्        | २         | २१५   | न श्रोत्रियो न छिङ्गस्थः  | 6  | ६५          |
| न विशेषोऽस्ति कश्चन        | ९         | २६    | न श्रवृत्त्या कदाचन       | 8  | 8           |
| न विशेषोऽस्ति धर्मतः       | ९         | १३३   | नष्टं देवलके दत्तम्       | ર  | 960         |
| न विस्मयेत तपसा            | ક         | २३६   | नष्टं विनष्टं कृमिभिः     | 6  | २३२         |
| न बृक्षं न च हस्तिनम्      | 8         | 920   | न संभाषां परस्रीभिः       | 6  | ३६१         |
| न बृथा शपथं कुर्यात्       | 6         | 333   | न संभोग इति स्थितिः       | c  | २००         |
| न वृद्धो न शिशुनैकः        | 6         | ६६    | न संवयेच पतितैः           | 8  | ७९          |
| न वेदफलमश्रुते             | ទ         | १०९   | न संसर्ग व्रजेत्सद्भः     | 99 | ४७          |
| न वेदबलमाश्रित्य           | <b>१२</b> | 101   | न संहताभ्यां पाणिभ्याम्   | ૪  | ८२          |
| नवेनानिर्चता ह्यस्य        | 8         | २८    | न संहरति किंचन            | 6  | १८९         |
| न वैकन्यान युवतिः          | 99        | ३६    | न सङ्गेभ्यो विनिर्गतः     | 6  | ६५          |
| नवैतान्स्नातकान्विद्यात्   | 99        | 2     | न स तल्लब्धुमहति          | 6  | 180         |
| न वै स्वयं तदश्रीयात्      | ર         | १०६   | न स पापेन लिप्यते         | 30 | 308         |
| न ज्याध्यार्त्ता न दूषिताः | 6         | ६४    | न समौ नासमाविति           | 30 | ७३          |
| न न्याधिबहुले भृशम्        | 8         | ६०    | न स राज्ञा नियोक्तव्यः    | 6  | १८६         |
| न व्रतं नाप्युपोषणम्       | ч         | ૧૫૫   | न स राज्ञाऽभियोक्तम्यः    | 6  | ५०          |
| न व्रतेन वियुज्यते         | 4         | ९१    | न ससत्वेषु गर्तेषु        | 8  | 80          |
| न शक्यो न्यायतो नेतुम्     | •         | ३०    | न सहाया न वैरिणः          | 6  | ६४          |
| न शयीत तया सह              | 8         | 80    | न सांपराधिकं तस्य         | 33 | ₹•          |
| न शुष्कां गिरमीरयेत्       | 33        | ३५    | न साक्षी नृपतिः कार्यः    | 6  | ६५          |
|                            |           |       |                           |    |             |

| पाद                        | अ०  | श्लो० | पाद                         | अ०       | श्लो॰ |
|----------------------------|-----|-------|-----------------------------|----------|-------|
| न सायं प्रातराशितः         | 8   | ६२    | न हृष्यति ग्लायति वा        | <b>ર</b> | 96    |
| न साहसिकदण्डही             | 6   | ३८६   | न होढेन विना चौरम्          | ٩        | 200   |
| न सीदश्वपि धर्मेण          | 8   | 303   | न ह्यनध्यात्मवित्कश्चित्    | ६        | ८२    |
| न सीदेत्स्नातको विप्रः     | 8   | ३४    | न द्यस्मिन्युज्यते कर्म     | 2        | 303   |
| न सुसं न विसन्नाहम्        | ø   | ९२    | नाकन्यासु क चिन्नुणाम्      | 6        | २२६   |
| न सेनायां न संगरे          | 8   | 3 2 3 | नाकामो दातुमहित             | ९        | २०८   |
| न सेवेत चतुष्पयम्          | B   | १३१   | नाकृत्वा प्राणिनां हिंसाम्  | ч        | ४८    |
| न स्कन्दते न व्यथते        | •   | ८४    | नाकामेत्कामतश्रुवाम्        | 8        | 330   |
| न स्त्री स्वातन्त्र्यमहित  | 9   | Ę     | नाक्षत्रं बह्य वर्धते       | ٩        | ३२२   |
| न स्नानमाचरेज्रुक्त्वा     | 8   | १२९   | नाक्षैः क्रीडेत्कदाचित्तु   | 8        | ७४    |
| न स्नायाच कदाचन            | 8   | 201   | नागान्सर्यान्सुपर्णाश्च     | 3        | ३७    |
| न स्रृशेचेतदुच्छिष्टः      | ૪   | ८२    | नाम्नि मुखेनोपधमेत्         | 8        | ५३    |
| न स्पृशेस्पाणिनोच्छिष्टः   | 8   | 185   | नाग्निज्विलततेजनैः          | 9        | ९०    |
| न स्रृशेदनिमित्ततः         | 8   | 188   | नाङ्क्या राज्ञा छछाटे स्युः | ९        | २४०   |
| न स्याद्वाक्चपलश्चेव       | 8   | 300   | नाङ्गुःलेच्छेदमाप्तुयात्    | 6        | ३६८   |
| न स्वर्गाच्च्यवते लोकात्   | 6   | १०३   | नामिददाह रोमापि             | 6        | ११६   |
| न स्वातक्रयेण कर्त्तब्यम्  | 4   | 380   | नाङ्गं किंचिदपि स्पृशेत्    | 8        | ८३    |
| न स्वामिना निसृष्टोऽपि     | 6   | 888   | नाचरेकिंचिद्धियम्           | ď        | ૧૫૬   |
| न हन्तव्यानि हेतुभिः       | 12  | 330   | नाज्ञातेन समं गच्छेत्       | 8        | 180   |
| न हरेइश्चिमः कचित्         | 9   | १४२   | नाज्ञानामुदितोऽयुत्तैः      | १२       | ११३   |
| न हापयति शक्तितः           | 3   | 9     | नाञ्जयन्तीं स्वके नेत्रे    | 8        | 88    |
| न हायनैर्न पिलतेः          | 2   | 948   | नाततायिवधे दोषः             | 4        | ३५१   |
| न हिंस्याद्वाह्यणान्गाश्च  | 8   | १६२   | नातिकस्पं नातिसायम्         | 8        | 380   |
| न हि तस्य व्यतिक्रमः       | 6   | ३५५   | नातिकामति पञ्चताम्          | 4        | 343   |
| न हि तस्यास्ति किंचित्स्वर | म्८ | ४१७   | नातिप्रगे नातिसायम्         | 8        | ६२    |
| न हि दण्डादते शक्यः        | ९   | २६३   | नातिमध्यंदिने स्थिते        | 8        | 380   |
| न हि भस्मनि हूयते          | ર   | १६८   | नातिसांवत्सरीं वृद्धिम्     | 4        | १५३   |
| न हि शूद्रस्य यज्ञेषु      | 3 3 | 3 3   | नातिसौहित्यमाचरेत्          | 8        | ६२    |
| न हि हस्तावसृग्दिग्धी      | 3   | १३२   | नातुरो न महानिशि            | 8        | १२९   |
| न हीदशमनायुष्यम्           | 8   | 3 ई 8 | नाता दुष्यत्यदञ्जाद्यान्    | ч        | ३०    |
| नहुषश्चेव पार्धिवः         | •   | 83    | नात्मनोऽपहरेत्स्रजम्        | 8        | ખુખ   |

| पाद                           | 910      | स्रो० | पाद                        | अ०       | स्रो० |
|-------------------------------|----------|-------|----------------------------|----------|-------|
| नात्मानमवमन्येत               | ß        | 934   | नानुशासनवादाभ्याम्         | Ę        | 40    |
| नात्येति सकृदाहता             | 6        | 343   | नानुशुश्रम जात्वेतत्       | ९        | 900   |
| नात्रिवर्षस्य कर्तव्या        | 4        | 90    | नानुच्येत यथाविधि          | 33       | 393   |
| नादण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति     | 4        | ३३५   | नान्त्यपर्वतनामिकाम्       | ¥        | ۹,    |
| नाददीत नृपः साधुः             | 9        | २४३   | नान्त्यैर्नान्त्यावसायिभिः | 8        | ७९    |
| नाद्याचैव तथान्तरा            | २        | ५६    | नान्त्यो न विकलेन्द्रियः   | 6        | ६६    |
| नाचाच्छ्द्रस्य पकाश्वम्       | 8        | २२३   | नाश्वमद्यादेकवासाः         | 8        | કુ ખ  |
| नाद्यादविधिना मांसम्          | પ        | ३३    | नान्यत्रेत्यव्रवीन्मनुः    | 4        | 83    |
| नाचादस्तमिते रवी              | 8        | ७५    | नान्यदन्येन संसृष्टम्      | 4        | २०३   |
| नाचाहिपः कदाचन                | 4        | ३६    | नान्यस्रीगो न दुष्टवाक्    | 6        | ३८६   |
| नाधर्मश्चरितो छोके            | 8        | १७२   | नान्यस्मिन्विधवा नारी      | <b>ዓ</b> | ६४    |
| नाधर्मे कुरुते मनः            | १२       | 398   | नान्या भार्या विघःयते      | ९        | 349   |
| नाधर्मेणागमः कश्चित्          | 9        | 63    | नान्योत्पन्ना प्रजास्तीह   | 4        | १६२   |
| नाधार्मिकजनाष्ट्रते           | 8        | ६१    | नापरे जातु साधवः           | ९        | 98    |
| नाधार्मिके वसेद्वामे          | 8        | ६०    | नापृष्टः कस्यचिद् ब्र्यात् | 2        | 110   |
| नाधिकं दशमादद्यात्            | ९        | 148   | नाष्सु मूत्रं पुरीषं वा    | 8        | ५६    |
| नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्        | રૂ       | C     | नाबह्य क्षत्रमृक्षोति      | Q,       | ३२२   |
| नाधितिष्ठेचु कामतः            | 8        | १३२   | नाष्ट्राह्मणे गुरौ शिष्यः  | <b>२</b> | २४२   |
| नाधीयीत कदाचन                 | 8        | १२३   | नाभिं पाणितलेन तु          | 8        | १४३   |
| नाधीयीत श्मशानान्ते           | 8        | ११६   | नाभिनन्देत जीवितम्         | ξ        | ४५    |
| नाधीयीतामिषं जग्ध्ता          | 8        | 992   | नाभिनन्देत मरणम्           | Ę        | 83    |
| नाधीयीताश्वमारूढः             | 8        | 920   | नाभिभाषेत कर्हिचित्        | 33       | २२३   |
| नाध्यधीनो न वक्तव्यः          | 4        | ६६    | नाभिरूपमपि त्वरिम्         | 3        | १३४   |
| नाध्यापनाद्याजनाद्वा          | 90       | १०३   | नाभिवाद्यः स विदुषा        | <b>२</b> | १२६   |
| नानाकर्मप्रवेदिभिः            | 9,       | २६७   | नाभिवाचेह पादयोः           | २        | २१२   |
| नानापण्योपजीविनः              | ९        | २५७   | नाभिष्याहारयेद् ब्रह्म     | 2        | १७२   |
| नानारूपाणि जायन्ते            | ٩        | ३८    | नामजातिप्रद्दं त्वेषाम्    | 6        | २७१   |
| नानाविधानां द्रध्याणाम्       | ų        | 330   | नामधेयं दशम्यां तु         | २        | ३०    |
| नानास्त्रीषु निबोधतः          | <b>ς</b> | 986   | नामधेयस्य ये केचित्        | ર        | १२३   |
| नानिष्ट्रा नवसस्येष्ट्या      | 8        | २७    | नामश्रज्ञान्यहूनपि         | ¥        | १२९   |
| नानुरोधोऽस्त्यनध्या <b>ये</b> | <b>२</b> | १०५   | नामुत्र हि सहायार्थ        | ક        | २३९   |
|                               |          |       |                            |          |       |

| पाद                            | अ०       | श्लो॰        | पाद                            | अ०       | स्रो• |
|--------------------------------|----------|--------------|--------------------------------|----------|-------|
| नामेष्यं प्रक्षिपेदमौ          | 8        | ५३           | नावमन्येत बुद्धिमान्           | 8        | 135   |
| नाम्नां स्वरूपभावो हि          | २        | 128          | नावमान्या च कर्हिचित्          | •        | ८२    |
| नाम्नि वापि कृते सति           | Ŋ        | 40           | नावमन्येत वै भूष्णुः           | ¥        | १३५   |
| नायत्यामसुखोदयम्               | ß        | 90           | नाविज्ञाते जलाशये              | 8        | १२९   |
| नायञ्चितस्त्रिवेदोऽपि          | 2        | 996          | माविनी <b>तैर्घजेखुँयैः</b>    | 8        | € છ   |
| नायुधब्यसनप्राप्तम्            | <b>©</b> | ९३           | नाविस्पष्टमधीयीत               | 8        | ९९    |
| नायुध्यमानं पश्यन्तम्          | <b>y</b> | , ९२         | नावेदविदि धर्मवित्             | 8        | 892   |
| नावेदविदि धर्मवित्             | ૪        | १९२          | नावेदविहितां हिंसाम्           | ų        | 8३    |
| नावेदविहितां हिसाम्            | ч        | ४३           | नाशयन्त्याञ्ज पापानि           | 33       | २४५   |
| नारं स्पृष्ट्वास्थि सस्त्रेहम् | 4        | ८७           | नाशयेते प्रदायिनाम्            | 3        | 904   |
| नारिं न मित्रं यं विद्यात्     | ३        | १३८          | नाश्चन्ति पितरस्तस्य           | 8        | २४९   |
| नारीणां च विशेषतः              | 4        | ३२३          | नाश्चन्ति पितृदेवास्तत्        | Ę        | 96    |
| नारीयानानि वस्त्रं वा          | 3        | ५२           | नाभीयात्संधिवेलायाम्           | 8        | ં પુષ |
| नारीहर्वाऽनवस्थिताः            | 99       | १३८          | नाश्रीयाद्वार्यया सार्धम्      | 8        | ४३    |
| नारीसंदूषणानि षट्              | ९        | १३           | नाश्रोत्रियतते यज्ञे           | 8        | २०५   |
| नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि       | <b>२</b> | 3 & 9        | नाष्टिको लभते धनम्             | 6        | २०२   |
| नार्तं नातिपरिक्षतम्           | 9        | ९३           | नासां वयसि संस्थितिः           | ९        | 18    |
| नार्तेनाप्यवमन्तव्याः          | २        | २२५          | नासिका चैव पञ्चमी              | 2        | 9.    |
| नार्तो न मत्तो नोन्मतः         | 6        | ६७           | नासीत गुरुणा सह                | 2        | २०३   |
| नार्तो नासंस्कृतस्तथा          | 9 9      | <b>રૂ</b> દ્ | नासीनो न च भुञ्जानः            | <b>ર</b> | 984   |
| नार्तोऽप्यपवदेद्विप्रान्       | 8        | २३६          | नास्तंयन्तं कदाचन              | 8        | 30    |
| नात्र्यामपि यतस्ततः            | 8        | 94           | नास्तिकं विष्रलुम्पकम्         | C        | ३०९   |
| नार्थं किंचित्समाहरेत्         | 99       | १८९          | नास्तिकाकान्तमहिजम्            | 6        | २२    |
| नार्थसम्बन्धिनो नाप्ताः        | 4        | ६४           | नास्तिको वेदनिन्दकः            | ?        | 13    |
| नार्द्रपादस्तु संविशेत्        | 8        | ७ ६          | नास्तिक्यं चोपपातकम्           | 33       | ६६    |
| नार्या जातोऽविधानतः            | 9        | 388          | नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता       | 92       | 33    |
| नार्हन्ति भ्रातरो धनम्         | 9        | २१४          | नास्तिक्यं वेदनिन्दां च        | 8        | २६३   |
| नालोक्यां तामुदीरयेत्          | 3        | 363          | नास्तिक्येन च कर्मणाम्         | 3        | ६५    |
| नालोमिकां नातिलोमाम्           | ર        | 6            | नास्ति यज्ञसमो रिपुः           | 19       | ૪૦    |
| नाल्पविद्यो न बालिशः           | 33       | ३६           | नास्ति स्त्रीणां क्रिया मध्रैः | 9        | 96    |
| नावमन्येत कञ्चन                | Ę        | ४७           | नास्ति सीणां पृथम्यज्ञः        | ч        | ૧૫૫   |

| पाद                       | अ०       | श्लो॰ | पाद                           | अ०       | स्रो० |
|---------------------------|----------|-------|-------------------------------|----------|-------|
| नारफोटयेस च क्षेडेत्      | 8        | ६४    | निगुढाश्चारयन्ति च            | 6        | ३६२   |
| नास्य कश्चिद्वसेव् गेहे   | 8        | २९    | निगूदेक्कितचेष्टितैः          | •        | ६७    |
| नास्य कार्योऽग्निसंस्कारः | પ્       | ६९    | निगृ <b>द्धीयात्प्रयत्नतः</b> | 6        | ३१०   |
| नास्य छिद्रं परो विद्यात् | 9        | 904   | निगृह्णीयादरीन् द्विजः        | 33       | ३२    |
| नास्याधिकारो धर्मे ऽस्ति  | 90       | 178   | निगृह्य दापयेच्चैनम्          | 6        | २२०   |
| नास्यानभन्गृहे वसेत्      | Ę        | 904   | निग्रहं प्रकृतीनां च          | <b>y</b> | 904   |
| नास्याशीचं विधीयते        | ખ        | ९७    | निग्रहीतुं न शक्नुयात्        | 6        | १३०   |
| नास्त्रमापातयेजातु        | 3        | २२९   | निग्रहेण हि पापानाम्          | 4        | ३११   |
| नास्वजातिः कथंचन          | ९        | ८६    | निजो विन्देत देवरः            | ९        | ६९    |
| नाहवे स्यात्पराङ्म्       | 90       | 999   | नित्यं कुर्यादतन्द्रितः       | 8        | 18    |
| निःश्रेयसं कर्मणां च      | 9        | 990   | "                             | 8        | २२६   |
| निःश्रेयसकरं परम्         | 92       | ८३    | नित्यं च प्रयतात्मनाम्        | ß        | १४६   |
| 55 75                     | 92       | 308   | नित्यं छन्दस्कृतं पठेत्       | 8        | 300   |
| "                         | 35       | 998   | नित्यं छिद्रानुसार्यरेः       | ø        | १०२   |
| निःश्वासापहतस्य च         | ३        | 19    | नित्यं तस्मिन्समाश्वस्तः      | ६        | ५९    |
| निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यः   | 99       | २     | नित्यं मेध्यमिति स्थितिः      | ч        | १२९   |
| निक्षिप्तस्य धनस्यैवम्    | 6        | 998   | नित्यं याचनकस्तथा             | ३        | १६५   |
| निक्षेपं निक्षिपेद्धधः    | 4        | 909   | नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये      | y        | १०९   |
| निक्षेपस्यापहरणम्         | 33       | 49    | नित्यं लोके विपर्ययम्         | ۵        | २४९   |
| निक्षेपस्यापहर्तारम्      | 4        | 990   | नित्यं वाऽमृतभोजनः            | <b>ર</b> | २८५   |
| निक्षेपेष्वेषु सर्वेषु    | 6        | 966   | नित्यं विद्यान्महीपतिः        | ९        | २९८   |
| मिक्षेपोपनिधिः स्त्रियः   | 4        | 188   | नित्यं विद्युतपौरुषः          | ø        | १०२   |
| निक्षेपोपनिधी नित्यम्     | 6        | 984   | नित्यं बृद्धोपसेविनः          | <b>ર</b> | १२१   |
| निक्षेपो यः कृतो येन      | C        | 188   | नित्यं शास्त्राण्यवेक्षेत     | ક        | 99    |
| निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः    | 4        | 8     | नित्यं ग्रुद्धः कारुहस्तः     | ખ        | १२९   |
| निक्षेप्तुर्न प्रयच्छति   | 6        | 969   | नित्यं संचिनुयाच्छनैः         | 8        | २४२   |
| निक्षेप्योऽयोमयः शङ्कः    | 4        | २७१   | नित्यं संवृतसंवार्यः          | <b>©</b> | 909   |
| निखिलं ज्ञानचक्षुषा       | <b>२</b> | 6     | नित्यं सततयायिनि              | 3        | ५०    |
| निगमांश्चैव वैदिकान्      | 8        | 3 8   | नित्यं सदसदात्मकम्            | 3        | 33    |
| निगीता निगमेष्वपि         | ९        | 98    | नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा     | ۹,       | २५    |
| निगृद्खारिणश्चान्यान्     | 9        | २६०   | नित्यं स्थितस्ते हृद्येषः     | 4        | ९१    |

| पाद                          | अ०       | स्रो० | पाद                         | अ० | श्लो॰ |
|------------------------------|----------|-------|-----------------------------|----|-------|
| नित्यं स्नारवा शुचिः कुय     | त् २     | 998   | निन्दितेभ्यो धनादानम्       | 99 | ६९    |
| नित्यं स्यात्पापकर्मसु       | ٩        | ३१०   | निन्दितेऽहनि सायाह्रे       | 33 | 163   |
| निस्यं स्यादात्मवान्द्रिजः   | 9        | 106   | निन्दितैकादशी च या          | ક્ | 80    |
| नित्यकालमतन्द्रितः           | २        | ૭ રૂ  | निन्दितैर्निन्दिता नृणाम्   | ક્ | ४२    |
| नित्यका <b>लमुपस्पृ</b> रोत् | ₹        | ५८    | निन्धास्वष्टासु चान्यासु    | Ę  | 40    |
| नित्यमिप्तमतन्द्रितः         | 왕        | ૧૪૫   | निन्यैहिं लक्षणैयुंकाः      | 99 | ५३    |
| नित्यमद्वेषरागिभिः           | <b>ર</b> | 3     | निन्धैव सा भवे छोके         | ч  | 163   |
| नित्यमन्वष्टकासु च           | 8        | १५०   | निपानकर्तुः स्नात्वा तु     | 8  | २०१   |
| नित्यमकेवतं हि तत्           | <b>Q</b> | ३०५   | निपुणं शुद्धिमिच्छताम्      | ч  | ६१    |
| नित्यमात्महितेषु च           | 8        | ३५    | निपुणाः पण्ययोषितः          | ዓ  | २५९   |
| नित्यमाश्रमिभिद्धिजैः        | Ę        | 99    | निपुणैः पूर्वतस्करैः        | ९  | २६७   |
| नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणाम   | ્ પ      | १३०   | निबद्धं स्वेषु कर्मसु       | 8  | 844   |
| नित्यमुद्धतपाणिः स्यात्      | <b>ર</b> | 393   | निबद्धानि पृथक् पृथक्       | 6  | Ę     |
| नित्यमुद्यतदण्डः स्यात्      | y        | 908   | निबधीयात्तथा सीमाम्         | 6  | २५५   |
| नित्यमुद्यतदण्डस्य           | Ø        | १०३   | निमृतां चरतां क्षितौ        | ९  | २६३   |
| नित्यमेव समाचरेत्            | <b>ર</b> | २०७   | निमजतश्च मत्स्यादान्        | 4  | १ इ   |
| नित्यमैष्टिकपौर्तिकम्        | 8        | २२७   | निमजस्युदके तरन्            | 8  | 188   |
| नित्यानध्याय एव स्यात्       | 8        | 800   | निमजोयुश्च ते त्यहम्        | ч  | ७३    |
| नित्या वृत्तिः स्वयोनिषु     | २        | २०६   | निमंत्रयेत त्र्यवरान्       | Ę  | 169   |
| निद्ध्युर्वान्धवा बहिः       | પ        | ६८    | निमन्नितान् हि पितरः        | Ą  | 369   |
| निदेशे चैव तिष्ठतः           | <b>२</b> | 190   | निमन्त्रितो द्विजः पित्र्ये | ३  | 166   |
| निधनेऽप्यनुयाति यः           | 6        | 9 9   | निमृज्याञ्जेपभागिनाम्       | ર  | २१६   |
| निधिं सत्येन मानवः           | 6        | ३९    | निमेषा दश चाष्टी च          | 1  | ÉB    |
| निधिपायाप्रमादिने            | <b>२</b> | 994   | निस्लोचेद्वाप्यविज्ञानात्   | २  | २२०   |
| निधिर्वाह्योऽभिधीयते         | •        | ८२    | नियतं दारलक्षणम्            | 4  | २२७   |
| निधीनां तु पुराणानाम्        | 6        | ३९    | नियतब्रह्मचारिणाम्          | २  | 994   |
| निनोषुः कुछमुत्कर्षम्        | ક        | २४४   | नियतात्मा भवेत्सदा          | ર  | 966   |
| निन्दाहों यत्र निन्धते       | 4        | १९    | नियतात्मा हविष्याशी         | 99 | 216   |
| निन्दा वापि प्रवर्तते        | 3        | २००   | नियताद्यावहारिकात्          | 6  | १६४   |
| निन्दितं च समाचरन्           | 99       | 88    | नियता ब्रह्मचारिणी          | ч  | 146   |
| निन्दितास्रादनं तथा          | 3 3      | ६४    | नियतासिश्चराचरे             | 4  | 88    |
|                              |          |       |                             |    |       |

| पाद                      | अ०             | स्रो०   | पाद                        | अ०       | <b>স্টা</b> ০     |
|--------------------------|----------------|---------|----------------------------|----------|-------------------|
| नेतराविति निश्चयः        | 30             | 4       | नैष चारणदारेषु             | 4        | ३६२               |
| नेता चेत्साधु पश्यति     | <b>y</b>       | २५      | नैस्नेद्याच्च स्वभावतः     | <b>९</b> | 94                |
| नेम्रवक्तविकारैश्र       | 6              | २ ६     | नोच्छिद्यन्ते कदाचन        | <b>ર</b> | 101               |
| नेनिज्याक्षेजकः शनैः     | 4              | ३९६     | नोच्छिन्धादात्मनो मूलम्    | 9        | १३९               |
| नेरिणस्थो न यानगः        | 8              | 320     | नोच्छिष्टं कस्यचिद्दयात्   | <b>ર</b> | ५६                |
| नेह नामुत्र तद्भवेत्     | 3              | 969     | नोच्छिष्टं कुर्वते मुख्याः | Ŋ        | 383               |
| नेहासौ सुखमेधते          | 8              | 900     | नोच्छिष्टं न हविष्कृतम्    | 8        | 60                |
| नेहेतार्यान्प्रसंगेन     | 8              | 14      | नोत्तमांगे कथंचन           | 6        | ३००               |
| नैःश्रेयसकरं कर्म        | 12             | ८२      | नोत्पादकः प्रजाभागी        | ९        | 86                |
| नैःश्रेयसमिदं कर्म       | <sup>९</sup> २ | 900     | नोत्पादयेत्स्वयं कार्यम्   | 4        | ४३                |
| नैःश्रेयसिकमेव च         | 92             | 66      | नोत्सङ्गे भक्षयेद्धक्यान्  | 8        | ६३                |
| नैकः प्रपद्येताध्वानम्   | 8              | ६०      | नोदक्ययाभिभाषेत            | 8        | 49                |
| नैकः सुप्याच्छून्यगेहे   | 8              | 40      | नोदाहरेदस्य नाम            | 2        | १९९               |
| नैकप्रामीणमतिथिम्        | 3              | १०३     | नोद्वहेत्≉पिलां कन्याम्    | 3        | S                 |
| नैकाषादी भवेद्रती        | <b>ર</b>       | 366     | नोद्वाहिकेषु मन्त्रेषु     | ९        | ६५                |
| नैको न वृष्छैः सह        | 8              | 180     | नोन्मत्ताया न कुछिन्या     | ۵        | २०५               |
| नैतत्कर्म विधोयते        | ?              | 990     | नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि      | 8        | ४०                |
| नैता रूपं परीक्षन्ते     | ९              | 18      | नोपगच्छेत तां प्राज्ञः     | ą        | 99                |
| नैतैरपृतैर्विधिवत्       | <b>ર</b>       | 80      | नोपयच्छेतु बुद्धिमान्      | 99       | १७२               |
| नैस्यकं विधिमास्थितः     | 3              | 808     | नोपसृष्टं न वारिस्थम्      | 8        | રૂ હ              |
| नैत्यके नास्त्यनध्यायः   | <b>ર</b>       | 908     | नोपसृष्टेऽन्स्यजैर्नृभिः   | ય        | <b>Ę 3</b>        |
| नैनं प्रामेऽभिनिम्होचेत् | 3              | २१९     | नोपहिंसन्ति शत्रवः         | 9        | ું.<br>૭ <b>ર</b> |
| मैनः किञ्चिदवामोति       | 9              | ९ १     | नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्    |          | १०३               |
| नैनः प्राप्नोति किञ्चन   | 99             | २६१     |                            | <b>ર</b> |                   |
| नैनां मन्येत दुर्लभाम्   | 8              | ृ ३ ३ ७ | नोपेक्षेत क्षणमपि          | 6        | 388               |
| नैनामीक्षेत चाइनतीम्     | 8              | ४३      | न्यप्रोधाश्वत्यकिंशुकान्   | C        | २४६               |
| नैरुक्तो धर्मपाठकः       | 97             | 3 9 3   | न्ययुङ्क प्रथमं प्रभुः     | 3        | २८                |
| नैर्ऋतीं दिशमातिष्ठेत्   | 3 3            | 808     | न्यस्तशस्त्रा महाभागाः     | 3        | १९२               |
| नैवं कुर्या पुनरिति      | 99             | २३०     | न्यायतो रूभते धनम्         | 6        | २०१               |
| नैवार्हः पैतृकं रिक्थम्  | ٩              | 188     | न्याय्यं वः शिशुरुक्तवान्  | 3        | 145               |
| नैशमेनो ध्यपोहति         | 3              | 302     | न्युप्य पिण्डोस्ततस्तास्तु | Ę        | २१६               |

| पाद                         | अ०  | श्लो॰               | पाद                        | अ०   | <b>স্টা</b> • |
|-----------------------------|-----|---------------------|----------------------------|------|---------------|
| प                           |     |                     | पञ्चरात्रे पञ्चरात्रे      | 6    | ४०२           |
| पिक चान्वाहिकीं गृही        | Ę   | ६७                  | पद्मवर्गं च तस्वतः         | •    | 148           |
| पंक्तिदृष्ट्योः परं तेजः    | 12  | 120                 | पञ्च सूना गृहस्थस्य        | Ę    | ६८            |
| पकासानां च सर्वेषाम्        | 6   | ३२९                 | पञ्चामीनपि जुह्नतः         | 3    | 900           |
| पक्षवातेन कुक्कुटः          | 3   | २४१                 | पञ्चानां तु त्रयो धर्म्याः | 3    | २५            |
| पक्षान्तयोर्बाप्यभीयात्     | Ę   | २०                  | पञ्चानां त्रिषु वर्णेषु    | ₹    | 130           |
| पक्षिगन्धौषधीनां च          | 9 9 | १६८                 | पञ्चानां विषये स्वके       | 6    | इ८७           |
| पक्षिजग्धं गवाघातम्         | ч   | १२५                 | पञ्चाब्दाख्यं कलामृताम्    | ₹    | 158           |
| पक्षिणां पोषको यश्च         | Ę   | <b>9</b> & <b>२</b> | पञ्चालाः शूरसेनकाः         | ₹    | 38            |
| पक्षे पक्षेऽथवा गते         | 9   | ४०२                 | पञ्चालान्श्रूरसेनजान्      | •    | १९३           |
| पङ्के गौरिव पश्यतः          | 6   | २१                  | पञ्जाशतस्त्वभ्यधिके        | 6    | ३२२           |
| पञ्जे गौरिव सीदति           | 8   | 999                 | पञ्चाशत्तु भवेदण्डः        | 6    | २९५           |
| पङ्कौ चन पठेद् द्विजः       | 8   | 994                 | पञ्चाशद् ब्राह्मणो दण्ड्यः | 6    | २६८           |
| पञ्च पश्चनृते हन्ति         | 6   | 96                  | पञ्चाशसाग आदेयः            | 9    | 130           |
| पङ्गुतामश्वहारकः            | 9 9 | 41                  | पञ्जैतान्यो महायज्ञान्     | Ę    | 99            |
| पञ्चकं च शतं समम्           | 6   | 985                 | पञ्जैतान्विस्तरो हन्ति     | 3    | <b>9 7 §</b>  |
| पञ्चकं शतमहीति              | 4   | १३४                 | पणं यानं तरे दाप्यम्       | 4    | 808           |
| "                           | 6   | १५२                 | पणानां हे शते सार्धे       | G    | १३८           |
| पञ्चकृष्णलको माषः           | 6   | 138                 | पणो देयोऽवकृष्टस्य         | 9    | १२६           |
| पञ्ज बरुप्ता महायज्ञाः      | 3   | ६९                  | पण्ये यच प्रसारितम्        | પ્યુ | 128           |
| पञ्चगच्यं विशोधनम्          | 99  | १६५                 | पतति ह्युपयस्रधः           | 33   | १७२           |
| पञ्च दद्याच्छतानि च         | Q   | २८५                 | पतत्यज्ञानतो विप्रः        | 3 3  | 300           |
| पञ्च नीलान् दृषान्गजम्      | 9 9 | १३६                 | पतित्रेणावलीढ च            | 8    | २०८           |
| पञ्चभिर्व्याप्य मूर्त्तिभिः | 12  | 328                 | पतिं या नाभिचरति           | ų    | 3 & 4         |
| पञ्चभ्य एव मात्राभ्यः       | 9 7 | 98                  | "                          | ९    | २९            |
| पञ्चमेन बलेन च              | 6   | ४९                  | पति ग्रुश्रूषते येन        | 4    | 144           |
| पञ्चमो नोपपचते              | 9   | १८६                 | पतिं हित्वापकृष्टं स्वम्   | ષ    | 163           |
| पञ्चयज्ञ विधानं च           | Ę   | ६७                  | पतितं सूतिकां तथा          | 4    | ८५            |
| पञ्चयज्ञास हापयेत्          | ٧,  | 3 4 9               | पतितस्योदकं कार्यम्        | 99   | १८२           |
| पञ्चयज्ञान्त्रचक्षते        | 3   | ५ इ                 | पतितां पञ्चलग्नां वा       | 99   | 335           |
| पद्धरात्रं पिबेत्पीत्वा     | 3 3 | 180                 | पतिताः स्युरदित्सवः        | Q    | 116           |

| पाद                      | अ०  | स्रो०       | पाद                      | अ० | स्रो०    |
|--------------------------|-----|-------------|--------------------------|----|----------|
| पतितासमवश्चतम्           | 8   | २१३         | पश्चेन चैव ब्यूहेन       | G  | 366      |
| पतिसेन सहाचरन्           | 99  | 960         | पन्था देयो वरस्य च       | 3  | 336      |
| पतितैः सम्प्रयुक्तानाम्  | 3 3 | १७३         | पन्थानं शास्मिछि नदीम्   | 8  | ९ ०      |
| पतिसोत्पादितो हि सः      | ٩,  | 388         | पन्थानं चाददद्वरोः       | 6  | २७५      |
| पतिलो हाददद्भवेत्        | ९   | २०२         | पयः पिवेत्रिरार्त्रं वा  | 33 | १३२      |
| पतितौ भवतो गत्वा         | ٩   | 46          | पयसश्चैव विक्रिया        | ч  | २५       |
| पतिभिर्देवरैस्तथा        | ₹.  | ५५          | पयो दिधि घृतं मधु        | २  | 300      |
| पतिर्भार्यो संप्रविश्य   | g   | ૮           | परं ब्रह्माधिगच्छति      | ६  | ८५       |
| पतिलोकं परत्र च          | 4   | १६६         | परं श्रेयोऽधिगच्छति      | 8  | २५८      |
| पतिकोकमभीप्सन्ती         | Ŋ   | १५६         | परकीयनिपानेषु            | 8  | २०१      |
| पतिलोकाच हीयते           | ų   | 9 & 9       | परक्षेत्रप्रवापिणः       | ٩  | ४९       |
| पतिव्रता धर्मपत्नी       | Ę   | २६२         | "                        | ९  | પ્યુ ૧   |
| पतिव्रताषु च स्नीषु      | 6   | २८          | परत्रादातुरेव च          | 8  | १९३      |
| पतिसेवा गुरौ वासः        | 2   | ६७          | परत्रानन्तमक्षयम्        | ર  | २७५      |
| पतीन्प्रजानामसृजम्       | 3   | ३४          | परत्रेति विचारितम्       | 33 | २८       |
| परन्यमंत्रं बिंह हरेत्   | ३   | 929         | परदाराभिमर्शेषु          | 4  | ३५२      |
| पक्षीष्वक्षतयोनिषु       | 90  | ų           | पयसा पायसेन च            | æ  | २७१      |
| पत्या च विरहोऽटनम्       | ٩   | १३          | पयो घृतं वाऽऽमरणात्      | 99 | ९ १      |
| पत्या प्रीतेन चैव यत्    | 9   | 394         | पयोमूलफलैर्वापि          | ર  | ८२       |
| पत्यौ जीवति कुण्डः स्यात | ६ ३ | 108         | परदारेषु जायेते          | Ŗ  | १७४      |
| पत्यी जीवति यः स्त्रीभिः | ९   | २००         | परवारोपसेवनम्            | ૪  | 158      |
| पस्यौ जीवति दृत्तायाः    | 9   | 994         | परदारोपसेवा च            | १२ | <b>9</b> |
| पत्यौ प्रेते परस्य तु    | ч   | 940         | परद्रव्यं हरेन्नरः       | 6  | १९३      |
| पत्यौ भार्यापचारिणी      | C   | ३१७         | परद्रव्यापहारकान्        | ९  | २५६      |
| पत्रशाकं तु बर्हिणः      | १२  | <b>ફ</b> પ્ | परद्रब्येष्वभिध्यानम्    | 97 | ų        |
| पत्रशाकतृणानां च         | Ģ   | १३२         | परधर्मेण जीवन्हि         | 90 | 90       |
| पथि क्षेत्रे परिवृते     | 6   | 280         | परपत्नीति या स्नी स्यात् | 2  | 328      |
| पथि मोषाभिदर्शने         | 9   | २७४         | परपाकमबुद्धयः            | ą  | 808      |
| पदान्यष्टदशैतानि         | 9   | २७४         | परपूर्वापतिस्तथा         | Ę  | १६६      |
| पदा मस्तकमाक्रम्य        | 3 3 | ४३          | परपूर्वेति चोच्यते       | 4  | 9 & 3    |
| पदा स्पृष्टं च कामतः     | 8   | ₹.०७        | परप्रेष्यत्वमेष च        | 38 | 94       |

| पाद                      | अ०         | श्लो०        | पाद                       | अ०       | स्रो॰ |
|--------------------------|------------|--------------|---------------------------|----------|-------|
| परमं तप उच्यते           | <b>ર</b>   | २२९          | परितोषोऽन्तरात्मनः        | ¥        | 3 4 3 |
| परमं तप्यते तपः          | ₹          | १६७          | परिस्यजेदर्थकामी          | 8        | 908   |
| परमं दैवत हि तत्         | 9,         | ३१९          | परित्यजेन्नुपो भूमिम्     | •        | २१२   |
| परमं यत्नमातिष्ठेत्      | ૮          | ३०२          | परित्यागो विशिष्यते       | <b>ર</b> | ९५    |
| 97 77                    | ९          | 3 8          | परपूतेषु धान्येषु         | 4        | इ३१   |
| परमेष्ठी पुनः पुनः       | 3          | 60           | परिपूर्ण यथा चन्द्रम्     | 9        | ३०९   |
| परमेष्ठी प्रजापतिः       | २          | 99           | परिभाषणमर्हन्ति           | <b>S</b> | २८३   |
| परराजचिकीर्षितम्         | G          | ६८           | परिभोक्ता कृमिर्भवति      | 3        | २०३   |
| परलोकं नयत्याशु          | 8          | २४३          | परिरक्षेदिमाः प्रजाः      | G        | १४२   |
| परलोक्सहायार्थम्         | 8          | २३८          | परिवादं तथानृतम्          | ₹        | 303   |
| परलोके च योषितः          | 44         | १५३          | परिवादः स्त्रियो मदः      | 9        | 80    |
| परिश्चयं योऽभिवदेत्      | 6          | ३५६          | परिवित्तिः परिवेत्ता      | 3        | १७२   |
| परस्परविरुद्धानाम्       | હ          | १५२          | परिविक्तितानुजेऽनूढे      | 3 3      | ६०    |
| परस्परस्य दारेषु         | 30         | २९           | परिवित्तिस्तु पूर्वजः     | ર        | 303   |
| परस्परस्यानुमते          | ۵          | ३५८          | परिवेत्ता निराकृतिः       | 3        | ૧૫૪   |
| परस्परादिनः स्तेनाः      | 92         | ५९           | परिवेत्ता स विज्ञेयः      | 3        | 301   |
| परस्य दण्डं नोद्यच्छेत्  | ß          | १६४          | परिवेदनमेव च              | 33       | ६•    |
| परस्य पत्न्या पुरुषः     | 6          | ३५४          | परिवेत्रादिभिस्तथा        | રૂ       | 300   |
| परस्य विपरीतं च          | •          | 909          | परिवेषयेत प्रयतः          | 3        | २२८   |
| परस्येव च योषितम्        | 8          | १३३          | परिव्रजति यो द्विजः       | ξ        | ८५    |
| ,, ,,                    | <b>१</b> २ | ६०           | परिवज्या च नित्यशः        | 30       | ५२    |
| परस्वादायिनः शठाः        | 9          | १२३          | परिषक्त्वं न विद्यते      | 12       | 118   |
| पराकैः शोधितस्त्रिभिः    | 33         | २५८          | परिषत्स्याइशावरा          | 9 2      | 333   |
| पराको नाम कृच्छ्रोऽप्रम् | 99         | २१५          | परिसंबत्सरात्पुनः         | ક્       | 998   |
| पराङ्मुखस्याभिमुखः       | <b>ર</b>   | 190          | परिहाय द्विजोत्तमः        | १२       | ९२    |
| पराजयश्च संप्रामे        | و          | १९९          | परीक्षिताः स्त्रियद्चैनम् | (9       | २१९   |
| परामप्यापदं प्राप्तः     | <b>Q</b>   | ३१३          | परीक्षेत प्रयत्नतः        | 3        | १९२   |
| पराकृत्तहतस्य तु         | ٩          | <b>લુ</b> પ્ | परीप्सेत्केन हेतुना       | 4        | 983   |
| यरिक्षीणोऽपि पार्थिवः    | 4          | 900          | परीवादात्खरो भवति         | <b>ર</b> | २०१   |
| परिखाणां च पूरकं         | ٩          | 303          | परेण तु दशाहस्य           | 4        | २२३   |
| परितुष्टेन भावेन         | 8          | 220          | परेण नुपतिह रेत्          | 4        | Ą     |
|                          |            |              |                           |          |       |

| पाद                     | अ०         | श्लो॰ | पाद                         | अ० | श्ची०      |
|-------------------------|------------|-------|-----------------------------|----|------------|
| परेऽप्यपसदास्त्रयः      | 30         | 90    | पशुमिच्छेत्कदाचन            | 4  | 30         |
| परेषां चातितृष्णया      | 9          | १३९   | पशुबृद्धिकरीमपि             | 19 | २१२        |
| परेषामन्त्यकर्मं च      | 99         | 999   | पशुषु स्वामिनां चैव         | 4  | २२९        |
| परोक्षमपि केवलम्        | <b>ર</b>   | 999   | पशुषु स्वामिनां दद्यात्     | 6  | २३४        |
| परोपकृतमेव वा           | ч          | ३२    | पद्युहब्येन चाग्नयः         | 8  | २८         |
| पर्यस्येत्प्रेतवत्पदा   | 9 9        | १८३   | पशूनां चैव रक्षणे           | 9  | ३२६        |
| पर्याचान्तमनिर्दशम्     | , <b>8</b> | २१२   | पश्चनां परिवर्धनम्          | 9  | ३३१        |
| पर्याप्तं सृत्यवृत्तये  | 99         | •     | पशूनां रक्षणं चैव           | ٤  | 830        |
| पर्याप्तभोगा धर्मिष्टाः | ą          | 80    | पश्नां रक्षणं दानम्         | 9  | ९०         |
| पर्ववर्ज वजेचैनाम्      | 3          | ४५    | पश्चनां हरणे चैव            | 6  | ३२५        |
| पलं सुवर्णश्रत्वारः     | 6          | १३५   | पशून्मृगान्मनुष्यश्च        | 3  | ३९         |
| पराण्डं कवकानि च        | ų          | ч     | पश्चाच न तथा तस्यात्        | 6  | २१२        |
| पलाण्डुं गुञ्जनं चैव    | 4          | १९    | पश्चान्प्रतिभुवि प्रेते     | 6  | 3 & 3      |
| पळानि धरणं दश           | 4          | १३५   | पश्चात्संतर्पयेत्पितृन्     | ર  | २११        |
| पछालं चैव शुद्धधति      | પ્         | 922   | पश्चाद् दृश्येत यहिकञ्चित्  | 9  | २१८        |
| पळाळभारकं चण्डे         | 3 3        | १३३   | पश्चाद्धावंस्तु धावतः       | 7  | १९६        |
| पविश्रं दुष्यतीत्येतत्  | 90         | 907   | पश्चाद्वेदमधीयते            | ક  | १२५        |
| पवित्रं यच पूर्वोक्तम्  | 3          | २५६   | पश्चिमां तु समासीनः         | ₹  | 909        |
| पवित्राणि च शक्तितः     | 99         | २२५   | <b>&gt;&gt;</b>             | 7  | १०२        |
| पवित्रा विदुषां हि वाक् | 33         | ८५    | पश्चिमोत्तरपूर्वेस्तु       | ષ  | ९२         |
| पवित्रैश्चैव पावितः     | <b>ર</b>   | હષ્   | पश्यत्यात्मानमात्मना        | 92 | १२५        |
| पवित्रोपचितां मुनिः     | ξ          | 83    | पत्रयन्तो ज्ञानचक्षुपा      | 8  | २४         |
| पशवश्च मृगाश्चैव        | 3          | ४३    | पश्यन्तो धर्मतस्तयोः        | ९  | ६ 🛊        |
| "                       | 98         | ४२    | पश्यन्तो धर्ममुत्तमम्       | 9  | Ę          |
| पशवश्च वयांसि च         | 9 9        | २४०   | पत्रयेत्कार्याणि कार्यिणाम् | ۵  | २          |
| पशवो ये च मानुषाः       | 30         | ८६    | *, ,,                       | 6  | 58         |
| पशुधर्मो विगर्हितः      | Q          | ६६    | पांसुवर्षे दिशां दाहे       | 8  | 994        |
| पशुना चामिमान्द्रिजः    | 8          | २७    | पाकयञ्च विधानेन             | 99 | 196        |
| पशुना त्वयनस्यादी       | 8          | २६    | पाञ्चयक्षिकमन्वहम्          | 3  | २८१        |
| पशुभिर्वा रथेन वा       | 6          | २९५   | पाठीनरोहितावाद्यौ           | ч  | <b>9</b> & |
| पशुमण्डूकमार्जार        | 8          | 378   | पाणिप्रहणसंस्कारः           | 3  | 8 इ        |

| पाद                         | अ०       | स्रो०     | पाद                     | अ०        | श्लो॰        |
|-----------------------------|----------|-----------|-------------------------|-----------|--------------|
| पाणिघ्रहणिका मन्त्राः       | 6        | २२६       | पानानि सुरभीणि च        | Ę         | २२७          |
| 17                          | 6        | २२७       | पानीयस्य तृणस्य च       | G         | ३२६          |
| पाणिमाहस्य चेतसा            | 9        | २१        | पापं कृत्वा व्रतं चरेत् | 8         | 996          |
| पाणिप्राहस्य यौवने          | ч        | 388       | पापं चातिन्द्रती सह     | 12        | 38           |
| पाणिप्राहस्य साध्वी स्त्री  | 4        | १५६       | पापं स्तेयकृतं द्विजः   | 11        | 305          |
| पाणिच्छेदनमर्हति            | 6        | २८०       | "                       | 99        | १६९          |
| पाणिना यज्ञकर्मणि           | ч        | 998       | पापः सूकरतां वजेत्      | 3         | 990          |
| पाणिना शकलेन वा             | ६        | २८        | पापकमेरुचिभवेत्         | 38        | 303          |
| पाणिभ्यां तूपसंगृह्य        | ३        | २२४       | पापकृद्भ्यो धनागमम्     | ९         | २४६          |
| पाणिमुचम्य दक्षिणम्         | 6        | २         | पापकृन्मुच्यते पापात्   | 8 8       | २२७          |
| पाणिमुद्यस्य दण्डं चा       | 6        | २८०       | पापनिर्यातनं महत्       | 38        | 354          |
| पाण्यास्यो हि द्विजः स्सृतः | 8        | 999       | पापयोनिषु जायते         | 8         | <b>9 E</b> E |
| पात्रमासाद्य शक्तितः        | 8        | २२७       | पापरोगी सहस्रस्य        | ₹         | 300          |
| पात्रस्य हि विशेषेण         | •        | ८६        | पापरोगैश्च पीड्यते      | 49        | १६४          |
| पान्नी दण्डी कुसुम्भवान्    | ξ        | ५२        | "                       | ٩.        | ३०           |
| पादं पशुश्र योषिश्व         | 4        | 808       | पापरोग्यभिशस्तश्च       | ą         | 549          |
| पादं पादमदूदुहत्            | <b>ર</b> | <b>৩৩</b> | पापातमा भूजैकण्टकः      | 30        | 53           |
| पादः सभासदः सर्वान्         | 4        | 36        | पापानामपनुत्तये         | 3 3       | २०९          |
| पादः साक्षिणमृच्छति         | 6        | 96        | पापानामल्पबुद्ध्यः      | <b>१२</b> | ७४           |
| पादच्छेदनमर्हति             | 6        | २८०       | पापान्येतान्यकामतः      | <b>Q</b>  | २४२          |
| पादयोदाढिकायां च            | 6        | २८३       | पापान्संयान्ति संसारान् | 3 2       | ५२           |
| पादयोश्चावनेजनम्            | ?        | २०९       | पापान्संसृत्य संसारान्  | 3 2       | 90           |
| पादशत्वरोपितः               | 3        | ८२        | पापीयान् रिक्थमईति      | 9         | 168          |
| पादस्पर्शस्तु रक्षांसि      | ३        | २३०       | पाप्मा च मलमुच्यते      | 33        | ९३           |
| पाअर्थ रिक्तकः पुमान्       | 6        | 808       | पायसं मधुसर्पिभ्याम्    | <b>ર</b>  | ९०           |
| पादेन प्रहरन् कोपात्        | 6        | ०३३       | पायसापूपमेव च           | Ŋ         | •            |
| पादोऽधर्मस्य कर्त्तारम्     | ૮        | 96        | पायूपस्थं हस्तपादं      | 3         | ९०           |
| पादो राजानसृच्छति           | 6        | 36        | पाय्वादीनि प्रचक्षते    | 7         | 63           |
| पादौ प्राद्धौ गुरोः सदा     | ₹        | 9         | पारंम्पर्यक्रमागतः      | २         | 94           |
| पानं दुर्जनसंसर्गः          | ९        | 13        | पारम्यं यद्यदाचरेत्     | <b>ર</b>  | २३६          |
| पानमक्षाः चियश्रेव          | 9        | ५०        | पारदा पह्नवाश्चीनाः     | 30        | 88           |

| पाद                         | अ०            | श्लो॰        | पाद                       | अ०       | श्लो०       |
|-----------------------------|---------------|--------------|---------------------------|----------|-------------|
| पारदार्यात्मविक्रयाः        | 3 3           | ५९           | पितरं मातरं गुरुम्        | 8        | १६२         |
| पारिणाह्यस्य वेक्षणे        | ٩             | 99           | ,, »,                     | ų        | ९१          |
| पारुष्यमनृतं चैव            | 9 2           | Ę            | पितरश्चैव साध्याश्च       | 12       | 88          |
| पारुष्ये दण्डवाचिके         | 6             | ६            | पितरस्तस्य शेरते          | 3        | २५०         |
| पार्थिवः सुखमेधते           | છ             | 993          | पितरः पूर्वदेवताः         | 3        | १९२         |
| पार्थिवो न तथैधते           | હ             | २०८          | पितरस्तावदश्चं ति         | ą        | २३७         |
| पार्षतेन च सप्त वै          | ,<br><b>3</b> | २६९          | पिताचार्यः सुहन्माता      | 6        | ३३५         |
| पार्षिग्राहं च संप्रेक्ष्य  | ø             | २०७          | पितात्वाचार्य उच्यते      | <b>ર</b> | 900         |
| पालानां च व्यतिक्रमे        | 6             | २२९          | पिता दद्यात्कथंचन         | ९        | २१५         |
| "                           | 4             | २४४          | पिता पुत्रमिवौरसम्        | 9        | १३५         |
| पाले तत्किव्बिषं भवेत्      | 6             | २३५          | पितापुत्रौ विजानीयात्     | २        | १३५         |
| पालो वक्तब्यतामियात्        | 6             | २३०          | पिता प्रधानं प्रजने       | ९        | 353         |
| पावको नैव दुष्यति           | ৭             | ३१८          | पिता भवति धर्मतः          | <b>ર</b> | 340         |
| पावनः प्रेत्य चेह च         | २             | २६           | पिता भवति मन्त्रदः        | 2        | १५३         |
| पावमानीश्च शक्तितः          | U             | ८६           | पितामहो वा तच्छ्राद्धम्   | Ę        | २२२         |
| पाव्यते येद्विजोत्तमेः      | 3             | १८३          | पितामह्यदच ताः सर्वाः     | ९        | १८६         |
| पाषण्डगणधर्माश्च            | 9             | 996          | पिता माता च तिष्ठतः       | 8        | २३९         |
| पाषण्डमाश्रितानां च         | 4             | ९०           | पिता मूर्तिः प्रजापतेः    | 2        | २२६         |
| पापण्डस्थांश्च मानवान्      | ९             | २२५          | पिता यस्य निवृत्तः स्यात् | ą        | २२३         |
| पापण्डिनो विकर्मस्थान्      | 8             | <b>३</b> o   | पिता रक्षति कौमारे        | <b>९</b> | ३           |
| पिण्डनिर्वपणं केचित्        | ¥             | २६१          | विता वै गाईपत्योऽग्निः    | <b>ર</b> | <b>२३</b> १ |
| पिण्डनिर्वपणं सुतैः         | ş             | २४८          | पिता स्याद्वेदपारगः       | રૂ       | १३६         |
| पिण्डमेकं तु निर्वपेत्      | ર             | २४७          | पिता हरेदपुत्रस्य         | <b>Q</b> | 184         |
| पिण्डांस्तांस्तदनन्तरम्     | ą             | २६०          | पितुः स नाम संकीर्त्य     | ર        | २२१         |
| पिण्डान्कृत्वा समाहितः      | Ę             | २१५          | पितुर्भगिन्यां मातुश्च    | <b>ર</b> | 9,3,3       |
| पिंडान्मध्यंदिने स्थिते     | 99            | 216          | पितुर्माता हरेद्धनम्      | ९        | २१७         |
| पिंडान्वाहार्यकं श्राद्धम्  | 3             | <b>3 २</b> २ | पितृकार्यं विशिष्यते      | 3        | २०३         |
| पिंडान्विप्रः समाहितः       | 99            | २१९          | पितृदेवमनुष्याणाम्        | 35       | 38          |
| पिण्डेभ्यस्विष्पकां मात्राम | Ęį            | २१९          | पितृदैवतकर्मणि            | ч        | 83          |
| पिण्याकं वा सकृषिशि         | 3 3           | 42           | पितृपुजनतत्परा            | ર        | २६२         |
| पितरं परिचक्षाते            | 2             | 303          | पितृभक्त्या तु मध्यमम्    | <b>२</b> | २३३         |

## मनुपादानुकमसी।

| पाद                         | अ०  | श्लो० | पाद                                    | अ०       | श्लो॰      |
|-----------------------------|-----|-------|--|----------|------------|
| पितृभिः सह मजति             | 30  | ९१    | पित्राद्यन्तं स्वीहमानः                | ₹        | २०५        |
| पितृभिर्म्भातृभिश्चैताः     | Ę   | ५५    | पित्राद्यन्तं न तद् भवेत्              | 3        | २०५        |
| षितृभ्यः प्रीतिमावहन्       | 3   | ८२    | पित्रा भन्नी सुतैर्वापि                | 4        | १४६        |
| पितृभ्यो देवमानवाः          | 3   | २०१   | पित्रा विवदमानश्च                      | Ę        | 149        |
| पितृभ्यो बलिशेषं तु         | 3   | 99    | पित्रे न दचाच्छुल्कं तु                | 9        | ९ <b>३</b> |
| पितृभ्यो विधिवदत्तम्        | Ę   | २६६   | पित्रे मातामहाय च                      | ९        | १३२        |
| पितृमातृप्रदर्शिताः         | 90  | 80    | पित्र्यं कन्या स्वयंवरा                | ९        | ९२         |
| पितृमेधं समाचरन्            | પ્ય | ६५    | पित्र्यं धनमशेषतः                      | <b>९</b> | १०५        |
| पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य     | 3   | 322   | पित्र्यं नाम विधुक्षये                 | ₹        | 350        |
| पितृयज्ञिक्षयाफलम्          | 3   | २८३   | पित्र्यं पञ्चममेव वा                   | Q        | १६४        |
| पितृयज्ञस्तु तर्पणम्        | 3   | ७०    | पित्र्यं वा भजते शीस्रम्               | 30       | ५९         |
| पितृरिक्थस्य भागिनौ         | ९   | १६५   | पित्र्यमानिधनात्कार्य <b>म्</b>        | 3        | २७९        |
| पितृवेश्मनि कन्या तु        | ९   | १७२   | पित्र्यमेव हरेद्धनम्                   | 9        | २१६        |
| पितं श्रेवाष्टकास्वर्चेत्   | 8   | 940   | पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः                | ९        | १६३        |
| पितृणां च पृथगणान्          | 9   | ३७    | पित्र्ये कर्मणि तु प्राप्ते            | ર        | १४९        |
| पितृणां तस्य तृक्षिः स्यात् | 3   | 38€   | पिष्ये कर्मण्यथर्षिवत्                 | <b>ર</b> | १८९        |
| पितृणां परिकीर्तिताः        | 3   | २००   | पित्र्ये रात्र्यहनी मासः               | 3        | ६ ६        |
| पितृणां मासिकं श्राद्धम्    | ¥   | 923   | पित्र्ये स्वदितमित्येव                 | ¥        | २५४        |
| पितृं <b>णामनृ</b> णश्चेव   | ९   | १०६   | पिबन्तं चैव वत्सकम्                    | 33       | 338        |
| पितृणामात्मनश्च यः          | Ę   | ७२    | पिबेदुदकमेव वा                         | 3 3      | ९ १        |
| पितृणामात्मनश्च ह           | g   | २८    | पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलाम्                | 3 3      | १५९        |
| पितृणामेतदीप्स्तिम्         | 3   | २३१   | पिञ्जनः पौतिनासिक्यम्                  | 33       | ५०         |
| पितृनेव च मंत्रवित्         | Ę   | २१७   | पि <b>शुनानृ</b> तिनोश्चा <b>न्नम्</b> | 8        | २१४        |
| पितृन्गृह्याक्च देवताः      | 3   | 999   | पीडनानि च सर्वाणि                      | ९        | २४९        |
| पितृन्देवांशच तर्पयेत्      | Ę   | २४    | पीड्यमानस्य शत्रुभिः                   | Ŀ        | १६८        |
| पित्न्श्राद्धैश्च नुनन्नैः  | ३   | 63    | पीत्बाऽपोऽध् <b>येष्यमाणश्च</b>        | N.       | 384        |
| पितृन्स्नात्वा द्विजोत्तमः  | 3   | २८३   | पीत्वा मेध्यान्यपि द्विजः              | 99       | १५३        |
| पितेत्येव तु मन्त्रदम्      | २   | १५३   | पुत्रास्रो नरकाद्यस्मात्               | ٩,       | १३८        |
| पितेव पारुयेत्पुत्रान्      | ९   | 306   | पुंश्रस्या दास्भिकस्य च                | 8        | 533        |
| पित्रर्थे पाञ्चयज्ञिके      | Ę   | ८३    | पुंश्रस्यास्त्वन्नमिन्द्रियम्          | 8        | २२०        |
| पित्रा दशं कथंचन            | ९   | 986   | पुंसा परपरिग्रहे                       | 9        | ४ २        |

|                             | <b>^-</b> -                                  | . شده      |                           | 97.       | -             |
|-----------------------------|--|------------|---------------------------|-----------|---------------|
| पाद                         | अ०   | ঞ্জীত      | पाद                       | জ৹        | <b>स्टो</b> ० |
| पुंसियोषिति वा द्विजः       | 33   | 308        | पुत्रिकायां कृतायां तु    | 9         | 358           |
| पुक्कस्यां जायते पापः       | 30   | ३८         | पुत्रिणो मनुरव्रवीत्      | ९         | 165           |
| पुण्यं भद्र त्वया कृतम्     | 6  | ९०         | पुत्रिण्याप्तश्च देवरात्  | 9         | 183           |
| पुण्यपापेक्षिता मुनिः       | ९  | . 93       | पुत्री भवति मानवः         | ९         | 308           |
| पुण्यान्यन्यानि कुर्वीत     | 33   | ३९         | पुत्रेण दुहिता समा        | 9         | १३०           |
| पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा     | <b>,                                    </b> | ३०         | पुत्रेण लोका अयति         | ९         | १३७           |
| पुण्योऽक्षयफलः प्रेत्य      | ં <b>દ</b>                                   | 90         | पुत्रे राज्यं समास्रज्य   | ٩         | <b>३</b> २३   |
| पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तम्   | ९  | १६९        | पुत्रेषु भार्या निक्षिप्य | Ę         | Ę             |
| पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः   | ९  | <b>₹</b> 9 | पुत्रे सर्व समासज्य       | 8         | २५७           |
| पुत्रं प्रथमकल्पितम्        | ९  | १६६        | पुत्रिश्वर्ये सुखं वसेत्  | Ę         | ९५            |
| पुत्रः कनिष्ठो ज्येष्टायाम् | ९  | 922        | पुत्रोऽध्यर्घं ततोऽनुजः   | ९         | 999           |
| पुत्रः स्याद्वेदपारगः       | ર  | १३६        | पुत्रो यस्य तु दक्षिमः    | ९         | 181           |
| पुत्रका इति होवाच           | 3  | 949        | पुनः कार्याणि चिन्तयेत्   | •         | २२१           |
| पुत्रदारस्य वाप्येनम्       | 6  | 118        | पुनः पाकेन मृन्मयम्       | ų         | 122           |
| पुत्रदारात्ययं प्राप्तः     | 30   | ९९         | "                         | ч         | 123           |
| पुत्रपौद्धःशनन्तरम्         | ર  | २००        | पुनः संस्कारकर्मणि        | 33        | 940           |
| पुत्रप्रतिनिधीनाहुः         | ९  | 960        | पुनः संस्कारमहित          | 9         | 998           |
| पुत्रमन्त्यावसायिनम्        | 30   | ३९         | पुनः संस्कारमहीन्त        | 3 4       | 340           |
| पुत्रमुत्पादयेद्यदि         | 9  | १२०        | पुनन्त्यहरहः कृताः        | 99        | २४८           |
| पुत्रवद्यापि वर्त्तेरन्     | ९  | 308        | पुनरन्यस्य दीयते          | ९         | ९९            |
| पुत्रांश्चोत्पाद्य धर्मतः   | ६  | ३६         | पुनरप्येति भागशः          | 32        | २२            |
| पुत्राः पितृगणाः स्मृताः    | ર  | १९४        | पुनराधानमेव च             | <b>Ly</b> | १६८           |
| पुत्राचार्यस्तथैव च         | 3  | 360        | पुनरेव परीक्षयेत्         | 6         | ४०३           |
| पुत्राणां च क्रियाविधिः     | ९  | २२०        | पुनर्दचाहिचक्षणः          | ٩         | ও হু          |
| पुत्राणां भर्तरि प्रेते     | <b>u</b> ,                                   | 980        | पुनर्दारिकयां कुर्यात्    | ų         | १६८           |
| पुत्राणामविशेषतः            | ९  | १२५        | पुनर्गर्भे च संभवम्       | ६         | ६३            |
| पुत्रान्द्वादश यानाह        | ९  | 946        | पुनमंरणजन्मनी             | પ્        | ७९            |
| पुत्रा येऽनन्तरस्त्रोजाः    | 90   | 18         | पुनर्मामित्यचं जपेत्      | २         | 969           |
| पुत्रा रिक्थहराः पितुः      | ٩  | 164        | पुनर्यस्त्वपधावति         | 6         | ५४            |
| पुत्रिकाध मेशङ्कया          | Ę  | 33         | पुनस्तान्प्रतिपद्यते      | ર         | 920           |
| पुत्रिकायां कथंचन           | ९  | १३५        | पुनाति पङ्क्ति वंश्यांश्च | 3         | 904           |
|                             |  |            | _                         |           |               |

| पाद                     | अ०       | श्लो० | पाद                        | अ०       | স্ফীণ |
|-------------------------|----------|-------|----------------------------|----------|-------|
| पुंनाम्नो नरकायसात्     | ९        | १३८   | पुरुषो धर्ममाचरन्          | 30       | ५३    |
| पुमांसं दाह्येत्पापम्   | 6        | ३७२   | पुरुषो रक्षणं प्रति        | ९        | 9 6   |
| पुमांसं न प्रमोदयेत्    | 3        | ६१    | पुरोहितं च कुर्वीत         | •        | 96    |
| पुमांसश्चापरिच्छदाः     | 4        | ४०४   | पुरोडाशांश्रक्षंश्चेव      | ६        | 99    |
| पुमानित्येव भुक्षते     | 9        | 88    | पुलकाश्चेव धान्यानाम्      | 90       | १२५   |
| युमान्युंसोऽधिके शुक्रे | 3        | ४९    | पुलस्त्यं पुलहं कतुम्      | 9        | ३५    |
| पुरद्वारेण निह रेत्     | ч        | ९२    | पुलस्त्यस्याजपाः पुत्राः   | રૂ       | 196   |
| पुरस्ताम्ब विशीर्यति    | <b>ર</b> | હ ક   | पुष्कलं फलमामोति           | ર        | १२९   |
| पुरस्तादप्रचोदिताम्     | 8        | २४८   | पुष्पधः शेख एव च           | 30       | २१    |
| पुरस्तादेव कुर्वते      | ą        | २६१   | पुष्पमूलफलस्य च            | 9        | 139   |
| पुरा चक्रेऽथ पुत्रिकाः  | ९        | 976   | पुष्पमूलकलानां च           | 3 3      | १६५   |
| पुराणं निहितं क्षितौ    | 6        | ३८    | पुष्पमूलफलानि च            | Ę        | 93    |
| पुराणं मानवो धर्मः      | 12       | 110   | पुष्पमूलफलेषु च            | 4        | २२९   |
| पुराणानि खिलानि च       | ર        | २३२   | पुष्पमूलफलेः शुभैः         | ч        | 90    |
| पुराणाश्चैव राजतः       | 6        | 936   | "                          | પ્       | 149   |
| युराणेष्वपि यज्ञेषु     | ષ        | २३    | पुष्पमूलफलैर्वापि          | Ę        | २१    |
| पुरा पृष्टो मनुर्मया    | 9        | 999   | पुष्पिणः फल्लिनश्चैव       | 9        | 80    |
| पुरा भ्रात्रा यवीयसा    | 4        | 998   | पुष्पितानां च वीरुधाम्     | 9 9      | 185   |
| पुरुषं व्यंजयन्ति हि    | 30       | 46    | पुष्पेषु हरिते धान्ये      | 6        | ३३०   |
| पुरुषं श्रीनिषेवते      | ९        | ३००   | पुष्ये तु छन्दसां कुर्यात् | 8        | ९ ६   |
| पुरुषः परिकीर्तितः      | 3        | ९२    | पूजियत्वा ततः पश्चात्      | Ę        | 990   |
| पुरुषस्य समाप्यते       | २        | २३७   | पूजयेदशनं नित्यम्          | <b>२</b> | ५४    |
| पुरुषस्य स्त्रियाश्चेव  | ९        | 9     | पूजयेद्धव्यकव्येन          | ૪        | ३१    |
| पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः   | 9 २      | ४५    | पूजार्हा गृहदीसयः          | ९        | २ ६   |
| पुरुषाणां कुलीनानाम्    | 4        | ३२३   | पूजितं हाशनं नित्यम्       | २        | પૃષ્  |
| पुरुषाणां महौजसाम्      | 8        | 38    | पूजिताश्च प्रशस्ताश्च      | 10       | ७२    |
| पुरुषान्वनगोचरान्       | 6        | २५९   | प्ज्या भूषियतब्याश्च       | ३        | ५५    |
| पुरुषार्थप्रयोजनम्      | •        | 100   | पूतिगन्धे च सर्वदा         | ૪        | 909   |
| पुरुषाश्चेव दास्भिकाः   | 93       | 88    | पूर्यं चिकित्सकस्यासम्     | 8        | २२०   |
| पुरुषेः स्वैदिवानिशम्   | 9        | ₹     | पूयते मानवस्त्र्यहात्      | 33       | २५३   |
| पुरुषेराप्तकारिभिः      | 9        | १२    | पूयन्ते सततं नृपाः         | 4        | ३११   |
|                         |          |       |                            |          |       |

| पाद                          | अ०       | स्को०    | पाद                          | अ॰  | श्लो०      |
|------------------------------|----------|----------|------------------------------|-----|------------|
| प्यन्ते सत्यसाक्षिणः         | 6        | २५७      | पूर्वोप निहितं निधिम्        | G   | <b>३</b> ७ |
| पूर्ण मूत्रपुरीषयोः          | Ę        | ७६       | पृथक्क र्माण्यकल्पयत्        | 9   | 69         |
| पूर्ण वापि शतं भवेत्         | 6        | ३३८      | पृथक्कार्याणि चैव हि         | 9   | 180        |
| पूर्णकुम्भमपां नवम्          | 9 9      | 145      | पृथक्पिण्डे च संस्थिते       | ų   | 30         |
| पूर्णविंशतिवर्षेण            | २        | २१२      | पृथक्पृथग्वा मिश्रौ वा       | ર્  | २६         |
| पूर्णे चानस्यनस्थ्नां तु     | 99       | 180      | पृथक् संस्थाश्च निर्ममे      | 3   | २ ९        |
| पूर्व दैवं नियोजयेत्         | રૂ       | २०४      | पृथग्द <u>चाद्विशुद्धये</u>  | 33  | 936        |
| पूर्व दोषानभिख्याप्य         | C        | २०५      | पृथग्वा धर्मकाम्यया          | ९   | 999        |
| पूर्व पूर्व गुरुतरम्         | 9        | ५२       | पृथग्विवर्धते धर्मः          | 9   | 333        |
| **                           | ९        | २९५      | पृथिवीमपि चैवेमाम्           | 9   | 904        |
| पूर्व पूर्वमदोषवत्           | 90       | 998      | पृथिव्यां मातृमातुली         | ક   | १८३        |
| पूर्व पूर्व विवर्जयेत्       | २        | 828      | पृथिन्यां सर्वमानवाः         | २   | २०         |
| पूर्व भुङ्क्ते विचक्षणः      | 3        | 994      | पृथिन्यामधिजायते             | 3   | ९९         |
| पूर्वजैश्च महर्पिभिः         | ९        | <b>३</b> | पृथुस्तु विनयाद्राज्यम्      | 9   | ४२         |
| पूर्वदृष्टस्त्रथैव सः        | ९        | 60       | पृथोररपीमां पृथिवीम्         | Q   | 88         |
| पूर्वपक्षाद्विशिष्यते        | 3        | २७८      | प्रष्टः सन्धर्मनिश्चये       | 4   | ९४         |
| पूर्व भुक्त्या च सततम्       | 4        | २५२      | पृष्टः सन्नाभिनन्दति         | 6   | ५४         |
| पूर्वमाक्षारितो दो दैः       | 6        | ३५४      | पृष्टोऽप <b>ञ्ययमान</b> स्तु | ٤   | ६०         |
| पूर्वमाप्यायनं श्रुतम्       | ર        | २०३      | पृष्ट्वा स्वदितमित्येवम्     | 3   | २५१        |
| पूर्वो संध्यां जपंस्तिष्टन्  | 2        | 302      | पृष्ठतस्तु शरीरस्य           | ૮   | 300        |
| पूर्वी संध्यां जपंस्तिष्टेत् | २        | 909      | पृष्ठवास्तु नि कुर्वीत       | ३   | ९१         |
| "                            | 8        | ९३       | पैतृकं तु पिता द्रव्यम्      | ९   | २०९        |
| <b>पू</b> र्वाभिरसमृद्धिभिः  | 8        | १३७      | पैतृष्वसेयीं भगिनीम्         | 9 9 | 303        |
| पूर्वाह्म एव कुर्वीत         | 8        | १५२      | पैतृको दण्डदासश्च            | 4   | ४१५        |
| पूर्वाह्ने प्रथमेऽहनि        | 8        | ९६       | पैलवौदुम्बरो वैश्यः          | २   | 8,4        |
| पूर्वाह्रे वै शुचिः शुचीन्   | 4        | 60       | पैशाचश्चाष्टमोऽधमः           | 3   | २१         |
| पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा       | 3        | 350      | "                            | 3   | ३४         |
| पूर्वेषामेव निर्वपेत्        | ३        | २२०      | पैशाचश्चासुरश्चेव            | Ę   | २५         |
| पूर्वेष्वपि हि जन्मसु        | 9        | 900      | पैशाची दक्षिणा द्विजैः       | ર   | 181        |
| पूर्वोक्तानामसंभवे           | <b>ર</b> | १८५      | पैशुन्यं चापि सर्वशः         | 32  | Ę          |
| "                            | 9        | २००      | पैशुन्यं साहसं द्रोहः        | •   | 88         |
|                              |          |          |                              |     |            |

| पाद                           | अ०       | स्रो॰          | पाद                            | अ०*        | <b>স্ভৌ</b> ০ |
|-------------------------------|----------|----------------|--------------------------------|------------|---------------|
| पौभ्रह्या <b>म</b> लचित्ताच   | <b>Q</b> | 974            | प्रकाल्य हरतावाचम्प            | Ę          | 848           |
| पीण्ड्रकाश्चीड्रद्रविद्याः    | 90       | 88             | प्रक्षिपन्त्यनलेऽच्सु वा       | 3          | २६५           |
| पौत्रदौहित्रयोर्लोके          | ٩        | 983            | प्रचारं मण्डलस्य च             | 9          | 948           |
| <b>&gt;7</b>                  | ٩        | 939            | प्रचेतसं वसिष्ठं च             | . 1        | 34            |
| पौत्रीमातामहस्तेन             | 9        | এইছ            | प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा       | 9          | २२८           |
| षौत्रेणानन्त्यमञ्जुते         | 9        | 130            | प्रच्छन्नपापा जप्येन           | ч          | 198           |
| पौनर्भवश्च काणश्च             | Ę        | 9 434          | प्ररुक्षवञ्जकास्त्वेते         | ९          | २५७           |
| पौनर्भवेन भर्त्रा सा          | <b>Q</b> | 995            | प्रच्छन्ना वा प्रकाशा वा       | 3 0        | ૪૦            |
| पौरुषेण नयेन च                | •        | 949            | प्रच्युतो धर्मजीवनः            | ٩,         | ₹05           |
| पौरुषोऽर्धपणं तरे             | 6        | 8 <b>6 B</b> . | प्रजनं न प्रवर्तते             | Ę          | £\$           |
| पौर्णमासं च योगतः             | Ę        | 9              | प्रजनार्थं महाभागाः            | <b>९</b>   | २६            |
| पौर्णमासीं चतुर्दशीम्         | 8        | 126            | प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः    | ९          | ९ ६           |
| पौर्णमासेन चैव हि             | 8        | २५             | प्रजने च प्रजापतिम्            | 35         | 9 2 9         |
| पोर्णमास्यष्टकासु च           | 8        | 193            | प्रजां प्रामोति पुष्कलाम्      | ₹          | <b>300</b>    |
| पौर्विकीं संसार आतिम्         | 8        | 388            | प्रजाधर्माश्चिषोधत             | ٠, ٩       | 213           |
| (ऽ)प्युपाकृत्य यथाविवि        | 8        | ٩५             | प्रजानां चैव पालनम्            | 9          | 66            |
| प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्तिः   | 30       | 128            | प्रजानां परिरक्षार्थम्         | نع         | 68            |
| प्रकाशं वाऽऽप्रकाशं वा        | 6        | 349            | व्रजानां रक्षणं दानम्          | 9          | - 68          |
| प्रकाशं विविधैर्वधैः          | 6        | 143            | प्रज्ञानामेब पालनम्            | 9          | 388           |
| प्रकाशक्रयशोधितः              | 6        | २०२            | प्रजापतिनिसर्गज <b>म्</b>      | 9          | 3 €           |
| प्रकाशमेतत्तास्कर्यम् <u></u> | 3        | २२२            | प्रजापतिरकस्पयत्               | ų          | २८            |
| प्रकाशवञ्चकारतेषाम्           | ९        | २५७            | प्रजापतिरिदं शास्त्रम्         | 33         | २४३           |
| प्रकाशास्त्रोककण्टकान्        | Q,       | २६०            | प्रजापतिर्हि वैश्याय           | " <b>Ç</b> | ३२७           |
| प्रकाशांश्चाप्रकाशांश्च       | g        | २५६            | प्रजायास्तद्धनं भवेत्          | ९          | 184           |
| प्रकुर्वीत परीक्षितान्        | 9        | 48             | प्रजापाल्जनतत्पराः             | ٩          | २५३           |
| प्रकुर्वीत विचक्षणान्         | <b>y</b> | ६१             | प्रजा रक्षन्परं शक्त्या        | 10         | 316           |
| प्रकृति स्वां नियच्छति        | 10       | षद             | प्रजास्तत्र न मुद्यन्ति        | •          | · २ <i>५</i>  |
| प्रकृतीनां च दूषकान्          | 9        | २३२            | प्रजास्ति बमनतम्               | ۹ :        | ₹.00          |
| प्रकृत्यासं यथाशक्ति          | Ę        | 3 1 2          | वजास्तमनुवर्त्तन्ते            | 6          | 304           |
| प्रकृत्या इविरुज्यते          | Ę        | २५७            | व्रजेप्सिताऽधिगन्त <b>ण्या</b> | 9          | . 49          |
| प्रभाखनेन त्वस्पानाम्         | 4        | 116            | प्रज्ञां यशश्च कीर्ति च        | *          | . <b>39</b>   |

| पाद                               | अ०       | श्लो॰      | पाद                           | अ०       | स्रो०      |
|-----------------------------------|----------|------------|-------------------------------|----------|------------|
| प्रज्ञातांश्च वनस्पतीन्           | 8        | <b>3 9</b> | प्रतिग्रहस्तु कियते           | 90       | 330        |
| प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुः           | 8        | 81         | प्रतिग्रहाच्छिलः श्रेयान्     | 90       | 998        |
| ",                                | 8        | ४२         | प्रतिप्रहाद्याजनाद्वा         | 30       | 909        |
| प्रज्ञा नश्यति मेहतः              | 8        | ५२         | प्रतिप्रहेण हास्यागु          | 8        | १८६        |
| प्रणतं प्रति पृच्छेयुः            | 99       | 9 44       | प्रति व्यहं पिबेदुच्णान्      | 3 3      | २१४        |
| प्रणम्य तु शयानस्य                | <b>२</b> | 390        | प्रतिनन्देश्च सर्वशः          | ₹        | 48         |
| प्रणस्य लोकपालेभ्यः               | ૮        | २३         | प्रतिनन्ध विसर्जधेत्          | 9        | 38€        |
| प्रजष्टस्वामिकं रिक्थंम्          | 6        | ३०         | प्रतिपूज्य यथान्यायम्         | 9        | 1          |
| प्रणष्टाधिगतं द्रव्यम्            | 6        | 38         | प्रतिबुद्धश्च सृज्ञति         | 9        | <i>૭</i> ૪ |
| प्रणष्टाधिगताञ्चपः                | 6        | ३३         | प्रतिभागं च दण्डं च           | 4        | ₹०७        |
| प्रणिधीनां च चेष्टितम्            | 4        | 343        | प्रतिभूः स्यादलंघनः           | 6        | १६२        |
| <b>33 3</b> 3                     | 9        | २२३        | प्रतिमानां च भेदकः            | ९        | २८५        |
| प्रणिपत्य प्रसादयेत्              | 99       | २०५        | प्रतिरुध्य गुरुं तथा          | 91       | 66         |
| प्रणीतश्चाप्रणीतश्च               | ९        | ३१७        | प्रतिरोद्धा गुरोश्चैव         | 3        | १५३        |
| मणेतुं शक्यते दण्डः               | 4        | 31         | प्रतिकोमानुकोमजाः             | 30       | २५         |
| प्रताना वस्य एव च                 | 1        | 86         | प्रतिवातेऽनुवाते च            | ?        | २०३        |
| प्रतापय <del>ुक्तस्तेजस्</del> वी | ९        | ३१०        | प्रतिश्रवणसंभाषे              | 2        | 194        |
| प्रतिकुर्याच तत्सर्वम्            | 9        | २८५        | प्रतिषिद्धः समाचरेत्          | 4        | 368        |
| प्रतिकुलं वर्तमाना                | 90       | ३१         | प्रतिषिद्धानि यानि च          | 4        | ३९९        |
| प्रतिकूला च या भवेत्              | 9        | 60         | प्रतिषिद्धापि चेद्या तु       | 9        | SB         |
| मतिकूछेषु च स्थितान्              | ٩        | २७५        | प्रतिषेधत्सु चाधर्मान्        | <b>ર</b> | २०६        |
| प्रतिगां प्रतिचातं च              | 8        | ५२         | प्रतिष्ठाप्यानि यत्नतः        | Ę        | 934        |
| मतिगृ <b>ह्ण स</b> विद्वांस्तु    | 8        | 366        | प्रतिसोमोदकद्विजान्           | 8        | 45         |
| प्रतिगृह्य द्विजो विद्वान्        | 8        | 110        | प्रतिस्रोतः सरस्वतीम्         | 3 3      | 9 9        |
| प्रतिगृद्ध पुटेनैव                | ६        | २८         | प्रतीक्ष्योऽष्टी नरः समाः     | ९        | ७ ६        |
| प्रतिगृद्धाप्रतिप्राद्ध <b>म्</b> | 33       | २५३        | प्रतीपमेतद्देवानाम्           | 8        | २०६        |
| प्रतिगृह्येप्सितं दण्डम्          | २        | 88         | प्रतीपमेते जायन्ते            | 10       | 10         |
| प्रतिप्रहः प्रत्यवरः              | 80       | १०९        | प्र <b>तु</b> दाञ्जालपादांश्च | ų        | 13         |
| मतिमहनिमित्तं तु                  | 80       | 333        | प्रतोदेनातुदन्भृशम्           | ß        | ६८         |
| प्रतिप्रहरुचिद्विजः               | 8        | 990        | प्रतोदो वैश्यकन्यया           | Ę        | 88         |
| प्रतिप्रहसमर्थोऽ प                | ß        | 965        | प्रत्यक्षं क्षेत्रिणामर्थः    | 9,       | ५२         |
|                                   |          |            |                               |          |            |

| पाद                           | <b>%</b> 0 | श्लो॰      | पाद                        | अ० | श्लो       |
|-------------------------------|------------|------------|----------------------------|----|------------|
| प्रस्पक्षं चातुमानं च         | 12         | 904        | प्रदचादासनोदके             | 3  | . 44       |
| प्रत्यक्षं सीनिबन्धनम्        | ٩          | २७         | प्रदेशान्त बिंह हरेत्      | 8  | 306        |
| प्रत्यगेव प्रयागाध            | 3          | 23         | प्रदेशुर्भातरः पृथक्       | ٩  | 996        |
| प्रत्यग्नि प्रतिसूर्यं च      | 8          | 42         | प्रदाता <b>दण्ड</b> महंति  | 4  | २०५        |
| प्रत्यवायेन श्रूद्रताम्       | 8          | २४५        | प्रदानं स्वाम्यकारणम्      | 4  | 148        |
| प्रत्यहं करूपयेद् बृत्तिम्    | 9          | 124        | प्रदाने सोऽतिथिः स्मृतः    | Ą  | 180        |
| प्रत्यहं गृहमेधिनाम्          | ₹          | ६९         | प्रदाने हब्यकव्ययोः        | 3  | 180        |
| प्रत्यहं ग्रामवासिभिः         | 9          | 116        | प्रदिशेद् भूमिमेतेषाम्     | 6  | २६५        |
| प्रत्यष्टं देहदष्टेश्च        | 6          | Ę          | प्रदुष्येत् स्थितिमस्यपि   | ٩  | 98         |
| प्रत्यहं लोकयात्रायाः         | , ૧        | २७         | प्रदेयं प्रीतिपूर्वं कम्   | 9  | 198        |
| प्रत्यादेशाय पार्धिवः         | 4          | <b>388</b> | प्रधानपुरुषैः सह           | •  | २०३        |
| प्रत्याहारेण संसर्गान्        | Ę          | ७२         | प्रपितामहांस्तथाविस्थान्   | 3  | १८४        |
| प्रस्युस्थानाभिवादनैः         | ₹          | 210        | प्रमुयादितरेभ्यश्च         | 30 | २          |
| प्रत्युत्थानाभिवादाभ्याम्     | <b>ર</b>   | 120        | प्रमुयाद् माह्यणस्त्वेषाम् | 90 | 1          |
| प्रत्युत्थाय यवीयसः           | 3          | 130        | प्रभावाश्च शरीरिणाम्       | 1  | 83         |
| प्रस्युद्गम्य स्वामजतः        | ₹          | 194        | प्रभुः कर्म समादिशत्       | 1  | 91         |
| प्रत्युवाचार्च्यं तान्सर्वान् | 3          | 8          | प्रभुः प्रथमकस्पस्य        | 33 | <b>Q</b> o |
| प्रत्यूहेकाग्निषु क्रियाः     | 4          | 48         | प्रमदासु विपश्चितः         | ₹  | २१३        |
| प्रस्येकं कथिता होताः         | •          | 340        | प्रमदाद्युस्पर्यं नेतुम्   | 3  | 818        |
| प्रथमं तत्प्रमाणानाम्         | 6          | 122        | प्रमाणं चैव लोकस्य         | 11 | 68         |
| प्रथमः साइसः स्पृतः           | 4          | 358        | प्रमाणं परमं श्रुतिः       | 3  | 3.5        |
| प्रथमा सास्विकी गतिः          | 15         | 84         | प्रमाणानि च कुर्वीत        | •  | २०३        |
| प्रियता प्रेतकृत्येषा         | Ą          | 150        | प्रमापयेव्याणसृतः          | 6  | २९५        |
| प्रथमेऽब्दे तृतीये वा         | 2          | ફેપ        | प्रमापयति चान्ययः          | 1  | પુષ્       |
| प्रदक्षिणं परीत्याग्निम्      | 3          | 88         | प्रमाप्य वैश्यं बृत्तस्थम् | 11 | 158        |
| प्रदक्षिणानि कुर्वीत          | *          | ३९         | प्रभाप्याकामतो द्विजम्     | 11 | 68         |
| प्रवचातु श्रयोदशीम्           | Ę          | २७३        | प्रमीतपतिकां श्वियम्       | 9  | ĘG         |
| प्रदेखासु प्रजीवनम्           | 9          | 3 4 8      | प्रमृतं कर्षणं स्मृतम्     | 8  | ų          |
| प्रद्यात्परिहारोश्च           | •          | 808        | प्रयच्छेच धनारणम्          | 4  | 146        |
| प्रदेशात्पाल एव तु            | 4          | २३२        | प्रयतात्मा जितेन्द्रियः    | 8  | 184        |
| प्रद्यात्पैत्रिकाद्यनात्      | ٩          | 348        | प्रयता राजसंनिषी           | 6  | २५८        |
| -                             |            |            |                            |    |            |

| पाद                              | अव       | श्लो॰ | पाद                              | अ०  | श्चे०      |
|----------------------------------|----------|-------|----------------------------------|-----|------------|
| प्रयतेतार्थसिद्धये               | v        | २१५   | प्रकृतं च निवृत्तं च             | 18  | 46         |
| त्रयतो विधिपुर्वकम्              | 3        | २१६   | <del>ब्रहृत्त</del> ग्रुपदिश्यते | 35  | <b>८</b> ९ |
| प्रयतो वेदसंहिताम्               | 3 3      | २५८   | प्रशृसानुन्महीपतिः               | G   | ३५२        |
| प्रयत्मेन वियर्जयेत्             | બ        | Ę     | प्रवृत्तिरेषा भूतानाम्           | ų   | પદ         |
| 77 77                            | ঙ        | 84    | प्रवजत्यभयं गृहात्               | €′  | <b>३९</b>  |
| प्रयत्नेनोपपादयेत्               | B        | २०६   | प्रवजन्प्रेत्य वर्धते            | ६   | 38         |
| प्रयुज्यते विवाहेषु              | 443      | १५२   | प्रवज्यासु च तिष्ठताम्           | 4   | ८९         |
| प्रयुक्तानोङ्गिशुश्रूषाम्        | 3        | २४८   | प्रश्नंसां प्राप्तुवंति च        | 90  | 150        |
| प्रयुक्षीत चतुष्टयम्             | ઢ        | १३०   | प्रशस्ता दशरात्रयः               | 3   | 80         |
| प्रयुक्तं साघयेदर्थम्            | 6        | ४९    | प्रशस्ता दारकर्मणि               | 3   | 15         |
| प्रयोगः कर्मयोगश्च               | 3 0      | 994   | प्रशस्तानां स्वकर्मसु            | २   | १८३        |
| प्रयोज्या धर्ममिच्छता            | 7        | 149   | प्रशस्तान्कवयो विदुः             | ¥   | २४         |
| प्रस्रीयन्ते विभागशः             | <b>3</b> | 3 @   | प्रशस्ता मृगपक्षिणः              | પ   | २२         |
| प्रवक्ष्यास्यनुपूर्वशः           | 6        | 999   | प्रशस्तेन प्रयत्नतः              | 3   | १२३        |
| प्रवदन्ति मनीषिणः                | 4        | ५५    | प्रश्नान्तमिव शुद्धाभम्          | 12  | २७         |
| प्रवरासु च योनिषु                | 30       | २७    | प्रशासितारं सर्वेषाम्            | 9 2 | 922        |
| प्र <del>वर्त्त</del> मानमन्याये | ९        | २९२   | प्रष्टव्याः सीमलिङ्गानि          | 6   | 548        |
| प्रवर्तेताधरोत्तरम्              | છ        | २ १   | प्रसक्तरचेन्द्रियार्थेषु         | 33  | 88         |
| प्रवसेस्कार्यवानरः               | ९        | ४७    | व्रसंगं तत्र वर्जयेत्            | 8   | १८६        |
| प्रवासये <b>इण्ड</b> यिखा        | ૮        | १२३   | प्र <b>सङ्ग</b> विनिष्टृत्तये    | 6   | ३६८        |
| प्रवास्यस्त्वस्थिभेदकः           | C        | २८४   | प्रसङ्गादैन्यबीजजाः<br>-         | ٩   | 169        |
| प्रविभक्ते यथाविधि               | ९        | २१८   | त्रसभं कर्मं यत्कृतम्            | 6   | इ३२        |
| प्रविभक्तरिप स्वतः               | 6        | १६६   | प्रसमीक्ष्य निवर्तेत             | ષ   | ४९         |
| प्रविभागस्तयोः पुनः              | ð        | ६७    | प्रसमीक्ष्यापदो सृशम्            | હ   | 538        |
| प्रविभागस्तु पक्षयोः             | 3        | ६६    | प्रसवे च गुणागुणान्              | 3   | २२         |
| प्रविशेत्स गुभां सभाम्           | 9        | 184   | प्रसवे च शुचिर्वत्सः             | ų   | १३०        |
| प्रविशेक्षोजनार्थं च             | •        | २२४   | प्रसहा कन्याहरणम्                | 3   | ३३         |
| प्रविश्य भवनं स्वक्रम्           | 3 3      | 969   | प्रसद्ध परिरक्षितुम्             | 9   | 90         |
| अविक्य सर्वभूतानि                | 9        | ३०६   | प्रसाधनोपचारज्ञम्                | 90  | ३२         |
| प्रमुसं कर्म कीर्त्यते           | 9 8      | ८९    | प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते           | 9   | 80         |
| प्रकृतं कर्म संसेब्य             | 12       | ९०    | प्रसुप्तमिव सर्वतः               | 3   | 4          |
|                                  |          |       |                                  |     |            |

| पाद                              | भ०       | श्लो॰      | पाद,                            | अ०       | <b>रहो</b> ० |
|----------------------------------|----------|------------|---------------------------------|----------|--------------|
| प्र <b>क्षतिगुणकर्मतः</b>        | 35       | 96         | प्राणस्यासमिदं सर्वम्           | - 4      | 76           |
| प्रहर्षयेद्वलं स्यूद्ध           | •        | 148        | प्राणानप्सु त्रिरायम्य          | 33       | 188          |
| प्रहुतो भौतिको बिलः              | Ą        | 98         | त्राणानां परिरक्षार्थम्         | 30       | 305          |
| प्राकारपरिखास्तथा                | 9        | 998        | प्राणानामेव चात्यये             | ų        | 20           |
| प्राकारस्थो धनुर्घरः             | •        | 68         | प्राणानेवासुमिच्छन्ति           | *        | २८           |
| प्राकारस्य च भेतारम्             | ٩        | २८९        | प्राणान्सं दण्डमहति             | 4        | ३५९          |
| प्रा <b>क्टू</b> लान्पर्युपासीनः | ર        | ७५         | प्राणान्तिकमिति स्थितिः         | 9.8      | 988          |
| प्राक्छाये कुंजरस्य च            | Ą        | 805        | प्राणायामाः परं तपः             | <b>ર</b> | ૮ફ           |
| प्राक्यजापतिनिर्मित <b>म्</b>    | ٩,       | 8 ફ        | प्राणायामान्षडाचरेत्            | Ę        | - ६९         |
| प्राकाभिवर्षनात्पुंसः            | <b>ર</b> | २९         | प्राणायामा ब्राह्मणस्य          | Ę        | <b>9</b> •   |
| प्राचीं तां करूपये दिशम्         | ø        | 968        | प्राणायामास्तु षोष्टश           | 99       | २४८          |
| प्राचीनावीतिना सम्यक्            | Ę        | <b>309</b> | प्राणायामेन शुद्धति             | 8 9      | 181          |
| प्राजकश्चे <b>ज्ञवेदा</b> सः     | 6        | २९४        | "                               | 99       | १९९          |
| प्राजको दण्डमहंति                | 4        | २९४        | ,, 7,                           | 8 8      | २०१          |
| प्रजापतय पुव च                   | ₹        | ८६         | प्राणायामैर्द् <b>हे</b> होषान् | Ę        | ७३           |
| प्राजापत्यं चरन्द्रिजः           | 33       | २११        | प्राणायामैस्त्रिभिः पृतः        | <b>ર</b> | 64           |
| प्राजापत्यं चरेत्कृच्छूम्        | 3 3      | 904        | प्राणायामे विमुच्यते            | 8 8      | 60           |
| प्राजापत्यमदत्त्वाश्वम्          | 3 3      | 3,6        | प्राणावेवोषपादयेत्              | 3        | २१२          |
| प्राजापत्यमनिच्छवा               | 99       | \$58       | प्राणानां चैव हिंसनम्           | 7        | 300          |
| प्राजापत्यस्तथासुरः              | ¥        | २ १        | प्राणिनां न चिकीर्षति           | Ŋ        | ४ ६          |
| प्राजापत्यां निरूप्येष्टिम्      | Ą        | ३८         | प्राणिनां बुद्धिजीविनः          | 3        | ९.६          |
| प्राजापत्ये पिता प्रभुः          | ß        | १८२        | प्राणिनोऽसार एव च               | 4        | ३०           |
| प्राजापत्येषु यद्वसु             | ٩        | १९६        | प्राणिनोऽहन्यहन्यपि             | عع       | ₹0           |
| प्राजापत्यो विधिः स्मृतः         | Ę        | ž o        | प्राणिनौ प्रेत्य चेह च          | Ę        | 304          |
| प्राज्ञं कुलीनं शूरं च           | •        | 280        | प्राणिभिः क्रियते यस्तु         | ٩.       | २२३          |
| प्राज्ञं दान्तं कुलोद्गतम्       | •        | 181        | प्राणि वा यदि वाऽप्राणि         | 8        | 110          |
| प्राज्ञः प्रतिप्रष्टं कुर्यात्   | 8        | 350        | प्राणे वाचं च सर्वदा            | 8        | २३           |
| प्राद्विवाकोऽनुयुक्षीत           | 6        | ७९         | प्रातरूथाय पार्थिवः             | 9        | ક્ છ         |
| प्राणबाधाभयेषु च                 | 8        | 41         | प्रातिभाष्यं बृथादानम्          | 6        | १५९          |
| प्राणमृत्सु महत्स्वर्धम्         | 6        | ₹ ९ €      | प्रातिलोम्बेन जायन्ते           | 10       | 18           |
| प्राणयात्रिकमात्रः स्यक्त्       | Ę        | પ્યૂ 🗯     | प्रातिकोम्बेऽपि जन्मि           | 10'      | 12           |

| पाद                            | अ०       | स्रो०      | पाद                       | अ०  | स्रो० |
|--------------------------------|----------|------------|---------------------------|-----|-------|
| प्रातिवेश्यानुवेश्यी च         | 6        | <b>३९२</b> | प्रायश्चित्तं यथाविधि     | 33  | 580   |
| प्रादुरासीत्तमोनुदः            | 3        | Ę          | प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः | 3 3 | ક્ષત  |
| प्रादुष्कृतेष्वप्रिषु तु       | B        | १०६        | प्रायश्चित्तं विशुद्धये   | 3 9 | 48    |
| प्राचीते शतसाहस्रम्            | <b>9</b> | ८५         | प्रायश्चित्तमकुर्वताम्    | 9   | २३६   |
| प्रापणात्सर्वकामानाम्          | २        | <b>૧</b> ૫ | प्रायश्चित्तमकुर्वाणः     | २   | २२१   |
| प्राप्तं निर्देहति क्षणात् ,   | 99       | २४६        | प्रायश्चित्तमभोजनम्       | 9 9 | २०३   |
| प्राप्तः स्याचीरकिल्बिषम्      | ૮        | 996        | प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्  | 33  | 80    |
| ",                             | 6        | ३००        | प्रायश्चित्तविधि तथा      | 1   | 918   |
| "                              | 6        | ३४२        | प्रायश्चित्तविधि शुभम्    | 90  | 131   |
| प्राप्तवान्मनुरेव च            | •        | ४२         | प्रायश्चित्तार्थमादृतः    | 33  | २२५   |
| प्राप्तापराधास्ताड्याः स्युः   | 4        | २९९        | प्रायश्चित्तीयतां प्राप्य | 13  | 80    |
| प्राप्ते काले नियच्छति         | ९        | ३०७        | प्रायश्चित्तीयते नरः      | 3 3 | 88    |
| प्रा <u>म</u> ्यात्पुर्वसाहसम् | 6        | ३५४        | प्रायश्चित्तेऽकृते द्विजः | 33  | 80    |
| प्राप्तुयादुत्तमर्णिकः         | 4        | ४८         | प्रायश्चित्ते तु चरिते    | 99  | १८६   |
| प्राप्तुवन्ति दुरात्मानः       | 33       | ४८         | प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः | 3 3 | ४६    |
| प्राप्त्रवन्त्युत्सृतीः पुनः   | 4        | ४०         | प्रायो नाम तपः प्रोक्तम्  | 33  | ४७    |
| प्रामोति परमां गतिम्           | 8        | 38         | प्राशयेदप्सु वा क्षिपेत्  | 3   | २६०   |
| "                              | Ę        | ९६         | प्राशितं पितृतर्पणम्      | 3   | 98    |
| ",                             | 6        | ४२०        | प्राचय मूत्रपुरीषाणि      | 3 3 | 148   |
| "                              | 9        | ও গ্ব      | प्रासादं वा रहोगतः        | 9   | 180   |
| ** **                          | 33       | ३४         | प्रास्येदात्मानमग्नौ वा   | 33  | ७३    |
| ,, ,,                          | 92       | 998        | प्राह पुत्रवतीर्मनुः      | ९   | १८३   |
| प्राप्तोति प्रतिपृजितः         | 8        | २३४        | प्रियं च नानृतं ब्रुयात्  | 8   | १३८   |
| प्राप्यते ह्यमृतं ततः          | 92       | ८५         | प्रियश्वशुरमातुलान्       | 3   | 119   |
| प्रायशोऽधर्ममल्पशः             | 12       | २०         | प्रिया भवन्ति लोकस्य      | ઢ   | ४२    |
| प्रायिक्चतं चिकीर्षन्ति        | 33       | १९२        | प्रियेषु स्वेषु सुकृतम्   | Ę   | ७९    |
| प्राप्येतत्कृतकृत्यो हि        | <b>9</b> | ९३         | त्रीतात्मा श्रूयतामिति    | 9   | ६०    |
| प्रायश्चित्तं तु कुर्वाणः      | <b>Q</b> | 280        | प्रीतात्मा सप्तविशतिम्    | 9   | 128   |
| प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः      | 99       | १२९        | प्रीत्योपनिहितस्य च       | 6   | 198   |
| प्रायश्चित्तं निबोधत           | 99       | २४७        | प्रेतकृत्यैव सौकिकी       | 3   | 120   |
| प्रायश्चित्तं प्रकल्पयत्       | 33       | २०९        | प्रेक्षासमाजं गच्छेहा     | 9   | 68    |
|                                |          |            |                           |     |       |

## मनुपादानुकमणी।

१०३

स्रो० स्रो० पाद पाद अ० प्रेतनिर्पातकश्चैव प्रोक्षणात्त्रणकाष्टं च 122 358 2 प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसम् प्रेतशुद्धि निबोधत 20 900 4 4 मोत्साच वशमानयेत् प्रेतशुद्धि प्रवक्ष्यामि 563 8 40 4 प्रेतहारैः समं तन्न प्रोषिते स्वविधायैव Ęų ፄ 94 4 प्रोषितो धर्मकार्यार्थम् प्रेतान्त्यस्त्री निषेविणः 9€ 49 9 35 प्रेते राजनि सज्योतिः 90 **प्रवङ्गमनरामराः** ८२ 4 IJ प्रत्य कर्मफलोदयम् २३१ 33 फ प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् É फल कतकबृक्षस्य 9 P फलं व्वनभिसंधाय 43 " " ३४३ फलं दानस्य पौर्तिकम् प्रेत्य चेह च नश्यति 208 333 प्रेत्य चेह च शाश्वतम् फलदानां तु वृक्षाणाम् 185 188 33 7 फलन्त्यनुयुगं लोके " " 82 Ę 60 प्रेत्य चेह हिताहितान् फलपुष्योक्रवानां च 3 185 २० 33 फलमूलं तु मर्कटः प्रेल्य जन्मनि जन्मनि ३८ É @ 97 4 फलमूलानिलाशनाः प्रेत्य तैरद्यतेऽवशः २३६ ३३ 4 फलमूलाशनैर्मेध्यैः प्रत्य दुष्कृतिनां नृणाम् 3 € 48 4 प्रेत्य विप्रस्य गर्हितः फलमूले तथीषधीः 90 109 90 69 प्रेत्य श्रेयोऽभिकांक्षिणः फ्लैधःकुसुमस्तेयम् । 11 90 ९१ 8 फाल्गुनं वाथ चैत्रं वा प्रेत्य स्वर्गं समश्नुते 162 99 Ę प्रेत्य स्वर्गाञ्च हीयते 94 4 बकं चैव बलाकां च प्रेस्याप्राज्ञतया नरः 3 8 9 38 प्रेत्येह च सुखासुखम् बकं बर्हिणमेव च 134 99 92 98 प्रेत्येह च सुखोदकीन् बकविष्यन्तयेदर्थान् 308 24 बक्वतचरो द्विजः मेल्येह चेदशा विप्राः 188 360 बको भवति हत्वाग्निम् प्रेष्यतां यान्ति शत्रुषु ६६ 93 85 90 प्रेष्यान्वार्धुषिकांश्चैव बद्ध एवाभिदृश्यते ३०८ 902 बद्धस्य निगडस्य च 280 प्रेष्यो प्रामस्य राज्ञक्य 343 बध्यते यास्तु वाह्यन् **F**C प्रेष्यो भ्राता च सोदरः २९९ प्रेष्यासु चैकभक्तासु बध्यते वारुणैर्भृशम् ८२ ३६३ प्रोक्तान्दण्डान्मनीषिभिः बध्यो दण्ड्यश्च धर्मतः 46 355 बन्धनच्छेदनानि च 94 प्रोक्षणं संहतानां च 12

944

4

| पाव                      | अ०  | श्लो० | पाद                         | <b>최 o</b> | स्रो०      |
|--------------------------|-----|-------|-----------------------------|------------|------------|
| बम्धनानि च काष्टानि      | 3 2 | 30    | बहु देयं च नोऽस्वित         | ą          | २५९        |
| बन्धनानि च सर्वाणि       | 9,  | २८८   | बहुपुष्पफलोपगाः             | 1          | 8 €        |
| बम्धुप्रियवियोगांश्र     | 12  | ७९    | बहूनां धान्यवाससाम्         | ų          | 996        |
| बभू बुर्हि पुरोडाशाः     | ч   | २३    | बहुन्वर्षगणान्घोरान्        | 38         | પ્રષ્ઠ     |
| बभुणो दीक्षितस्य च       | 8   | १३०   | बह्बुचं वेदपारगम्           | \$         | 984        |
| बर्हिष्मत्सु पृथक् गृथक् | 3   | २०८   | बह्वीर्गाः प्रतिजग्राह      | 90         | 900        |
| बलं निर्णेजकस्य च        | ૪   | २१९   | बह्वीषु चैकजातानाम्         | ٩          | 386        |
| वर्लं संजायते राज्ञः     | ઢ   | १७२   | बह्वयः शुच्योऽपि न स्त्रियः | 6          | 99         |
| बलमूर्जं च यच्छति        | २   | ५५    | बाधन्ते भद्रिका प्रजाः      | ९          | २२६        |
| बलवाञ्चायते वायुः        | 3   | ७६    | बान्धवानिप भोजयेत्          | 3          | २६४        |
| बलवानिन्द्रियग्रामः      | २   | २१५   | बान्धवैरुद्किया             | ų          | 90         |
| बरूस्य स्वामिनश्चैव      | •   | १६७   | बालः समानजन्मा वा           | २          | २०८        |
| बलाका शकुनिदंधि          | 92  | ६३    | बालग्नांश्च कृतनांश्च       | 99         | 990        |
| बलाइतं बलाद् भुक्तम्     | 6   | १६८   | बालदायादिकं रिक्थम्         | 6          | २७         |
| बलाद्यचापि लेखितम्       | ૮   | १६८   | बालया वा युवत्या वा         | 4          | 180        |
| बिलं गृह्णाति पार्थिवः   | ९   | २५४   | बालवृद्धकृशातुराः           | 8          | 828        |
| बिलं भिक्षां च शक्तितः   | Ę   | 9     | बालबृद्धातुराणां च          | ઢ          | <b>©</b> 9 |
| बिलं सर्वात्मभूतये       | ą   | 99    | "                           | 6          | ३१२        |
| बलिमाकाश उल्झिपेत्       | Ę   | ९०    | बालबुद्धातुरेवेंद्यैः       | 8          | 308        |
| बलिषड्भागहारिणम्         | 6   | ३०८   | बालवृद्धाविकञ्चनम्          | 6          | ३९५        |
| बस्ति स्नायुं च रोचनाम्  | 6   | २३४   | बालातपः प्रेतधूमः           | 8          | ६९         |
| बहवरचेतु सहशाः           | ९   | 828   | बालादपि सुभाषितम्           | <b>ર</b>   | २३९        |
| बहवोऽविनयास्रष्टाः       | ı9  | 80    | बालाइच न प्रमीयन्ते         | ९          | २४७        |
| बहिर्प्रामप्रतिश्रयौ     | 30  | ₹ €   | बालिश्याच्छतमेव तु          | 6          | 9 2 9      |
| बहिर्ग्रामास्त्रतिश्रयः  | 30  | 49    | वाले देशान्तरस्थे च         | ч          | 30         |
| बहिरुत्सर्जनं द्विजः     | ક   | ९ ६   | बालेन स्थविरेण वा           | 6          | 90         |
| बहिरेतिश्रिकं द्विजः     | ₹   | 90    | "                           | L          | 9 5 3      |
| बहिर्माल्यं न धारयेत्    | 8   | ७२    | बालोऽपि नावमन्तब्यः         | •          | é          |
| बहिश्चेद्राष्यते धर्मात् | 6   | १६४   | बालोऽपि विप्रो वृद्धस्य     | Ą          | 140        |
| बहुकस्याणमीप्सुभिः       | ₹   | પુષ   | बाल्बे पितुर्वशे तिष्ठेत्   | ષ          | 581        |
| बहुत्वं परिगृह्यीयात्    | 4   | ७३    | बाह्यं जन्तुं प्रसूयते      | 90         | 20         |

| पाद                        | अ०  | श्हो०      | पाद                         | क्ष दे   | श्हो० |
|----------------------------|-----|------------|-----------------------------|----------|-------|
| बाद्यानां सिद्धिकारणम्     | 10  | <b>4 2</b> | बुद्ध्येतैय च तत्कृतम्      | <b>9</b> | 190   |
| बाह्यानामपि गर्हितम्       | 3 0 | ३९         | बैजिक गार्भिकं चैनः         | ₹        | २७    |
| बाह्या बाह्यतरान्युनः      | 90  | 21         | बैजि शदभिसंबन्धात्          | ų        | 4.2   |
| बाह्यविभावये छिङ्गैः       | 6   | २५         | बैहारुवितकाञ्छठान्          | 8        | ર્ હ  |
| बिडालकाकाख्रिडष्टम्        | 99  | 949        | बैडालन्नसिके द्विजे         | 8        | १९२   |
| बिभर्ति सर्वभूतानि         | 32  | ९९         | बैडालविको ज्ञेयः            | 8        | 194   |
| बिभतींदं चराचरम्           | 3   | 64         | बद्गस्य मोति विष्टरम्       | ९        | 130   |
| बिम्टयादानृशंस्येन         | 6   | 899        | ब्रह्म क्षत्रं च संप्रक्तम् | ٩        | ३२२   |
| विस्रतः पार्थियं वतस्      | ९   | 391        | ब्रह्मक्षत्रसवेषु च         | V,       | २३    |
| बिलौकोवधबन्धनम्            | 90  | ४९         | ब्रह्मश्चियविट्योनिः        | Ą        | 60    |
| बीजं परपरिग्रहे            | ९   | 83         | व्रह्महो ये स्पृता लोका     | 6        | 69    |
| बीजं पुष्यति पुष्टिषु      | 9   | इ ७        | ब्रह्मचर्ये व्यवस्थिता      | 4        | १६०   |
| बीजं स्थास्तु चरिष्णु च    | 9   | ५ ६        | ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यम्     | ч        | 929   |
| बीजं स्वैर्ध्यक्षितं गुणैः | 9   | ३६         | ब्रह्मचारी गुर <b>ेवसन्</b> | २        | 904   |
| बीजकाण्डप्ररोहिणः          | 9   | 8 ह        | बहा चारी गृहस्थश्र          | Ę        | 69    |
| बीजकाण्डरुहाण्येव          | 3   | 88         | क्रह्मचारी तु सं अभीयात्    | 3 3      | 346   |
| बीजक्षेत्रे तथैवान्ये      | 90  | 90         | ब्रह्मचारी धराशयः           | ६        | २६    |
| बीजभूतः स्मृतः पुमान्      | ९   | इइ         | ब्रह्मचारी व्रती च स्यात्   | 99       | २२४   |
| बीजार्थं यत्प्रदीयते       | ٩   | ५३         | ब्रह्मचारी भवेशित्यम्       | 8        | 126   |
| बीजाचोनिर्गरीयसी           | ९   | 45         | ब्रह्मचारी समाहितः          | 3 9      | ८१    |
| बीजाना भुप्तिविच्य स्थात्  | ٩   | ३३०        | व्रह्मचारी सहस्रदः          | 3        | १८६   |
| बीजानीह स्वभावतः           | 9   | ३८         | <b>ब्रह्मचर्यमवि</b> ष्ठुतः | 2        | २४९   |
| बीजी क्षेत्रिक एव च        | g   | 48         | बह्दचार्याहरेद् भैक्षम्     | ₹        | १८३   |
| बीजोत्कृष्टं तथैव च        | g   | 291        | ब्रह्मचार्येव भवति          | Ę        | 40    |
| बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्टाः | 1   | ٩.६        | ब्रह्म चैव धनं येषाम्       | 9        | ३१६   |
| बुद्धिर्ज्ञानेन शुष्ट्यति  | ષ   | 908        | ष्रक्ष चैव प्रजापतिः        | <b>ર</b> | ८४    |
| बुद्धिष्टु द्धिकराण्याञ्च  | 8   | 18         | ब्रह्म छन्दस्कृतं चैव       | 8        | 300   |
| बुद्धीन्द्रियमनांसि च      | 2   | 195        | ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य      | 2        | 388   |
| बुद्धीन्द्रियाणि पद्मेषाम् | ર   | 9.9        | ब्रह्मणः प्रणवं कुर्यात्    | 2        | 88    |
| बुद्ध्येतारिप्रयुक्तां च   | •   | 108        | ब्रह्मणः सम्र शाश्वतम्      | 8 2      | 3 7 6 |
| बुद्ग्धा च सर्व तत्वेभ     | •   | ₹८         | **                          | \$       | 885   |

## मनुपादानुक्रमणी।

| पाद                                     | अ०       | श्रो०       | पाद                               | अ०  | स्रो० |
|---|----------|-------------|-----------------------------------|-----|-------|
| ब्रह्मणश्चेत्र धारणास्                  | 3        | ९३          | ब्रह्महत्या सुरापानम्             | 33  | 48    |
| वहाणस्तां सभां विदुः                    | 6        | 3 3         | ब्रह्महा क्षयरोगित्वम्            | 3 3 | ४९    |
| ब्रह्मणा च परित्यक्ताः                  | 9 9      | १९२         | हरूहा च सुरापश्च                  | 9   | २३५   |
| ब्रह्मणा श्रवणायुभी                     | २        | 188         | वहाहा द्वादशसमाः                  | 33  | 92    |
| ब्रह्मणो ग्रहणं चैव                     | २        | 303         | ब्रह्महा योनिमृच्छति              | 92  | પુષ   |
| अहाहण्यशिराः पुमान्                     | , 9      | २३७         | <b>ब्रह्मा</b> ञ्जलिकृतोऽध्याप्यः | ₹   | 90    |
| ब्रह्म ण्येवावतिष्ठते                   | ६        | 61          | ब्रह्मान्त्रैव हि कारणम्          | 19  | 68    |
| ब्रह्मतेजोमयं दण्हं                     | ø        | 98          | हसाधाः समुदाहताः                  | 9   | 40    |
| ब्रह्मदानं विशिष्यते                    | 8        | <b>२</b> ३३ | ब्रह्माधाने च वाजिनम्             | ઢ   | २०९   |
| झहादायहरं पितुः                         | ક્       | Ę           | ब्रह्माधिगमिकं तपः                | ₹   | 3 68  |
| ब्रह्मदेयात्मसंतानः                     | Ę        | १८५         | ब्रह्माधीत्य पुनः स्वपेत्         | 8   | ९९    |
| बहादो बहासार्ष्टिताम्                   | 8        | २३२         | ब्रह्माभ्यासेन चाजस्त्रम्         | B   | १४९   |
| ब्रह्मद्विट् परिवित्तिश्च               | Ę        | 148         | ब्रह्माभ्येति परं पदम्            | १२  | 924   |
| वस्पर्भद्विषः सुताः                     | રૂ       | 83          | व्याभ्येति सनातनम्                | Ę   | ७९    |
| वस्मभूता हि ते सदा                      | ч        | ९३          | ब्रह्मारम्भेऽवसाने च              | Ą   | 99    |
| ब्रह्मभूयाय कल्पते                      | ٠ ٩      | ९८          | ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते            | २   | 30    |
| ,, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | 15       | १०२         | वद्यावर्तादनन्तरः                 | ₹   | 99    |
| वसः यस्त्वननुज्ञातम्                    | <b>ર</b> | 998         | ब्रह्मा विश्वसृजो धर्मः           | 35  | 40    |
| ब्रह्मलोकं समभुते                       | ₹        | २३३         | ब्रह्माष्टकापौर्णमास्यौ           | 8   | 118   |
| ब्रह्मलोके महीयते                       | 8        | २६०         | ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यम्           | ₹   | 30€   |
| "                                       | Ę        | ३२          | बह्येव संनियन्तृ स्यात्           | ٩   | ३२०   |
| ष्ट्र <b>श्च</b> वर्चसकामस्य            | ₹        | ३ ७         | ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः              | 8   | 188   |
| ब्रह्मवर्चसमेव च                        | 8        | ९४          | ब्रह्मोञ्सता <b>ये</b> दनिन्दा    | 3 3 | ५६    |
| ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्राः                | ą        | ३९          | ब्रह्मोद्याश्च कथाः कुर्यात्      | 3   | २३९   |
| ब्रह्मवादिषु गर्हिताः                   | 3 9      | ४२          | बाह्यं तेजः प्रशास्यति            | 8   | १८६   |
| ब्रह्मवास्तोष्पतिभ्यां तु               | ર        | 69          | ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते         | 2   | ५९    |
| बह्मसत्रं हि तत्स्मृतम्                 | ?        | १०६         | ब्राह्मं तेजोऽवकीर्णिनः           | 99  | 929   |
| ब्रह्मसत्रेण जीवति                      | 8        | ٩.          | ब्राह्मं पुण्यमहर्त्रिदुः         | ð   | ७३    |
| ब्रह्महत्यां स्यपोहति                   | 33       | 63          | बाह्यं प्राप्तेन संस्कारम्        | 4   | ₹     |
| बह्यहत्याकृतं पापम्                     | 33       | ८६          | ब्राह्मणं कार्यदर्शने             | 6   | Ŗ     |
| वस् <b>व्यापनोदाय</b>                   | 33       | ७५          | ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्          | ₹   | 120   |

| पाद                          | अ०  | स्रो॰      | पाद                              | अ०  | स्रो॰      |
|------------------------------|-----|------------|----------------------------------|-----|------------|
| बाह्मणं क्षत्रियं वैश्यम्    | 3   | <b>£</b> 9 | बाह्मणस्य मुखे हुतम्             | 9   | 82         |
| त्राह्मणं च बहुश्रुतम्       | 8   | 984        | त्राह्मणस्य रुजःकृत्या           | 33  | 6,5        |
| बाह्मणं तु विवासयेत्         | 6   | 123        | ब्राह्मणस्य विधीयते              | 2   | ६५         |
| ब्राह्मणं दशवर्षं तु         | \$  | १३५        | ** **                            | 6   | ३७९        |
| बाह्यणं वा बहुश्रुतम्        | 6   | ३५०        | ब्राह्मणस्य विशेषतः              | 92  | ९३         |
| ब्राह्मणं वेदपारगम्          | Ę   | 930        | ब्राह्मणस्य विशेषेण              | 3 3 | 33         |
| बाह्यणं भिक्षुकं वापि        | 3   | २४३        | ब्राह्मणस्य स्वयंभुवा            | 6   | 813        |
| ब्राह्मणः कामकारतः           | 99  | 83         | ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण          | 9   | 186        |
| ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा    | 30  | ८३         | ब्राह्मणस्यासृगङ्गतः             | 8   | १६७        |
| ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि     | 90  | 999        | ब्राह्मणस्यैव कर्मेतत्           | 2   | 990        |
| ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः   | 30  | 8          | ब्राह्म <b>णस्योपनायन</b> म्     | ₹   | ३६         |
| ब्राह्मणः प्रवजेद् गृहात्    | ६   | ३८         | ब्राह्मणस्वं न हर्तेग्यम्        | 3 3 | 36         |
| ब्राह्मणः शंसितवतः           | 3   | 108        | बाह्मणांश्चैव धार्मिकान्         | 9   | २०१        |
| बाह्यणः श्रेष्ठतामेति        | 8   | २४५        | ब्राह्मणाः पंक्तिपावनाः          | 3   | १८६        |
| ब्राह्मणः सम्भवेनैव          | 33  | ८४         | ब्राह्मणाः संस्कृतान्द्विजान्    | 6   | 835        |
| बाह्यणः सप्तरात्रेण          | 90  | ९३         | ब्राह्मणाञ <u>्</u> छद्रयाजकः    | Ę   | 308        |
| ब्राह्मणः सीदति श्लुधा       | 3 3 | <b>२</b> 9 | ब्राह्मणातिक्रमेण च              | ર   | <b>4 3</b> |
| ब्राह्मणः स्वेन कर्मणा       | 30  | ८१         | ब्राह्मणात्क्षत्रियं प्रति       | 90  | <b>9 9</b> |
| ब्राह्मणः स्वे पथि स्थितः    | 30  | 303        | ब्राह्मणातु यहच्छया              | 90  | ६६         |
| ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्       | ९   | 944        | व्रह्मणाद्शेनेन च                | 30  | ४३         |
| ब्राह्मणक्षत्रियाभ्यां तु    | 6   | २७६        | बाह्यणादुप्रकन्यायाम्            | 90  | 14         |
| शह्मणश्रीत श्रवताम्          | 30  | ६५         | व्राह्मणाद्याश्रयो नित्यम्       | 9   | ३३५        |
| ब्राह्मणस्तपसैव तु           | 3 3 | 300        | बाह्मणाद्वैश्यकन्यायाम्          | 30  | 6          |
| ब्राह्मणस्तु तयोः पिता       | 2   | १३५        | ब्राह्मणानां च काम्यया           | ď   | २७         |
| ब्राह्मणस्तु सुरापस्य        | 33  | 186        | ब्राह्मणानां च दर्शनैः           | 9   | २६८        |
| <b>ब्राह्मणस्त्वन</b> धीयानः | 3   | १६८        | ब्रह्मणानां च सन्निधी            | 8   | 46         |
| ब्राह्मणस्त्वनयं गतः         | 90  | 103        | बाह्मणानामकल्पयत्                | 3   | 66         |
| ब्राह्मणस्य चतुःषष्टिः       | 6   | ३ई८        | ब्राह्मणानामकल्पयन्              | ų   | 150        |
| ब्राह्मणस्य चतुर्विधः        | ६   | ९७         | बाह्यणानेव बाधते                 | 90  | १२९        |
| बाह्यणस्य तपो ज्ञानम्        | 33  | २३५        | ब्राह्मणाच प्रकोपयेत्            | g   | <b>३१३</b> |
| ब्राह्मणस्य दिवीकसः          | 3 3 | २४२        | <b>ब्राह्मणान्धर्मभिक्षुकान्</b> | 11  | ?          |

| पाद                            | अ०        | श्लो०      | पाद                          | अ०       | श्चो० |
|--------------------------------|-----------|------------|------------------------------|----------|-------|
| वाह्यणान्पर्युपासीत            | •         | ક્ હ       | बाह्यणेश्च महर्विभिः         | 3 3      | ₹ 9,  |
| बाह्यणान्त्रति सर्वशः          | ९         | ३२०        | बाह्यणो जायमानो हि           | 9        | 99    |
| ब्रह्मणान्बाधमानं तु           | 9         | २४८        | बाह्मणो दैवतं महत्           | 9        | \$10  |
| ब्राह्मगान्वेदविदुषः           | 33        | ૪          | ब्राह्मणोऽनर्चितो वसन्       | 3        | 900   |
| ब्राह्मणा ब्रह्मयोनिस्थाः      | 30        | 98         | ब्राह्मणो नात्र संशयः        | <b>ર</b> | 69    |
| ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः         | ં ક       | ९१         | ब्राह्मणो नित्यमचैति         | Ŗ        | 9.3€  |
| ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च          | 6         | 592        | ब्राह्मणे। बैल्वपालाश्री     | ₹        | 84    |
| (ऽभ्यवपत्तौ, इति वा प          | गठः)      |            | त्रह्मणे त्रह्मणेः सह        | ₹        | 210   |
| ब्राह्मणाय च राज्ञे च          | ९         | ३२७        | वाह्यणो मदमोहितः             | 3 3      | ९६    |
| ब्राह्मणायाचग्र्यैव            | 8         | १६५        | ब्राह्मणो यात्यधोगतिम्       | 3        | 9 9   |
| ब्राह्मणायोपपादयेत्            | ર         | <b>९</b> ६ | व्राह्मणे। विभवे सति         | 33       | ३६    |
| "                              | 9 9       | ७६         | ब्राह्मणो वृत्तिकर्शितौ      | Ŀ        | 833   |
| ब्राह्मणा रिक्थभागिनः          | ९         | 966        | ब्राह्मणो वेक्पारगः          | 9        | २४५   |
| ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा       | 90        | ६२         | ब्रह्मणो होममन्वहम्          | 3        | 68    |
| ",                             | 99        | ७९         | ब्राह्मण्यं चैव गाधिजः       | ঙ        | 86    |
| ब्राह्मणा छिङ्गिनश्चैव         | c         | ४०७        | ब्राह्मण्या गुप्तया सह       | 4        | इ ७ ७ |
| ब्राह्मणास्तदनन्तरम्           | ર         | २५२        | ब्रह्मण्यादेव हीयते          | ą        | 90    |
| ब्राह्मणीं यचगुप्तां तु        | 4         | ३७६        | ब्र(ह्मण्यामप्यनार्यातु      | 80       | ६६    |
| व्राह्मणी तद्धरेत्कन्या        | ९         | 196        | वाह्यदेवार्षगान्धर्व         | ९        | १९६   |
| ब्राह्मणे चाननुचाने            | ₹         | २४२        | ब्राह्ममेकं महर्जे यम्       | 3        | ५७    |
| ब्राह्मणे प्रतिपादयेत्         | 9         | २४४        | बाह्यस्य जन्मनः कर्ता        | २        | 840   |
| ब्राह्मणेन विपश्चिता           | <b>(9</b> | 46         | बाह्यस्य तु क्षपाहस्य        | 3        | ६८    |
| ब्राह्मणेन विशेषतः             | 2         | २२५        | व्यादिषु विवाहेषु            | Ę        | ३९    |
| ब्राह्मणेषु क्षमान्वितः        | •         | ३२         | ब्राह्मान्योनांश्च संबन्धान् | 2        | 80    |
| ब्राह्मणेषु च विद्वांसः        | 3         | 99         | ब्राह्मीपुत्रः सुकृःकृत्     | ર        | ₹ ७   |
| ब्रह्मणेष्वक्षयो निधिः         | ঙ         | ८३         | बाह्यीयं कियते तनुः          | <b>२</b> | २८    |
| ब्रह्मणे साहसः पूर्वः          | 6         | ३७६        | बाह्येण विप्रस्तीर्थेन       | <b>ર</b> | 46    |
| ब्रह्मणैः शिल्पिभर्यन्त्रेः    | •         | ७५         | बाह्ये सुहूर्ते बुध्येत      | 8        | 93    |
| ब्राह्मणैः सह पार्धिवः         | 4         | 3          | वाह्यैयौनेश्व संबन्धेः       | 3,       | 840   |
| ब्राह्मणेः सह पार्थिवः         | 6         | ३९१        | बाह्यो दैवस्तथैवार्षः        | Ą        | 21    |
| ब्राह्मणेरभ्य <b>नु</b> ज्ञातः | Ą         | 288        | वासो धर्मः प्रकीर्त्तितः     | 8        | २७    |
|                                |           |            |                              |          |       |

# मनुपान्। चुकमची ।

| पाद                             | अ० | श्लो० | पाद                          | <b>अ</b> ० '' | क्षोद        |
|---------------------------------|----|-------|------------------------------|---------------|--------------|
| बाह्म्यं हुतं द्विजाश्यार्चा    | 1  | 86    | मद्राश्च क्षणिकैः सह         | g             | 大学さ          |
| नाह्म्यं हुतं प्राशितं च        | 3  | £ e   | भयं नास्ति कुतरचन            | Ę             | 80           |
| म्बाद् द्वेषेण मानवः            | 6  | २२५   | भवाद् हो मध्यमो दण्डी        | 6             | 370          |
| ब्हीति ब्राह्मणं पृच्छेत्       | 6  | 66    | भयाद्योगाय कल्पन्ते          | 4             | 9 44         |
| ब्रहीत्युक्तश्च न ब्र्यात्      | 6  | ५६    | भरद्वाजः क्षुधातस्तु         | 50            | 100          |
| म                               |    |       | भर्तेव्या मनुरव्रवीत्        | 33            | 10           |
| भक्तं च सपरिब्ययम्              | 9  | 920   | भर्ता तत्सर्वमादत्ते         | •             | 914          |
| भक्तानि षडनश्रता                | 33 | १६    | भर्तारं लङ्घयेद्या तु        | 4             | 309          |
| मक्षयन्तीं न कथयेत्             | 99 | 998   | भर्ता रक्षति यौवने           | ९             | 3            |
| भक्ष्यं भोज्यं च विविधम्        | 3  | २२७   | भर्तारमतिवर्तते              | 4             | 189          |
| भक्षं भोज्यमगर्हितम्            | ų  | 28    | भर्तारो दुर्बला अपि          | 9             | Ę            |
| भक्षभोज्यापदे <b>रीश्च</b>      | 9  | २६८   | भतुः पुत्रं विजानन्ति        | ९             | <b>\$ 9</b>  |
| भक्षभोज्यापहरणे                 | 99 | १६५   | भर्तुः शरीरशुश्रूषाम्        | 9             | ८६           |
| <b>भक्ष्याणां मृगपक्षिणाम्</b>  | 4  | २३    | भर्त्तुर्भार्या विमुच्यते    | <b>Q</b>      | ४६           |
| <b>भक्ष्यान्पञ्चनखेष्वाहु</b> ः | ч  | 96    | भर्तुरेव तदिष्यते            | 9             | १९६          |
| <b>अक्ष्याभक्ष्यं च शौर्च</b> च | 3  | 993   | भर्त्तुर्यहुच्छतं विश्चित्   | •             | ९४           |
| <b>भक्ष्याभक्ष्यमशेषतः</b>      | 4  | २६    | भत्तृहार्यधनो हि सः          | 6             | 830          |
| भक्ष्येप्वपि समुद्दिष्टान्      | 4  | 99    | भन्देवेता विकुर्वते          | ९             | 3 00         |
| <b>भगवन्सर्ववर्णानाम्</b>       | 3  | २     | भस्त्री भार्या तथैव च        | 3             | ६०           |
| भजेरबिति धारणा                  | Ŗ  | १२४   | भवतः पञ्चको गणौ              | ₹             | <b>९</b> २   |
| भजेरन्पैतृकं रिक् <b>थम्</b>    | Q  | 308   | भवतः स्वागतैर्घनैः           | 8             | २२६          |
| भजेरन्मातृकं रिक्थम्            | ९  | १९२   | भवति प्रेत्य निष्फल्रम्      | 3             | 188          |
| भगिन्यश्च सनाभयः                | ९  | १९२   | भवति व्रह्मराक्षसः           | <b>१</b> २    | ६०           |
| 55 55                           | 9  | 212   | भवत्पूर्व चरेद् भैक्षम्      | 3             | 88           |
| भन्नं तद्यवहारेण                | 6  | 386   | भवत्यस्य ह्यरक्षतः           | 6             | ₹08          |
| भजमानाः पतंति ते                | ९  | २००   | भवत्याचारवाशित्यम्           | 35            | <b>3 २ ६</b> |
| भजेरचितरे समम्                  | 9  | १५६   | भवत्यूर्ध्वं फछोदयः          | ۶ ،           | <b>१६९</b>   |
| भजेरन्सर्व एव वा                | 6  | २०८   | भवन्ति ब्रह्मवादिनः          | Ę             | इ९           |
| भद्रं भद्रमिति ब्र्यात्         | 8  | 139   | भवन्त्यायोगवीष्वेते          | 30            | **           |
| भद्रकाल्ये च पादसः              | ર  | ሪዓ    | भवन्त्यायं <b>विगर्हिताः</b> | **            | ३९           |
| भद्रमित्येब वा वदेत्            | 8  | १३९   | भवन्मध्यं तु राजन्यः         | \$            | 86           |
|                                 |    |       |                              |               |              |

| पाद                         | अ०  | स्रो०        | पाद                               | <b>S</b> o | स्डो० |
|-----------------------------|-----|--------------|-----------------------------------|------------|-------|
| भवेष विभवे सति              | 8   | ३४           | भिक्षेत भिक्षां प्रथमम्           | 2          | 40    |
| भवेदामरणा न्तिकः            | ٩.  | 303          | (s) भिचारो मूल कर्म च             | 1 8 8      | ६३    |
| भवेदंडस्य विभ्रमात्         | •   | २४           | भिद्यन्ते येन मानवाः              | 9          | € €   |
| भसानाद्धिर्यं चैव           | ų   | 999          | भिद्यरन्सर्वसेतवः                 | 9          | 88    |
| भस्मीभवति दारुवत्           | 8   | 308          | भिनत्त्येव च संहतान्              | ø          | ६६    |
| भस्मीभूतेषु विप्रेषु        | , 3 | ९७           | भिन्दन्त्यवमता मन्त्रम्           | <b>o</b>   | 940   |
| भागधेयं प्रचक्षते           | 3   | २४६          | भिन्दाचीव तडागानि                 | હ          | 388   |
| भागाइशगुणो भवेत्            | 4   | २४३          | भिसभाण्डेषु भोजनम्                | 90         | ५३    |
| भागो यवीयसां तत्र           | Q   | २०४          | भिषजे प्यशोणितम्                  | 3          | 960   |
| भाण्डपूर्णानि यानानि        | 6   | ४०४          | भीरूनन्तर्निवेशां                 | ø          | ६२    |
| भाण्डावकाशद।२चैव            | 9   | २७१          | भुक्तवत्सु च विप्रेषु             | ą          | 999   |
| भार्या पूर्वविदो विदुः      | ,   | 88           | भुक्तवस्वथ विप्रेषु               | ¥          | 115   |
| भार्यात्वमुपयान्ति ताः      | 92  | ६९           | भुक्तवान् विहरेखैव                | 9          | 223   |
| भार्या पुत्रः पुरोहितः      | 6   | ३३५          | भुक्तवा घात्वा च यो नरः           | 2          | 96    |
| भार्या पुत्रः स्वका तनुः    | 8   | 808          | अक्ता च परिगृह्य च                | 33         | 804   |
| भार्या पुत्रश्च दासश्च      | 4   | २ <b>९</b> ९ | भुक्तवा चासं विगर्हितम्           | 99         | २५३   |
| "                           | 6   | 814          | भुक्त्वा चोपस्पृशेत्सम्यक्        | <b>ર</b>   | ५ इ   |
| भार्या यत्राप्तयोऽपि वा     | ર   | 903          | भुक्त्वातोऽन्यतमस्या <b>ग्रम्</b> | 8          | २२२   |
| भार्यायै पूर्वमारिण्यै      | ų   | 986          | भुज्यमानं परैस्तृष्णीम्           | 4          | 180   |
| भावमन्तर्गतं नृणाम्         | 4   | २५           | भुअते हीतरे जनाः                  | 3          | 909   |
| भाषारच विविधा नृणाम्        | 9   | २३२          | भुक्षानो वृद्धिमुत्सृजेत्         | 4          | 188   |
| भास्वन्तं खन्नरीरिणम्       | 8   | २४३          | भुभीत ब्राह्मणः कचित्             | 8          | २०५   |
| भिक्षां च भिक्षवे दद्यात्   | Ę   | 98           | भुजीत श्राद्धमर्चितः              | Ę          | 385   |
| भिक्षां दत्त्वा द्विजो गृही | ¥   | ९५           | <b>भु</b> भीतेःयबवोन्मनुः         | 3          | २२२   |
| भिक्षां नित्यं यतिश्वरेत्   | Ę   | ५६           | भुभीयातां ततः पश्चात्             | B          | 998   |
| भिक्षां लिप्सेत कर्हिचित्   | Ę   | ५०           | भुक्षीरंस्ते च वाग्यताः           | Ę          | २३६   |
| भिक्षाबलिपरिश्रान्तः        | ६   | इ४           | भूतं भन्यं भविष्यं च              | 92         | 90    |
| भिक्षामप्युदपात्रं वा       | Ę   | ९६           | भूतयज्ञं च सर्वदा                 | 8          | 23    |
| भिक्षार्थी श्रुत्पिपासितः   | 6   | ९३           | भूतानां प्राणिनः श्रेष्टाः        | 9          | ९६    |
| भिक्षित्वा योऽधिगच्छति      | 99  | ч            | भूतानामिह कीर्तितम्               | 8          | ४२    |
| भिक्षुका बन्दिनश्चैव        | 6   | ३६०          | भूतानि बलिकर्मणा                  | ş          | 63    |

| पाद                                 | अ०  | श्लो० | पाद                                  | अ०       | स्रो०      |
|-------------------------------------|-----|-------|--------------------------------------|----------|------------|
| भूतान्यतिथयस्तथा                    | Ą   | 40    | <b>ऋत्यानामुपरोधेन</b>               | 23       | 10         |
| भूतान्यत्येति पञ्च वै               | 9 9 | ९०    | स्टल्या भवन्ति प्रायेण               | <b>©</b> | १२३        |
| भूतावासमिमं त्यजेत्                 | Ę   | 99    | मृत्येषु च चिकीर्षितम्               | •        | <b>ৰ্ভ</b> |
| भूतिकामैर्न रैर्नित्यम्             | 3   | ५९    | मृत्येषु विनियोजयेत्                 | •        | २२६        |
| भूतिकृत्येष्वभोजयन्                 | ٩   | ३८    | <b>स्ट्रादण्डश्च रात्रुषु</b>        | 9        | ३२         |
| भुमावप्येककेदारे                    | 3   | પ્    | भैक्षं चाहरहश्चरेत्                  | ર        | 168        |
| भूमावेव समाहितः                     | ş   | २२६   | भैक्षचर्या व्रतानि च                 | 93       | 141        |
| भूमिं भूमिशयांश्चैव                 | 90  | 82    | भैक्षात्रयात्मवि <b>द्युच्यर्थम्</b> | 99       | ७२         |
| भूमिः शुद्धवति पञ्जभिः              | ષ્  | 128   | भैक्षाहारो विशुच्यति                 | 99       | २५७        |
| भूमिदो भूमिमामोति                   | 8   | २३०   | भैक्षेग वर्तयेश्वित्यम्              | २        | 966        |
| भूमिवज्रमणीनां च                    | 99  | 40    | भैक्षेण व्यतिनो वृत्तिः              | <b>ર</b> | 966        |
| भूमेरधिपविहिं सः                    | 8   | 39    | भैक्षे प्रसक्तो हि यतिः              | Ę        | પુપ        |
| भूमी विपरिवर्षेत                    | Ę   | २२    | भोःशब्दं कीर्तयेदन्ते                | 7        | 358        |
| भूय एवाभिवर्धते                     | ₹   | 98    | भोका तर्ष्यमहित                      | 6        | 186        |
| 19 17                               | 9   | 316   | भोक्तुमन्तःपुरं विशेत्               | 9        | २१६        |
| भूयांसि गुणवन्ति च                  | ₹   | 130   | भोजनाभ्यञ्जनाद्दानात्                | 90       | 99         |
| भूयो वाण्यतिरिच्येत                 | 38  | १२५   | भोजनार्थं हि ते शंसन्                | Ę        | 909        |
| भूर्गोश्चाप्योषतस्तनुम्             | 8   | 968   | भोजनार्थमुपस्थितम्                   | Ę        | २४३        |
| भूर्भुवः स्वरितीति च                | 2   | હ દ   | भोजयेच शनैः शनैः]                    | Ę        | २३३        |
| भूषणाष्ट्रादनाशनैः                  | 3   | ५९    | भोजयेस्सह भार्यया                    | 3        | 113        |
| भूस्तृणं शिद्युकं चैव               | Ę   | 18    | भोजयेत्सह ऋत्येस्तौ                  | Ę        | 112        |
| शृगुं नारदमेव च                     | 3   | 24    | भोजयेत्सुसमृद्धोऽपि                  | Ę        | १२५        |
| शृगुत्रोक्तं पठन्द्रिजः             | 92  | 325   | भोजयेदविचारयन्                       | Ę        | 118        |
| भृतकाध्यापको यश्च                   | Ę   | 145   | भोभवत्पूर्वकं खेनम्                  | ₹        | 126        |
| शृतकाध्यापितस्तथा                   | 3   | १५६   | भोभाव ऋषिभिः स्पृतः                  | <b>२</b> | 158        |
| श्वतो नार्त्तो न कुर्या <b>द्यः</b> | 6   | २१५   | भौमानि कवकानि च                      | Ę        | 18         |
| भृत्या चाध्ययनादानम्                | 99  | 42    | ,,                                   | 33       | ૧૫૫        |
| म्हत्याध्यापनमेव च                  | 33  | € ₹   | भौमिकैस्ते समाज्ञेवाः                | 4        | 385        |
| भृत्यानां च परिप्रहम्               | 30  | 858   | ञ्रातरं तनयं गुरुम्                  | 6        | २७५        |
| मृत्यानां च मृतिं विद्यात्          | 9   | ३३२   | भातरो ये च संसृष्टाः                 | 9        | २१२        |
| मृत्यानां चैव वृत्यर्थम्            | ч   | २२    | ञ्राता ज्येष्ठः समः वित्रा           | 8        | 168        |

| पाद                                 | अ०         | श्लो॰      | पाद                          | अ०         | स्रो॰ |
|-------------------------------------|------------|------------|------------------------------|------------|-------|
| आता वानुमते पितुः                   | ч          | 149        | मत्या भुक्त्वा चरेत्कृष्कृम् | 8          | २२२   |
| श्राता स्वो मूर्तिरात्मनः           | 2          | २२६        | मस्सकाशाजिबोधत               | 3          | 113   |
| <b>ञ्रातुर्ज्येष्ठस्य भार्या या</b> | ٩          | 130        | मस्त्यघातो निषादानाम्        | 30         | 88    |
| <b>भ्रातुर्भार्योपसं</b> प्राह्या   | ŧ          | 932        | मस्याः सर्पाः सकच्छपाः       | 35         | ४२    |
| भ्रातुर्मृतस्य भार्यायाम्           | 3          | १७३        | मस्यादः सर्वमांसादः          | 4          | 2 14  |
| ञ्चातृमातृपितृप्राप्तम्             | , <b>ç</b> | 188        | मस्यादान्विह्रराहांश्च       | ų          | 18    |
| भ्रात्णां यस्तु नेहेत               | 9          | २०७        | मत्स्यानां पक्षिणां चैव      | ٤          | ३२८   |
| ञ्चातृ णामविभक्ता <b>नाम्</b>       | 9          | २१५        | मत्स्यानेव च सर्वशः          | <b>u</b> , | 3.8   |
| भ्रातं <b>णामेकजातान</b> ।म्        | ٩          | १८२        | मधं नीलीं च लाक्षां च        | 30         | 68    |
| <b>भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया</b>     | 8          | 960        | मद्यं मांसं सुरासवम्         | 3 3        | ९५    |
| भ्रामरी गण्डमाली च                  | 3          | १६१        | मद्यपस्त्रीनिषेत्रणम्        | 8 8        | ६ ६   |
| भ्रूणघावेक्षितं चैव                 | 8          | २०८        | मद्यपाऽसाधुवृत्ता च          | <b>લ</b>   | 60    |
| म                                   |            |            | मद्यभाण्डस्थितास्तथा         | 99         | 380   |
| सकारं च प्रजापतिः                   | <b>ર</b>   | ७६         | मद्यमभ्युद्येष्वपि           | ९          | 82    |
| मक्षिका विप्रुषदछाया                | Ŋ          | 933        | मद्यानुगतभोजनम्              | 3 3        | 90    |
| मङ्गलाचारयुक्तः स्यात्              | 8          | 984        | मचेनाम्चान्यते सकृत्         | 33         | ९७    |
| मङ्गलाचारयुक्तानाम्                 | 8          | १४६        | मद्यैर्मूत्रैः पुरीपैर्वा    | ખ          | १२३   |
| मङ्गलादेशष्ट्र सादच                 | ९          | २५८        | मधु दंशः पयः काकः            | <b>9</b> २ | ६२    |
| मङ्गलार्थं स्वस्त्ययनम्             | ,2         | १५२        | मधुपर्के च यज्ञे च           | 44         | 83    |
| मङ्गस्यं दीर्घवर्णान्तम्            | Ą          | ३३         | मधुपर्केण संपूज्यौ           | 3          | १२०   |
| मङ्गस्यं बाह्यणस्य स्यात्           | 2          | ३१         | मधु मांसं कथंचन              | 33         | 946   |
| मणिमुक्ताप्रवालानाम्                | 9          | ३२९        | मध्यंदिनेऽर्घरात्रे वा       | 8          | १३१   |
| **                                  | 3 3        | 980        | "                            | 9          | 343   |
| मणिमुक्ताप्रवालानि                  | १२         | ६९         | मध्यदेशः प्रकीर्तितः         | 7          | ₹\$   |
| मण्यमपवेधे च                        | ९          | २८६        | मध्यमं तु ततः पिण्हम्        | Ę          | २६२   |
| मण्डलस्य समासतः                     | હ          | १५६        | मध्यमः पञ्च विज्ञेयः         | 6          | १३८   |
| मतिपूर्वमिनिर्देश्यम्               | 3 3        | 186        | मध्यमस्य प्रचारं च           | હ          | કુખુખ |
| मत्तं रोगार्तमेव वा                 | <b>લ</b>   | <b>૭</b> ૯ | मध्यमा तामसी गतिः            | 35         | 83    |
| मसकुद्धातुराणां च                   | 8          | २०७        | मध्यमा राजसी गतिः            | १२         | ४६    |
| मसोन्मत्तार्ताध्यर्धानैः            | C          | ३६३        | मध्ये गुल्ममधिष्टितम्        | •          | 118   |
| मध्या जम्ब्या पर्तेव् द्विजः        | Ŋ          | 9 &        | मध्ये ब्योम दिशश्राष्टी      | 8          | 13    |

| पाद                       | अ॰ | શો૦         | पा द्                            | अ॰           | श्लो॰      |
|---------------------------|----|-------------|----------------------------------|--------------|------------|
| मध्वथाभयदक्षिणाम्         | 8. | ₹ <b>₩</b>  | ममुष्याणस्मपि प्रोक्तः           | <b>Q</b> ,   | <b>4.4</b> |
| मध्वापातो विषास्वादः      | 33 | 9           | मगुष्यान्यति वर्तते              | 1            | 61         |
| मनःपूतं समाचरेत्          | ફ  | ४६          | मनुष्याश्च जरायुजाः              | •            | 8.3        |
| मनः सत्येन शुद्धधति       | ų  | 909         | मनुष्येष्टिवह जन्मतः             | 10           | 8*         |
| मनः सदसदात्मकम्           | 9  | 3.8         | मनोऽधर्मे निवेशयेत्              | 8            | 9 6-3      |
| "                         | 9  | 0B          | मनो मोक्षे निवेशये <del>त्</del> | Ę            | £14        |
| मनः सृष्टिं विकुस्ते      | 9  | ७५          | )                                | Ę            | 3-€        |
| मनवो भूरितेजसः            | 9  | ६३          | मनोहें रण्यगर्भ <del>स्</del> य  | Ę            | 188        |
| मनश्च ग्लानिमृच्छति       | 9  | ५३          | मनोवचनकर्मभ <u>िः</u>            | ₹            | २३्६       |
| मनश्चावयवैः सूक्ष्मैः     | 3  | 36          | मनो वाग्देहजै नित्यम्            | 9            | 30-8       |
| मनसः स्यादलाघवम्          | 99 | २३३         | मनोवाग्देहसम्भवम्                | 92           | ą          |
| <b>मनसश्चाप्यहं</b> कारम् | 3  | 38          | मनोवाग्देहसंयता                  | ų            | 166        |
| मनसा त्रिविधं कर्म        | १२ | 4           | "                                | ٩            | ₹ <b>%</b> |
| मनसानिष्टचिन्तनम्         | 92 | ч           | मनोवाङ्मूर्तिभिजनाः              | 99           | २४१        |
| मनसापि न चिन्तयेत्        | ۵  | ३८१         | मनोवाङ्मूर्तिभिनित्यम्           | 19           | २३१        |
| 23 19                     | 8  | 308         | मनो विद्यास्प्रवर्त्तकम्         | १२           | 8          |
| मनसा संनिवर्त्तयेत्       | 8  | ३६          | मन्नकालेऽपसारयेत्                | હ            | 188        |
| मनसीन्दुं दिशः श्रोत्रे   | 12 | 353         | मन्नज्ञैर्मन्त्रिभिश्चैव         | 6            | 3          |
| मनुः स्वायंभुवो देवः      | 92 | <b>१२</b> ६ | मन्नतस्तु समृद्धानि              | 3            | ६ ६        |
| मनुः स्वायंभुवोऽबर्वास्   | ६  | 48          | मन्नदर्शिभिरुच्यते               | ર            | २१२        |
| <b>))</b>                 | 6  | 158         | मक्रयेत्परमं मन्त्रम्            | 9            | 44         |
| मनुना कीर्तितो गुणः       | ક્ | ३६          | मन्त्रयेत्सह मन्त्रिभिः          | 9            | 38€        |
| मनुना परिकीर्तितः         | २  | 9           | <b>मश्रये</b> दविभावितः          | <b>&amp;</b> | 380        |
| मनुमन्ये प्रजापतिम्       | 12 | १२३         | मञ्जवस्रांशनं चास्य              | ₹            | २९         |
| मनुमेकाग्रमासीनम्         | 8  | 3           | मञ्जवज्यं न दुष्यन्ति            | 90           | 924        |
| मनुराह प्रजापतिः          | 30 | 96          | मञ्जसंपूजनार्थं तु               | ३            | 3 🕏 🍅      |
| मनुष्य इति भूमिपः         | •  | 6           | मन्रसंस्कारकृत्पतिः              | ч            | 3 12       |
| मनुष्यत्वं च राजसाः       | 12 | 80          | मम्रहीनस्तु ऋत्विजः              | 33           | 80         |
| मनुष्यमारणे क्षिप्रम्     | 6  | २९६         | मन्त्रैः शाकलहोमीयैः             | 3 3          | २५६        |
| मनुष्याणां तु हरणे        | 33 | 3 & \$      | मन्त्रेहर्मिश्च शोधयेत्          | 3 3          | २२६        |
| मनुष्याणां पशूनां च       | Ġ  | २८६         | मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः         | २            | <b>3</b> Ę |
| _                         |    |             |                                  |              |            |

| पाद                         | अ०         | श्लो०      | पाद                         | अ •         | खो॰ |
|-----------------------------|------------|------------|-----------------------------|-------------|-----|
| मन्त्रेस्तु संस्कृतानद्यात् | ч          | ३६         | महात्मानो महीजसः            | 8           | ६९  |
| मिल्रयोगान्महात्मभिः        | 4          | 81         | महानरकमेव च                 | 8           | 66  |
| मन्यन्ते वै पापकृतः         | 6          | 64         | महानम्यक्तमेव च             | 92          | ५०  |
| मन्यन्ते स्वीषु तद्विदः     | ९          | ६१         | महान् क्षेत्रज्ञ एव च       | 9 =         | 88  |
| मन्युस्तं मन्युमृच्छति      | 6          | इप्र       | महान्तमेव चात्मानम्         | 3           | 94  |
| मन्येतारिं यदा राजा         | , <b>'</b> | १७३        | महान्ति पातकान्याहुः        | 3 3         | ५४  |
| <b>म</b> न्वन्तरमिहोच्यते   | 9          | ७९         | महान्ति सह कर्मभिः          | 3           | 16  |
| मन्वन्तराण्यसं रब्यानि      | 9          | 60         | महान्त्यपि समृद्धानि        | 3           | ६   |
| ममायमिति यो ब्र्यात्        | ٥          | <b>३</b> ५ | महान्सर्वानशेषतः            | 85          | २४  |
| ममेदं सर्वमुक्तवान्         | 92         | 990        | महापक्षे धनिन्यार्ये        | 6           | 903 |
| ममेदमिति यो श्रूयात्        | Ŀ          | ₹ 9        | महापश्चनां हरणे             | 6           | ३२४ |
| मरीचिमश्यक्रिरसी            | 9          | ३५         | महापातकजान्यपि              | 99          | २४५ |
| मरीच्यादींस्त्वहं मुनीन्    | 3          | 46         | महापातकसंयुक्तः             | 33          | २५७ |
| मरुतश्च महर्षिभिः           | 2 3        | २२६        | महापातकि <b>नश्चै</b> व     | 3 3         | २३९ |
| मरुद्भ्य इति तु द्वारि      | ą          | 66         | महापातकिनस्त्वमान्          | १२          | 48  |
| मर्तव्यं ब्रह्मवादिना       | <b>ર</b>   | 993        | महापातिकनो धनम्             | ९           | २४३ |
| मर्यादाभेदकश्चेव            | ९          | २६ १       | महापातिकनो नराः             | <b>Q</b>    | २३५ |
| मलं हन्ति दिवाकृतम्         | <b>ર</b>   | १०२        | महापातिकना मलम्             | 99          | 909 |
| मलिनीकरणीयेषु               | 9 9        | 924        | महाभाग्यं प्रचक्षते         | 33          | २४४ |
| महती देवता ह्येषा           | ૭          | G          | (माहाभाग्यं इति वा पार      | <b>s</b> :) |     |
| महतश्चैव किल्बिपात्         | 3          | 96         | महाभूतादि वृत्तीजाः         | 3           | ६   |
| महतोऽप्येनसो मासात्         | <b>ર</b>   | ७९         | महामात्राश्चिकित्सकाः       | ९           | २५९ |
| <b>म</b> हर्षिपितृदेवानाम्  | Я          | २५७        | महायज्ञिया क्षमा            | 5 9         | २४५ |
| महर्षिभिश्च देवैश्च         | 6          | 990        | महायज्ञिधानं च              | 9           | ११२ |
| महर्षिमंनुना भृगुः          | 3          | ६०         | महायज्ञैश्च यज्ञैश्च        | २           | २८  |
| <b>महर्षीश्चामिती</b> जसः   | 3          | ३६         | महाव्याहति <b>भिर्हो</b> मः | 9 9         | २२२ |
| <b>महर्षीञ्छू</b> यतामिति   | 9          | 8          | महिष्यजाविकासु च            | ९           | 88  |
| महर्षीनादिसो दश             | 3          | ₹8         | महोल्कानां च संप्रवे        | 8           | १०३ |
| महर्षीनमानचो सृगुः          | 4          | Ę          | मां चाचिन्त्यपराक्रमः       | 9           | ५१  |
| <b>7</b>                    | 92         | <b>ર</b>   | मां भवाननुशास्त्वित         | 19          | ९९  |
| महाकुलीनमाय च               | 6          | ३९५        | मांसं गृधो वपां मद्गुः      | 92          | ६३  |

| पाद                      | अ०       | श्लो०            | पाद                         | अ०       | স্ভাত      |
|--------------------------|----------|------------------|-----------------------------|----------|------------|
| मांसं यशानुपस्कृतम्      | Ę        | २५७              | मातामहं मातुलं च            | Ę        | 188        |
| मां स भक्षयिताऽमुत्र     | 4        | <b>પ્</b> રુપ્યુ | मातामद्या धनात्किं चित्     | 9        | 90€        |
| मांसभेता तु षण्निष्कान्  | 6        | २८४              | मातुः प्रथमतः पिण्डम्       | ۹,       | 180        |
| मांसमुत्पद्यते कचित्     | 4        | 8८               | मातुरग्रेऽधि जननम्          | २        | 969        |
| <b>मांसविक्रयिणस्तथा</b> | 3        | १५२              | मातुराप्तांश्च बान्ववान्    | ч        | 101        |
| मांसशोणितलेपनम्          | Ę        | ७ इ              | मातुर्वा भगिनीं निजाम्      | २        | ५०         |
| मांसस्य मधुनश्चेव        | 6        | ३२८              | मातुर्वोभयमेव वा            | 30       | <b>પ ૧</b> |
| मांसस्यातः प्रवक्ष्यामि  | 4        | २६               | मातुलांश्च पितृब्यांश्च     | 3        | १३०        |
| मांसानि च न खादेद्यः     | ų        | પ <b>ર</b>       | मातुलातिथिसंश्रि <b>तैः</b> | 8        | 908        |
| मांसाशनं च नाश्वीयुः     | 4        | ७३               | मातुले पक्षिणीं रात्रिम्    | 4        | 303.       |
| मा कृद्ध्वं विषमं समम्   | 8        | २२५              | मातुश्च भ्रातुस्तनयाम्      | 11       | 101        |
| मा गङ्गां मा कुरून्गमः   | 6        | ९२               | मातुस्तु यौतुकं यत्स्यात्   | ٩,       | १३१        |
| मागधः क्षतृजानिध         | 30       | २६               | मातृकं भ्रातृद्त्तं वा      | ٩        | ९२         |
| माघशुक्तस्य वा प्राप्ते  | 8        | ९६               | मातृकल्याः प्रकात्तिताः     | 9        | १८६        |
| मागधानां वणिक्पथः        | 30       | 80               | मातृजात्यां प्रसूयन्ते      | 90       | २७         |
| मातरं पितरं जायाम्       | 6        | २७५              | मा <b>तृदोषविग</b> हितान्   | 30       | ६          |
| मातरं वा स्वसारं वा      | २        | 40               | मातृदोषात्प्रचक्षते         | 90       | 18         |
| मातर्यपि च बृत्तायाम्    | ٩,       | २१७              | मातृवद् वृत्तिमातिष्ठेत्    | <b>२</b> | 3 3 8      |
| माताझिर्देक्षिणः स्मृतः  | २        | २३१              | मातृष्वसा मातुलानी          | ₹        | १३१        |
| माता ताभ्यो गरीयसी       | ?        | १३३              | मातेव स पितेव सः            | ٩        | 310        |
| माता दायमवाभुयात्        | ९        | २१७              | मात्रा निहत्य शाश्वतीः      | 9        | 8          |
| माता पिता वा दद्याताम्   | ९        | १६८              | मात्राभ्यो निर्मितो नृपः    | 9        | 4          |
| मातापितृभ्यां जामीभिः    | 8        | 960              | मात्रासङ्गाद्विनिर्गतः      | Ę        | 40         |
| मातापितृभ्यामुत्सृष्टम्  | ९        | 903              | मात्रा स्वस्ना दुहित्रा वा  | २        | २१५        |
| मातापितृविहीनो यः        | ٩        | 300              | माधुपर्किकमेव च             | 9        | २०६        |
| मातापित्रोर्गुरोस्तथा    | રૂ       | 940              | माधूकं संप्रसूयते           | 90       | ३३         |
| मातापित्रोर्यमन्तिकात्   | ٩        | 308              | मानयोगं च जानीयात्          | ९        | ३३०        |
| मातापित्रोस्तदिष्यते     | <b>ς</b> | 390              | मानवस्यास्य शास्त्रस्य      | 9 2      | 900        |
| मातापित्रोस्तु सूतकम्    | ų        | ६२               | मानवा दीर्घजीविनः           | 9        | २४६        |
| माता पृथिव्या मूर्तिस्तु | 2        | २२६              | मानवानपकारिणः               | 99       | ३१         |
| माता भाता च पूर्वजः      | २        | २२५              | मानवो ज्यपकर्षति            | 33       | २१०        |

| पाक्                          | अ०  | श्लो॰      | पाद                             | ाह  | स्रो० |
|-------------------------------|-----|------------|---------------------------------|-----|-------|
| मानसं ममसैवायम्               | 12  | ć          | मा सम भूश्यनृतं वदीः            | 6   | 4.4   |
| मामसैरन्खजातिसम्              | 98  | 9          | माहित्रं शुद्धवस्यश्च           | 33  | २४९   |
| मानुषे विद्यते किया           | 9   | २०५        | मित्रभुङ् नियतेन्द्रियः         | 3 3 | 94    |
| मानुषेषु तु मध्यमः            | \$  | २८४        | मित्रं हिरण्यं भूमिं वा         | •   | २०६   |
| मा नो धर्मी हतोऽवधीत्         | 6   | 94         | मित्रद्रहः कृतन्नस्य            | 6   | ८९    |
| मान्यौ स्नातकपार्थि <b>वौ</b> | २   | १३९        | मित्रधुं ग्यूतवृत्तिश्च         | Ę   | १६०   |
| मामेव स्वयमादितः              | 1   | 46         | मित्रस्य चानुरोधेन              | •   | 9 ह ह |
| मायां नित्यं स्वसंवृतः        | ø   | 808        | मित्रस्य चैवापकृते              | ৩   | १६४   |
| मारीच्या लोकविश्रुताः         | ર   | 994        | मि <b>त्रा</b> दथाप्यमित्राद्वा | 9   | २०७   |
| मारुतं पुरुहूतं च             | 11  | 923        | मित्रामित्रस्य चार्जनम्         | 12  | ७९    |
| मारुते वाति वा स्वाम्         | 8   | 122        | मित्रोदासीनशत्रवः               | ঙ   | 300   |
| मारुते वाति वा सृशम्          | 19  | 993        | ,,                              | ঙ   | 960   |
| मार्गशीर्षे शुभे मासि         | •   | १८२        | मिथ एव प्रदातब्यः               | 6   | ع و ب |
| मार्जनं यत्र पात्रागाम्       | ч   | 998        | मिथो दायः कृतो येन              | 6   | १९५   |
| मार्जनोपाअनैर्वेश्म           | ч   | 922        | मिथा भजेताप्रसवात्              | ٩,  | 90    |
| मार्जारनकुरुौ हत्वा           | 3 3 | 333        | मिथा विवदतां नृगाम्             | 6   | 30%   |
| माबमंस्थाः स्वमात्मानम्       | 6   | <b>८</b> ४ | मिथो विवदमानयोः                 | 4   | १०९   |
| माषिकस्तु भवेदण्डः            | 6   | २९८        | "                               | ९   | २५०   |
| मासं गोष्ठे पयः पीत्वा        | 33  | 998        | मिथ्था प्रचरतां दमः             | ९   | २८४   |
| मासं शोधनमैन्दवम्             | 19  | १२५        | मिध्या यावति वा वदेत्           | 4   | ५९    |
| मासमभ्यस्य शुध्यति            | 99  | २५४        | मिथ्यावादी च संख्याने           | 6   | 800   |
| मासमासीत भैक्षभुक्            | 99  | २५५        | मीनाहिमहिषस्य च                 | 9 9 | ६८    |
| माससंचियकोऽपि वा              | ६   | 96         | मीमांसित्वोभयं देवाः            | ૪   | २२४   |
| मासस्य वृद्धि गृह्यीयात्      | 4   | १४२        | मुक्तकेशेन धावता                | 6   | ३१४   |
| मासाद्वार्थुषिकः शते          | 6   | 180        | मुखबाहू रुपजान (म्              | 90  | 8,4   |
| मासानेकादशैव तु               | Ę   | २७०        | "                               | 3   | 60    |
| मासान्विप्रोऽर्धपञ्चमान्      | 8   | 94         | मुखबाहू रुपादतः                 | 9   | 3 9   |
| मासिकासं तु योऽश्वीयात्       | 99  | 340        | मुखमुक्तं स्वयंभुग              | 9   | ९२    |
| मासि मासि महीपतिः             | હ   | १३८        | मुख्यानां चैत्र रत्नानाम्       | 4   | ३२३   |
| मासेनाइनन्हविष्यस्य           | 11  | २२०        | मुज्यते किल्बिषात्ततः           | 19  | ९०    |
| मासौ प्रति यथा बलम्           | •   | १८२        | मुच्यते गुरुतस्यगः              | 99  | २५२   |
|                               |     |            |                                 |     |       |

# मनुपादानुकमसी।

| पाद                        | अ०    | स्रो॰       | ं <b>पाद</b>                            | अ०         | क्रो०        |
|----------------------------|-------|-------------|---|------------|--------------|
| मुख्यते पातकैः सर्वैः      | 9 9   | २५८         | मूख्येन तोषयेचैनम्                      | 8          | 188          |
| <b>?</b> ? ? ? ?           | 9.9   | २५९         | म्हगगर्त्ताश्रद्याप्सराः                | <b>'19</b> | <b>67</b> .  |
| मुज्यते ब्रह्महत्यायाः     | 33    | ७९          | मृगयाक्षा दिवास्वमः                     | <b>e</b> r | 80           |
| मुच्यतेऽसद्यतिप्रहात्      | 99    | 948         | मृतया च यथाक्रमम्                       | **         | 40           |
| मुख्यन्ते किल्बिषात्ततः    | 99    | २३९         | मृगस्य मृगयुः यद्म्                     | 6          | .88          |
| मुज्यन्ते च सभासदः         | 6     | 98          | मृगह्रन्तुर्धनार्धिनः                   | ч          | ₹8           |
| मुआलाभे तु कर्तब्याः       | 7     | ४३          | सृगाणां माहिषं विना                     | <b>Le</b>  | .9           |
| मुण्डो वा जटिलो वा स्य     | ात् २ | २१९         | मृगो यत्र स्वभावतः                      | २          | ₹\$          |
| मुनिर्भावसमाहितः           | Ę     | ४३          | मृतं तु याचितं भैक्षम्                  | ß          | ч            |
| मुनिर्मूलफलाशनः            | ६     | <b>३</b> ५  | मृतं शरीरमुस्ख्ज्य                      | 8          | 588          |
| मुनीन्देवांश्च पीडयेत्     | 9     | २ ९         | मृतं शूद्रेण नाययेत्                    | 4          | 308          |
| मुन्यन्नं पूर्वसंचितम्     | ६     | 914         | मृतः सन तु जीवति                        | 9          | 385          |
| मुन्यन्नानां च भोजनैः      | ષ     | 48          | मृतवस्त्रभृत्सु नारीषु                  | 30         | इप           |
| मुन्यन्नानि च सर्वशः       | 3     | २७२         | मृतस्य प्रत्यनन्तरे                     | 4          | १८६          |
| मुन्यन्नानि पयः सोमः       | 3     | २५७         | मृतस्य खि <i>य</i> मेव च                | 9          | 98€          |
| मुन्यसेः स्वयमाहतैः        | Ę     | 33          | मृतेन प्रमृतेन वा                       | 8          | 8            |
| मुन्यन्नेर्विविधैर्मेध्येः | ६     | ષ           | मृते भर्तरि गोलकः                       | 3          | 308          |
| मुसलोॡखलस्य च              | ч     | 999         | मृते भर्तरि पुत्रस्तु                   | 9          | 8            |
| मुसलोॡखले हरेत्            | 3     | 66          | मृते भतिरे साध्वी स्त्री                | 4          | 140          |
| मूत्रविट् घ्राणकर्णविट्    | ч     | १३५         | मृतेष्त्रङ्कानि दर्शयेत्                | 4          | २३४          |
| मूत्रेण मौण्ड्यमिच्छेतु    | 6     | <b>३८</b> ४ | मृत्तोयैः शुद्ध्यते शोध्यम्             | 4          | 906          |
| मूत्रोचारसमुत्सर्गम्       | 8     | ५०          | मृत्प्रक्षेपेण शुद्धति                  | 4          | 354          |
| मूर्खा धर्ममतद्विदः        | 9 2   | 994         | मृत्युना स विशुष्यति                    | 3 8        | १०३          |
| मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती    | 1     | ९८          | मृःयुमेव च दुर्जयम्                     | 12         | 60           |
| मूरूकर्मणि चानासेः         | ९     | २९०         | <b>मृ</b> ःयुर्विप्राञ्जिवांसति         | 4          | ź            |
| मुलप्रणिहिताश्च ये         | ९     | २६९         | 5 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 | u,         | 8            |
| मूलब्यसनवृत्तिमान्         | 30    | ३८          | मृखुश्र वसति क्रोधे                     | 19         | 33           |
| मुखानि च फलानि च           | 3     | २२७         | सृदं गां दैवतं विप्रम्                  | 8          | <b>ૅ</b> ફ્લ |
| ,, ,,                      | Ę     | 9 €         | मृदः शुद्धिमभीप्सता                     | ч          | 335          |
| सूख्यात्पञ्चगुणो दण्डः     | 6     | २८९         | मृदुवाग <b>नहं</b> कृतः                 | ĸ          | <b>334</b>   |
| मूख्याहण्डं प्रकल्पयेत्    | 4     | <b>3</b> 22 | मुदो भसाम एव च                          | 6          | 330          |

# मनुपादानुक्रमणी।

| पाद                              | अ०       | स्रो०  | पाद                           | अ०   | स्रो०    |
|----------------------------------|----------|--------|-------------------------------|------|----------|
| <b>सृद्धी</b> मृद्धहेत्स्त्रियम् | Ą        | 9 0    | मीक्यं वागपहारकः              | 99   | 43.8     |
| सृद् <u>वार्यादेयम</u> र्थवत्    | ų        | 338    | मौजी त्रिष्टत्समा श्रहणा      | ₹    | ४२       |
| मृन्मनो वार्युपाञ्जनम्           | ų        | 904    | में अीबन्धनचिह्नितम्          | 3    | 300      |
| सृत्मयं वैदलं तथा                | Ę        | પ્     | मोण्ड्यं प्राणान्तिको दण्डः   | 6    | ३७९      |
| सृत्मयानां च भाण्यानाम्          | <b>y</b> | 932    | मौण्ड्यं मुत्रेण चाहित        | 4    | ३७५      |
| सृन्मयानां च हरणे                | 6        | ३२७    | मौनएमत्यं विशिष्यते           | 3    | ८३       |
| मुख्यन्ति ये चोपपतिम्            | 8        | २१७    | मौलाञ्छस्रविदः ग्रुरान्       | ६    | ५४       |
| मेखलामजिनं दण्डम्                | 2        | ६४     | मौळानां सीन्नि साक्षिणाः      | र् ८ | २५९      |
| मेदा-धचञ्चुमद्गृनाम्             | 90       | 88     | <b>च्चि</b> यमाणोऽप्याददीत    | 9    | १३३      |
| मेदोऽसङ्मांममजास्थि              | ą        | 9८२    | म्रियेत यदि ग्रुल्कदः         | ९    | ९७       |
| मेध्यवृक्षोद्भवान्यद्यात्        | ξ        | 98     | म्रियेतान्यतरो वापि           | ९    | २११      |
| मेने प्रजापतिर्प्राह्याम्        | 8        | २४८    | म्लेच्छदेशस्त्रतः परः         | 2    | २३       |
| मैश्रं प्रसाधनं स्नानम्          | 8        | 3 11 5 | म्लेच्छवाचश्चार्यवा <b>चः</b> | 30   | ४५       |
| मैत्रः सात्वत एव च               | 90       | २३     | य                             |      |          |
| मैत्राक्षज्योतिकः प्रेतः         | 92       | ७२     | यं तु कर्मणि यस्मिन्सः        | 3    | २८       |
| मैत्रात्पूर्वं चतृगुंणम्         | 6        | 920    | यं तु पश्येक्तिधि राजा        | 6    | ३८       |
| मैत्रेयकं तु वैदेहः              | 90       | ३३     | यं धर्मं परिकल्पयेत्          | 98   | 330      |
| मैत्रो ब्राह्मण उच्यते           | <b>२</b> | ८७     | यं पुत्रं जनयेद्रहः           | ٩,   | १७२      |
| "                                | 9 9      | ३५     | यं ब्राह्मगस्तु शुद्रायाम्    | ዓ    | 306      |
| मैत्रमौद्वाहिकं चैव              | ३        | २०६    | यं मातापितरी क्षेशम्          | २    | २२७      |
| मैथुनं ह समासेव्य                | 9 1      | 308    | यं वरन्ति तमोभूताः            | 98   | 334      |
| मैथुन्यः कामसंभवः                | ३        | 3 २    | यं विन्देत्सदृशान्सुतम्       | ९    | १३६      |
| मोक्षं सऱ्याममेव च               | 9        | 118    | यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः     | १२   | 993      |
| मोक्षमिच्छन्वजत्यधः              | Ę        | ३७     | यं शिष्टा ब्राह्मणा ब्र्युः   | 9 2  | 306      |
| मोघं स्कन्दितमार्पभम्            | ٩,       | ५०     | यं सर्वे कवयो विदुः           | y    | ४९       |
| मोचयेदेनसः पितृन्                | 3        | ३७     | यः करोति तु कर्माणि           | 15   | 35       |
| मोहाच्छ्राद्धेन मानवः            | 3        | 380    | यः करोति यथाविधि              | 3    | 185      |
| मोहात्कुर्याञ्चराधिपः            | 4        | 308    | यः करोति वृतो यस्य            | 3    | 385      |
| मोहात्पूर्व स साहसम्             | 6        | 120    | यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मः       | 2    | <b>y</b> |
| मोहादत्तानि दातृभिः              | 3        | 90     | यः कुर्यात्कारयेत वा          | ٩    | २२४      |
| मोहाद्राजा स्वराष्ट्रं यः        | y        | 333    | यः क्षिप्तो मर्पयत्यातैः      | 4    | ३१३      |

| पाद                       | अ०       | स्रो॰      | पाद                        | अं०      | स्रो०       |
|---------------------------|----------|------------|----------------------------|----------|-------------|
| यः पचत्यात्मकारणात्       | 3        | 116        | यजनं याजनं तथा             | 3        | 66          |
| यः पारशव उच्यते           | 30       | 4          | 77                         | 90       | 64          |
| यः प्रश्नं वितथं ब्रुयात् | 6        | <b>3</b> 8 | य जन्ते ह कथझन             | 33       | 38          |
| यः शूदस्य सुतो भवेत्      | 9        | 303        | यजन्दयेतैर्मकैः सदा        | 8        | २४          |
| यः संगतानि कुरुते         | 3        | 180        | य गमानो हि भिक्षित्वा      | 99       | २४          |
| यः सदाचारवाश्वरः          | 8        | 146        | यजुर्वेदस्तु मानुषः        | 8        | 358         |
| यः साक्ष्यमनृतं वदेत्     | 4        | ९३         | यजुषां वा समाहितः          | 9 9      | २६३         |
| 57 79                     | 6        | 999        | यजेत निर्ऋति निशि          | 33       | 316         |
| यः साधयन्तं छन्देन        | 6        | १७६        | यजेत राजा क्रतुभिः         | •        | 58          |
| यः सोमं पिबति द्विजः      | 33       | 6          | यजेत वाश्वमेधेन            | 33       | @8          |
| यः स्रम्वयपि द्विजोऽधीते  | 3        | १६७        | यजेरंस्ते सरस्वतीम्        | 6        | 304         |
| यः स्वधर्मे न तिष्ठति     | 6        | ३३५        | यज्जन्तोरस्य साधनम्        | 3 2      | ९९          |
| यः स्वयं साधयेदर्थम्      | 6        | ५०         | यजायात्मा प्रजेति ह        | <b>લ</b> | 84          |
| यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दम्   | <b>ર</b> | 300        | यज्ञं गच्छेत्र चावृतः      | 8        | 40          |
| यः स्वामिनाननुज्ञातम्     | 6        | 940        | यज्ञं चैत्र सनातनम्        | 9        | २२          |
| य आचामयतः परान्           | ч        | 985        | यज्ञकर्मण्युपस्थितौ        | ર        | १२०         |
| य आवृणोत्यवितथम्          | २        | 888        | यज्ञनिर्दृत्तिमक्षयाम्     | ક        | २३          |
| य एते तु गणा मुख्याः      | 3        | २००        | यज्ञपान्नेश्च धर्मवित्     | ч        | 3 & 9       |
| य एतेऽन्ये त्वभोज्यासाः   | 8        | २२१        | यज्ञशास्त्रविदो जनाः       | ß        | २२          |
| य एतेऽभिहिताः पुत्राः     | 9        | 858        | यज्ञशिष्टाशनं होतत्        | 3        | 996         |
| यक्षरक्षःपिकाःचांश्र      | 3        | ३७         | यज्ञशेषं तथाऽमृतम्         | Ę        | २८५         |
| यक्षरक्षःपिशाचास्रम्      | 9 9      | ९५         | यज्ञश्चासां प्रजापतेः      | ų        | १५२         |
| यक्ष्मी च पशुपालश्च       | Ę        | 348        | यज्ञश्चेन्यतिरुद्धः स्यात् | 19       | 3 3         |
| यस वाचा प्रशस्यते         | ų        | 920        | यज्ञस्य भूत्ये सर्वस्य     | 4        | ३९          |
| यच सातिशयं किञ्चित्       | 9        | 998        | यज्ञाः संकल्पसंभवाः        | २        | 3           |
| यचानन्स्याय कल्पते        | Ę        | २६६        | यज्ञाय जिप्धर्मासस्य       | ખ        | 39          |
| यश्चान्यत्किचिदीदृशम्     | 3        | ४५         | यज्ञार्थं चैत्र दक्षिणाम्  | 11       | 8           |
| यचान्यत्पशुसंभवम्         | 6        | ३२८        | यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः  | Ŋ        | 80          |
| यश्वास्य सुकृतं किचित्    | 9        | 94         | यज्ञार्थं पद्मवः सृष्टाः   | ų        | इ९          |
| यच्छेषं दशरात्रस्य        | ų        | ७५         | यज्ञार्थं हा इप्णैर्वध्याः | ч        | २२          |
| यजतेऽहरहर्यज्ञैः          | 4        | ३०६        | यज्ञार्थमर्थं भिक्षित्वा   | 33       | <b>२५</b> ′ |

| पाद                        | अ०        | श्ची० | पाद                           | अ०       | स्रो० |
|----------------------------|-----------|-------|-------------------------------|----------|-------|
| बज्ञी तु वितते सम्यक्      | Ę         | २८    | यसारयति सर्वतः                | 8        | २२८   |
| बज्ञोऽनृतेन क्षरति         | 8         | २३७   | यत्तु दुःखसमायुक्तम्          | 12       | २८    |
| बज्ञोपवीतं वेदं च          | 8         | ३६    | यतु वाणिजके दत्तम्            | 3        | 969   |
| कज्वान ऋषयो देवाः          | 12        | ४९    | यतु स्यान्मोहसंयुक्तम्        | 9 २      | २९    |
| बतन्ते रक्षितुं भार्याम्   | ९         | ६     | यते समधिगच्छन्ति              | C        | ४१६   |
| वतश्च भयमाशङ्केत्          | છ         | 166   | यस्वं कल्याण मन्यसे           | 6        | ९१    |
| <b>77</b>                  | , <b></b> | १८९   | यक्त्वस्याः स्याद्धनं वित्तम् | ९        | 999   |
| क्तात्मनोऽप्रमत्तस्य       | 9 3       | २१५   | यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे        | 3        | १४५   |
| बतिचान्द्रायणं चरन्        | 99        | २१८   | यस्परैरभियुज्यते              | 4        | 9/3   |
| वतिचान्द्रायणं वापि        | ખુ        | २०    | यत्पुंसः परदारेषु             | 33       | १७६   |
| बतिर्मुक्तोऽपि बध्यते      | ξ         | 46    | यन्पुण्यफलमामोति              | ३        | ९५    |
| बतीनां तु चतुर्गुणम्       | 4         | १३७   | यत्त्रमाणं समासतः             | 9        | ६८    |
| वत्तीनां नियतात्मनाम्      | ६         | ८६    | यव्याग्हादशसाहस्रम्           | 3        | ७९    |
| बतो वाप्युपलभ्यते          | 99        | 9 9   | यन्द्राग्विनशनाद्यपि          | <b>ર</b> | २१    |
| वत्करोत्येकरात्रेण         | 9 9       | 306   | यत्र कचन यद्भवेत्             | 9        | २३३   |
| यस्करोत्यौर्ध्वदेहिकम्     | 99        | 90    | यत्र जुह्नत्यमी हिवः          | 8        | २०६   |
| यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात् | 8         | १६१   | यत्र तत्राश्रमे रतः           | ६        | ६६    |
| यत्कर्म कृत्वा कुर्वश्च    | 9 2       | ३५    | यत्र तम्राश्रमे वसन्          | 3        | 40    |
| यस्विचिच्छाद्धिकं भवेत्    | 8         | 999   | 11 17                         | 35       | 305   |
| यस्किचिज्ञगतीगतम्          | ٩         | 900   | यत्र त्वेते परिध्वंसात्       | 30       | ६९    |
| यस्किचित्पितरि प्रेते      | ९         | २०४   | यत्र धर्मो ह्यधर्मेण          | 6        | 18    |
| यिकचित्स्नेहसंयुक्तम्      | ų         | २४    | यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते      | 3        | ५ ६   |
| यक्तिंचिदपि दातव्यम्       | 8         | २२८   | यत्रर्तोक्तौ भवेद्वधः         | 4        | 108   |
| यस्किचिद्पि वर्षस्य        | 9         | १३७   | यत्र वर्जयते राजा             | ९        | २४६   |
| यत्किचिदेनः कुर्वन्ति      | 99        | 383   | यत्र वाप्युपिंघ पश्येत्       | 6        | १६५   |
| यक्तिचिदेव देयं तु         | ९         | 994   | यत्र वास्य रमेन्मनः           | 2        | २२३   |
| यस्किचिद्दश्चवर्पाणि       | 6         | 180   | यत्र क्यामो लोहिताक्षः        | 9        | २५    |
| यिकचिन्मधुना मिश्रम्       | 3         | २७३   | यत्र स्युः सोऽत्र मानार्हः    | 2        | 130   |
| यक्तिचेदमितीति वा          | 11        | २५२   | यत्रानिबद्धोऽपीक्षेत          | 6        | ७६    |
| बर्जुर्युः कार्यमन्यथा     | 9         | २३४   | यत्रान्यः प्राकृतो जनः        | C        | ३३६   |
| यसकारणसंख्यक्तम्           | 9         | 99    | यत्रापवर्तते युग्यम्          | 4        | २९३   |

| पाद                      | अ०       | स्रो०       | पाद                             | अ०  | श्चो॰       |
|--------------------------|----------|-------------|---------------------------------|-----|-------------|
| यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते  | 3        | ५६          | यशादृष्टं यथाश्रुतम्            | 6   | <b>9</b> Ę  |
| यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुम् | 12       | ३७          | यथा नदीनदाः सर्वे               | ६   | ९०          |
| ( ज्ञातम्, इति वा पाठः   | )        |             | यथा नयत्यसृक्पातैः              | 6   | 88          |
| यत्सृक्ष्मं दृश्यसे रजः  | 6        | 932         | यथा नाभिचरेतां तौ               | ९   | 902         |
| यत्मूत्रं या च मेखला     | २        | 908         | यथान्यस्तं यथाकृतम्             | 6   | १८३         |
| यथर्नुलिङ्गान्यतवः       | 3        | ३०          | यथान्युप्तान्समाहितः            | 3   | २१८         |
| यथाकथञ्जित्पिण्डानाम्    | 99       | २२०         | यथापूर्व समाचरेत्               | 3 3 | १८७         |
| यथाकर्म तपोयोगात्        | 9        | 83          | यथा प्रवेनौपलेन                 | 8   | 168         |
| यथाकालं तरोभदेत्         | 6        | ४०६         | यथा फलेन युज्येत                | •   | 326         |
| यथाकालं यथाक्रमम्        | <b>ર</b> | ६६          | यथा बीजं न वसन्यम्              | ९   | ४२          |
| यथाकालमतन्द्रितः         | 8        | 180         | यथाबीजं प्ररोहन्ति              | 9   | ३९          |
| यथाकालमसंस्कृताः         | २        | ३९          | यथा बाह्यणचाण्डारूः             | ٩,  | 60          |
| यथा काष्ट्रमयो हस्ती     | २        | 940         | यथा ब्र्युस्तथा कुर्यात्        | ą   | २५३         |
| यथा खनम्खनित्रेण         | २        | २१८         | यथा भाषितमादितः                 | 6   | २१६         |
| यथा गौर्गवि चाफला        | २        | 146         | यथा महाह्रदं प्राप्य            | 12  | २६३         |
| यथा गोऽश्वोष्ट्रदासीषु   | ९        | 88          | यथा मित्रं ध्रुवं रुब्ध्या      | 9   | २०८         |
| यथाभिदेंवतं महत्         | ९        | ३१७         | यथा यथा नरोऽधर्मम्              | 99  | २२८         |
| यथा चरति मारुतः          | ९        | ३०६         | यथा यथा निषेवन्ते               | ५२  | ७३          |
| यथा चर्ममयो सृगः         | ₹        | <i>૧૫</i> ૭ | यथा यथा मनस्तस्य                | 33  | २२ <b>९</b> |
| यथा चाज्ञेऽफलं दानम्     | २        | 146         | यथा यथा महद्दुःखम्              | G   | २८६         |
| यथा चैवापरः पक्षः        | 3        | २७८         | यथा यथा हि पुरुषः               | 8   | २०          |
| यथा चोपचरेदेनम्          | 8        | २५४         | यथा यथा हि सद्बृत्तम्           | 30  | १२८         |
| यथा जातबलो वह्निः        | 35       | 909         | यथा यमः प्रियद्वेष्यौ           | ९   | ३०७         |
| यथा ज्ञानेन नित्यशः      | 2        | ९६          | यथायोगं द्विजन्मनः              | ų   | ९२          |
| यथातथाध्यापयंस्तु        | ૪        | 30          | यथाई प्रतिपादयेत्               | 3 3 | 8           |
| यथा ते ब्रह्मचारिणः      | પ        | 940         | यथार्हतः संप्रणयेत्             | •   | १६          |
| यथात्मानं न पीडयेत्      | •        | ६८          | यथाईमेतानभ्यर्च्य               | 6   | <b>₹९१</b>  |
| यथा त्रयाणां वर्णानाम्   | 3 0      | २८          | <b>य</b> थाल्पाल्पमदन्स्याद्यम् | 9   | ३२९         |
| यथा दायस्तथा प्रहः       | 6        | 3,60        | <b>बधा</b> चदनपक्रिया           | G   | 218         |
| <b>**</b>                | 4        | १९५         | यथायदनुपूर्वश्चः                | 3   | ₹           |
| यथा दुर्गाश्रितानेतान्   | છ        | ७३          | 29 - 29                         | ₹   | 68          |

# मनुपादानुकमणी।

| पाद                        | 340      | श्लो०     | पाद                      | अ०        | श्लोट |
|----------------------------|----------|-----------|--------------------------|-----------|-------|
| यथावदनुपूर्वशः             | 4        | 40        | यथैता न तथेतराः          | Ę         | २७६   |
| ,, ,,                      | <b>y</b> | ३६        | यथैधस्तेजसा वह्निः       | 9 1       | २४६   |
| यथावस्रभेतत्त्वतः          | C        | २२९       | यथैनं नाभिसंदध्युः       | 9         | 960   |
| यथावद्विजितेन्द्रियः       | Ę        | 9         | यथैव पितरं तथा           | ٩         | 904   |
| यथा वाच्यसृतं च तैः        | 4        | ६१        | यथैव शूद्रो बाह्यण्याम्  | 30        | ३०    |
| यथा वायुं समाश्रित्य       | Ę        | 99        | यथैवात्मा तथा पुत्रः     | ९         | 930   |
| यथाविधि नियुक्तस्तु        | ૃષ્દ્    | २७        | यथेवैका तथा सर्वाः       | 99        | ९४    |
| यथाविध्यिष्टिगम्यैनाम्     | <b>Q</b> | 90        | यथोककारिणं विप्रम्       | Ę         | 66    |
| यथाविध्युपनाययेत्          | 3 9      | 3 9 3     | यथोक्तमार्तः सुस्थो वा   | 6         | २१७   |
| यथावृत्तो भवेन्नृपः        | ৩        | •         | यथोक्तानि पृथक्पृथक्     | 99        | 99    |
| यथाशक्ति न हापयेत्         | 8        | २१        | यथोक्तान्यपि कर्माणि     | <b>१२</b> | ९२    |
| यथाशास्त्रं तु कृत्वैवम्   | ૪        | ९७        | यधोक्तेन नयन्तस्ते       | 4         | २५७   |
| यथाशास्त्रं निषेविताः      | ξ        | 66        | यथोक्तेनैव कल्पेन        | Ŋ         | ७२    |
| यथाशास्त्रं नृपाज्ञया      | 90       | ५६        | यथोदितमशेषतः             | 92        | 900   |
| यथाशास्त्रमुदङ्गुखः        | २        | <b>60</b> | यथोदितेन विधिना          | 8         | 900   |
| यथाशास्त्रानुमारिणा        | 9        | ३१        | यभोदिष्टंप्यसाधुपु       | ३         | १८२   |
| यथा शूद्रस्तथैव सः         | २        | १२६       | यथोद्धरति निर्दाता       | •         | 990   |
| यथाश्रुतं यथादष्टम्        | 6        | 303       | यथंसानि विद्यां पृथक्    | Q         | २४७   |
| यथाश्वमेधः क्रतुराट्       | 33       | २६०       | यदनोऽन्यद्धि कुरुते      | 30        | १२३   |
| यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु     | <b>ર</b> | 346       | यद्घीतं यद्यजते          | C         | ३०५   |
| यथा संकल्पितांश्चेह        | २        | ų         | <b>यद्श्वमु</b> पर्नायतं | 3         | २२५   |
| यथा सर्वाणि भूतानि         | ९        | ३११       | यदन्यगोषु वृषभः          | ९         | 40    |
| यथासुखमुखः कुर्यात्        | ષ્ઠ      | ५१        | यदन्यःकुरुते तिलैः       | 90        | ९१    |
| यथा स्तेनस्तथैव सः         | 4        | ३४०       | यदन्यस्य प्रतिज्ञाय      | 9         | ९९    |
| यथास्याभ्यधिका न स्युः     | ૭        | 300       | यदपत्यं भवेद्स्याम्      | 9         | 120   |
| यथेदं शावमाशीचम्           | પ્       | ६२        | यदस्यां जायते पुनः       | ९         | 6     |
| यथेदमुक्तवाञ्छास्नम्       | 3        | 999       | यदाणुमात्रिको भूत्वा     | 3         | ५६    |
| यथेन्द्रोऽभिप्रवर्षति      | <b>९</b> | ३०४       | यदा तस्मिन्महात्मनि      | 9         | 48    |
| यथेरिणे बीजमुस्वा          | ३        | १४२       | यदा तु यानमातिष्ठेत्     | ø         | 158   |
| यथेष्टं नृपतेस्तथा         | 9        | २२८       | यदा तु स्यात्परिक्षीणः   | 9         | १७२   |
| यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम् | 88       | १२६       | यदा परबलानां तु          | •         | 308   |
|                            |          |           |                          |           |       |

| पाद                     | अ०        | श्लो० | पाद .                        | अ०       | श्लो॰     |
|-------------------------|-----------|-------|------------------------------|----------|-----------|
| यदा पश्येद्धुवं जयम्    | 9         | १८३   | यदेभिरभिवीक्ष्यते            | Ę        | २४०       |
| यदा प्रकृष्टा मन्येत    | G         | 900   | यदेव तर्पयत्यद्भिः           | ર        | २८३       |
| यदा प्रादुष्कृताग्निषु  | 8         | 308   | यदेवास्य पिता दद्यात्        | 9,       | 944       |
| यदा भावेन भवति          | Ę         | 60    | यद्गर्हितेनार्जयन्ति         | 9 9      | १९३       |
| यदा मन्येत भावेन        | •         | 109   | यददाति यदर्चति               | 4        | ३०५       |
| यदावगच्छेदायत्याम्      | <b>19</b> | १६९   | यदुर्गं यच दुष्करम्          | 3 3      | २३८       |
| यदा स देवो जागर्ति      | 9         | ५२    | यदुस्तरं यद्दुरापम्          | 33       | २३८       |
| यदा स्वपिति शान्तात्मा  | 9         | ५२    | यहेवनसमाह्नयौ                | ९        | २२२       |
| यदा स्वयं न कुर्यात्    | 6         | ٩     | यद्द्रयोरनयोर्वेश्य          | 4        | ८०        |
| यदि कन्यानुमन्यते       | <b>Q</b>  | ९७    | यद्धनं यज्ञशिलानाम्          | 33       | २०        |
| यदि तत्रापि संपश्येत्   | 9         | १७६   | यद्ध्यायति यत्कुरुते         | 4        | 80        |
| यदि तस्मान्न संहरेत्    | 6         | 226   | यद्रक्ष्यं स्यात्ततो दद्यात् | ६        | •         |
| यदि तु प्रायशोऽधर्मम्   | 98        | २ १   | यद्गुङ्के दक्षिणामुखः        | ą        | २३८       |
| यदि ते तु न तिष्ठेयुः   | હ         | 306   | यद्यकर्म निपेवते             | 35       | ८१        |
| यदि त्वतिथिधर्मेण       | 3         | 999   | यद्यत्परवशं कर्म             | 8        | १५९       |
| यदि त्वात्यन्तिकं वासम् | ₹         | २४३   | यद्यदात्मवशं तु स्यात्       | 8        | १५९       |
| यदि देशे च काले च       | 6         | २३३   | यद्यद्दाति विधिवत्           | 3        | 5.0.2     |
| यदि न प्रणयेद्वाजा      | ૭         | २०    | यद्यदानं प्रयच्छति           | ક        | २३४       |
| यदि नात्मनि पुत्रेषु    | 8         | १७३   | यद्यद्धि कुरुते किंचित्      | <b>ર</b> | ૪         |
| यदि पुत्रशतं भवेत्      | ٩         | 340   | यद्यद्वेति विप्रेभ्यः        | Ę        | २३१       |
| यदि पुत्रोऽनु जायते     | 9         | १३४   | यद्यनमित तेषां तु            | 4        | १०२       |
| यदि ब्र्यास्त्वमन्यथा   | 6         | ९०    | यद्यन्योऽतिथिराव्रजेत्       | Ę        | 308       |
| यदि विद्यानुपालितः      | ९         | २०४   | यद्यपि स्यातु सत्पुत्रः      | <b>Q</b> | १५४       |
| यदि संशय एव स्यात्      | C         | २५३   | यद्यपि स्यात्प्रतिष्ठिता     | ۷        | 368       |
| यदि संसाधयेत्ततु        | 2         | २१३   | यद्यम्बुप्रसादकम्            | Ę        | ६७        |
| यदि स्त्री यद्यवरजः     | 2         | २२३   | यद्यर्थिता तु दारैः स्यात्   | ٩        | २०३       |
| यदि स्वाश्चापराश्चेव    | 9         | ८५    | यद्यस्य विहितं चर्म          | 2        | 308       |
| यदि हि स्त्री न रोचेत   | 3         | ६ १   | यद्यस्य सोऽद्धात्सर्गे       | 3        | <b>२९</b> |
| यदुत्पादयतो मिथः        | 2         | 380   | यद्याचरति धर्म सः            | 85       | २०        |
| यदेतत्परिसंख्यातम्      | 3         | 99    | यद्यस्थानं भवेत्सह           | ९        | २१५       |
| यदेतदभिशब्दितम्         | Ę         | ८२    | यद्येकं क्षरतीन्द्रियम्      | ?        | ९९        |

### স্থী০ श्लो० पाद अ० पाद यवीयानपि यो भवेत् यचेकरिक्थिनौ स्याताम् 376 9 4 5 यवीयान्गुणतोऽधिकः यद्योगावभिजायते 944 380 यदाष्ट्रं श्रूत्रभूयिष्ठम् यवीयान्वाप्रजिख्यम् २२ 46 यशश्चमविकर्त्तिनः 296 ६८ 85 यद्वा तद्वा परद्रव्यभ् यद्वापि प्रतिसंस्कुर्यात् यशश्राक्षयमन्ययम् 388 २७९ यशस्यं दक्षिणासुखः यहेष्टं मंगलं कुले ५२ **२** 38 यद्वेष्टितशिरा भुंक्ते यशोध्नं कीर्तिनाशनम् 3 २३८ 120 यशोमेधासमन्वितम् यस लजाति चाचरन् २६३ 97 રૂ છ यशावि किंतिहाशानाम् यशो राष्ट्रं च वर्धते ३०२ 806 यन्मांसपरिवर्जनात् यशोऽस्मिन्धाप्नुयाह्योके 383 48 4 यनमूर्त्यवयवाः सूक्ष्माः यश्च दम्यः प्रयुज्यते 188 30 यश्च विद्योऽनधीयानः यन्मे माता प्रलुलुभे 440 २० ९ यमिकः पुत्रमापदि यश्चाधि चोरयेद् गृहात् ३३३ 986 R यश्चाम्रे दिधिषूपतिः यमयोश्चेत्र गर्भेषु ५६0 ९ ३२६ यमर्थं यस्य मानवः यश्चात्मानं नित्रेदयेत् २५३ 960 यश्राधरोत्तरानर्थान् ९ ३०३ ८ ५३ यमस्य वरुणस्य च यमान्पतत्यकुर्वाणः यश्चाधर्मेण पृच्छति ४ २०४ 2 999 यमान्सेवेत सततम् यश्चानिक्षिप्य याचते ४ २०४ ८ १९१ यश्चापि धर्मसमयात् यमिद्धो न दहत्यक्षिः 994 ९ २७३ यमेव तु शुचिं विद्यात् यश्चेतान्केवलांस्त्यजेत् 394 ९५ २ यमो वैवस्वतो देवः यश्चेतान्त्राप्नुयात्सर्वान् दुष् ९२ यश्चैवादिशति वतम् यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायाम् 90% ς 68 यं मातापितरौ क्षेशम् यष्टिं शुद्रः कृतिकयः ५ ९९ ₹ २२७ थया च परिविद्यते यस्तं वेद स वेदवित् १७२ 99 २६५ यस्तकर्म न कारयेत् ८ ययास्योद्विजते वाचा २ 9 & 9 230 यस्तर्केणानुसंधत्ते यवगोधूमजं सर्वम् २५ १२ १०६ 4 यवसाबोदकेन्धनम् 👚 यस्तरूपजः प्रमीतस्य 984 980 यस्तवैष हृदि स्थितः यवसेनोदकेन च 194 9 ९२ यवागूं क्रथितां सकृत् Ę यस्तामभ्यवमन्यते २० ४ २४९ यवीयसस्तु वा भार्या यस्तु तत्कारयेन्मोहात् ९ 1410 69 यस्तु दोषवर्ती कन्याम् यवीयान् ज्येष्ठभार्यायाम् ९ 120 २२४

| पाद                        | अ०       | श्हो० | पाद                        | अ०         | स्हो॰ |
|----------------------------|----------|-------|----------------------------|------------|-------|
| यस्तु दोषवतीं कन्याम्      | ९        | ও ই   | यस्य चोपपतिर्गृहे          | ¥          | २.१६  |
| यस्तु पूर्वनिविष्टस्य      | 9        | 261   | बस्य ते तस्य तद्धनम्       | 4          | 398   |
| यस्तु भीतः परावृत्तः       | •        | ९४    | यस्य ते बीजतो जाताः        | ٩.         | 969   |
| यस्तु रज्जुं घटं कूपात्    | 6        | ३१९   | यस्य त्रैवार्षिकं भक्तम्   | 93         | 9     |
| यस्तु शुश्रूषते गुरुम्     | ₹        | २४४   | यस्य दृश्येत सप्ताहात्     | 6          | 906   |
| यस्त्रधर्मेण कार्याण       | 6        | १७४   | यस्य प्रसादे पद्मा श्रीः   | •          | 13    |
| यस्त्वनाक्षारितः पूर्वम्   | 6        | ३५५   | यस्य मन्त्रं न जानित       | •          | 388   |
| यस्त्वमेध्यमनापदि          | ٩        | २८२   | यस्य मांसिमहाद्म्यहम्      | 4          | ५५    |
| यस्त्वेतान्युपक्ऌप्तानि    | 6        | ३३३   | यस्य मित्रप्रधानानि        | 3          | १३९   |
| यस्वैश्वर्यान क्षमते       | C        | ३१३   | यस्य यत्पैतृकं रिक्थम्     | S,         | 9     |
| यस्मात्तरमात्प्रतिप्रहात्  | 8        | 999   | यस्य राज्ञस्तु विषये       | ø          | १३४   |
| यस्मात्रयोष्याश्रमिणः      | ३        | 96    | यस्य वाङ्यनसी शुद्धे       | २          | १६०   |
| ( ऽन्याश्रमिणः इति वा      | पाठः )   |       | यस्य विद्वान्हि वदतः       | c          | ९६    |
| यसादण्वपि भूतानाम्         | ξ        | 80    | यस्य शूद्रस्तु कुरुते      | 4          | २ १   |
| यसादुत्पत्तिरेतेषाम्       | ३        | १९३   | यस्य श्राद्धं च तक्कवेत्   | 3          | 966   |
| यस्मादेषां सुरेन्द्र(णाम्  | 9        | પ     | यस्य स्तेनः पुरे नास्ति    | 4          | ३८६   |
| यसाद्धीजप्रभावेण           | 90       | ७२    | यस्य स्याच्छ्रोत्रियः पिता | 3          | ३३७   |
| यस्मिञ्जिते जितावेतौ       | <b>ર</b> | ९२    | यस्य स्याद्ये।निसंकरः      | 90         | ६०    |
| यस्मिन्कर्मणि यास्तु स्युः | 6        | २०८   | यस्य स्याद्विषये स्थितः    | 43         | ८२    |
| यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते     | 99       | २३३   | यस्या म्रियेत कन्यायाः     | <b>९</b>   | ६९    |
| यस्मिन्देशे निषीदन्ति      | 6        | 33    | यस्यास्तु न भवेद्धाता      | ३          | 99    |
| यस्मिन्नृणं संनयति         | ९        | 909   | यस्यास्येन सदाक्षन्ति      | 1          | ९५    |
| यस्मिन्नेव कुले निस्यम्    | ર        | ६०    | यस्येहानुशयो भवेत्         | 6          | २२२   |
| यस्मिन्यस्मिन्कृते कार्ये  | 6        | २२८   | <b>3</b> )                 | 4          | २२८   |
| यस्मिन्यसिन्विवादे तु      | 6        | 339   | यस्यैते त्रय आहताः         | 3          | २३४   |
| यस्मे दद्यास्पिता त्वेनाम् | ų        | 343   | यस्यैते निहिता बुद्धौ      | <b>૧</b> ૨ | 80    |
| यस्य कायगतं ब्रह्म         | 3 3      | 99    | यां प्रसद्ध ष्टुको हन्यात् | 6          | २३५   |
| यस्य क्षेत्रे प्ररोहति     | ٩,       | 48    | यां यां योनि तु जीवोऽयम    | ( १२       | ५३    |
| यस्य चाप्यनृतं धनम्        | 8        | 190   | यांस्तत्र चौरान्गृह्णीयात् | 6          | ३४    |
| यस्य चेच्छति पार्धिवः      | પ્       | 94    | याः संज्ञाः प्रथिता भुवि   | 6          | 933   |
| यस्य चोपपतिर्गृहे          | ર        | 944   | या गर्भिणी संस्क्रियते     | 9          | १७३   |

### मनुपादानुकमखो ।

| पाद                            | अ०   | श्लो० | पाद                         | अ०       | श्लो० |
|--------------------------------|------|-------|-----------------------------|----------|-------|
| याचितेनानसूयया                 | 8    | २२८   | यानशय्याप्रदो भार्याम्      | 8        | २३२   |
| याचिष्णुता प्रमादश्च           | 35   | ३३    | यानशय्यासनस्य च             | 99       | १६५   |
| याचेतेमान्वरान्पितृन्          | 3    | २५८   | यानशय्यासनान्यस्य           | 8        | २०२   |
| या चैनं नावमानयेत्             | २    | 40    | यानशय्यासनाशने              | 9        | २२०   |
| याजनाध्यापनाद्यौनात्           | 33   | 160   | यानस्य चैव यातुश्च          | 4        | २९०   |
| याजनाध्यापने चैत्र             | 9, 0 | ७६    | यानस्वामिन एव च             | 4        | २९०   |
| याजनाध्यापनेनापि               | 6    | ३४०   | यानान्युष्ट्रः पश्चनजः      | १२       | ६७    |
| याजनाध्यापने नित्यम्           | 10   | 110   | यानासनस्थश्चैवेनम्          | २        | २०२   |
| याजनाध्यापनैः कृतम्            | 30   | 333   | यानि चैवं प्रकाराणि         | 9        | 88    |
| याजयन्ति च ये पूगान्           | રૂ   | 9149  | 77 17                       | 6        | २५१   |
| याज्यं चर्त्विक्त्यजेद्यदि     | 6    | ३८८   | यानि चैवाभिषूय-ते           | ч        | 30    |
| याज्याः तेवासिनोर्वापि         | 8    | ३३    | यानि पूर्वे मनीषिणः         | 7        | ८९    |
| यातनाश्च यमक्षये               | ξ    | ६ १   | या नियुक्तान्यतः पुत्रम्    | 9        | 180   |
| याति स्थावरतां नरः             | १२   | ९     | यानि राजप्रदेयानि           | 9        | 196   |
| या तु कन्यां प्रकुर्यात्स्त्री | 6    | ३७०   | यानि हीनानि मन्नतः          | ₹        | ६५    |
| यात्रा चैव हि लौकिकी           | 99   | 158   | यानुपाश्रित्य तिष्ठन्ति     | ९        | ३१६   |
| यात्राफलमवाप्रुयात्            | ঙ    | २०७   | यान्यतोऽन्यानि कानिचि       | त् १२    | ९,६   |
| यात्रामात्रप्रसिद्धगर्थम्      | 8    | રૂ    | यान्यधस्तान्यमेध्यानि       | ч        | १३२   |
| यात्रिकं च यथाविधि             | 9    | 188   | थान्सम्यगनुतिष्ठतः          | 30       | १३०   |
| यात्रिकं भेक्षमाहरेत्          | ६    | २७    | या पत्या वा परित्यक्ता      | ९        | 81919 |
| यादग्गुणेन भर्त्रा स्त्री      | ٩.   | २२    | याभ्यां प्राप्तोति संपृक्तः | 92       | 98    |
| यादृशं च चिकीर्षितम्           | 8    | २५४   | यामीः प्राप्तोति यातनाः     | १२       | २१    |
| याद्यां तृप्यते बीजम्          | ९    | ३६    | यामीस्ता यातनाः प्राप्य     | 12       | २२    |
| यादशं पुरुषस्येह               | 8    | १३४   | यामुद्धुत्य वृको हन्यात्    | 6        | २३५   |
| यादृशं फलमामोति                | ९    | 989   | यामुष्ट्रो न विलोकयेत्      | 4        | १३९   |
| यादशं भजते हि स्त्री           | ९    | ९     | यायात्तु शकटेन वा           | 9        | 969   |
| यादशं भवति प्रत्य              | ď    | ३४    | यायादरिपुरं शनैः            | Ġ        | १८५   |
| यादशा धनिभिः कार्याः           | 4    | ६१    | "                           | <b>9</b> | 101   |
| यादशेन तु भावेन                | 35   | 69    | यायाद्यात्रां महीपतिः       | ૭        | १८२   |
| यादशोऽस्य भवेदात्मा            | 8    | २५४   | या रोगिणी स्यात्त हिता      | ٩        | ८२    |
| यानमासनमेव च                   | ૭    | १६०   | या लोके जातयो बहिः          | 30       | ४५    |
|                                |      |       |                             |          |       |

| · पाद                   | अ०               | स्हो०           | पाद                       | अ ०      | स्रो०       |
|-------------------------|------------------|-----------------|---------------------------|----------|-------------|
| यावचातीतरी रावः         | 4                | २७              | युक्तरचैवाप्रमश्रश्र      | <b>(</b> | 185         |
| यावतः संस्पृशेदक्षेः    | Ę                | 308             | युक्तरछन्दांस्यधीयीत      | 8        | ९५          |
| यावती संभवेद् वृद्धिः   | ૮                | <b>૧</b> ૫૫     | युक्ते च दैवे युध्येत     | •        | 990         |
| यावतो यसते यासान्       | રૂ               | १३३             | युक्तो नित्यमतन्द्रितः    | 9,       | ७१२         |
| यावतो बान्धवान्यस्मिन्  | 6                | ९७              | कृष्टो वार्यनिकाशनः       | Ę        | ३१          |
| यावसत्स्यादनिदंशम्      | ५                | ७९              | राध्य कुर्वस्थिनर्क्षेषु  | 3        | २७७         |
| यावसन्न व्रजस्यधः       | 3 3              | १५३             | युःषत्तु प्रकीयन्ते       | 3        | 48          |
| यावसुष्टिकरं भवेत्      | 33               | २३३             | यु ग्हामानुरूपतः          | 3        | ८५          |
| यावत्रयस्ते जीवेगुः     | <b>ર</b>         | २३५             | युग्मासु पुत्रा जायन्ते   | ર        | 88          |
| यावत्स स्यात्समावृत्तः  | 6                | २७              | युग्मस्थाः प्राजकेऽनाप्ते | 6        | २९४         |
| यावद्ध्ययनं गुरोः       | ₹                | 185             | युद्धाचार्यस्वयेव च       | ३        | १६२         |
| यावद्श्वममायया          | २                | 48              | युध्यमानाः परं शक्त्या    | ૭        | ८९          |
| यावद्शन्ति वाग्यताः     | રૂ               | २३७             | युध्यमानो रणे रिप्न्      | ی        | ९०          |
| यावदुष्णं भवत्यन्नम्    | રૂ               | २३५             | युवतीनां युवा भुवि        | २        | २१६         |
| यावदेकानुदिष्टस्य       | $\boldsymbol{s}$ | 339             | युष्माकं ह्यत्र साक्षिता  | 6        | ८०          |
| याबद्विषा विसर्जिताः    | ३                | २६५             | यूकामितकभरकुणम्           | 9        | 80          |
| याबद्वेदे न जायते       | <b>ર</b>         | १७२             | "                         | 3        | ४५          |
| यावन्तरचेव येश्वान्तेः  | ર                | १२४             | यूनः स्थविर आयति          | २        | 920         |
| यात्रन्ति पशुरोसाणि     | ખ                | ३८              | ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव    | 9        | १२४         |
| यावसापैत्यसेध्याकात्    | 4                | <sup>र</sup> २६ | येऽक्षेत्रिणो बंग्जवतः    | ९        | ४९          |
| यावन्नोक्ता हविर्गुणाः  | 3                | २३७             | ये न केचित्रिरिन्द्रियाः  | ९        | = 0 9       |
| यावांश्च कुलसनिधौ       | 6                | १९४             | ये च नास्तिकत्रृत्तयः     | રૂ       | १५०         |
| यावानवध्यस्य वधे        | ۹,               | २४९             | ये च मार्जारिलगनः         | ૪        | 390         |
| या वृत्तिस्तां समास्थाय | ક                | <b>ર</b>        | ये च यैरुपचर्याः स्युः    | 3        | १९३         |
| या वेदबाह्याः स्मृतयः   | 12               | 94              | ये च वर्ज्या द्विजोत्तमाः | 3        | 128         |
| या वेदविहिता हिंसा      | પ્               | 88              | ये च वैमानिका गणाः        | 12       | 88          |
| याश्च कारच कुदृष्ट्यः   | 9 2              | ९५              | ये च स्नांबालघातिनः       | 6        | ८९          |
| यासां नाददते शुल्कम्    | ર                | ५४              | ये चापध्वंसजाः स्मृताः    | 90       | ४६          |
| यास्तासां स्युर्देहितरः | ९                | १९३             | ये तत्र नोपसर्पेयुः       | ٩.       | २६९         |
| युक्तः परिचरेदेनम्      | ₹                | २४३             | ये द्विजानामपसदाः         | 90       | <b>૪</b> દ્ |
| युक्तः स्यान्महतैनसा    | <b>ર</b>         | २२१             | येन केनचिदङ्गेन           | 6        | २७९         |
|                         |                  |                 |                           |          |             |

| पाद                          | अ०         | श्चो॰        | पाद                               | 9 <b>7</b> 9 | श्ली० |
|------------------------------|------------|--------------|-----------------------------------|--------------|-------|
| येम चानन्यमध्ते              | 9          | 200          | बैबैंरुपायैरथं स्वम्              | 4            | 86    |
| येन तुष्यति चात्मास्य        | 9 २        | ३७           | येथें र्वतेरपोद्यन्ते             | 9 9          | 9 }   |
| येन मूलहरोऽवर्मः             | 4          | ३५३          | यैभ्याप्येमान्स्थितो भावान्       | 199          | २४    |
| येन यत्साध्यते कार्यम्       | ٩          | २९७          | योऽकामां दूषयेत्कन्याम्           | 6            | ३६४   |
| येन यस्तु गुणेनैषाम्         | <b>9 2</b> | ३९           | योक्त्ररहम्बोस्तथैव च             | 6            | २१२   |
| येन याताः वितामहाः           | ុ ង        | 306          | योगक्षेमं च संप्रेक्ष्य           | •            | 970   |
| येन येन तु भावेन             | ષ્ઠ        | २३४          | योगक्षेमं प्रचारं च               | ٩            | २३९   |
| येन येन यथाङ्गेन             | 6          | ३३४          | योगक्षेमेऽन्यथा चेतु              | 6            | २३०   |
| येन येनेह कर्मणा             | 92         | ५३           | योगदानप्रतिप्रहम्                 | 6            | १६५   |
| येन वेदयते सर्वम्            | १२         | १३           | योगाधमन विक्रीतम्                 | 6            | १६५   |
| येनास्मिन्कर्मणा लोके        | 32         | ३६           | योगेन परमात्मनः                   | ६            | ६५    |
| येनास्य पिलतं शिरः           | <b>ર</b>   | १५६          | यो ग्रामदेशसंघानाम्               | 4            | २१९   |
| येनास्य पितरो याताः          | 8          | 308          | योजनानां शतं व्रजेत्              | 33           | نصرم  |
| ये नियुक्तास्तु कार्येषु     | <b>Q</b>   | २३१          | योजनं वाध्वनो ब्रजेत्             | 33           | १३२   |
| येऽन्ये ज्येष्ठकनिष्ठाभ्याम् | ٩          | ११३          | यो ज्येष्ठो ज्येष्टवृत्तिः स्यात् | ् ९          | 990   |
| ये पठन्ति द्विजाः केचित्     | 92         | 9 <b>२</b> ६ | या ज्येष्ठो विनिकुर्वीत           | 9            | २१३   |
| ये पाकयज्ञाश्चत्वारः         | २          | ८६           | यो दण्डो यच वसनम्                 | <b>ર</b>     | 808   |
| ये बकन्नतिने। विप्राः        | 8          | १९७          | योऽदत्तादायिनो हस्तात्            | 6            | 380   |
| ये मरीच्यादयाः सुताः         | 3          | 198          | यो दस्त्रा सर्वभूतेभ्यः           | Ę            | ३९    |
| ये विप्राः समधीयते           | ξ          | ९३           | योधधर्मः सनातनः                   | G            | ९८    |
| ये श्रुद्रादिधगम्यार्थम्     | 99         | ४२           | यो धर्म एकपक्षीनाम्               | 4            | 946   |
| येषां उपेष्ठः कनिष्ठो वा     | ९          | २११          | यो धर्मस्तं निबोधत                | 3            | 3     |
| येषां तु यादृशं कर्म         | 3          | ४२           | योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः        | Ę            | ७९    |
| येषां द्विजानां सावित्री     | 99         | 383          | योऽधीतेऽहन्यहन्येताम्             | 2            | ८२    |
| ये स्तेनपतित्रक्षीबाः        | Ę          | 940          | योऽध्यापयति बृत्यर्थम्            | २            | 181   |
| ये स्तेनाटविकादयः            | 9          | २५७          | योऽनधीत्य द्विजो वेदम्            | ર            | १६८   |
| येऽस्य स्युः परिपन्थिनः      | 9          | 900          | यो न वेत्त्यभिवादस्य              | 2            | १२६   |
| ये स्वकर्मण्यवस्थिताः        | 90         | ७४           | यो न सर्व प्रयच्छति               | 3 3          | २५    |
| यः कर्मभिः प्रचरितैः         | 30         | 900          | योऽनाहिताझिः शतगुः                | 33           | 18    |
| यैः कृतः सर्वभक्ष्योऽग्निः   | ٩          | ३१४          | योनिकोटिसहस्रेषु                  | Ę            | ६३    |
| यैरभ्युपायै <b>रे</b> नांसि  | \$ \$      | २१०          | यो निक्षेपं नार्पयति              | 4            | 191   |

| पाद                       | अ० | स्रो० | पाद                          | अ०  | श्लो॰ |
|---------------------------|----|-------|------------------------------|-----|-------|
| यो निक्षेपं याच्यमानः     | 4  | 969   | योऽवमन्येत ते मूले           | ą   | 33    |
| योऽनुकल्पेन वर्तते        | 99 | ३०    | यो वर्धयितुमिच्छति           | પ્ય | ५२    |
| योऽनुरज्येत कामतः         | Ę  | १७३   | यो वाहयति सौनिकः             | 8   | ८६    |
| योऽनुचानः स नो महान्      | ą  | 948   | यो वृत्तिमुपजीवति            | ક   | 200   |
| यो नो दद्यात्रयं।दशीम्    | Ę  | 308   | यो वेदैनं स वेदवित्          | 99  | २६४   |
| योऽन्नमत्ति यतस्ततः       | 30 | 808   | यो वै युवाप्यधीयानः          | 9   | 348   |
| योऽन्यथा सन्तमात्मानम्    | 8  | ३५५   | यो वैश्यः स्याह्यहुपशुः      | 33  | 32    |
| यो बन्धनवधक्केशान्        | ų  | ४६    | योषितां धर्ममापदि            | ९   | ५६    |
| यो बाह्मण्यामगुप्तायाम्   | 4  | ३८२   | योषित्सु पतितास्वपि          | 99  | 866   |
| यो भर्त्ता सा स्मृतांगना  | 9  | 84    | योऽसाधुभ्योऽर्थमादाय         | 33  | 18    |
| यो भाषतेऽर्थवैकल्यम्      | 4  | ९५    | योऽसावतीन्द्रियग्राह्यः      | 3   | . 9   |
| यो मन्येत विकर्मणा        | ٩  | २३३   | योऽस्यात्मनः कारयिता         | 98  | 12    |
| यो मर्पयति पार्थिवः       | ૮  | ३४६   | योऽस्वामी स्वाम्यसंमतः       | c   | 190   |
| यो मांसं नात्ति मानवः     | ų  | ३५    | योऽहिंसकानि भूतानि           | Ly  | ४५    |
| यो यजेत शतं समाः          | 4  | ५३    | यो हिनस्ति न क्रिंचन         | ų   | ४७    |
| यो यज्जयति तस्य तत्       | •  | ९ ६   | यो ह्यप्तिः स द्विजो विप्रैः | ą   | २१२   |
| यो यथा निक्षिपेद्धस्ते    | 6  | 960   | यो ह्यस्य धर्ममाचष्टे        | 8   | 63    |
| यो यदेपां गुणो देहे       | 35 | २५    | यो स्यातां धर्मवर्जितौ       | В   | ९७६   |
| यो यस्य धम्यौ वर्णस्य     | Ę  | २२    | ₹                            |     |       |
| यो यस्य प्रतिभूस्तिष्ठेत् | 4  | 946   | रक्तानि हत्वा वासांसि        | 9 २ | ६६    |
| यो यस्य मांसमश्नाति       | 4  | 3 4   | रक्षणं निष्कुलासु च          | 6   | २८    |
| यो यस्यैपां विवाहानाम्    | Ę  | ३६    | रक्षणादार्यवृत्तानाम्        | 9   | २५३   |
| यो याविश्वनहुवीतार्थम्    | 4  | ५९    | रक्षन्ति स्थविरे पुत्राः     | ९   | રૂ    |
| यो येन पतितेनैवाम्        | 11 | 828   | रक्षन्धर्मेण भूतानि          | 6   | ३०६   |
| यो यो यावतिथरचैषाम्       | 3  | २०    | रक्षांसि च पिशाचाश्च         | 3   | 83    |
| योऽरक्षन्बलिमादत्ते       | 4  | ३०७   | <b>3</b> 3                   | 92  | 88    |
| यो राज्ञः प्रतिग्रह्णाति  | 8  | 69    | रक्षांसि पतगोशगाः            | 9   | 73    |
| योऽर्चितं प्रतिगृह्णाति   | ß  | २३५   | रक्षांसि हि विलुम्पन्ति      | ₹ , | 208   |
| योऽर्थान्धर्मेण पश्यति    | 6  | 304   | रक्षार्थमस्य सर्वस्य         | 9   | ર     |
| योऽर्थे शुचिहिं स शुचिः   | ч  | 908   | रक्षितं वर्षयेच्चैव          | •   | ९९    |
| यो छोभादधमो जात्या        | 30 | 9 4   | रक्षितं वर्षयेद् वृद्धया     | •   | 303   |

# मनुपादानुकमणी।

| पाद                     | अ०       | श्लो० | पाद                      | अ०       | श्लो०      |
|-------------------------|----------|-------|--------------------------|----------|------------|
| रक्षितच्याः कथंचन       | ९        | ३२८   | रहस्याख्यायिनां चैव      | છ        | २२३        |
| रक्षिता यवतोऽपीह        | ९        | 94    | रहो यत्रोपगच्छति         | ર        | ३४         |
| रक्षेदेनं समंततः        | 99       | २३    | राक्षसं क्षत्रियस्यैकम्  | ર        | २४         |
| रक्षेद्विवरमात्मनः      | હ        | 904   | राक्षसी कीर्त्तिता हि सा | Ę        | २८०        |
| रक्षेयुस्ताः सुरक्षिताः | 9        | 17    | राक्षसो विधिरुच्यते      | રૂ       | ३३         |
| रक्षोभिरपि पूज्यते      | ંહ       | ३८    | <b>37 37</b>             | પ્       | ३१         |
| रङ्गावतारकस्य च         | 8        | २१५   | रागद्वेषक्षयेण च         | ६        | ६०         |
| रजसस्त्वर्थ उच्यते      | १२       | ३८    | रागद्वेषौ रजः स्मृतम्    | 3 2      | २६         |
| रजसाभिप्छतां नारीम्     | 8        | 88    | राजकर्मसु युक्तानाम्     | 9        | १२५        |
| रजता समभिप्लुताम्       | 8        | ४२    | राजगामि च पैशुनम्        | 99       | પુષ        |
| रजसा स्त्री मनोदुष्टा   | ષ        | 906   | राजतं चानुपस्कृतम्       | ч        | 332        |
| रजस्युपरते साध्वी       | ખ        | ६६    | राजतैर्भाजनैरेषाम्       | ঽ        | २०२        |
| रजस्वलमनित्यं च         | ६        | 99    | राजतो धनमन्विच्छेत्      | ૪        | ३३         |
| रजस्वला च षण्डश्च       | 3        | २३९   | राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि   | •        | 3          |
| रजोभूर्वायुरग्निश्च     | فع       | १३३   | राजधर्मेषु पार्थिवः      | ९        | ३२४        |
| रज्वा वेणुदलेन वा       | 6        | २९९   | राजन्यबन्धोर्द्वाविशे    | २        | ६५         |
| रज्ञवाश्चेव त्र्यहं पयः | 33       | १६८   | राजन्यवैश्ययोस्त्वेवम्   | <b>ર</b> | 990        |
| रञ्जकस्य नृशंसस्य       | ૪        | २१६   | राजन्यवैदयौ चेजानी       | 99       | 69         |
| रतिमात्रं फलं तस्य      | 99       | ų     | राजभिः कृतदण्डास्तु      | 6        | ३१८        |
| रत्नेश्च पूजयेदेनम्     | <b>9</b> | २०३   | राजित्वक्सातकगुरून्      | ą        | 999        |
| रथं हरेत चाध्वर्युः     | 6        | २०९   | राजर्षिप्रवरः पुरा       | ९        | ६७         |
| रथाश्वं हस्तिनं छन्नम्  | <b>v</b> | ९६    | राजविप्राङ्गनासुती       | 90       | 9 1        |
| रमन्ते तत्र देवताः      | R        | ५६    | राजसं गुणलक्षणम्         | १२       | <b>३</b> २ |
| रम्यमानतसामन्तम्        | G        | ६९    | राजसीपूत्तमा गतिः        | 3 2      | 80         |
| रसं श्वा नकुलो घृतम्    | 32       | ६२    | राजस्नातकयोश्चेव         | २        | १३९        |
| रसजानां च सर्वशः        | 33       | 183   | राजस्वं श्रोत्रियस्वं च  | 6        | 188        |
| रसा रसैर्निमातव्याः     | 30       | 98    | राजा कर्ता च कर्मणाम्    | •        | १२८        |
| रसो गन्धश्च पञ्चमः      | 98       | 96    | राजा कर्मसु युक्तानाम्   | •        | १२५        |
| रहः प्रवाजितासु च       | 6        | ३६३   | राजा कुर्याध्यवासनम्     | 9        | १२४        |
| रहः स्थानासनेन च        | Ę        | પવ    | राजा च श्रोत्रियश्चैव    | <b>ર</b> | 120        |
| रहस्यमुपदिश्यते         | 92       | 900   | राजा ततुपयुक्तानः        | 6        | 80         |
| <del>-</del> -          | -        |       | <b>3 3</b>               |          |            |

| <b>पाद</b>               | अ०       | श्लो॰ | पाद                                    | अ० | श्चो० |
|--------------------------|----------|-------|--|----|-------|
| राजा ज्यब्दं निधापयेत्   | 6        | ₹ ०   | राज्ञः प्रच्छकतस्कराः                  | 9  | २२६   |
| राजा दण्डं प्रकल्पयेत्   | ٩        | २९३   | राज्ञश्च दचुरुद्वारम्                  | •  | 90    |
| राजा द्वादशमेव वा        | 4        | ३५    | राज्ञश्च धर्ममखिलम्                    | 1  | 118   |
| राजा धर्मेण युज्यते      | ৩        | 188   | राज्ञश्चाधिकृतो विद्वान्               | 6  | 9 9   |
| राजानं सत्यवादिनम        | •        | २६    | राज्ञां चैत्र पुरोहिताः                | 98 | 8 €   |
| राजानः क्षत्रियाश्चैव    | 12       | ४६    | राज्ञां दण्डधरो हि सः                  | g  | २४५   |
| राजानः सपरिच्छदाः        | <b>y</b> | ४०    | राज्ञां धर्म निबोधत                    | Ę  | ९७    |
| राजानमभिगम्य तु          | 33       | ९९    | राज्ञां श्रेयस्करं परम्                | હ  | 66    |
| राजानमसृजस्प्रभुः        | હ        | 3     | राज्ञा च सर्वयोधेभ्यः                  | •  | ९७    |
| राजा नाप्यस्य पूरुषः     | 6        | ४३    | राज्ञा चौरैर्हतं धनम्                  | C  | 80    |
| राजानं तेज आदत्ते        | 8        | 296   | राज्ञा दण्ड्यः शतानि षट्               | 6  | २२३   |
| राजा श्रकुरुते मनः       | g        | १२    | ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, | 6  | ३८९   |
| राजा भवति संमतः          | ঙ        | 180   | "                                      | ሪ  | ४१२   |
| राजा भवत्यनेनास्तु       | 6        | 99    | राज्ञः दाप्यः सुवर्णं स्यात्           | 6  | २१३   |
| राजा मार्गे निवेशयेत्    | ९        | २८८   | राज्ञा नित्यमिति स्थितिः               | ९  | १८९   |
| राजा राष्ट्राक्षिवारयेत् | ९        | २२३   | राज्ञा पञ्जहिरण्ययोः                   | Ġ  | 830   |
| राजा राष्ट्रे पृथग्जनम्  | ঙ        | १३७   | राज्ञा मध्यमसाहसम्                     | ૮  | २६३   |
| राजा वध्यांश्च घातयन्    | 4        | ३०६   | राज्ञे दद्याच तत्समम्                  | 6  | २८८   |
| राजा विग्रहमेव च         | G        | १६२   | राज्ञो धर्मविवेचनम्                    | 4  | 53    |
| राजा विनिर्णयं कुर्यात्  | 6        | १९६   | राज्ञोऽन्यः सचिवः स्निग्धः             | •  | 350   |
| राजा विवदमानयोः          | 6        | २५२   | राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे                 | ર  | ३७    |
| राजा षाड्गुण्यसंयुतम्    | ঙ        | 46    | राज्ञो भवति रक्षतः                     | 4  | ३०४   |
| राजा संपूजयेत्सदा        | 6        | ३९५   | राञ्चो माहात्मिके स्थाने               | ч  | 88    |
| राजा साहसिकं नरं         | 6        | इ४४   | राज्ञो रक्षासमन्वितम्                  | ₹  | ३२    |
| राजा सृष्टोऽभिरक्षिता    | •        | ३५    | राज्ञो राहोश्च सूतके                   | 8  | 330   |
| राजा स्तेनेन गन्तब्यः    | C        | इ१४   | राज्ञो वृत्तानि सर्वाणि                | 9  | 303   |
| राजा हि धर्मषड्भागम्     | 33       | २३    | राज्ञो हि रक्षाधिकृताः                 | 9  | १२३   |
| राजा हि युगमुच्यते       | 9        | ३०१   | राज्यस्यासां यथाक्रमम्                 | ς. | २९५   |
| राजीवान्सिहतुण्डाश्च     | 4        | 9 €   | राज्यान्तकरणावेतौ                      | ٩. | २२१   |
| राज्ञः कोषापहर्नश्च      | 9        | २७५   | रात्रयः षोडश स्मृताः                   | ₹  | 8 €   |
| राज्ञः प्रख्यातभाण्डानि  | 4        | ३९९   | रात्रावहनि वा द्विजः                   | 8  | 48    |
|                          |          |       |  |    |       |

# मनुपादानुक्रमणी।

| पाद                         | अ०         | श्लो०       | पाद                                 | अ०       | श्लो० |
|-----------------------------|------------|-------------|-------------------------------------|----------|-------|
| रात्रावहनि वा सदा           | Ę          | \$ C        | रूप्यदो रूपमुत्तमम्                 | 8        | २३०   |
| रात्रिं च तावतीमेव          | 9          | ७३          | रेतः सिक्त्वा जले चैव               | 33       | १७३   |
| रात्रिः संध्ये च धर्मश्र    | 6          | ८६          | रेतः सिक्त्वा स्वयोनिषु             | 9 9      | 900   |
| राबिः स्याद्दक्षिणायनम्     | 3          | ६७          | रेतः सेकः स्वयोनीषु                 | 33       | 46    |
| रात्रिः स्वभाय भूतानाम्     | 9          | ६५          | रेतोविण्मूत्रमेव च                  | 8        | २२२   |
| रात्रिभिर्मासतुल्याभिः      | , <b>પ</b> | ६६          | रोगायतनमातुरम्                      | Ę        | ७७    |
| रात्रौ कुर्वन्ति तस्कराः    | <b>ዓ</b>   | २७६         | रोगिणो गर्भिणीः स्त्रियः            | 3        | 338   |
| रात्रौ च वृक्षमूलानि        | 8          | ७३          | रोगिणो भारिणः स्त्रियाः             | २        | १३८   |
| रात्रौ न विचरेयुस्ते        | 90         | ५४          | रोगोऽग्निर्ज्ञातिमरणम्              | 6        | 308   |
| रात्रौ वित्रासयेत्तथा       | ø          | <b>१९</b> ६ | रोचयेत गुरोः कुले                   | <b>२</b> | २४३   |
| रात्रौ वीरासनं वसेत्        | 99         | 330         | रोमाणि च रहस्यानि                   | 8        | 188   |
| रात्री श्राद्धं न कुर्वीत   | 3          | २८०         | गेहितेन्द्रधनूंषि च                 | 9        | ३८    |
| रात्री स्वामिनि तद्वहे      | C          | २३०         | रौरवेण नवैव तु                      | 3        | २६९   |
| राष्ट्रं चास्योपपीडयेत्     | હ          | १९५         | ल                                   |          |       |
| राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम्     | ९          | २५५         | लक्षणं सुखदुःखयोः                   | 8        | 38,   |
| राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यम्  | 9          | 993         | लक्ष्यं शस्त्रभृतां वा स्यात्       | 99       | ७३    |
| राष्ट्रादाहारयेद्वलिम्      | ঙ          | 60          | लगुडं वापि खादिरम्                  | 6        | ३१५   |
| राष्ट्रादेनं बहिः कुर्यात्  | 4          | ३८०         | लघुमित्रं प्रशस्यते                 | •        | २०९   |
| राष्ट्राद्वाज्ञाब्दिकः करः  | •          | १२९         | ल् <b>घुवासा जितेन्द्रियः</b>       | २        | 90    |
| राष्ट्रिकैः सह तद्राष्ट्रम् | 90         | ६१          | लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः              | ૭        | ९९    |
| राष्ट्रेषु रक्षाधिकृतान्    | ९          | २७२         | लब्धं रक्षेदवेक्षया                 | ૭        | 909   |
| रिक्तभाण्डानि यत्किञ्चित्   | 6          | ४०५         | लब्धप्रशमनानि च                     | 9        | ५६    |
| रिक्थं भ्रातर एव च          | ९          | 964         | लब्धलक्षान्कुलोद्भवान्              | 9        | 48    |
| रुक्मस्तेयसमं स्मृतम्       | 33         | <b>પ</b> ,હ | लब्धांश्च परिपालयेत्                | ९        | २५१   |
| रुक्माभं स्वप्तधीगम्यम्     | १२         | 922         | ललाटसंमितो राज्ञः                   | २        | 8 ६   |
| रुद्रांश्चेव पितामहान्      | 3          | २८४         | लवणं च स्वयं कृतम्                  | Ę        | १२    |
| रुधिरे च स्नुते गात्रात्    | 8          | 922         | लवणानां तथेव च                      | 6        | ३२७   |
| रुधिरेणैव शुध्यतः           | 3          | १३२         | रुशुनं गृञ्जनं चैव                  | 4        | ų     |
| रूपं विकयमहीत               | 6          | २०३         | ल्ज्युनं ग्रामकु <del>व</del> कुटम् | પ્       | 18    |
| रूपद्रव्यविहीनांश्च         | 8          | 181         | ल <b>शुनानीक्षवस्तथा</b>            | ٩        | ३३१   |
| रूपसत्त्वगुणोपेताः          | ą          | 80          | स्राक्षया स्वणेन च                  | 30       | ९२    |

| पाद                            | अ० | श्हो॰        | पाद                              | अ०       | श्लो॰ |
|--------------------------------|----|--------------|----------------------------------|----------|-------|
| लाभालामं च पण्यानाम्           | ٩  | ३३१          | लोभः स्वमोऽधतिः कौर्यम्          | 193      | ३३    |
| लाभे चैव न हर्षयेत्            | ક્ | <b>પ</b> ્રહ | <b>छोभात्कृ</b> स्वा प्रतिप्रहम् | g        | 909   |
| छिक्षैका परिमाणतः              | 6  | १३३          | लोभात्सहस्रं दण्ड्यस्तु          | C        | 120   |
| लिङ्गानामपि दर्शने             | 6  | २५३          | लोभाद् भ्रातृन्यवीयसः            | ٩        | २१३   |
| लिप्सेत बाह्यणो धनम्           | 6  | <b>3</b> 80  | <b>छोभान्मोहाद्भयान्मैत्रात्</b> | 6        | 398   |
| लुप्तधर्मिकया हि ताः           | 4  | २२६          | <b>छोभेनोपहिनस्ति</b> यः         | 33       | २६    |
| <b>लुब्धस्योच्छास्रवर्तिनः</b> | 8  | 60           | लो <b>ष्ट</b> पत्रतृणादिना       | 8        | ४९    |
| <b>लुब्धेनाकृतबुद्धिना</b>     | •  | ३०           | लोष्टमदी तृणच्छेदी               | ૪        | ૭ ૧   |
| <b>छ्</b> ताहिसरटानां च        | 98 | ५७           | लोहदारकमेव च                     | 8        | ९०    |
| लोकं च सचराचरम्                | •  | २९           | लोहशङ्कमृजीषं च                  | 8        | ९०    |
| लोकं प्राप्तोत्यनिन्दितः       | 90 | 128          | लोहानां तान्तवस्य च              | 9        | ३२९   |
| लोकपालांश्च कोपिताः            | ९  | ३१५          | लोहितं वा विषाणि वा              | ß        | ५६    |
| लोकविकुष्टमेव च                | ક  | ७६           | लोहितस्य च दर्शकः                | 4        | २८२   |
| <b>लोकसं</b> व्यवहारार्थम्     | 6  | 131          | <b>छोहितान्बुक्षनिर्यासान्</b>   | ч        | ६     |
| लोकस्याप्यायने युक्तान्        | 3  | २१३          | रुौकिकं वैदिकं वापि              | <b>ર</b> | 110   |
| लोभा देवाश्च सर्वदा            | ٩  | ३१६          | <b>छौकिके</b> ऽझौ विधीयते        | व        | २८२   |
| लोकानन्यान्म <u>ु</u> जेयुर्ये | ٩, | ३१५          | व                                |          |       |
| लोकानां तु विवृद्धर्थम्        | 3  | <b>३</b> १   | वक्तव्यं वा समक्षसम्             | ઢ        | 33    |
| <b>लोकानां हितकाम्यया</b>      | 92 | 999          | वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः      | 6        | २७२   |
| लोकानामोति पुष्कलान्           | 6  | ८१           | वञ्चकाः कितवास्तथा               | ٩,       | २५८   |
| लोके कलुपयोनिजम्               | 90 | 46           | वणिक्पथं कुसीदं च                | 3        | ९०    |
| लोके किञ्चन विद्यते            | 8  | १३४          | वणिक्पशुकृषिर्विशः               | 30       | ૭૬    |
| लोके चैव यशस्करः               | 4  | ३८७          | वणिजो दापयेत्करान्               | 9        | १२७   |
| लोकेऽन्यं पुरुषं विदुः         | 6  | ९६           | वत्सस्य ह्यभिशस्तस्य             | 6        | 318   |
| लोके प्रामोति निन्धताम्        | ч  | १६४          | वत्सानां जनयेच्छतम्              | ९        | 40    |
| 17 17                          | ९  | ३०           | वदन्त्यसं मनीषिणः                | Ę        | 163   |
| लोके ब्रह्मोति कीर्त्यते       | 3  | 33           | "                                | 8        | २२१   |
| लोके भवति निन्दितः             | 8  | 340          | वदन्स्येतान्पुरातनान्            | Ę        | २१३   |
| लोकेभ्यः परिकृन्तति            | 8  | २१९          | वदान्यस्य च वार्धुषेः            | 8        | २२४   |
| लोकेशप्रभवाप्यय <b>म्</b>      | Ŋ  | · ९७         | वदेदिष्ट्रा च नानृतम्            | 8        | २३६   |
| लोकेशाधिष्ठितो राजा            | ч  | ९७           | वधदण्डमतः परम्                   | 6        | 129   |

| वधवन्धी च देहिनाम् ५ ४९ वर्जनीयाः प्रयक्षतः ३<br>वधेन शुद्धिति स्तेनः ११ १०० वर्जियत्वा चतुर्दशीम् ३<br>वधेनापि यदा त्वेतान् ८ १३० वर्जयेन्मधु मांसं च २ | 9 & &<br>? ७ &<br>9 ७ ७<br>9 ४ |
|--|--------------------------------|
|  | 300                            |
| वधेनापि यदा त्वेतान् ८ १३० वर्जयेन्मधु मांसं च   |                                |
|  | 38                             |
| वध्यवासांसि गृह्वीयुः १० ५६ " " ६  |                                |
| वध्यांश्च हन्युः सततम् १० ५६ वर्ज्यं भिन्नं तथासनम् ४  | ६९                             |
| वनं गच्छेत्सहैव वा ६ ३ वर्ज्याः स्युर्हेब्यकव्ययोः ३   | १५२                            |
| वनस्था अपि राज्यानि '७ ४० वर्णं रूपं प्रमाणं च ८   | ३२                             |
| वनस्पतिभ्य इत्येवम् ३ ८८ वर्णक्रमेण सर्वाणि ८  | २४                             |
| वनस्पतीनां सर्वेषाम् ८ २८५ वर्णधर्मान्निबोधत २   | २५                             |
| वनान्युपवनानि च ९ २६५ वर्णरूपोपसम्पन्नैः ४   | ६८                             |
| वने वसेस नियतः ६ १ वर्णानां ब्राह्मणः प्रभुः १०  | Ę                              |
| वनेषु च विहत्यैवम् ६ ३३ वर्णानां संकरं चक्रे ९   | ६७                             |
| वन्ध्याष्टमेऽधिवेद्याब्दे ९ ८१ वर्णानां सांतरालानाम् २   | 3 6                            |
| वन्यं मेध्यतरं हविः ६ १२ वर्णानामनुपूर्वशः ८   | १४२                            |
| वपनं न्यायवर्तिनाम् ५ १४० वर्णानामानुपूर्व्येण ११  | १३८                            |
| वपनं मेखलादण्डौ ११ १५१ वर्णानामाश्रमाणां च ७   | ३५                             |
| वपुर्धारयते नृपः ५ ९६ वर्णान्पञ्चदशैव तु १०  | ३१                             |
| वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी ७ ६४ वर्णापेतमविज्ञातम् १०  | مويع                           |
| वयसः कर्मणोऽर्थस्य ४ १८ वर्तन्ते सर्वे आश्रमाः ३   | ७७                             |
| वयोभिः खादयन्त्यन्ये ३ २६१ वर्तन्ते सर्वकर्मसु ९   | ३१९                            |
| वयोभिरिप वा श्वभिः ६ ५१ वर्तन्ते सर्वजन्तवः इ  | ৩৩                             |
| वयोरूपसमन्वितैः ८ १८२ वर्तयंश्र शिलोञ्छाभ्याम् ४   | 90                             |
| वरं विप्रः सुयन्नितः २ ११८ वर्तयन्तः स्वकर्मभिः १०   | ५०                             |
| वरं स्वधर्मो विगुणः १० ९७ वर्तयन्नेककालिकम् ११   | १२३                            |
| वरादादाय धर्मतः ३ २९ वर्तयन्वेदशास्त्रवित् ४   | २६०                            |
| वराय सद्दशाय च ९ ८८ वर्तेत पितृवञ्चषु ७  | 60                             |
| वराहमकराभ्यां वा ७ १८७ वर्षाणां तत्कृतं युगम् १  | ६९                             |
| वराहमहिषामिषैः ३ २७० वर्षासु च मघासु च   | २७३                            |
| वरिष्ठमिद्राहोत्रेभ्यः ७ ८४ वर्षास्वभावकाशिकः ६  | २३                             |
| वरुणायोपपादयेत् ९ २४४ वर्षे वर्षे अभेधेन ५   | ५ ५३                           |
| वरुणेन यथा पादौः ९ ३०८ वलीपलितमात्मनः ६  | . २                            |

| पाद                      | अ०  | श्लो | पाद                           | क्ष०       | স্কৌ০ |
|--------------------------|-----|------|-------------------------------|------------|-------|
| वल्मीकमिव पुत्तिकाः      | '૪  | २३८  | वाक् चैव मधुरा श्रद्धणा       | ₹          | 949   |
| वशाऽपुत्रासु चैवं स्यात् | ૮   | २८   | वाक्पारुष्यविनिर्णयम्         | ૮          | २६६   |
| वर्सेत याम्यया बृत्या    | ૮   | १७३  | वाक्पारुष्यस्य तस्वतः         | C          | २७८   |
| वर्त्तेयातां तु कामतः    | 9   | ६३   | वाक्पारुष्यार्थदृषणे          | •          | 49    |
| वर्त्तेयातां परस्परम्    | ९   | ६२   | वाक् शस्त्रं वे बाह्यणस्य     | 99         | ३३    |
| वर्धते तिद्ध सर्वदा      | 3   | 40   | वागेषा ब्रह्मपूजिता           | 6          | 63    |
| वशे कुर्वन्ति शत्रवः     | 6   | 108  | वागदण्डं प्रथमं कुर्यात्      | 4          | १२९   |
| वशे कृत्वेन्द्रियग्रामम् | 2   | 900  | वाग्दण्डजं च पारुष्यम्        | 9          | ४८    |
| वशे स्थापयितुं प्रजाः    | 9   | 88   | वाग्दण्डयोश्च पारुष्ये        | 6          | ७२    |
| वसनस्य दशा ग्राह्या      | ą   | 88   | वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः          | 92         | 30    |
| वसन्दूरतरे ग्रामात्      | 9 9 | १२८  | वाग्दुष्टः कुण्डगोलकौ         | 3          | १५६   |
| वसवश्चाचरन्व्रतम्        | 9 1 | २२१  | वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव       | 6          | ३४५   |
| वसा गुक्रमसृद्धाना       | 4   | १३५  | वाग्दैवत्यैश्च चरुभिः         | ć          | 904   |
| वसित्वा गर्दभाजिनम्      | 33  | 125  | वाग्बाह्यदरसंयतः              | 8          | 904   |
| वसित्वा मैथुनं वासः      | 8   | 115  | वाखायं स्याचतुर्विधम्         | 82         | ६     |
| वसिष्ठविहितां वृद्धिम्   | 6   | 180  | वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत्      | 8          | ३०    |
| वसिष्ठश्चापि शपथम्       | 4   | 990  | वाङ्मुला वाग्विनिःसृताः       | 8          | २५६   |
| वसिष्ठस्य सुकालिनः       | ३   | १९८  | वाचा चैव चतुर्विधम्           | १२         | C     |
| वसीत चर्म चीरं वा        | ક્  | Ę    | वाचा दारुणया क्षिपन्          | ઢ          | २७०   |
| वसीरकानुपूर्वेण          | २   | 88   | वाचा वाचा कृतं कर्म           | 38         | 6     |
| वसून्वदन्ति तु पितृन्    | 3   | २८४  | वाचा सत्ये कृते पतिः          | ९          | ६९    |
| वसेन्माध्यस्थ्यमाश्रितः  | 8   | २५७  | वाचिकैः पक्षिमृगताम्          | १२         | ९     |
| वसेयुरेते विज्ञानाः      | 90  | ५०   | वाचि प्राणे च पश्यन्तः        | 8          | २३    |
| वसेयुश्च गृहान्तिके      | 33  | 306  | वाच्यं गोष्ठे तु सुश्रुतम्    | Ę          | २५४   |
| वस्तं पत्रमलङ्कारम्      | 9   | २१९  | वाच्यः पूर्वाक्षरः प्लुतः     | <b>ર</b>   | 124   |
| वस्रपूत जलं पिबेत्       | Ę   | ४६   | वाच्यः स्यात्स्नातकैर्विप्रैः | 90         | 335   |
| वस्त्राभपानं देयं तु     | 3 3 | 328  | वाच्यिं मित्रमुस्सर्गे        | <b>9 २</b> | १२१   |
| वस्त्रापहारकः इवैत्र्यम् | 99  | 43   | वाच्यर्था नियताः सर्वे        | 8          | २५६   |
| वहेदिस्यब्रवीन्मनुः      | 6   | २०४  | वाच्यश्चानुपयन्पतिः           | <b>९</b>   | 8     |
| वाक् चतुर्थी च सृनृता    | Ę   | 309  | वाच्येके जुह्नति प्राणम्      | 8          | २३    |
| बाक चैव दशमी स्मृता      | 3   | ९०   | वाच्यो मातुररक्षिता           | ९          | 8     |

| पाद                          | अ०  | श्लो॰ | पाद                           | अ०       | ঞ্জী৹ |
|------------------------------|-----|-------|-------------------------------|----------|-------|
| वाच्यो विघ्रोऽभिवादने        | 2   | 824   | वासं जन्मं च दारुणम्          | 38       | 30    |
| वाणिज्यं कारयेद्वैश्यम्      | S   | 830   | वासन्तशारदैर्मेध्यैः          | ξ        | 99    |
| वाणिज्यं शूद्रसेवनम्         | 9 9 | ६९    | वासमात्यन्तिकं वसेत्          | 2        | २४२   |
| वातेन्द्रगुरुवह्वीनाम्       | 33  | 999   | वासांसि मृतचेळानि             | 90       | ५२    |
| वादयुद्धप्रधानाश्च           | 15  | ४६    | वासिष्टं च प्रतीत्यचम्        | 3 9      | २४९   |
| वादेष्ववचनीयेषु              | C   | २६९   | वासो दद्याद्धयं हत्वा         | 99       | १३६   |
| वानप्रस्थो यतिस्तथा          | ξ   | 62    | वासोदश्चन्द्रसालोक्यम्        | 8        | २३१   |
| वानरं रयेनभासी च             | 33  | १३५   | वास्तुमध्ये बिंह हरेत्        | 3        | 68    |
| वानस्पत्यं मूलफलम्           | 6   | ३३९   | वास्तुसंपादनं तिलाः           | ર        | २५५   |
| वान्ताशीत्युच्यते बुधेः      | ą   | 909   | वाहनानि च सर्वाणि             | <b>y</b> | 222   |
| वान्तारयुल्कामुखः प्रेतः     | 92  | ૭ ૧   | वाहनेन बलेन च                 | G        | १७२   |
| वान्तो विरिक्तः स्नात्वा तु  | 4   | 188   | विंशं कार्षापणावरम्           | 90       | 970   |
| वाप्यः प्रस्रवणानि च         | ć   | २४८   | विंशतीशं शतेशं च              | <u>s</u> | 994   |
| बामदेवो न लिप्तवान्          | 90  | १०६   | विंशतीशस्तु तत्सर्वम्         | ø        | 990   |
| वायसानां कृमीणां च           | 2   | ९२    | विंशी पञ्च कुलानि च           | e        | ११९   |
| वायुः कर्मार्ककाली च         | 4   | १०५   | विकर्मकियया नित्यम्           | ९        | २२६   |
| वायुभूतः खमूर्तिमान्         | २   | ८२    | विकर्मस्थाञ्छौिण्डकांश्च      | ९        | २२५   |
| वायुवचानुगच्छन्ति            | 3   | १८९   | विकर्मस्थास्तु ये द्विजाः     | 3 3      | ३९२   |
| वायोरिप विकुर्वाणात्         | 9   | ৩৩    | विकिरेचवसं गवाम्              | 3 9      | १९६   |
| वाय्वप्रिविप्रमादित्यम्      | я   | 88    | विकृतं न च जायते              | ९        | २४७   |
| वारिदस्तृप्तिमामोति          | 8   | २२९   | विकृतं प्राप्नुयाद्वधम्       | ९        | २९१   |
| वार्त्ता कर्मेंव वैश्यस्य    | 30  | ८०    | विकृताः पापकारिणः             | ९        | २८८   |
| वार्तायां नित्ययुक्तः स्यात् | ९   | ३२६   | विकृताकृतयस्तथा               | 99       | ५२    |
| वार्त्तारम्भांश्च लोकतः      | 9   | ४३    | विक्रयस्तावदेव सः             | •        | ५३    |
| वार्धुष्यं वतलोपनम्          | 99  | ६१    | विक्रयादिह कामतः              | 30       | ९३    |
| वार्धीणसस्य मांसेन           | 3   | २७१   | विकयाद्यो धनं किंचित्         | 4        | २०३   |
| वार्यञ्जगोमहीवासः            | 8   | २३३   | विकीणीत तिलाञ्छूद्रः          | 9 0      | ९०    |
| वार्यपि श्रद्धया दत्तम्      | રૂ  | २०२   | विकीणीते परस्य स्वम्          | 6        | 999   |
| वार्योकोवत्सषट्पदाः          | •   | १२९   | विक्रेयं वित्तवर्धनम्         | 90       | ८५    |
| वार्षिकांश्रतुरो मासान्      | ९   | ३०४   | विक्रोशन्त्यो यस्य राष्ट्रात् | 9        | १४३   |
| वालवासा जटी ध्वजी            | 33  | ९२    | विगतं तु विदेशस्थम्           | ų        | ७५    |

| पाद                     | अ०       | श्लो० | पाद                        | अ०           | श्लो॰        |
|-------------------------|----------|-------|----------------------------|--------------|--------------|
| विगीताशावबुध्यते        | 4        | पद    | विष्मुश्रस्य विसर्जनम्     | 8            | 88           |
| विघसाशी भवेशित्यम्      | ર        | २८५   | विण्मुत्रस्य विसर्जने      | 8            | 908          |
| विघसो अक्तरोषं तु       | ३        | २८५   | विण्मूत्रे रक्तमेव च       | 8            | १३२          |
| विघुष्य तु हतं चौरैः    | S        | २३३   | विण्मुत्रोत्सर्गञुष्यर्थम् | ų            | १३४          |
| विचरंस्तु कृतं युगम्    | <b>લ</b> | ३०२   | वितथाभिनिवेशश्च            | 8 5          | પ્           |
| विचरन्त्यपतिव्रता       | ९        | २०    | वितथेन बुवन्दर्पात् 🧪      | C            | २७३          |
| विचरेक्षियतो नित्यम्    | ६        | ५२    | वित्तं बन्धुर्वयः कर्म     | २            | १३६          |
| विचार्य तस्य वा वृत्तम् | 6        | 960   | वित्ताप्पत्योर्यमस्य च     | ų            | ९ ६          |
| विचार्य बहुविस्तरात्    | 97       | १२६   | विद्ध्याद्धितमात्मनः       | 9            | <b>પ</b> ુ છ |
| विचार्य सर्वपण्यानाम्   | 6        | 803   | विद्ध्यान्नुपतिर्दमम्      | ٩,           | २३०          |
| विजयश्च पराक्रमे        | <b>9</b> | 33    | विदुषा च जुगुप्सितम्       | 8            | २०९          |
| विजयेत रिपून् यथा       | 9        | 200   | विदुषा बाह्यणेनेदम्        | 9            | १०३          |
| विजिगीषोश्च चेष्टितम्   | (g)      | 944   | विदुषामिच्छयात्मनः         | 99           | ७३           |
| विजेतुं प्रयतेतारीन्    | 9        | १९८   | विदुषे दक्षिणं दत्त्वा     | ३            | १४३          |
| विज्ञातप्रकृतावृणम्     | 6        | 1     | विद्यास्तत्र सभासदः        | 6            | 9 2          |
| विज्ञानं चास्य रोचते    | ક        | २०    | विद्ययाऽमृतमदनुते          | १२           | 308          |
| विज्ञेयं परमं तपः       | Ę        | 90    | विद्ययैव समं कामम्         | <del>२</del> | 993          |
| विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् | २        | 63    | विद्यां चावेक्ष्य तत्त्वतः | 9            | ३ ६          |
| विज्ञेयः पापकृत्तमः     | 6        | ३४५   | विद्यागुरुष्वेतदेव         | 2            | २०६          |
| विज्ञेयः प्रसवं प्रति   | <b>९</b> | ५५    | विद्याध्छिद्धं परस्य तु    | ø            | १०५          |
| विज्ञेयस्तु प्रमाणतः    | 6        | १३७   | विद्यातपःसमृद्धेषु         | ર            | 96           |
| विज्ञेयाः पंक्तिपावनाः  | ą        | 826   | विद्यातपोभ्यां भूतात्मा    | ч            | 908          |
| यिज्ञेया गौणिकी गतिः    | 92       | 83    | विद्यातपोविद्यद्ध्यर्थम्   | ξ            | ₹•           |
| विज्ञेया त्रिविधा सुरा  | 33       | ९४    | विद्यात्तं पुरुषं परम्     | 15           | 922          |
| विज्ञेया हब्यसम्पदः     | 3        | २५६   | विद्यात्सर्वाङ्गतेषु च     | 8            | 336          |
| विज्ञेयो रोप्यमापकः     | 6        | १३५   | विद्यादर्घबलाबलम्          | ዓ            | ३२९          |
| विट्पण्यमुद्धतोद्धारम्  | 90       | ८५    | विद्यादुत्सादयेश्चेव       | ९            | २६७          |
| विट्शुद्धयोरेवमेव       | 6        | २७७   | विद्याद् धर्म्यानराक्षसान् | 3            | २३           |
| विट्शृदयोस्तु तानेव     | ą        | २३    | विद्याद्वैत्यात्त्रथैव च   | 30           | ६५           |
| विड्भुजां चैव पक्षिणाम् | 32       | ५६    | विद्याद् व्यसनमाः मवान्    | 9            | ५२           |
| विद्वराहखरोष्ट्राणाम्   | 99       | १५४   | विद्याधनं तु यद्यस्य!      | 9            | २०६          |

| पाद                            | ঞ্জ        | श्चो० | पाद                     | अ०       | स्रो०  |
|--------------------------------|------------|-------|-------------------------|----------|--------|
| विद्या ब्राह्मणमेस्याह         | ₹          | 338   | विधाय प्रोषिते वृत्तिम् | ९        | , 1944 |
| विचा भवति पद्ममी               | ₹          | 938   | विधाय वृत्ति भार्यायाः  | ९        | 98     |
| विद्यार्थं षट् यशोऽर्थं वा     | 9          | ७६    | विधि दण्डविनिर्णये      | 6        | ३०१    |
| विद्या शिल्पं मृतिः सेवा       | 90         | 998   | विधि धर्म्य प्रतिप्रहे  | 8        | 350    |
| विद्याहीनान्वयोऽधिकान्         | 8          | 181   | विधि भक्षणवर्जने        | ų        | २६     |
| विद्युता पार्थिवेन च           | Ŋ          | ९५    | विधि विष्रः समाहितः     | 3 3      | ८६     |
| विद्युते ऽश्तिमेघांश्च         | , <b>q</b> | ३८    | विधि हित्वा पिशाचवत्    | 4        | 40     |
| विद्युक्तिनितनिःस्वने          | 8          | १०६   | विधिः सम्बन्धिबान्धवैः  | 4        | 98     |
| विद्युत्स्तनितवर्षेपु          | 8          | १०३   | विधिः स्यात्त्वरिसाधने  | 4        | 966    |
| विद्वस्सु कृतबुद्धयः           | 9          | ९७    | विधिः स्यात्पूर्वचोदितः | ć        | १६०    |
| बिद्वद्भिः सप्तमे पदे          | 6          | २२७   | विधिज्ञोऽनापदि द्विजः   | ч        | े ३३   |
| विद्वद्भिः सेवितः सद्भिः       | २          | 9     | विधिना तेन सान्त्वयन्   | 6        | ૭ વ્   |
| विद्वांसमपि कर्षति             | २          | २१५   | विधिना नियतः ग्रुचिः    | २        | 900    |
| विद्वांसमपि वा पुनः            | ़र         | २१४   | विधिनानेन धर्मवित्      | 9        | १५२    |
| विद्वांस्तु ब्राह्मणो दृष्ट्वा | 6          | ३७    | विधिनाप्यर्जितं धनम्    | 8        | १९३    |
| विद्वानवगुरेदपि                | ક          | १६९   | विधियज्ञसमन्विताः       | २        | ८६     |
| विद्वानश्राद्धिनो द्विजः       | ષ્ઠ        | २२३   | विधियज्ञाज्जपयज्ञः      | <b>ર</b> | ८५     |
| विद्वान्यन्तेव वाजिनाम्        | २          | 66    | विधिरुद्वाहकर्मणि       | ३        | ४३     |
| विद्वेपं चाधिगच्छति            | 6          | ३४६   | विधिरेष सनातनः          | 90       | ৩      |
| विद्वेषं वाधिगच्छति            | ₹          | 999   | विधिर्नात्मोपजीविषु     | 6        | ३६२    |
| विधवायां नियुक्तस्तु           | ९          | ६०    | विधिवत्पूर्वमाशयेत्     | <b>ર</b> | २१९    |
| विधवायां नियोगार्थे            | ९          | ६२    | विधिवन्प्रतिगृह्य च     | 33       | 388    |
| विधवा वा स्वयेच्छ्या           | <b>ς</b>   | 904   | विधिवस्त्रतिगृह्यापि    | ٩        | ७२     |
| विधवावेदनं पुनः                | ९          | ६५    | विधिवस्प्रेत्य चेह च    | 3        | 183    |
| विधवास्वातुरासु च              | 6          | २८    | विधिवत्स्नातको द्विजः   | ६        | 3      |
| विधाता शासिता वक्ता            | 33         | ३५    | विधिवद्वाहयामास         | 3        | 46     |
| विधानं पाञ्चयज्ञिकम्           | ३          | २८६   | विधिवद्दर्भपाणिना       | इ        | २७९    |
| विधानं श्रूयतामिति             | ર          | २८६   | विधिवद्रह्मचारिणे       | ३        | ९४     |
| विधानमिदमाचरेत्                | •          | ११३   | विधिवद्वन्दनं कुर्यात्  | <b>ર</b> | २१६    |
| विधानस्य स्वयंभुवः             | 9          | ર     | विधिवद्वेदपारगः         | <b>ર</b> | 288    |
| विधाने दैवमानुषे               | •          | २०५   | विधिवन्निर्वपेत्पृथक्   | Ę        | 3 3    |

| पाद                       | अ०       | श्हो॰     | पाद                           | अ०         | स्रो० |
|---------------------------|----------|-----------|-------------------------------|------------|-------|
| विधूमे सन्नमुसले          | ६        | ५६        | विप्रः प्रत्यभिवादनम्         | ₹          | 125   |
| विधेः प्रतिनिधिः कृतः     | 33       | २९        | विप्रः शुद्धात्यपः स्पृष्ट्वा | 4          | ९९    |
| विनयास्त्रतिपेदिरे        | •        | 80        | विप्र आख्यो विणङ् नृपः        | 6          | 989   |
| विनदयस्याशु तत्कुलम्      | 3        | 40        | विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता   | 99         | ३७६   |
| विनक्यत्याशु तत्कृत्स्नम् | ۵        | <b>२२</b> | विप्रयोगं प्रियैश्चैव         | Ę          | ६२    |
| विनश्यन्ति समन्ततः        | ₹        | ५८        | विप्रवद्वापि तं श्राद्धे      | 3          | २२०   |
| विनाद्भिरप्सु वाप्यार्तः  | 99       | २०२       | विप्रश्चेन्दुक्षयेऽग्निमान्   | 3          | 922   |
| विना वा तैर्गृहे वसन्     | 8        | २५२       | विप्रसेवेव शूद्रस्य           | 90         | १२३   |
| विनाशं व्रजति क्षिप्रम्   | 3        | 198       | विप्रस्य तिश्वमित्ते वा       | 3 3        | ८०    |
| विनाशयति वा पुनः          | ९        | 909       | विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु       | 90         | 90    |
| विनाशयति सर्वतः           | <b>y</b> | 99        | विप्रस्य विदुषो देहे          | ક          | 3 3 3 |
| विनिपातो न विचते          | 8        | १४६       | विप्रस्येदं निबोधत            | <b>૧</b> ૨ | ८२    |
| विनिपात्य द्विजोत्तमः     | 3 9      | 120       | विप्रस्योत्पाच शोणितम्        | 9 9        | २०८   |
| विनीतः प्रविशेत्सभाम्     | 4        | 9         | विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत्   | २          | 88    |
| विनीतवेषाभरणः             | 6        | ₹         | वित्रस्यौद्धारिकं देयम्       | 9          | 140   |
| विनीतात्मापि निस्यशः      | 9        | ३९        | विप्राः प्राहुस्तथा चैतत्     | 3          | २०८   |
| विनीतात्मा हि नृपतिः      | 9        | ३९        | विप्राञ्जूद्रवदाचरेत्         | 6          | १०२   |
| विनीतैस्तु वजेश्वित्यम्   | 8        | ६८        | विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ट्यम  | र् २       | 344   |
| विन्दते नेच्छयात्मनः      | ९        | 94        | विप्रांस्तानुपवेशयेत्         | ą          | २०८   |
| विन्देत सदृशं पतिम्       | ९        | ९०        | विप्राणां पूजको भवेत्         | ૭          | ८२    |
| विन्देरन्योषितो द्विजाः   | ዓ        | ८५        | विष्राणां वेदविदुपाम्         | ९`         | ३३४   |
| विन्यसेट्ययतः पूर्वम्     | 3        | २२६       | विप्राणामस्य कुर्वतः          | 4          | २७२   |
| विपणेन च जीवन्तः          | ર        | १५२       | विप्राणामेव निर्दिशेत्        | Ę          | १९९   |
| विपरीतं तु वर्जयेत्       | 8        | 1 & 9     | विप्रानाराधयेतु सः            | 30         | १२२   |
| विपरीतं नयन्तस्तु         | 6        | २५७       | विश्रान्तिके पितृन्ध्यायन्    | Ę          | २२४   |
| विपरीतस्तथैव च            | 9        | १६३       | विप्रान्वेदविदः शुचीन्        | 9          | ३८    |
| विपरीतांश्च वर्जयेत्      | 8        | ३१        | विप्रा वेदविद्स्रयः           | 6          | 3 3   |
| विपरीतांस्तु वर्जयेत्     | 6        | ६३        | विश्रुषोंऽगे पतन्ति याः       | 4          | 181   |
| विपालान्वारयेत्पश्चन्     | 6        | २४०       | विप्रेषु प्रतिपादयेत्         | 33         | Ę     |
| विपुलाद्वा धनागमात्       | 6        | ३४७       | विप्रो गोबाह्यणानलान्         | 8          | 185   |
| विप्रं साङ्गतिकं तथा      | રૂ       | १०३       | विघोऽजीवन्यतस्ततः             | 90         | 112   |
|                           |          |           |                               |            |       |

| पाद                         | अ०       | श्लो०    | पाद                         | अ०       | श्लो॰ |
|-----------------------------|----------|----------|-----------------------------|----------|-------|
| विय्रो जीवेदनापदि           | ૪        | <b>२</b> | विवादं न समाचरेत्           | 8        | 960   |
| विप्रो दद्याच्छनैः शनैः     | <b>લ</b> | २२९      | विवादं सम्प्रवक्ष्यामि      | 6        | २२९   |
| विप्रो धर्मात्स्वकाच्च्युतः | 9 २      | <b>9</b> | विवादः स्वामिपालयोः         | 6        | ug    |
| विप्रो निहृत्य बन्धुवत्     | بع       | 303      | विवादे प्रामयोर्द्धयोः      | 6        | २४५   |
| विप्रो भिक्षेत कर्हिचित्    | 99       | २४       | विवादे वा विनिर्जित्य       | 3 3      | २०५   |
| विप्रोष्य तूपसंप्राद्या     | <b>ર</b> | १३२      | विवास्यो वा भवेद्राष्ट्रात् | ९        | 288   |
| विप्रोध्य पादग्रहणम्        | <b>ર</b> | २९७      | विवाहः सद्देशः सह           | 80       | ५३    |
| विष्ठचे कालकारिते           | 6        | ३४८      | विवाहानां च लक्षणम्         | 3        | 992   |
| विष्ठुतौ शूद्रवदण्ड्यौ      | 6        | ३७७      | विवाहेष्वासुरादिषु          | ९        | 390   |
| विबुधानुचराश्च ये           | 3 3      | ४७       | विवाहो पूर्वचोदितौ          | ą        | २६    |
| विद्यवन्दण्डमहीत            | ۵        | १९४      | विविक्तेषु च तुष्यन्ति      | ર        | २०७   |
| विद्यवनार्यसंसदि            | 6        | ७५       | विविक्ते हितमात्मनः         | 8        | २५८   |
| विभक्ताः सहजीवन्तः          | ٩        | २१०      | विविधांश्च विहंगमान्        | 3        | ३९    |
| विभजेत स तैः सह             | ९        | २१६      | विविधानि च रत्नानि          | 9 2      | ६१    |
| विभजेरन्युनर्यदि            | <b>લ</b> | २१०      | विविधानि च शिल्पानि         | <b>ર</b> | २४०   |
| विभागधर्म द्युतं च          | 9        | 114      | विविधानि भयानि च            | 97       | ७७    |
| विभागस्यैकयोनिषु            | ९        | 388      | विविधाश्चैव संपीडाः         | 35       | ७६    |
| विभागेऽयं विधिः स्मृतः      | ٩,       | 188      | विविधाश्चौपनिषदीः           | ६        | २९    |
| विभूषणपरिच्हदा              | ዔ        | ૭૯       | विविधेन वधेन च              | 6        | 290   |
| विमुखा बान्धवा यान्ति       | ૪        | २४१      | विविधैरासदक्षिणैः           | و        | ७९    |
| वियुक्तांवितरेतरम्          | ९        | १०२      | विवृद्धर्थं स्ववंशस्य       | ९        | १२८   |
| वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्याम्    | <b>©</b> | ४६       | विशिष्टं कर्म कीर्त्त्यते   | 90       | १२३   |
| विरमेत्पक्षिणीं रात्रिम्    | 8        | ९७       | विशिष्टं कुत्रचिद्धीजम्     | <b>९</b> | ३४    |
| विराजमसृज्यभुः              | 3        | ३२       | विशिष्टानि स्वकर्मसु        | 30       | 60    |
| विराट्सुताः सोमसदः          | રૂ       | 394      | विशिष्टो दशभिर्गुणैः        | 3        | ८५    |
| विरामोऽस्विति चारमेत्       | २        | ७३       | विर्शार्थेतापराधतः          | 6        | ४०८   |
| विरोचिष्णु तमोनुदम्         | 9        | 99       | विशीलः कामवृत्तो वा         | ч        | 348   |
| विवत्सायाश्च गोः पयः        | 4        | 6        | विशुद्धाच्च प्रतिप्रहः      | 90       | ७६    |
| विवशः शतमाजातीः             | 4        | ८२       | विद्युद्धानिप धर्मतः        | 99       | 120   |
| विवस्वत्सुत एव च            | 9        | ६२       | विद्युद्धिनैंशिकी स्मृता    | ч        | ६७    |
| विवादं चरतां नृणाम्         | 6        | 6        | विशुद्धित त्रिरात्रेण       | ч        | 303   |

# मनुपादानुक्रमणी।

|                               |            | 5           |                          |     |            |
|-------------------------------|------------|-------------|--------------------------|-----|------------|
| ्पाद                          | अ०         | श्लो०       | पाद                      | अ०  | श्चो॰      |
| वृथोत्पन्नं प्रचक्षते         | ९          | 180         | वेदं विश्वान्य च द्विजः  | 3 3 | 986        |
| वृद्धं पात्रेषु निःक्षिपेत्   | 9          | ९९          | वेदः कृत्स्रोऽधिगन्तव्यः | 7   | १६५        |
| "                             | હ          | 909         | वेदः सपरिबृहणः           | १२  | 309        |
| बृद्धया वापि योषिता           | ય          | 980         | वेदः स्मृतिः सदाचारः     | २   | <b>१</b> २ |
| वृद्धसेवी हि सततम्            | છ          | ३८          | वेदतत्त्वार्थमेव च       | 8   | ९२         |
| वृद्धांश्च नित्यं सेवेत       | , <b>•</b> | ३८          | वेदतत्त्वार्थविदुषे      | ३   | ९६         |
| वृद्धि नैव प्रयोजयेत्         | 30         | 339         | वेदतस्वार्थविद् द्विजः   | પ   | ४२         |
| वृद्धी च मातापितरी            | 99         | 90          | वेदत्रयाशिरदुइत्         | २   | ७६         |
| वृधोस्तक्ष्णो महातपाः         | 90         | 300         | वेदनिन्दक एव च           | રૂ  | 181        |
| <b>बृश्चनप्र</b> भवांस्तथा    | بع         | Ę           | वेदपुण्येन युज्यते       | २   | 96         |
| वृषभैकसहस्रा गाः              | 33         | 920         | वेदप्रदानादाचार्यम्      | २   | 303        |
| वृषभैकादशा गाश्च              | 99         | 338         | वेदमध्यापयेद् द्विजः     | ?   | 380        |
| वृषभैकादशा वापि               | 99         | १३०         | वेदमध्येष्यमाणश्च        | ų   | १३८        |
| <b>वृष</b> लं तं विदुर्देवाः  | 6          | १६          | वेदमेव सदाभ्यस्येत्      | २   | १६६        |
| वृषलत्वं गता लोके             | 30         | ४३          | वेदमेवाभ्यसेन्नित्यम्    | 8   | 180        |
| वृषलस्य च संनिधौ              | 8          | 308         | वेदयज्ञैरहीनानाम्        | 7   | १८३        |
| <b>वृष</b> लाश्युपसेविनाम्    | 33         | ४३          | वेदयेद्धनिकं नृपे        | 6   | ३७६        |
| वृपलाय प्रयच्छति              | ३          | २४९         | वेदविश्वापि विप्रोऽस्य   | ą   | 399        |
| वृषलीपतिरेव च                 | રૂ         | 944         | वेदवित्सु विविक्तेषु     | 99  | Ę          |
| <b>वृ</b> षलीफेनपीतस्य        | રૂ         | 99          | वेदविद्भ्यो निवेदयेत्    | 99  | 998        |
| <b>मृ</b> षस्रीसेवनाद् द्विजः | 3 3        | 308         | वेदविद्यावतस्नातान्      | B   | 21         |
| वृषल्या सह मोदते              | ą          | 999         | वेदशब्देभ्य एवादी        | 9   | २१         |
| <b>वृ</b> षान्देवपश्चंस्तथा   | 6          | २४२         | वेदशास्त्रं सनातनम्      | 12  | ९९         |
| वृषो हि भगवान्धर्मः           | 6          | १६          | वेदशास्त्रमिति स्थितिः   | 92  | ९४         |
| बृष्टेरश्नं ततः प्रजाः        | 3          | ७ ६         | वेदशास्त्रविद्हिति       | 92  | 300        |
| वेणानां भाण्डवादनम्           | 90         | જુ <b>લ</b> | वेदशास्त्रविदां प्रभो    | 4   | २२         |
| वेणुवैदलभाण्डानाम्            | 4          | ३२७         | वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः | 9 2 | 902        |
| वेतनस्यानपिकयाम्              | 6          | २१४         | वेदशास्त्राविरोधिना      | 12  | १०६        |
| वेतनस्यव चादानम्              | 6          | ч           | वेदश्रक्षुः सनातनम्      | 92  | 98         |
| वेतनादानकर्मणः                | 6          | २१८         | वेदसंन्यासिकानां तु      | Ę   | 82         |
| वेदं वापि यथाक्रमम्           | 3          | ૨           | वेदस्पृतिविधानतः         | Ę   | 68         |
| •                             |            |             |                          | -   | _          |

| पाद                      | अ०       | स्रो० | पाद                         | अ० | श्लो॰      |
|--------------------------|----------|-------|-----------------------------|----|------------|
| वेदस्याधीस्य वाप्यन्तम्  | 8        | १२३   | वेशमद्यान्नविकयाः           | 9  | २६४        |
| वेदाः सन्ततिरेव च        | Ę        | ३५९   | वेशेनैव च जीवताम्           | В  | 82         |
| वेदाङ्गानि च सर्वाणि     | 8        | 96    | वेषवाग्बुद्धिसारूप्यम्      | B  | 96         |
| वेदाङ्गान्यपि वा पुनः    | २        | 181   | वेषाभरणसंशुद्धाः            | 9  | २१९        |
| वेदा ज्योतींषि वत्सराः   | 12       | ४९    | वेष्टिताः कर्महेतुना        | 9  | ४९         |
| वेदादेव प्रसूयन्ते       | 9 २      | 94    | वैखानसमते स्थितः            | Ę  | २१         |
| वेदाद्धर्मो हि निर्धभौ   | ų        | 88    | वैगुण्याज्जन्मनः पूर्वः     | 30 | ६८         |
| वेदानधीत्य वेदो वा       | 3        | ₹     | वैगुण्यात्पाजकस्य तु        | ૮  | २९३        |
| वेदानध्ययनेन च           | 3        | ६३    | वैणवीं धारयेद्यष्टिम्       | 8  | ३६         |
| वेदान्तं विधिवस्रृत्वा   | ६        | ९४    | वैतानिकं च जुहुयात्         | ६  | 9          |
| वेदान्ताभिहितं च यत्     | ξ        | ૮३    | वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत्   | ч  | १२८        |
| वेदान्तोपगतं फलम्        | <b>ર</b> | १६०   | वैदलानां तथैव च             | 4  | 999        |
| वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानम्   | १२       | ३१    | वैदिकं वाप्युदाहरेत्        | 33 | ९६         |
| ,, 3,                    | १२       | ८३    | वैदिके कर्मयोगे तु          | 35 | 62         |
| वेदाभ्यासे च यसवान्      | 92       | ९२    | वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैः     | 3  | २६         |
| वेदाभ्यासेन शुध्यति      | 99       | ४६    | वैदिकेश्चेव कर्मभिः         | Ę  | 94         |
| वेदाभ्यासेन सततम्        | 8        | 386   | वैदेहकानां स्त्रीकार्यम्    | 10 | 80         |
| वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या | 33       | २४५   | वैदेहकेन त्वम्बप्ट्याम्     | 90 | 99         |
| वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य   | 90       | ८०    | वैदेहकादन्ध्रमेदी           | 90 | 3 &        |
| वेदाभ्यासो हि विप्रस्य   | २        | १६६   | वैदेद्यामेव जायते           | 10 | <b>3</b> 9 |
| वेदार्थवित्प्रवक्ता च    | Ę        | १८६   | वैरं कुवींत केनचित्         | Ę  | ४७         |
| वेदास्त्यागाश्च यज्ञाश्च | २        | ९७    | वैरिणं नोपसेवेत             | 8  | 133        |
| वेदितन्याः स्वकर्मभिः    | 90       | 80    | वैवाहिकेऽभ्रो कुर्वीत       | ર  | ६ ७        |
| वेदे त्रिवृति मजाति      | 99       | २६३   | वैवाहिको विधिः स्नीणाम्     | २  | ६७         |
| वेदोक्तमायुर्मर्त्यानाम् | 9        | ८४    | वैशेष्याध्यकृतिश्रेष्ट्यात् | 30 | 3          |
| वेदोऽखिलो धर्ममूलम्      | २        | Ę     | वैश्यं क्षेमं समागस्य       | ₹  | 920        |
| वेदोदितं स्वकं कर्म      | 8        | 38    | वैश्यं पञ्चशतं कुर्यात्     | 6  | ३७६        |
| वेदोदितानां निन्यानाम्   | 9 9      | २०३   | वैश्यं प्रति तथैवैते        | 90 | 30         |
| वेदोपकरणे चैव            | <b>ર</b> | 904   | वैश्यं श्रुद्रो जिजीविषेत्  | 30 | 121        |
| वेने राज्यं प्रशासति     | ٩        | ६६    | वैश्यः पञ्चदशाहेन           | ч  | ८३         |
| वेगो विनष्टोऽविनयात्     | U        | 83    | वैश्यः प्रतोदं रश्मीन्या    | 4  | ९९         |

#### मनुपादानुक्रमणी।

| पाद                            | अ०       | श्लो० | पाद                         | अ०  | स्रो०      |
|--------------------------------|----------|-------|-----------------------------|-----|------------|
| वैश्यः सर्वस्वदण्ड्यः स्या     | त् ८     | ३७५   | वैश्ये चेच्छति नान्येन      | ९   | ३२८        |
| वैश्यभावं नियच्छति             | 90       | ९३    | वैश्ये पञ्चशतं दमः          | G   | ३८४        |
| वैश्यराजन्यविश्रासु            | 30       | 8 2   | वैश्येऽष्टमांशो धृत्तस्थे   | 99  | 126        |
| वैश्यवच्छीचकल्पश्च             | ષ્       | 180   | वैश्ये स्याद्धंपञ्चाशत्     | 6   | २६८        |
| वैश्यवृत्तिमनातिष्ठन्          | 90       | 303   | वैश्योऽजीवन्स्वधर्मेण       | 90  | 96         |
| वैश्यवृत्त्यापि जीवंस्तु       | 90       | ८३    | वैश्योऽद्भिः प्राशिनाभिस्तु | ą   | ६२         |
| वैश्यशृद्धाविप प्राप्ती        | ३        | 992   | वैश्योऽप्यर्धशतं हे वा      | 4   | २६७        |
| वैश्यशूद्रोपचारं च             | 3        | ११६   | वैश्यो भवति पूयभुक          | 92  | ५ ए        |
| वैश्यशूद्रौ प्रयत्नेन          | 6        | 816   | वैश्वदेवं प्रति द्विजम्     | ą   | ८३         |
| वैश्यशूद्री सखा चैव            | ą        | 190   | वैश्वदेवं हि नामैतत्        | ą   | 929        |
| वेश्यश्च न सुरां पिबेत्        | 9 9      | ९३    | वैश्वदेवस्य बान्धवाः        | 8   | १८३        |
| वैश्यश्चेत्क्षत्रियां गुप्ताम् | ۵        | ३८२   | वैश्वदेवस्य सिद्धस्य        | * ३ | 82         |
| वैश्यस्तु कृतसंस्कारः          | ९        | ३२६   | वैश्वदेवे तु निर्वृत्ते     | ą   | 306        |
| वैश्यस्तु भवदुत्तरम्           | <b>ર</b> | ४९    | वोदुः कन्या प्रद्।यते       | 6   | २०४        |
| वैश्यस्य कृषिमेव च             | 9        | 90    | वोद्धः कन्यासमुद्धवम्       | 9   | 992        |
| वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता       | 33       | २३५   | वोद्धः स गर्भो भवति         | ९   | १७३        |
| वैश्यस्य द्यधिके ततः           | ₹        | ६५    | व्यङ्गारे भुक्तवज्ञने       | ६   | <b>५</b> ६ |
| वेश्यस्य धनसंयुक्तम्           | ₹        | ३१    | व्यजनोदकधृपनैः              | 9   | २१९        |
| वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तम्       | २        | ३२    | व्यतिरिक्ता न सिद्धति       | 6   | १५२        |
| वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन्       | 80       | 90    | व्यत्यस्तपाणिना कार्यम्     | ₹   | 97         |
| वैश्यस्य शणतान्तवी             | ₹        | ४२    | व्यपेतकल्मपो नित्यम्        | 8   | २६०        |
| वैश्यात्तु जायते वात्यात्      | 90       | २३    | <b>च्य</b> पेतकल्मषोऽभ्येति | 92  | 96         |
| वैश्यस्याविकसौन्निकम्          | २        | 88    | व्यपैति ददतः स्वधा          | ९   | १४२        |
| वैत्रयस्येहार्थिनोऽष्टमे       | २        | ३७    | ब्यपाहत्यात्मवत्तया         | 99  | ८६         |
| वैश्यां वा क्षत्रियो व्रजेत्   | ૮        | ३८२   | व्यपोद्य किल्बिषं सर्वम्    | 6   | ४२०        |
| वैश्याजः सार्धमेवांशम्         | g        | 949   | व्यभिचारातु भर्तुः स्नी     | ९   | ३०         |
| वैश्यानां धान्यधनतः            | २        | 944   | **                          | 4   | १६४        |
| वैश्यानामाज्यपानाम             | 3        | 990   | ब्यभिचारेण वर्णानाम्        | 90  | २४         |
| वैश्यान्मागधवेदेही             | 30       | 3 3   | व्यये चामुक्तहस्तया         | ч   | 940        |
| <b>;</b> ;                     | 90       | 90    | ब्यये चैव नियोजयेत्         | 9   | 3 3        |
| वैश्यापुत्रो हरेद् द्यंशम्     | ९        | १५३   | व्यवहारं समाचरेत्           | 6   | १६७        |

| पाद                              | अ०       | श्ची०         | पाद                          | अ०   | श्लो       |
|----------------------------------|----------|---------------|------------------------------|------|------------|
| व्यवहारविधी स्थितः               | 6        | 84            | म्युहेन म्यूझ योधयेत्        | •    | 191        |
| <b>म्यवहारस्थिताविह</b>          | હ        | •             | वजन्ति परमां गरिम्           | 9.0  | 120        |
| व्यवहारस्य निर्णयः               | 4        | ४०९           | म जन्तीष्यप्य नुम <b>ेत्</b> | 33   | 999        |
| 1) 73                            | Q        | २५०           | वजन्त्यचादिदायिनाम्          | 3    | 808        |
| <b>म्यवहारान्दिरश्चस्तु</b>      | 4        | 1             | <b>नजेदिशमजिह्यगः</b>        | Ę    | <b>3</b> 3 |
| <b>म्बव</b> हारान्समापयन्        | 6        | ४२०           | व्रणशोणितयोस्तथा             | 6    | 989        |
| व्यवहारेण जीवन्तम्               | 9        | १३७           | वतं रक्षांसि गच्छति          | ૪    | 388        |
| व्यवहारे यथा स्थितिः             | 4        | 199           | व्रतचर्योपचारं च             | 3    | 3 3.3      |
| व्यवहारेषु साक्षिणः              | 4        | ६१            | व्रतमस्य न लुप्यते           | 3    | 368        |
| व्यवहारो न सिद्धति               | 6        | 163           | वतमेति सास्तम्               | ۹,   | ३०६        |
| व्यवहारो मिथस्तेषाम्             | 30       | ५३            | वतमेतद्धि वारुगम्            | ९    | 3,06       |
| व्यस्तस्य च मृत्योश्च            | <b>9</b> | પર            | व्रतवहेवदेवत्ये              | २    | 369        |
| व्यसनानि तथैव च                  | <b>Q</b> | २९९           | मतशेषं समापयेत्              | 33   | 146        |
| ब्यसनानि दुरन्तानि               | •        | 84            | वतस्थमपि दौहित्रम्           | 3    | २३४        |
| न्यसने चोत्थिते रिपोः            | (9       | 963           | व्रतस्थस्य हिजन्मनः          | 33   | 920        |
| व्यसनेषु महीपतिः                 | ٩        | ४५६           | व्रतादेशनमिष्यते ।           | ₹    | १७३        |
| व्यसन्यघोऽघो व्रजति              | •        | ५३            | व्रतानां विविधो विधिः        | 33   | 1 & 9      |
| व्यस्तैश्वेव समस्तैरच            | •        | 949           | वतानां भूयतां विभिः          | 33   | 9 8.9      |
| <b>ब्याधाम्डा</b> कुनिकान्गोपान् | 4        | २६०           | व्रतानि यमधर्माश्च           | २    | 3          |
| ब्याधितो विप्रदुष्टां का         | ९        | <b>9</b>      | व्रतानीमानि धारयेत्          | Я    | 93         |
| न्याधिता वाऽधिवेसन्या            | 9        | 60            | व्रतिनां न च सत्रिणाम्       | ષ્કુ | ९३         |
| न्याधितोऽल्पायुरेव च             | 8        | 140           | वतेन पापं प्रच्छाच           | 8    | 196        |
| व्याधिभिश्चन पीक्यते             | 4        | ५०            | <b>मतैराविष्कृतैनसः</b>      | 33   | २२६        |
| न्याधिभिश्चोपपी <b>ड</b> नम्     | ६        | ६२            | वतैरेभिरपानुदेत्             | 33   | 305        |
| "                                | 35       | ८०            | )) ))                        | 33   | 150        |
| व्यामिश्रमांनुषो भवेत्           | 35       | ٩             | व्रतेश्च विधिचोदितैः         | ₹    | 164        |
| ध्यायम्याप्कुत्य मध्याद्वे       | •        | २१६           | मात्यता बान्धवत्यागः         | 11   | ६२         |
| <b>म्यालपाहानुम्छवृत्तीन्</b>    | 6        | २६०           | वात्यता सह संवासे            | 6    | ३७३        |
| <b>न्यालाश्चोभयतोवतः</b>         | 3        | <del>४३</del> | बात्याचु जायते विमात्        | 80   | ₹ \$       |
| <b>ध्या</b> कांश्चाभयतोदतः       | 9        | ३९            | वात्यानां याजनं कृत्वा       | 3 3  | 9 20       |
| मास् तिष्रणवैर्युक्ताः           | É        | 90            | मात्यानिति विनिर्दिशेत्      | 10   | ₹ 0        |

#### मनुपादासुकमणी।

| पाद                        | अ०         | श्लो० | पाद                     | भ        | श्लो० |
|----------------------------|------------|-------|-------------------------|----------|-------|
| वात्या सिच्छिवरेव च        | 30         | २२    | शताद्भ्यधिके वधः        | 6        | ३२१   |
| मीहयः शालयो मुक्तः         | 9          | ३९    | शतानि पञ्च दण्ड्यः स्य  | ात् ४    | २६४   |
| হ্য                        |            |       | ,,,                     | 6        | 306   |
| शंस नस्तत्त्वतः पराम्      | <b>9</b>   | 5     | ;; 99                   | 4        | ३८५   |
| शंसेद्वामदशेशाय            | 9          | 338   | शतायुश्चैब विज्ञेयाः    | Ą        | १८६   |
| शंसेद्वामशतेशस्तु          | , <b>9</b> | 199   | शतेशाय निवेदयेत्        | •        | 330   |
| शकुनिः फलपातने             | બ          | १३०   | शत्रुभिर्नाभिभूयते      | G        | 309   |
| शक्तं कर्मण्यदुष्टं च      | 4          | 366   | शत्रुसेविनि मित्रे च    | •        | १८६   |
| शक्तः परजने दाता           | 9 9        | ९     | शत्रोश्चैव प्रयत्नतः    | •        | १५५   |
| शक्ति चावेक्ष्य दाक्ष्यं च | 90         | 128   | शनकैः सान्स्वयक्षरीन्   | •        | 302   |
| शक्ति चावेक्ष्य पापं च     | 3 3        | २०९   | शनकैः सुसमाहितः         | Ę        | २२८   |
| शक्तितः प्रतिपूजयेत्       | ३          | २४३   | शनकैरुपनिक्षिपेत्       | 3        | २२४   |
| शक्तितोऽनर्चितोऽतिथिः      | 8          | २९    | शनकैर्निर्वपेद् भुवि    | 3        | ९२    |
| शक्तितो नाभिधावन्तः        | ९          | २७४   | शनकैर्व शमानयेत्        | 9        | 306   |
| शक्तितोऽपचमानेभ्यः         | 8          | ३२    | शनकैस्तु क्रियालोपात्   | 30       | .83   |
| शक्तिं चोभयतस्तीक्ष्णाम्   | 6          | ३१५   | शनैः पञ्चेन्द्रियाणि च  | 3        | 94    |
| शक्तेनापि हि श्रृद्धेण     | 33         | 128   | शनैः पिण्डान्तिके पुनः  | ¥        | २१८   |
| शक्त्या गुर्वर्थमाहरेत्    | ঽ          | २४५   | शनैरावर्समानस्तु        | 8        | 302   |
| शक्यास्ताः परिरक्षितुम्    | ९          | 30    | शपथेनापि लम्भयेत्       | 6        | 306   |
| शङ्कपुष्पीश्रितं पयः       | 3 3        | 180   | श्रपथे नास्ति पातकम्    | 4        | 992   |
| शठो मिध्याविनीतश्च         | 8          | 998   | शपथेश्चेव वैदिकैः       | 6        | 990   |
| शणसूत्रमयं राज्ञः          | <b>ર</b>   | 88    | शपन्त्यप्रतिपूजिताः     | 3        | 46    |
| शतं दशसहस्राणि             | <b>(9</b>  | હ     | शब्दः स्पर्शेश्व रूपं च | <b>3</b> | 84    |
| शतं ब्राह्मणमाकुश्य        | 6          | २६७   | शमीवल्लीस्थलानि च       | 4        | २४७   |
| शतं वर्षाणि जीवति          | ક્ર        | 946   | शम्यापातास्त्रयो वापि   | 6        | २३७   |
| शतं वर्षाणि तामिस्रे       | 8          | १६५   | शयनस्थो न भुजीत         | 8        | હ છ   |
| शतमधानुते हन्ति            | l          | 96    | शयने तप्त आयसे          | 4        | ३७२   |
| शतमानं च राजतम्            | 6          | २२०   | शयानं कामचारतः          | 2        | २२०   |
| शतमामस्तु राजतः            | 6          | १३७   | शयानः प्रौढपादश्च       | 8        | 335   |
| शतवर्षं तु भूमिपम्         | <b>२</b>   | 934   | शयानो न समाचरेत्        | ?        | 994   |
| शतशो गुरुतल्पगः            | 3.5        | ५८    | श्रयानोऽभ्युदितश्च यः   | 9        | २२१   |

| पाद                         | अ०       | स्रो०      | पाद                              | <b>e 16</b> | स्रो० |
|-----------------------------|----------|------------|----------------------------------|-------------|-------|
| शयीरंश्च प्रथक् क्षिती      | ્ષ       | ७३         | शसाणामीषधस्य च                   | 9           | २९३   |
| शच्यां गृहान्कुशान्मन्धान्  | 8        | २५०        | शकाण्याभरणानि ख                  | <b>Q</b>    | २२२   |
| शच्याश्चाभरणानि च           | 90       | ५६         | शसास्त्रभृत्वं क्षत्रस्य         | 90          | ७९    |
| शय्यासनमलंकारम्             | 9        | 99         | शकेण च परिक्षते                  | 8           | 933   |
| शच्यासनस्थश्चेवैवम्         | ą        | 119        | शक्रेण वैश्यान् रक्षित्वा        | 10          | 119   |
| शय्यासनेऽध्याचरिते          | <b>ર</b> | 119        | शाकं चैव न निर्णुदेत्            | 8           | २५०   |
| शरः क्षत्रियया प्राद्यः     | Ę        | 88         | शाकमूलफलानां च                   | 4           | 999   |
| शरणागतं परित्यज्य           | 33       | 196        | शाकमूलफलानि च                    | Ę           | 94    |
| शरणागतहन्तृश्च              | 99       | 990        | शाकमुलफलेन वा                    | Ę           | ખ     |
| शरणेष्वममश्चेव              | Ę        | २६         | शाकमूलफलेषु च                    | 6           | ३३१   |
| शरान्कुब्जकगुल्मांश्च       | 6        | २४७        | शाकुनेनाथ पञ्च वै                | ર           | २६८   |
| शरीरं चैव वाचं च            | ₹        | 199        | शासान्तगमथाध्वर्युम्             | 3           | 184   |
| शरीरं यातनाथीयम्            | 98       | ३ ६        | शाणश्रीमाविकानि च                | ₹           | 81    |
| शरीरकर्ष <b>णाः</b> प्राणाः | ø        | 112        | ?? <del>,,</del>                 | 10          | 69    |
| शरीरजैः कर्मदोषैः           | 92       | ९          | शारक्षी मन्दपालेन                | 9           | २३    |
| शशिरस्य च शुद्धये           | Ę        | ३०         | शारीरं त्रिविधं स्मृतम्          | 12          | 49    |
| शरीरस्यात्यये चैव           | ६        | ६८         | शारीरं धनसंयुक्तम्               | 9           | २३६   |
| शरीरस्यापि चात्यये          | 4        | ६९         | शारीरं शौचिमिच्छन् हि            | ų           | 939   |
| शरीरेण समं नाशम्            | 6        | 30         | शारीरं संनिवेश्य च               | 33          | २०२   |
| शरीरेणेष्ट यातनाः           | 98       | 90         | शारीरस्य विनिर्णयः               | 4           | 330   |
| शर्करा वालुकास्तथा          | 4        | २५०        | शास्मलीन्साल <b>तालांश्च</b>     | 6           | २४६   |
| शर्मवद्राह्मणस्य स्यात्     | <b>ર</b> | <b>३</b> २ | शाल्मलीफलके स्टक्ष्णे            | 6           | ३९६   |
| शल्यं चास्य न क्रन्तन्ति    | 6        | 32         | शावाशौचस्य कीर्तितः              | 4           | હ છ   |
| शवं तत्स्पृष्टिनं चैव       | ч        | ८५         | शाश्वतं विधिमास्थितः             | 4           | ३६    |
| शवस्प्रशो विद्युध्यन्ति     | ч        | 83         | शाश्वती योनिरुज्यते              | 9           | 30    |
| शशकूर्मयोस्तु मांसेन        | ş        | २७०        | शाश्वती सामग्रेरची               | ₹,          | 388   |
| शशवच विनिष्पतेत्            | 9        | १०६        | शासनाद्वा विमोक्षाद्वा           | 6           | ३१६   |
| शसं द्विजातिभिर्माह्मम्     | 6        | ३४८        | शास्त्रं च विविधागमम्            | 12          | 304   |
| शस्त्रविक्रियणस्तथा         | 8        | २१५        | शासं समिधगच्छति                  | 8           | २०    |
| शकविकयिणो मलम्              | 8        | २२०        | शास्त्रदृष्टेश्च हेतुमिः         | 6           | 3     |
| शस्त्राणामीषधस्य च          | 6        | ३२४        | शा <b>खेऽस्मिद्युक्तवान्मनुः</b> | 4           | 336   |

#### 48=

## मनुषादानुषास्थि।

| पाद                             | अ०       | स्रो०       | पाद                              | अ०       | स्रो०        |
|---------------------------------|----------|-------------|----------------------------------|----------|--------------|
| 'शिक्षयेच् <b>डीच</b> मादितः    | 2        | ६९          | शुक्तानि च कषायांश्र             | 11       | 143          |
| <b>शिफाविद्</b> खरज्ज्वाचैः     | 9        | ०६५         | ञुक्तानि यानि सर्वौणि            | ş        | 110          |
| शिकाश्चैवामुयादश                | 6        | <b>३६</b> ९ | ग्रुक्तः स्वप्ताय शर्वरी         | 3        | ६६           |
| शिरःस्नातश्च तैलेन              | 8        | ८३          | गुरुकृष्णे च वर्त्तयेत्          | ६        | २०           |
| <b>शिरस्येतान्विवर्जयेत्</b>    | 8        | ८३          | शुक्रपक्षांदि नियतः              | 99       | २१७          |
| <b>बिरांसि स्पर्शयेत् पृथक्</b> |          | 118         | शुक्कवस्त्रां शुचिवताम्          | ९        | <b>30</b>    |
| शिरोभिस्ते गृहीत्वोवीम्         | 4        | २५६         | ग्रुक्केषु नियतः पठेत्           | 8        | 9%           |
| शिलानप्युञ्छतो नित्यम्          | 3        | 900         | शुर्चि दक्षं कुलोद्गतम्          | •        | ६ ३          |
| बिलाफलकनौषु च                   | ₹        | २०४         | ग्रुचि देशं विविक्तं च           | ¥        | २०६          |
| <b>शि</b> क्षेञ्छमप्याददीत      | 30       | 112         | ञ्जुचि तन्मनुरव्यवीत्            | ų        | 139          |
| शिकोञ्छेनापि जीवतः              | •        | 33          | ग्रुचिना सत्यसंधेन               | 9        | <b>3</b> , 9 |
| शिल्पानि विविधानि च             | 90       | 300         | য়ৢचिरुत्कृष्टशुश्रूषुः          | ९        | ३३५          |
| शिल्पेन व्यवहारेण               | 3        | ६४          | शुचीनाकरकर्मान्ते                | •        | ६२           |
| शिल्पोपचारयुक्ताश्च             | <b>९</b> | २५९         | <b>ञु</b> चीन्प्राज्ञानवस्थितान् | •        | ξ o          |
| शिशुचान्द्रायणं स्मृतम्         | .33      | २१९         | शुचौ देशे जपञ्जप्यम्             | <b>ર</b> | <b>२२</b> २  |
| शिवसंकल्पमेव च                  | 99       | २५०         | ग्रुद्धिः प्रक्षालनेन नु         | 4        | 498          |
| शिद्धराङ्गिरसः कविः             | २        | 949         | गुद्धिरुक्ता मनीषिभिः            | ખ        | 999          |
| शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्         | २        | <i>38</i>   | शुद्धिरुत्पवनं स्मृतम्           | ખ        | 994          |
| शिष्ट्यर्थ ताडयेसु ती           | 8        | 388         | ञुद्धिरुष्णेन वारिणा             | 4        | 330          |
| शिष्ट्रा वा भूमिदेवानाम्        | 9.9      | ८२          | शुद्धिर्विजानता कार्या           | 4        | 923          |
| शिष्यं हन्ति चतुर्देशी          | ક        | 998         | गुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतम्      | 3 3      | 983          |
| शिष्यर्त्विग्वान्धवेषु च        | પ્ય      | ८१          | शुद्धिषु द्वादशस्वपि             | ų        | १३४          |
| शिष्यांश्च शिष्याद्धर्मेण       | 8        | 904         | शुद्धेः कर्तृणि देहिनाम्         | 4        | 904          |
| शिष्याचौरानिव द्वतम्            | ९        | २७२         | <b>शुद्धेः श्र</b> णुत निर्णयम्  | ષ્       | 990          |
| शिष्याणां विधिपूर्वकम्          | 8        | 303         | ग्रुद्धो भवति मानवः              | પ        | 1919         |
| शिष्येण बन्धुना वापि            | 6        | 00          | ग्रुध्यन्ति तु सनाभयः            | 4        | ७२           |
| शिष्येभ्यश्च प्रवक्तस्यम्       | 3        | १०३         | शुध्येद्धिप्रो दशाहेन            | ખ        | ८३           |
| शिष्यो वा यज्ञकर्मणि            | ₹        | २०८         | शुनां च पतितानां च               | ३        | <b>९</b> २   |
| <b>द्गीतातपाभिघातांश्च</b>      | १२       | 99          | शुना घातावलीवस्य                 | 11       | 199          |
| शुके द्विहायनं वत्सम्           | 3 3      | 138         | शुना संस्पृष्टमेव च              | ક્ર      | २०८          |
| शुक्तं पर्युषितं चैव            | 8        | 253         | शुभं कर्म समाचरेत्               | 99       | २३१          |

| पाद                           | अ०  | ঞ্জী০          | पाद                             | अ०       | स्रो० |
|-------------------------------|-----|----------------|---------------------------------|----------|-------|
| कुमं बीजिमवोषरे               | ₹   | 117            | ञ्जूमारोग्बमेव च                | ₹.       | 120   |
| अभागामिह कर्मणाम्             | 9 3 | 83             | ञ्च <u>्</u> योत्कृष्टवेदने     | ₹        | 8.8   |
| शुभाशुभक्लं कर्म .            | 12  | Ą              | ञ्जू इविट्क्षत्र विप्राणास्     | 4        | 108   |
| धुने रोक्मे च कुण्डले         | 8   | ₹ €            | शूब्रुख्यापि वर्तयेत्           | 90       | 96    |
| गुजेषु मृगपिक्षषु             | 6   | <b>२९७</b>     | ञ्जूविशिष्यो गुरुश्रीव          | ३        | 148   |
| ञुभैः प्रयोगैर्देवस्वम्       | 35  | 9              | श्च्रवसंस्पर्शवृषिता            | 4        | yor   |
| ञुल्कं च द्विगुणं दद्यात्     | 6   | ३ <b>६ ९</b>   | ञ्चदस्तु यस्मिन्कस्मिन्दा       | 2        | २४    |
| शुक्कं दधात्सेवमानः           | 6   | ३६६            | ञ्चद्रस्तु वधमईति               | 6        | २६७   |
| झुल्कं दुहितरं ददन्           | ९   | 96             | श्रवस्तु धृत्तिमाकांक्षन्       | 30       | १२१   |
| ग्रुस्कं हि गृह्ण-कुरुते      | ٩   | ९८             | ञ्जूदस्य तु जुगुप्सितम्         | २        | ३१    |
| ग्रुस्कसंज्ञेन मूल्येन        | ٩   | 100            | ञ्चद्रस्य तु सवर्णेव            | 9        | 340   |
| ञ्जल्कस्थानं परिहरन्          | 4   | 800            | शुद्रस्य प्रेष्यसंयुतम्         | 3        | ३२    |
| ग्रुल्कस्थानेषु कुशलाः        | 6   | ३९०            | शूद्रस्योच्छिष्टमेव च           | 8        | २११   |
| ञुश्रूषा ब्राह्मणानां च       | •   | 66             | ञ्जदहत्यावतं चरेत्              | 99       | 333   |
| <b>ञुश्रृषामन</b> सूयया       | 1   | 99             | **                              | 8 8      | 186   |
| शुश्रूषा रतिरुत्तमा           | ٩   | २८             | **                              | 99       | 180   |
| ग्रुश्रुषा वापि तद्विधा       | R   | 312            | शूद्रां वा द्याह्मणो वजन्       | 6        | ३८५   |
| ग्रुश्रृषित्वा नमस्कृत्य      | 3 3 | 990            | ञ्चद्वां शयनमारोप्य             | ३        | 30    |
| <b>ञ्जश्रूषुरधिगच्छ</b> ति    | ₹   | 216            | श्रूदांश्च द्विजिक्किनः         | ٩        | २२४   |
| ञुश्रूषेव तु शूद्रस्य         | ٩   | ३३४            | श्चद्वांश्चारमोपजीविनः          | ૭        | ३३८   |
| ञ्जश्रूष्यन्ते द्विजातयः      | 90  | 800            | श्चद्राजातो निषाद्यां तु        | 30       | 16    |
| ञुष्कवैरं विवादं च            | 8   | 336            | ञ्चवाणां तु सधर्माणः            | 10       | 83    |
| ञ्जुष्काणि भुक्त्वा मांसानि   | 99  | <b>ي</b> د د د | श्चवाणां मासिकं <b>कार्य</b> म् | ų,       | 380   |
| गुष्काषस्य गुडस्य च           | 99  | १६६            | श्रूद्राणामेव जन्मतः            | <b>ર</b> | 944   |
| ञ्जूबं च निरवर्तयत्           | ٩   | ३१             | श्च्रवादपसदाख्यः                | 30       | १६    |
| सूद्रं तु कारयेद्दास्यम्      | 6   | 835            | श्रुद्रादप्यन्त्यजन्मनः         | 30       | 990   |
| श्च्रवं सर्वेस्तु पातकैः      | 6   | 66             | श्रुद्रादायोगवः क्षत्ता         | 90       | १२    |
| **                            | 6   | 333            | ञ्जाषं ब्रह्मवर्चसम्            | 8        | २१८   |
| श्रुद्धः कर्त्तं द्विजन्मनाम् | 90  | ९९             | ग्रुद्रागत्पेश्च केवलैः         | 3        | ६४    |
| भूदः स्पृष्टाभिरन्ततः         | ?   | ६२             | भूद्रापुत्राय धर्मतः            | 9        | 848   |
| श्रवसं च स गच्छति             | 3 3 | ९७             | ग्र्वापुत्रो न रिक्थमाक्        | 9        | 344   |

### मनुपादानुकमसी।

| पाद                           | अ०  | श्लो० | पाद                      | अ०  | श्लो॰    |
|-------------------------------|-----|-------|--------------------------|-----|----------|
| ञ्चद्रा भार्योपदिश्यते        | B   | 3.8   | शेषमात्मनि युक्तीत       | Ę   | 98       |
| ग्रुद्रा म्हेच्छाश्च गर्हिताः | 92  | ४३    | शेषाणामनुपूर्वशः         | 3   | 103      |
| ग्रुद्रायां क्षत्रियविशोः     | 6   | ३८३   | शेषाणामानृशंस्यार्थम्    | 9   | 3 € ₹    |
| शुद्रायां बाह्यणाजातः         | 90  | ६४    | शेषाश्चाकार्यकारिणः      | 99  | २३९      |
| श्रुद्रावेदी पतत्यत्र         | 3   | 98    | शेषास्तमुपजीवेयुः        | ९   | 904      |
| शूद्राश्च सन्तः शूद्राणाम्    | ્ર  | ६८    | रोषे त्वेकादशगुणम्       | 4   | ३२२      |
| शूद्रे शेयस्तु षोडशः          | 33  | १२६   | शेषे दण्डो विधीयते       | ૮   | २९०      |
| शूद्रेण हि समस्तावत्          | ₹   | १७२   | शेषेऽप्येकादशगुणम्       | 6   | <b>3</b> |
| श्रुद्रे द्वादशको दमः         | 6   | २६८   | शेषे रात्रौ यथा दिवा     | 8   | १०६      |
| ग्रुद्रैव भार्या ग्रुद्रस्य   | 3   | 33    | शेषेषूपवसेदहः            | ų   | २०       |
| शुद्रो गुप्तमगुप्तं वा        | 6   | ३७४   | शैॡषतुन्नवायान्नम्       | 8   | 218      |
| शूद्रोच्छिष्टाश्च पीत्वापः    | 9 9 | 286   | शैलेषूपवनेषु च           | 90  | ५०       |
| श्रुद्रो दास्याद्विमुच्यते    | 4   | 818   | शोचन्ति जामयो यत्र       | 3   | ५७       |
| शूद्रो धर्मास्वकाञ्च्युतः     | 3 8 | ७२    | शोणितं यावतः पांसृन्     | 8   | १६८      |
| श्रुद्रो नास्ति तु पञ्चमः     | 30  | 8     | 23 23                    | 33  | २०७      |
| श्रुद्रोऽपि दशमीं गतः         | २   | 130   | शोणितोत्पादकोऽद्यते      | 8   | १६८      |
| शूद्रो बाह्मणतामेति           | 30  | ६५    | शोध्यं वाप्याशु शोधनैः   | 9 3 | १६०      |
| शूद्रो मासेन शुखाति           | ષ   | ८३    | शोषयेद्देहमात्मनः        | ६   | २४       |
| शूद्रो हि धनमासाच             | 30  | 323   | शीचं ब्राह्मणसंपदः       | ર   | १२६      |
| श्चन्यानि चाप्यगाराणि         | 9   | २६५   | शौचं यथाई कर्त्रव्यम्    | ч   | 118      |
| शूराणां चैव भीरवः             | 4   | २९    | शौचमकोधमत्वराम्          | 3   | २३५      |
| शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्      | •   | ६२    | शौचिमिन्द्रियनिग्रहः     | ६   | ९२       |
| शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्      | •   | २०    | "                        | 90  | ६ ३      |
| श्रगालयोनि प्राप्तोति         | ч   | १६४   | "                        | 9 2 | ३ १      |
| श्रुतानाद्यभक्षणे             | 3 3 | 184   | शौचाशौचं हि मर्त्यानाम्  | 4   | 9.0      |
| श्रणुयाचो ह्यनिर्दशम्         | ч   | ७५    | शौचे चैवारमेत्सदा        | 8   | 904      |
| श्र्णुयाद्वापि किञ्चन         | 6   | ७६    | शौचे धर्मेऽग्नपक्त्यां च | ९   | 99       |
| श्रुणु सौम्यानुपूर्वशः        | ટ   | 90    | शीचेन तपसैव च            | 8   | 186      |
| शेपे पैजवने नृपे              | 6   | 110   | शीचेप्सुः सर्वदाचामेत्   | 2   | ६१       |
| शेलुं गध्यं च पेयूषम्         | 43  | Ę     | शीनं वल्ॡरमेव च          | 4   | 12       |
| शैवधिस्तेऽसि रक्ष माम्        | २   | 318   | (सौनं इति वा पाठः)       | •   |          |

| पाद                             | अ० | श्लो॰       | पाद                          | अ०       | ঞ্চা৹      |
|---------------------------------|----|-------------|------------------------------|----------|------------|
| शीनकस्य सुतोत्पत्या             | Ę  | 9 8         | श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः  | 8        | 400        |
| शीर्यं करुणवेदिता               | •  | 211         | भावण्यां पौष्ठपद्यां वा      | B        | 94         |
| शौर्यकर्मापदेशैश्र              | 8  | २६८         | श्रावयिष्यत्यदोषतः           | 3        | <b>પ</b> ્ |
| रमशानगोचरं सूते                 | 90 | ३९          | श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुङ्को   | ą        | 45         |
| रमशानेष्वपि तेजस्वी             | 9  | ३१८         | श्रीफलैरंशुपद्दानाम्         | ч        | 120        |
| रमश्रुलोमनखानि च                | Ę  | Ę           | श्रुतं देशं च जाति च         | 6        | २७३        |
| इमश्रुलो विजने वने              | 11 | 904         | श्रुतपृत्ते विदित्वास्य      | 9        | 934        |
| श्रद्यानः शुभां विद्याम्        | २  | २३८         | श्रुतबृत्तोपपन्ने वा         | ٩        | २४४        |
| श्रद्धानतयेव च                  | 9  | ८६          | श्रुतशीले च विज्ञाय          | 99       | 22         |
| श्रद्धानो जितेन्द्रियः          | 33 | ३९          | श्रुतस्याभिजनस्य च           | ¥        | 96         |
| श्रह्धानोऽनसूयश्र               | 8  | 146         | श्रुतस्योपकरोति यः           | 2        | 188        |
| श्रद्धयेष्टं च पूर्ते च         | 8  | २२६         | श्रुतिद्वैधं तु भर्तरि       | ۹        | ३२         |
| श्रदाकृते हाक्षये ते            | 8  | २२६         | श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्थात्  | 7        | 18         |
| श्रद्धा च नो मा व्यगमत्         | 3  | २५९         | श्रुतिप्रत्यक्षहेतवः         | 9 2      | 909        |
| श्रद्धापृतं वदान्यस्य           | 8  | २२५         | श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्   | ₹        | C          |
| श्रमेण यदुपार्जितम्             | 9  | २०८         | श्रुतिरेपा सनातनी            | 3        | २८४        |
| श्रवणाचैव सिध्यति               | 4  | હ ૪         | श्रुतिशीलवते स्वयम्          | રૂ       | २७         |
| श्राद्धं भुक्त्वा च सामिषम्     | 8  | 98          | श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः     | <b>ર</b> | 10         |
| श्राद्धं भुक्त्वा य उच्छिष्टम्  | ₹  | २४ <b>९</b> | श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मम्    | <b>ર</b> | ٩          |
| श्राद्धकर्मण्युपस्थिते          | 3  | 969         | श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यक्    | 8        | 944        |
| श्राद्धकर्मसु सम्पदः            | Ę  | २५५         | श्रुतीरथर्वाङ्गिरसीः         | 3 3      | ३३         |
| श्राद्धक्लं च शाश्वतम्          | 3  | 395         | श्रुतोपक्रियया तया           | २        | 188        |
| श्राद्धदेवान्द्विजोत्तमान्      | રૂ | 535         | श्रुतौ पत्न्या सहोदितः       | 9        | ९६         |
| श्रा <b>द्धभुग्वृष</b> लीतल्पम् | Ŗ  | २५०         | श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च    | 3        | 308        |
| श्राद्धमारक्षवर्जितम्           | ર  | २०४         | श्रुत्वा पुत्रस्य जन्म च     | ų        | <b>99</b>  |
| श्राद्धमित्रो द्विजाधमः         | ર  | 180         | श्रुत्वा स्पृष्टा च दृष्टा च | <b>ર</b> | 96         |
| श्राद्धानि च हवीं चि च          | Ę  | १३९         | श्रुखैतानृषयो धर्मान्        | Vg.      | 9          |
| श्राद्धिकं प्रतिगृद्ध च         | 8  | 998         | श्रुवतां येन दोषेण           | પ        | 3          |
| श्राद्धे प्रशस्तास्तिथयः        | ş  | २७६         | श्रेणीधर्माश्च धर्मवित्      | 6        | 83         |
| था छ यसेन भोजयेत्               | Ę  | २३४         | श्रेयः किंचित्समाचरेत्       | ₹        | २२३        |
| श्रासेषु च हविःषु च             | Ę  | 9 \$ 9      | श्रेयःसु गुरुवद् वृत्तिम्    | Ŗ        | २७७        |
|                                 |    |             |                              |          |            |

## मनुपादानुकमणी।

| पाद                            | अ०         | श्लो॰ | पाद                       | अ०       | श्चो०      |
|--------------------------------|------------|-------|---------------------------|----------|------------|
| श्रेयसः श्रेयसोऽहाभे           | Q          | 826   | श्ववतां शौण्डिकानां च     | 8        | ₹ 1 €      |
| श्रेयसा चेत्रजायते             | 30         | ÉB    | श्रश्रानृत्विजो गुरून्    | ₹        | १३०        |
| श्रेयसा न समाविशेत्            | <b>ર</b>   | 999   | मश्रुरथ पितृष्वसा         | ₹        | 121        |
| श्रेयस्करतरं ज्ञेयम्           | 9 २        | ८६    | <b>श्वस</b> र्पनकुलाखुभिः | 8        | १२६        |
| श्रेयस्त्वं क्रेति चेज्रवेत्   | 30         | ६६    | स्वमुकरखरोष्ट्राणाम्      | 92       | પુષ        |
| श्रेवांसं न प्रबोधयेत्         | , <b>8</b> | 40    | श्वसूकरनिपातने            | 6        | २९८        |
| श्रेष्ठ्यमेषां यथोत्तरम्       | 12         | 36    | श्व त्करमुखानुगम्         | 6        | २३९        |
| श्रिष्ट्येनाभिजनेनेदम्         | 7          | 900   | श्वसृगालखरैदंष्टः         | 9 9      | 199        |
| श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्ना  | २          | 90    | श्वहतं विषमे मृतम्        | 4        | २३२        |
| श्रोत्रादीन्यनुपूर्वज्ञः       | =          | ९९    | श्वा च लिह्याद्धविस्तथा   | ঙ        | २ १        |
| श्रोत्रियं न्याधितातीं च       | 6          | ३९५   | श्वा तु दृष्टिनिपातेन     | 3        | २४१        |
| श्रोत्रियः श्रोत्रियं साधुम्   | 6          | ३९३   | श्वा सृगग्रहणे शुचिः      | 48       | 930        |
| श्रोत्रियः सीदति श्रुधा        | <b>S</b>   | १३४   | श्वावित्कृतासं विविधम्    | 98       | <b>q</b> y |
| श्रोत्रियस्य कदर्यस्य          | ß          | २२४   | श्वाविधं शल्यकं गोधाम्    | 4        | 96         |
| श्रोत्रियान्गृहमेधिनः          | ४          | 3 9   | श्वा वै भवति निन्दकः      | <b>ર</b> | २०१        |
| श्रोत्रियान्वयजाश्चेव          | 3          | 858   | श्वित्रिकुष्ठिकुलानि च    | 3        | •          |
| ओत्रियायैव देयानि              | 3          | 126   | श्वित्र्यथो पिञ्जनस्तथा   | 3        | 989        |
| श्रोत्रिये तूपसंपन्ने          | ч          | 69    | च                         |          |            |
| श्रोत्रियेषूपकुर्वश्र          | 6          | ३९४   | षट् कर्माणि यथाक्रमम्     | 90       | 98         |
| श्रोत्रियो विषये वसन्          | <b>y</b>   | 133   | षट् कर्माण्यग्रजन्मनः     | 90       | 194        |
| श्रेष्मनिष्ठ्यूतवान्तानि       | 8          | 932   | षट्कर्मैको भवत्येषाम्     | ß        | ९          |
| श्हेरमातकफर्जानि च             | Ę          | 38    | षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्चम्  | ą        | 9          |
| श्हेष्माश्रु दूषिका स्वेदः     | ч          | 134   | षट् षट् कायोढजः सुतः      | ş        | ३८         |
| भक्रीडी श्येनजीवी च            | 3          | १६४   | षट् सुता द्विजधर्मिणः     | 90       | 81         |
| श्वखरोष्ट्रे च रुवति           | ૪          | 994   | षट्सु षट्सु च मासेषु      | 6        | ४०३        |
| <b>श्वगृ</b> धेर्जिग्धिमात्मनः | 3          | 994   | षडवायादबान्धवाः           | ९        | 946        |
| श्वगोघोलूककाकांश्च             | 33         | 939   | 77 79                     | ९        | 360        |
| श्वपचां पापरोगिणाम्            | 3          | ९२    | षडानुपुर्व्या विप्रस्य    | ¥        | २३         |
| खपाक इति कीर्त्यते             | 90         | 98    | षडुकृष्टस्य वेतनम्        | 49       | १२६        |
| श्वभिद्दंतस्य यन्मांसम्        | ч          | 359   | षड् ऋतूंश्च नमस्कुर्पात्  | 3        | 230        |
| थमांसमिष्डमार्तोऽतुम्          | 30         | 90€   | षडेतेऽपसदाः स्मृताः       | 10       | 9 0        |

#### मनुखादा जुकामसी । **{4** श्री० श्रो० पाद पाद षष्ट् गुर्णाक्षिन्तयेत्सदा 🕟 संगृह्याति महीतलात् 360 344 षक् बंदया मनवोऽपरे संगृह्याति महीतले ६ १ 700 पहिवधं च बल स्वक्रम् संग्रामेष्वनिवर्तित्वम् 964 66 पद्यविधं स्त्रीधनं स्मृतम् संप्रामे हत्यते परैः 368 88 षण्णां तु कर्मणामस्य संचिन्त्य गुरुलाघवम् હ ફ 50 २९९ वण्णामध्यमितौजसाम् संजीवनं महावीचिम् 98 3 68 षण्णामेषां तु सर्वेषाम् 🕐 १२ संजीवयति चाजस्रम् હફ 40 पष्मासनिचयो वा स्यात् संतानस्य परिक्षये 96 49 पण्मासांदछागमांसेन २६९ संतानार्थं च मानवाः ९६ संतारयति ताबुभौ क्ष्मासान् श्रद्धाः चरेत् 350 99 99 संतारयति पौत्रवत् पष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशम् 168 336 संतुष्टो भार्यया भर्ता पष्टासकालता मासम् २०० € o 33 पष्टेः श्वित्री शतस्य तु संतोषं परमास्थाय 999 93 संतोषमूलं हि सुखम् पष्टेऽब्रप्राशनं मासि ₹8 32 8 पष्ठो द्वादश एव वा संत्यज्य ग्राम्यमाहारम् 130 9 **पाड्गुण्यगुणवे**दिभिः संदितानां च मोक्षकः ७ १६८ ८ ३४२ पाण्मासिकस्तथाच्छादः संधि कृत्वा प्रयत्नतः ७ १२६ ७ २०६ ८ ३३७ संधि च विग्रहं चैव षोडशैव तु वैश्यस्य ७ १६० ष्ठीवनं वा समुत्सुजेत् ४ ५६ संधि छित्त्वा तु ये चौर्यम् ९ २७६ ष्ठीवनैः पू*प*शोणितैः संधि तु द्विविधं विद्यात् ५ १२३ ७ ३६२ संधि विग्रहमेव च ७ १६९ स संधिर्जेयो द्विलक्षणः ७ १६३ संकरापात्रकृत्यासु १२५ 3 1 संकरीकरणं ज्ञेयम् संध्ययोरुभयोश्चेव **89** & 6 260 " " संकरे जातयस्त्वेताः 131 30 80 संकल्पमूलः कामो वै २ ३ संध्ययोरेव चोभयोः 8 113 संकीर्णयोनयो ये तु संध्ययोर्वेदविद्विप्रः १० २५ **ર** 96 संकीर्णानां च संभवम् संध्ययोश्च तथा दिवा 998 40 संक्रमध्यजयष्टीनाम् संध्यां चोपास्य श्रुणयात् २२३ ९ २८५ संक्षिप्यते यशो लोके ७ संध्यांशश्च तथाविधः ६९ ₹8

340

८ ३६

9

संध्योपासनमेव च

संनिदध्याद्विष्टायसि

२ ६९

168

संक्षेपेण द्विसप्ततिः

संस्वायास्पीयसीं कलाम्

### मनुपादानुकमणी।

| पाद                      | अ०             | श्चो॰ | पाद                       | अ०       | स्रों      |
|--------------------------|----------------|-------|---------------------------|----------|------------|
| संनिधातंश्च मोषस्य       | 9              | २७८   | संभाषां ताभिराचरन्        | 6        | ₹ € ₹      |
| संनियन्तु <b>मसेव</b> या | <b>ર</b>       | ९ ६   | संभाषां योजयब्रहः         | 6        | ३५४        |
| संनियम्य तु तान्येव      | ş              | ९३    | संभूतिं तस्य तां विद्यात् | <b>ર</b> | 180        |
| संन्यसेदनृणो द्विजः      | Ę              | 98    | संभूती तस्य देहतः         | ९        | 133        |
| संन्यासेन द्विजोत्तमम्   | ч              | 306   | संभूय च समुत्थानम्        | ٤        | 8.         |
| संन्यासेनापहत्यैनः       | <b>, &amp;</b> | ९ ६   | संभूय स्वानि कर्माणि      | S        | २११        |
| संपन्न मित्यभ्युद्ये     | 3              | २५४   | संभोगो दश्यते यत्र        | 6        | २००        |
| संपद्मा चैव शीस्रतः      | 9              | ८२    | संभोजनी साभिहिता          | ş        | 188        |
| संपन्नानां स्वकर्मसु     | ९              | 994   | संभ्रमे चाभिकारिते        | 8        | 196        |
| संपद्मयंश्विविधं फलम्    | ٠              | २०६   | संमाना द्वाह्यणो नित्यम्  | २        | 362        |
| संपद्यतः सभृत्यस्य       | •              | 183   | संमार्जनोपाअनेन           | 43       | 128        |
| संपूज्या गुरुपत्नीवत्    | 2              | 939   | संयतां वासयेद् गृहे       | 4        | ३६५        |
| संपूर्णफलभाग्भवेत्       | 9              | 309   | संयमे यत्रमातिष्ठेत्      | 3        | 66         |
| संप्रधार्याष्ट्रवीद्धाता | 90             | ७३    | संयम्य च मनस्तथा          | 3        | 300        |
| संप्राप्ताय त्वितथये     | 3              | ९९    | संयुक्तांश्च वियुक्तांश्च | ٧        | २१४        |
| संप्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः | ९              | 189   | संयुक्ताऽधमयोनिजा         | ९        | २३         |
| संप्राप्तवन्ति दुःखानि   | 92             | ৩४    | संयुज्येत यथाविधि         | 9        | <b>२२</b>  |
| संशीस्या गृहमागतान्      | 3              | 993   | संयोगं च तथाऽप्रियैः      | ६        | ६२         |
| संप्रीत्या भुज्यमानानि   | 6              | १४६   | संयोगं पतितैर्गतः         | ३        | 940        |
| संबन्धानाचरेत्सह         | 8              | २४४   | संयोगं पतितैर्गत्वा       | 92       | ६०         |
| संबन्धिनो ह्यपां लोके    | ૪              | १८३   | संयोगे विप्रयोगे च        | ٩,       | 9          |
| संभवः सर्वदेहिनाम्       | ९              | ३३    | संरक्षणार्थं जन्तृनाम्    | Ę        | ६८         |
| संभवत्यनुपूर्वशः         | 9              | २७    | संरक्षेत्सर्वतश्चैनम्     | g        | १३५        |
| संभवत्य ध्ययाद्ययम्      | 9              | 38    | संरक्ष्यमाणो राज्ञायम्    | હ        | १३६        |
| संभवश्च यथा तस्य         | <b>e</b>       | 3     | संरम्भान्मतिपूर्वकम्      | 8        | 9 & &      |
| संभवश्चास्य सर्वस्य      | ą              | २ ५   | संवत्सरं तु गब्येन        | Ę        | २७१        |
| संभवांश्च वियोनीषु       | १२             | e e   | संवत्सरं प्रतीक्षेत       | 9        | <b>9 9</b> |
| संभवानेकविंशतिम्         | 4              | ३५    | संवत्सरं यवाहारः          | 33       | 196        |
| संभावयति चान्येन         | 2              | 185   | स्वत्सरनिरोधतः            | 6        | ३७५        |
| संभाषणं सह स्नीभिः       | 6              | ३६०   | संवत्सरस्यैकमपि           | ų        | ₹9         |
| संभाषणसहासने             | 99             | 388   | संवत्सराभिशस्तस्य         | 6        | इ७३        |

#### मनुपादानुकमसी।

844

श्लो॰ श्लो० पाद अ० पाद संवल्सरेण पति संस्थाप्या आत्मनो वज्ञे . \$ 33 360 संस्थितं च न लहुयेत् संवल्सरे व्यतीते तु 9 5 348 ч 4 संस्थितस्यानपत्यस्य सवाध रूपसंख्यादीन् **₹**9 190 6 संवासे चैव दुर्जनैः संस्पृष्टं चाप्युदक्यया 99 92 २०८ 8 संविदश्च व्यतिक्रमः संस्पृष्टं नैव शुध्येत 923 संविभागश्च भूतेभ्यः संहतस्य च मित्रेण ३२ 354 8 संविशेषु यथाकालम् संहतान्योधयेदल्पान् २२५ 999 ø संविशेदार्त्तवे स्नियम् संहत्य हस्तावध्येयम् 13 3 3 88 संवीताङ्गः समाहितः संहरेत स पूर्वजः २३ 125 संवीताङ्गोऽवगुण्ठितः संहरेतां यथोदितम् ४९ 193 संशोध्य त्रिविधं मार्गम् संहातं च सकाकोलम् 68 964 9 संहिताजप एव वा संश्रयत्येव तच्छीलम् ६० 99 २०० 90 संश्रयेरन्प्रयक्षतः स एव ता आददति २४ 206 ₹ स एव दद्याद् द्वौ पिण्डौ संसर्ग याति मानवः 932 99 969 संसर्गश्चापि तैः सह स एव धर्मजः पुत्रः 48 900 99 संसारं प्रतिपद्यते स एव स्वयमुद्धभौ ६ ७४ संसारः सार्वभौतिकः सकल्पं सरहस्य च १२ ५१ 180 ससारगमनं चैव सकामां दृषयंस्तुख्यः ३६८ 999 3 संसारयति चक्रवत् ,, ३६४ 32 158 संसारान्प्रतिपचते । सकाशादग्रजन्मनः २० ३९ 12 संसारान्य्रतिपद्यन्ते । स कुबेरः स वरुणः 48 35 सकुज्जस्वास्यवामीयम् संसीदन्स्नातकः श्रुधा २५० ४ ३३ 33 सकुत्कन्या प्रदीयते संसृष्टास्तेन वा ये स्यः 80 ९ २१६ संस्कर्ता चोपहर्ता च स कृत्वा प्राकृतं कृष्छ्ं 146 99 4 49 98 संस्कारविधिमेव च 99 स कृत्वा ध्रवमात्मानम् 1 333 संस्कारस्य विशेषाच सकृत्सकृदतावृती 0 C 30 3 स कृत्स्नां पृथिवीं भुक्ते 388 संस्कारार्थं शरीरस्य ? ह ६ सकुत्स्नायी समाहितः संस्कारेणैव शुक्रति 538. 33 99 186 सकृदंशो नियतति संस्कारो वैदिकः स्मृतः 80 ₹ o **२** संस्कृतात्मा द्विजः शनैः सकृदाह ददानीति 80 २ १६४ संस्थाने बहुसंस्थिते सकृद्धन्यासु तं स्वयम् 100 ३७१

### मनुपाद्यकुष्ममस्री ।

| पाद                        | अ०        | श्लो॰      | पाद                        | अ०         | श्रो ॰       |
|----------------------------|-----------|------------|----------------------------|------------|--------------|
| सक्तेन विषयेषु च           | <b>19</b> | € 0        | सततं ब्रह्मचारिणः          | ą          | 198          |
| स क्रीतकः सुतस्तस्य        | ९         | 108        | सततं हारि देहिनाम्         | 12         | २८           |
| सक्युः पुत्रस्य च स्नीषु   | 11        | 45         | स तथैव प्रहीतब्यः          | c          | 980          |
| **                         | 99        | 300        | स तदेव स्वयं भेजे          | 9          | 24           |
| स गच्छति परं स्थानम्       | ą         | ९३         | स तद् गृह्णीत नेतरः        | 9          | 8 6 2        |
| स गण्डत्यक्षसा विश्रः      | 2         | २४४        | स तन्मांसाद उच्यते         | પ          | <b>\$ \4</b> |
| स गच्छत्युत्तमस्थानम्      | <b>,</b>  | २४९        | स तस्मात्सर्वमहति          | ९          | १०६          |
| स गुद्धोऽन्यस्त्रिवृद्धेदः | 3 3       | २६५        | स तस्यर्दिवगिहोच्यते       | <b>ર</b>   | 185          |
| स गृहे गृहमुत्पन्नः        | ९         | 900        | स तस्यैव वतं कुर्यात्      | 99         | 161          |
| स गृहेऽपि वसन्नित्यम्      | ą         | 98         | स तस्योत्पादयेत्तुः ष्टिम् | 6          | 366          |
| स गोत्रात् पुत्रमाहरेत्    | ९         | 990        | सतां धर्ममनुसारन्          | <b>ર</b>   | 990          |
| स गोहत्याकृतं पापम्        | 99        | 8 3 14     | 37 27                      | 9          | ९३           |
| स चान्द्रविको नृपः         | ٩         | ३०९        | 73 13                      | 4          | ३३           |
| सचिवान्सप्त चाष्टौ वा      | s         | 48         | "                          | 6          | 181          |
| स चेतु पथि संरुद्धः        | 6         | २ <b>९</b> | सतां वृत्तमनुष्टिताः       | 10         | १२७          |
| सचैलो बहिराप्लुत्य         | 3 3       | २०२        | स ताननु परिकामेत्          | •          | 125          |
| सचासच समाहितः              | 98        | 996        | स तानुवाच धर्मात्मा        | مع         | ર            |
| स जाप्रद् द्वापरं युगम्    | 9         | ३०२        | <b>&gt;&gt; 97</b>         | 12         | २            |
| सजातिजानन्तरजाः            | 90        | 89         | सतामन्नं विधीयते           | ₹          | 338          |
| सजात्या स्थितयान्यया       | Q         | 60         | स तैः पृष्टस्तथा सम्यक्    | 3          | ß            |
| स जीवंश्च मृतश्चेव         | ч         | ४५         | सत्कारमितरोऽहीत            | ₹          | १३७          |
| स जीवश्वेव शूद्रत्वम्      | ₹         | १६८        | सत्कारेषूत्सवेषु च         | 3          | ५९           |
| स जीवो बीतकस्मषः           | 9 2       | २२         | सत्कृत्य विधिपूर्वकम्      | Ę          | ९९           |
| सजयन्ति हि ते नारीः        | 6         | ३६२        | सिक्तयां देशकाली च         | Ź          | १२६          |
| स ज्ञेयः शपथे शुचिः        | 6         | 994        | सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानम् | 13         | २६           |
| स ज्ञेयो दित्रमः सुतः      | ٩         | १६८        | सच्चं तदुपधारयेत्          | १२         | ₹ %          |
| स झेयो दिधिषूपतिः          | Ę         | १७इ        | सत्त्वं रजस्तमश्चेव        | 35         | <b>२</b> ४   |
| स ज्यो वज्ञियो देशः        | <b>ર</b>  | २३         | सत्त्वषृद्धिकरः शुभः       | 8          | २५९          |
| सञ्चोतिः स्यादनध्यायः      | 8         | 808        | सस्वस्य लक्षणं धर्मः       | <b>9 २</b> | ३८           |
| सततं चेष्टयंति याः         | 12        | 9 4        | सत्प्रतिप्रष्ट एव च        | 30         | 114          |
| स्रततं देवचत्पतिः          | *4        | 148        | सत्यं चैव कृते युगे        | 3          | 63           |

#### मनुपाद्यनुमामसी ।

140

श्ची० स्रो० पाद पाद सत्यं ब्रुवाधियं ब्रुवास् सरशस्त्रीषु जातानाम् 358 774 सत्यं ब्रहीति पार्थिवम् सदशानेय तानाहुः 66 सद्दीनोपयन्त्रिता सत्यं यन्नानृतेन च 3.8 100 सदशोऽसदशोऽपि वा सत्यं साक्ष्ये बुवन्साक्षी 63 108 -सदैवाभग्रदक्षिणाम् सत्यधर्मार्थवृत्तेषु 904 303 सिकः साध्वीति चोच्यते सत्यपूतां वदेद्वाचम् **₹** 8. 86 सिंदराचरितं यत्स्यात् ८ 84 सत्यमर्थे च संपरयेत् ४६ सिद्धिनिन्दित एव च सत्यमुक्खा तु विशेषु 984 998 99 सद्यः कार्योऽर्घपादिकः सत्या न भाषा भवति १६४ 324 सत्यानृतं तु वाणिज्यम् सद्यः पतित जातितः **Q** 19 सत्यानृताभ्यामपि वा सचः पतित मांसेन 92 सद्यस्विषयवादिनी सत्येन जगतः स्पराः 998 83 सत्येन प्यते साक्षी सद्यः प्रक्षालको वा स्यात् 43 9% सद्यः प्राणान् परित्यजन् ११ सस्येन शापयेहिप्रम् ११३ 99 सद्यः फलति गौरिव सयं हि वर्धते तस्य ३०३ 3 19 2 सद्यः शौचं विधीयते स त्रीण्यहान्युपवसेत् 33 340 48 सद्यः संतिष्ठते यज्ञः स त्रीनेतान्बिभर्ति हि ६ ८९ 4 96 सत्वचोऽनग्निदृषिताः २ ४७ सद्यः सब्छवाइनम् ९ ३१३ सद्य एव विशुचाति ५ स त्वप्सु तं घटं प्रास्य 99 929 96 स दण्डं प्राप्तुयान्माषम् सद्रव्यः सपरिच्छदः ३१९ 288 स दण्ड्यः कृष्णलान्यष्टी स द्वी कार्षापणी द्यात् ९ २१५ २८२ स धर्मे चेद नेतरः स दत्वा निर्जितां षृद्धिम् 348 १२ १०६ 4 सदाचारमतन्द्रितः स धर्मः स्यादशङ्कितः 944 92 306 8 स धर्मप्रतिरूपकः स दाप्यः पूर्वसाहसम् ९ २८१ 9 3 स नरः कंटकैः सह सदा प्रहष्टया भाग्यम् ५ १५० ८ ९५ सदा सञ्जनगर्हितः स नामोति फलं तस्य १० ३८ 19 26 सनाभ्योऽप्यशुचिर्भवेत् सदा सन्निरनुष्टितः ३ १४७ ८४ स दीर्घस्यापि कारूस्य स निर्भाज्यः स्वकादंशात् ९ ८ २१६ 200 सन्तः सुकृतिनो यथा स दुद्धाद्शतो वराम् ८ २३१ 396 सदशं तु प्रकुर्याचम् ९ १६९ संक्षिधावेष वै कल्पः 48 सदशं त्रीतिसंयुक्तम् ९ १६८ संचिधी प्रेक्षते धनी 280

#### मनुपादानुकमसी।

| पाद                       | अ०       | श्लो०      | पाद                        | भ        | <b>স্থ</b> ী • |
|---------------------------|----------|------------|----------------------------|----------|----------------|
| स्तियम्येदियप्रामम्       | <b>ર</b> | 904        | सप्त वित्तागमा धम्याः      | 30       | 194            |
| सन्निवेश्यात्ममात्रासु    | 3        | 3 €        | सप्त सप्त परावरान्         | 3        | 704            |
| सन्नीयाष्ट्राध्य वारिणा   | Ę        | 288        | <b>33 21</b>               | ą        | ३८             |
| सन्यस्य सर्वकर्माणि       | ६        | ९५         | सप्तागारांश्ररेजेक्षम्     | 99       | <b>9 २</b> २   |
| स पर्यायेण यातीमान्       | 8        | 69         | सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते     | 9        | २९४            |
| सपवित्रं तिलोदकम्         | ્ર       | २२३        | सप्ताङ्गस्येह राज्यस्य     | ٩        | <b>२</b> ९६    |
| सपवित्रांस्तिलानपि        | 3        | २१०        | ससानां प्रकृतीनां तु       | <b>९</b> | २९५            |
| सपशुद्रव्यसं चयम्         | ø        | ९          | ससैते दासयोनयः             | 6        | 814            |
| सपादं पणमहति              | 6        | २४१        | स प्रेस्य पशुतां याति      | પ્       | <b>ક્</b> પ્   |
| स पापकृत्तमो लोकं         | 8        | 944        | स प्रेत्येह च नश्यति       | 6        | 303            |
| स पापात्मा परे लोके       | 9 9      | २६         | स प्रेत्येह च वर्धते       | 6        | १७२            |
| स पापिष्ठो विवाहानाम्     | Ę        | ३४         | सब्धचारिण्येकाहम्          | ષ        | 9              |
| स पारवशेव शवः             | ९        | 996        | स ब्रह्म परमभ्येति         | ą        | ८२             |
| सपारुः शतदण्हार्हः        | 6        | २४०        | स ब्रह्मस्तेयसंयुक्तः      | 2        | 995            |
| संगलान्या विपालान्या      | 6        | २४२        | सभां यत्रोपतिष्ठते         | 4        | १२             |
| सपिण्डता तु पुरुषे        | ષ        | ६०         | सभां वा न प्रवेष्टब्यम्    | 6        | १३             |
| सपिण्डेषु द्विजोत्तमाः    | ષ        | 900        | (सभावान प्रवेष्टब्या,      |          |                |
| सपिण्डेषु विधीयते         | ч        | ५९         | इति वा गाठः)               |          |                |
| 57 75                     | ч        | ६९         | सभान्तः साक्षिणः प्राप्तान | 3        | ७९             |
| सपिण्डैर्बान्धवैर्बहः     | 9 9      | 962        | सभाप्रपापूपशालाः           | ९        | २६४            |
| स पीतसोमपूर्वोऽपि         | 99       | 6          | सभामेव प्रविश्याद्याम्     | 6        | 90             |
| स पुत्रः क्षेत्रजः स्मृतः | ٩        | १६७        | स भुआनो न जानाति           | રૂ       | 994            |
| सपुत्रो विजने वने         | . 90     | 900        | स भूतात्मोच्यते बुधैः      | 35       | 32             |
| स पूज्यः सततं नृपः        | 6        | ३०३        | सम्येरेव त्रिभिर्वृतः      | 6        | 90             |
| स पौनर्भव उच्यते          | ९        | १७५        | समं पश्यकात्मयाजी          | 9 2      | 93             |
| सप्तकस्यास्य वर्गस्य      | હ        | ५२         | समं सर्वे सहोदराः          | 9        | 982            |
| सप्तत्या स्थविरश्च यः     | C        | ३९४        | समः सर्वेषु भूतेषु         | Ę        | ६ ६            |
| सप्तद्वारावकीर्णां च      | ६        | 86         | समक्षं सीम्नि साक्षिणः     | C        | २५४            |
| सप्त प्रकृतयो होताः       | ९        | २९४        | समक्षदर्शनात्साक्ष्यम्     | 6        | 98             |
| सप्तमे विनिवर्तते         | ч        | <b>6</b> 0 | समग्रमलहारकम्              | E        | ३०८            |
| सप्तरात्रं यवान्पिबेत्    | 33       | १५२        | समग्र धनमञ्चतम् 🕛          | 6        | \$60           |

| पाद                      | अ०       | श्लो॰        | पाद                      | अ०       | स्रो॰       |
|--------------------------|----------|--------------|--------------------------|----------|-------------|
| समता चैव सर्वासान्       | Ę        | 88           | समानिचय एव वा            | €,       | , 16        |
| समनुज्ञाप्य तं जनस्      | Ġ        | २२४          | समानि बहाहत्यया          | 1 2      | 44          |
| सममञ्जयकरुपयन्           | 8        | २२४          | समानि विषमाणि च          | \$       | २४          |
| सममद्राष्ट्राणे दानम्    | •        | 64           | समानोदकभावस्तु           | ų        | ६०          |
| समयञ्यभिचारिणम्          | 6        | २२०          | समान्ते सौमिकैर्मकैः     | 8        | २६          |
| समयब्यभिचारिणाम्         | 4        | २२१          | समासे तूदकं कृत्वा       | 4        | 66          |
| समयाध्युषिते तथा         | 2        | 94           | समाप्ते द्वादशे वर्षे    | 33       | 61          |
| समवर्णासु ये जाताः       | 9        | १५६          | समाप्रुयाद्दमं पूर्वम् 🦠 | ९        | २२७         |
| समवर्णे द्विजातीनाम्     | હ        | २६९          | समामिच्छेत्पिता यदि      | 6        | ३६६         |
| समवस्कन्दयेखेनम्         | 9        | 198          | समारोप्य यथाविधि         | ६        | २५          |
| समवाये जनस्य च           | ß        | 306          | समाविश्वति संसृष्टः      | 3        | ષદ          |
| समस्तत्र विभागः स्यात्   | ٩,       | 120          | समावृत्तो यथाविधि        | 3        | 8           |
| <b>"</b>                 | <b>९</b> | 8 \$ 8       | समाश्रित्य वसेत्पुरम्    | ej.      | 90          |
| 53 37                    | 9        | २०५          | समासेन चिकीर्षितम्       | •        | २०२         |
| "                        | 9        | 230          | समासेन प्रकीर्त्तिता     | २        | <b>ર</b> પ્ |
| समस्ताः सीन्नि निश्चयम्  | 6        | २५५          | समास्ता गुरुभार्यया      | 2        | 9 ₹ 9       |
| समस्तानां च कार्येषु     | છ        | <b>પ</b> ુ છ | समाहत्य तु तद्भैक्षम्    | 2        | 49          |
| समस्तैरथवा पृथक्         | 9        | 196          | समित्रज्ञातिबान्धवान्    | Ŗ        | २६९         |
| स महीमखिलां भुअन्        | 9        | ६७           | समिदाधानमेव च            | 3        | १७६         |
| स महेन्द्रः प्रभावतः     | ૭        | <b>y</b>     | समिद्धे त्रिरवाक्शिराः   | 9 9      | ७३          |
| समागम्य पृथग्जनाः        | G        | 286          | समीक्ष्यकारिणं प्राज्ञम् | હ        | २६          |
| समागम्य स्वतोंऽशतः       | 6        | 808          | समीक्ष्य कुल्धमाश्च      | 6        | 83          |
| समाजाः प्रेक्षणानि च     | 9        | २६४          | समीक्ष्य वसुधां चरेत्    | Ę        | ६८          |
| स भाता स पिता ज्ञेयः     | 2        | 188          | समीक्ष्य स धतः सम्यक्    | <b>v</b> | 18          |
| समातिष्ठेद्दिवानिशम्     | •        | 88           | समुखानब्ययं दाप्यः       | 6        | २८७         |
| समादायानुपूर्वशः         | ₹        | २१९          | समुत्पत्ति च मांसस्य     | 4        | ४९          |
| समादेयानि सर्वतः         | <b>ર</b> | २४०          | समुत्सुजेत्साइसिकान्     | 6        | ३४७         |
| समानंशान् प्रकल्पयेत्    | 9        | २४०          | समुत्सृजेद्धक्तवताम्     | ¥        | २४४         |
| समानयानकर्मा च           | •        | १६२          | समुत्सुजेद्राजमार्गे     | 9        | २८२         |
| समानशयने चैव             | 8        | 80           | समुद्रमिव सिन्धवः        | 4        | 104         |
| समानांशाः प्रकीर्त्तिताः | 4        | 165          | समुद्रयानकुशलाः          | 4        | 340         |

| पाद                      | अ०       | श्लो०          | पाद                      | अ७       | स्रो०        |
|--------------------------|----------|----------------|--------------------------|----------|--------------|
| समुद्रवायी बन्दी च       | 3        | 146            | स याच्यः प्राद्धिवाकेन   | C        | 167          |
| समुद्रेणेव निम्नगा       | Q        | 77             | स याति भासतां विश्रः     | 99       | 514          |
| समुद्रे नाम्यास्किचित्   | 6        | 966            | सरस्वतीहणद्वस्योः        | ₹        | 90           |
| समुद्रे नास्ति छक्षणम्   | 6        | ¥0 &           | सरहस्यो द्विजन्मना       | ?        | <b>5 8 4</b> |
| समुपोढेषु कामेषु         | Ę        | 88             | स राजा पुरुषो दण्डः      | 9        | 90           |
| स मुढो नरकं याति         | 3        | २४९            | स राजा शक्रकोकभाक्       | 6        | ३८६          |
| समूलस्तु विनश्यति        | ું જ     | 308            | स राज्ञा तचतुर्भागम्     | 6        | 308          |
| समेत्य भातरः समम्        | ९        | 808            | सरितः सागराञ्छेलान्      | 9        | ३४           |
| समेत्य सहिताः समम्       | 9,       | २१२            | सर्गः संहार एव च         | 1        | 40           |
| स मे पुत्रो भवेदिति      | <b>લ</b> | 320            | सर्पं हत्वा द्विजोत्तमः  | 19       | 9 3 3        |
| समेऽपुमान् पुंखियौ वा    | ¥        | ४९             | सर्पादीनामशक्रुवन्       | 99       | १३९          |
| समेषु तु गुणोत्कृष्टान्  | 1.       | ७३             | सर्व कर्मेदमायसम्        | 9        | २०५          |
| समैहिं विषमं यस्तु       | ९        | २८७            | सर्वं कीर्तयतो मम        | 3        | ₹ €          |
| समोत्तमाधमै गजा          | G        | 69             | सर्वं च तान्तवं रक्तम्   | 30       | 60           |
| समोऽवकृष्टजातिस्तु       | 6        | 300            | सर्वं च तिलसम्बद्धम्     | 8        | હર           |
| सम्यक् कुर्यादतंदितः     | G        | 100            | सर्वे च दंशमशकम्         | 3        | 80           |
| सम्यक् कुर्वन्महीपतिः    | ٩        | 949            | सर्वं च इधिसंभवम्        | <b>U</b> | jo           |
| सम्यक् प्रणिहितं चार्थम् | 6        | '48            | सर्वं च स्यात्सुलक्षितम् | 6        | ४०३          |
| सम्यक् श्रद्धासमन्वितः   | 3        | २७५            | सर्व चैव परिच्छदम्       | ઉ        | 3            |
| सम्यक् सारापराधतः        | <b>९</b> | २६२            | सर्व तद्रोचते कुलम्      | 3        | ६२           |
| सम्यगर्थसमाहरून्         | •        | <b>&amp; 0</b> | सर्वे तु तपसा साध्यम्    | 39       | २३८          |
| सम्यगुक्तौ मनीषिभिः      | २        | 88             | सर्वे दक्षिणतो हरेत      | 3        | 9,5          |
| सम्यगृक्षविभावनात्       | ą        | 909            | सर्वं दहित वेदविस्       | 3 9      | ₹ 🛠 €        |
| सम्यगुप्ते च सर्वदा      | 7        | 380            | सर्वे परवशं दुःखम्       | ક્ર      | 980          |
| सम्यग्दर्शनसंपद्यः       | Ę        | 98             | सर्वे प्राणस्य भोजनम्    | 4        | २८           |
| सम्यग्भवति रक्षणात्      | C        | ३०५            | सर्वे भूम्यनृते हन्ति    | 4        | ९९           |
| सम्यग्राष्ट्रेषु तचरैः   | 9        | 122            | सर्वं वापि चरेद्रामम्    | ₹        | 964          |
| सम्यग्विप्रान्यथोदितान्  | Ę        | 929            | सर्वं वा रिक्थजातं तत्   | ٩,       | १५२          |
| सम्यङ् नान्येन केनचित्   | î        | १०३            | सर्व वेदास्त्रसिध्यति    | 35       | 9.9          |
| सम्यक् निविष्टवेशस्तु    | ٩        | २५२            | सर्व वै बाह्यणोऽहित      | 3        | 100          |
| स यदि प्रतिपद्येत        | 6        | 163            | सर्वे श्रणुत तं विप्राः  | ¥        | ३६           |

#### मनुपादानुकमस्री।

| पाद                      | <b>3</b> 70 | श्हो०       | पाव                             | No  | स्रो॰        |
|--------------------------|-------------|-------------|---------------------------------|-----|--------------|
| सर्वे संग्रहणं स्मृतम्   | 6           | \$ 40       | सर्वद्रव्याणि कुम्बं च          | •   | 96           |
| "                        | 6           | ३५८         | सर्वद्रव्याणि योजयेत्           | •   | 315          |
| सर्व संस्करमहीत          | 90          | 49          | <b>सर्वद्वं</b> द्वविनिर्मुक्तः | Ę   | 69           |
| सर्व सुकृतमाद्ते         | 3           | 900         | सर्वधर्मबहिष्कृताः              | •   | २३८          |
| सर्व स्वं बाह्यणस्येदम्  | 3           | 900         | <b>सर्वध</b> र्मविदोऽलुब्धाः    | 6   | 43           |
| सर्वं ह्यात्मनि संपरयम्  | 9 2         | 396         | सर्वमाशाय कल्पते                | E   | <b>RM</b> \$ |
| सर्व एव विकर्मस्थाः      | 9           | 898         | सर्वपण्यविचक्षणः                | 6   | ३९८          |
| सर्वकण्ट≉पापिष्ठम्       | •           | २९२         | सर्बपापापनोदनः                  | 3 3 | 234          |
| सर्वकार्याणि निःक्षिपेस् | •           | ٧, <b>٩</b> | "                               | 33  | 250          |
| सर्वगन्धवहः ग्रुचिः      | 9           | ७६          | सर्वपापनोदनम्                   | 3 3 | ₹ 6          |
| सर्वज्ञानमयो हि सः       | २           | •           | सर्वपापेष्वपि स्थितम्           | ૮   | 360          |
| सर्वतः प्रतिगृह्यीयात्   | 8           | २४७         | सर्वपापैः प्रमुच्यते            | 8   | 161          |
| 29 21                    | 8           | २५१         | 22 33                           | 33  | २६२          |
| <b>&gt;</b>              | 90          | 302         | सर्वपापोपशान्तिदम्              | 92  | 126          |
| सर्वतेजोमयो हि सः        | •           | 9 9         | सर्वप्रवचनेषु च                 | 3   | 148          |
| सर्वतो धर्मषड्भागः       | 6           | 308         | सर्वभावेषु निःस्पृहः            | ६   | 60           |
| सर्वतो विद्वते भयात्     | •           | ર           | सर्वभूतकृत्व्ययम्               | 1   | 96           |
| सर्वत्र तु सदो देयः      | 6           | २४१         | सर्वभू नप्रसृतिहि               | ٩   | ३५           |
| सर्वत्रैवानुषङ्गिणः      | G           | ५२          | सर्वभूतभवावहान्                 | 6   | ३४७          |
| सर्वथा बरुवत्तरम्        | 9           | 303         | सर्वभूतमयोऽचिन्त्यः             | 3   | •            |
| सर्वथा बाह्यणाः प्रथाः   | ٩           | ₹9९         | सर्वभूतानि चात्मनि              | 92  | ९९           |
| सर्वथा वर्तते यज्ञः      | २           | 14          | सर्वभूतानि तेजसा                | •   | uş.          |
| सर्वधैव विगर्हितम्       | 8           | ७२          | सर्वभूतानि निर्ममे              | 3   | 3 &          |
| सर्वदण्डमथापि वा         | C           | २८७         | सर्वभूताश्रितं वपुः             | 12  | ₹ €          |
| सर्वदण्डसमुस्थितम्       | ९           | ३२३         | सर्वभूतानुकम्पकः                | ६   | 6            |
| सर्वदा कर्म वैदिकम्      | 9 2         | ८६          | सर्वभूतान्यपीडयन्               | 8   | २३८          |
| सर्वदा गुरुसिक्षधी       | 2           | 198         | "                               | É   | प्र          |
| "                        | <b>ર</b>    | 994         | सर्वभूतेषु चात्मानम्            | 12  | ९१           |
| सर्वदिक्षु निवेशयेत्     | •           | 969         | सर्वभूतेषु मानवः                | 38  | 3 3          |
| सर्वदिश्च प्रदक्षिणम्    | 3           | 60          | सर्वमन्यद्धि गच्छति             | 6   | 9 10         |
| सर्वव्याच यहरम्          | ٩           | 112         | सर्वमासस्य भक्षणात्             | مع  | *8           |
| • •                      |             |             |                                 |     |              |

| पाद                      | भ०         | श्लो०            | पाद                      | अ०       | श्लो॰       |
|--------------------------|------------|------------------|--------------------------|----------|-------------|
| सर्वमारमनि संपश्यन्      | <b>1</b> 2 | 996              | सर्वस्वं वेदविदुषे       | 3 3      | ७€          |
| सर्वमात्मन्यवस्थितम्     | 35         | 119              | सर्वस्वमवजित्यं वा       | 99       | 60          |
| सर्वमात्मवशं सुखम्       | 8          | <b>9 &amp; 0</b> | सर्वस्वहारमर्हन्ति       | ९        | २४२         |
| सर्वमाष्ट्रत्य विक्रमम्  | ३          | 518              | सर्वहारं हरेष्ट्रपः      | 6        | <b>३९</b> ९ |
| सर्वमेव न रोचते          | ३          | ६२               | सर्वाख्छोकानिमान्गृही    | Ŗ        | 969         |
| सर्वमेवाञ्चसा वद         | €          | 303              | सर्वाश्चैकशफांस्तथा      | 30       | ८९          |
| सर्वमेषोऽस्त्रिलं मुनिः  | 9          | ५९               | सर्वाश्चैव तपस्विनः      | 8        | १६२         |
| सर्वयत्नैर्गुरुं यथा     | •          | 304              | सर्वास्तानिप घातयेत्     | ९        | २७१         |
| सर्वरतानि राजा तु        | 99         | 8                | सर्वास्तांश्चेव नामतः    | 6        | २५५         |
| सर्वलक्षणहीनोऽपि         | 8          | 946              | सर्वास्तांस्तेन पुत्रेण  | 9        | १८२         |
| सर्वलोकपितामहः           | 9          | ९                | सर्वाः परिददे प्रजाः     | 9        | ३२७         |
| सर्वलोकप्रकोपश्च         | •          | २४               | सर्वाकरेष्वधीकारः        | 33       | ६३          |
| सर्वलोकाधिपत्यं च        | 3 2        | 300              | सर्वाकुशलमोक्षाय         | 99       | २२३         |
| सर्ववर्गा यथोदितम्       | ٩          | २४०              | सर्वाणि ज्ञातिकार्याणि   | 3 9      | 969         |
| सर्ववर्णेषु नुष्यासु     | 30         | ч                | सर्वाणि त्रिगुणानि च     | 9        | ۾ ٻو        |
| सर्ववर्णेषु साक्षिभिः    | 6          | ८३               | सर्वा॰येतान्यशेषतः       | 92       | 60          |
| सर्ववेदसद्क्षिणाम्       | દ્         | ३८               | सर्वाण्येव विवर्जयेत्    | Я        | 188         |
| सर्वशास्त्रार्थपारगः     | 35         | १२६              | सर्वानर्हति धर्मतः       | 3        | 939         |
| सर्वशास्त्रविशारदम्      | 9          | ६३               | सर्वाननृतभाषणे           | 6        | 909         |
| सर्वशुक्तानि चैव हि      | પ્ય        | ९                | सर्वानेव सदा स्वयम्      | 9        | <b>3</b>    |
| सर्वस्माद् द्विजकर्मणः . | <b>२</b>   | १०३              | सर्वान् कामान्समभुते     | <b>२</b> | પ્ય         |
| सर्वस्य तपसो मूलम्       | 3          | 990              | "                        | 3        | २७७         |
| सर्वस्याधिपतिर्हि सः     | 9          | ३७               | सर्वान् पञ्चनखांस्तथा    | ų        | 99          |
| सर्वस्याश्ममयस्य च       | 4          | 999              | सर्वान्परित्यजेदर्थान्   | 8        | 30          |
| "                        | •          | १३२              | सर्वान्बलकृतानर्थान्     | 1.       | 3 & C       |
| सर्वस्यास्य च गुप्तये    | ð          | 98               | सर्वान्भृत्याक्षियोजयेत् | ९        | ३२४         |
| सर्वस्यास्य तु सर्गस्य   | 3          | ८७               | सर्वान् रसानपोहेत        | 90       | ८६          |
| <b>?</b> ?               | 1          | <b>९</b> ३       | सर्वान्संसाधयेदर्थान्    | <b>ર</b> | 900         |
| सर्वस्यास्य प्रपद्यस्तः  | 99         | २४४              | सर्वाभावे हरेशुपः        | ٩.       | 969         |
| सर्वस्यास्य यथाक्रमम्    | 92         | ३९               | सर्वा रअयति प्रजाः       | હ        | 99          |
| सर्वस्यास्य यथान्यायम्   | 9          | २                | सर्वालंकारकेषु च         | 9        | २२०         |

| पाद                         | अ०       | <u>স্</u> কৌ ০ | पाद                           | अ०       | श्ची०        |
|-----------------------------|----------|----------------|-------------------------------|----------|--------------|
| सर्वाशी सर्वविकयी           | २        | 996            | सर्वेषामप्यभावे तु            | 9,       | 366          |
| सर्वासामेकपद्यीनाम्         | ٩        | १८६            | सर्वेषामप्यशेषतः              | 3        | 193          |
| सर्वासु द्रम्यशुद्धिषु      | ų        | १२६            | सर्वेषामर्धिनो मुख्याः        | 6        | 210          |
| सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः    | ₹        | २३४            | सर्वेषामेव दानानाम्           | 8        | २३३          |
| ** **                       | ą        | ५६             | सर्वेषामेव धर्मतः             | <b>ર</b> | 34           |
| सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य  | 9 3      | ९५             | सर्वेपामेव शौचानाम्           | ч        | 905          |
| सर्वास्तास्तेन पुत्रेण      | ९        | १८३            | सर्वेषु पितृकर्मसु            | Ą        | २५२          |
| सर्वास्तु प्रकृतीर्श्वशम्   | હ        | 900            | सर्वेष्वश्ममयेषु च            | 6        | 900          |
| सर्वेण तु प्रयक्षेन         | •        | 99             | सर्वेष्वेव चतुर्ष्यं पि       | 3        | 934          |
| सर्वेणाप्यनयं गतः           | 90       | 94             | सर्वेप्चेव व्रतेष्वेवम्       | 33       | २२५          |
| सर्वे तस्यादता धर्माः       | ź        | २३४            | सर्वे संकल्पजाः स्मृताः       | <b>ર</b> | રૂ           |
| सर्वे ते जपयशस्य            | २        | ८६             | सर्वैरुपायैरन्विच्छेत्        | 6        | 190          |
| सर्वे ते दस्यवः स्मृताः     | 30       | ४५             | सर्वो दण्डजितो छोकः           | •        | २२           |
| सर्वे ते नरकं यान्ति        | રૂ       | १७२            | सर्वोपायांश्च कृत्स्नशः       | 9        | २१५          |
| सर्वे दण्ड्याः शतं शतं      | 6        | २९४            | सर्वोपायान्सजेद् बुधः         | 9        | <b>₹</b> \$8 |
| सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः     | 30       | 83             | सर्वोपायैर्विमोचयेत्          | 3 3      | 992          |
| सर्वेऽपि क्रमशस्त्वेते      | દ્       | 44             | सर्वोपायैस्तथा कुर्यात्       | <b>v</b> | 300          |
| सर्वे पुत्रा द्विजन्मनाम्   | ९        | १५६            | सर्पपाः षट् यवो मध्यः         | 6        | 938          |
| सर्वे पृथक्षुथादण्ड्याः     | 4        | २६३            | स लिक्निनां हरत्येनः          | 8        | 300          |
| सर्वे रिक्थस्य भागिनः       | ٩        | 168            | स लोके व्रियतां याति          | ч        | ५०           |
| सर्वेषां तु स नामानि        | 1        | २१             | सवनेष <u>ु</u> पय <b>ञ</b> पः | Ę        | २२           |
| सर्वेषां तु विशिष्टेन       | હ        | 46             | सवर्णां लक्षणान्विताम्        | ર        | 8            |
| सर्वेषां तु विदित्वेषां     | 9        | २०२            | "                             | •        | 99           |
| सर्वेषां धनजातानाम्         | ९        | 338            | सवर्णा गुरुयोषितः             | <b>ર</b> | २१०          |
| सर्वेषां ब्राह्मणो विद्यात् | 30       | २              | सवर्णामे द्विजातीनाम्         | ₹        | 12           |
| सर्वेषां शावमाशौचम्         | ч        | ६२             | सवर्णासूपदिश्यते              | Ę        | ४३           |
| सर्वेषामनुपूर्वशः           | •        | ३५             | सवर्णाऽहत्यहन्यपि             | <b>ર</b> | १३२          |
| सर्वेषामपि चैतेषाम्         | Ę        | ८९             | सवासाः स्नानमाचरेत्           | 11       | 308          |
| ** **                       | 92       | 82             | सवासा जलमाप्युत्य             | 4        | 99           |
| ",                          | 88       | 64             | ",                            | 4        | 96           |
| सर्वेषामपि तु न्याय्यम्     | <b>Q</b> | २०२            | सवासा जलमाविशेत्              | 11       | २२३          |

| पाद                       | अ०         | श्लो०     | पाद                      | अ०  | स्हो० |
|---------------------------|------------|-----------|--------------------------|-----|-------|
| स विज्ञेयः परो धर्मः      | 92         | 333       | स सर्वस्तेयकुष्तरः       | ¥   | २५६   |
| स विशेषः समाह्वयः         | ٩          | २२३       | स सर्वस्य हितप्रेप्सुः   | ų   | 84    |
| स विशेषश्च कृत्रिमः       | q          | १६९       | स सर्वोऽभिहितो वेदै      | २   | •     |
| स विज्ञेयो जितेन्द्रियः   | २          | ९८        | ससहायः स हन्तच्यः        | 6   | 193   |
| स विद्यादस्य कृत्येषु     | 4          | ६७        | स साधुभिर्बहिष्कार्यः    | २   | 33    |
| स विभूयेह पाप्मानम्       | ं इ        | 64        | स सोमं पातुमहति          | 3 5 | •     |
| स विनश्यत्यसंशयम्         | <b>E</b>   | 35        | सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या  | 8   | २ ६   |
| स विनाशं वजत्याञ्च        | ૪          | 9         | स स्वयं पुरुषो विराद्    | 1   | ३३    |
| <b>,,</b>                 | 4          | ३४६       | स स्वर्गाष्ट्यवते लोकात् | ₹.  | 380   |
| स विप्रो गुरुरुच्यते      | ર          | १४२       | सह खट्टासनं चैव          | 6   | ३५७   |
| स वै कुक्कुटकः ग्रमृतः    | 10         | 94        | सइजः सर्वदेहिनाम्        | 35  | 38    |
| स वै सर्वमवाझोति          | २          | १६७       | सह तेनैव मजाति           | 8   | 63    |
| स वै स्पर्शगुणो मतः       | 9          | ७६        | "                        | 8   | 190   |
| स व्यवस्येकराधिपः         | હ          | १३        | सहस्रं क्षत्रियो दण्ड्यः | 6   | ३७५   |
| सम्याहतिप्रणवकाः          | 33         | २४८       | सहस्रं तु पितृन्माता     | २   | 184   |
| सन्येत सन्यः स्प्रष्टन्यः | २          | ७२        | सहस्र त्वन्त्यजिश्चियम्  | 6   | ३८५   |
| सन्ये प्राचीन आवीती       | २          | ६३        | सह द्यावापृथिन्योश्च     | 3   | ८६    |
| स शतं प्राप्तुयादण्डम्    | 6          | २२५       | सहपिण्डकियायां नु        | Ę   | २४८   |
| सशल्कांश्चेव सर्वशः       | 4          | 9 €       | स हरेतैव तदिक्यम्        | 9   | 383   |
| स शूदवह हिएकार्यः         | ?          | १०३       | सह वापि वजेयुक्तः        | 9   | २०६   |
| स संप्रधणमामुयात्         | 6          | ३५६       | सह संमन्त्र्य मन्त्रिभिः | 9   | २१६   |
| ससंतानानि श्रुद्रताम्     | ३          | 34        | सह सर्वाः समुत्पन्नाः    | •   | 238   |
| स संधार्यः प्रयत्नेन      | 3          | ७९        | सहसा दुष्टचेतसः          | ર   | २२५   |
| स संध्यांशेषु च त्रिषु    | 9          | <b>90</b> | सहस्रं त्वेव चोत्तमः     | 4   | १३८   |
| स संपुज्यस्तु बन्धुवत्    | 9          | 110       | सहस्रं परिसंख्यया        | 3   | ७२    |
| स स तावद्गुणः स्मृतः      | 3          | २०        | सहस्रं पुरुषानृते        | c   | 96    |
| स सदाचार उच्यते           | 7          | 36        | सहस्रं हि सहस्राणाम्     | 3   | 333   |
| स सदा तद्गुणप्रायम्       | 32         | 24        | सहस्रं बाह्मणो दण्डम्    | 6   | ३८३   |
| स सद्यो नरकं वजेत्        | 6          | ३०७       | सहसं ब्राह्मणो दण्ड्यः   | 4   | 306   |
| स सद्यो वधमहति            | 4          | ३६४       | सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य    | २   | ७९    |
| स सर्वसमतामेत्व           | <b>9 २</b> | १२५       | सहस्रपतये स्वयम्         | (9  | 110   |
|                           |            |           |                          |     |       |

#### मनुपादानुकमसी। १६५ स्रो० श्रो० पाद पाद सहस्रपतिमेव च साक्षिप्रत्यय एव स्यात् २५३ 994 साक्षिप्रत्ययसिद्धानि सहस्रमभिहत्य च 106 ३०६ 33 साक्षिप्रश्नविधानं च सहस्रमिति धारणा 334 ३३६ साक्षी रष्टश्रुतादन्यत् सहस्रशः समेतानाम् 34 338 92 सहस्रशतदक्षिणैः साक्ष्यं प्रच्छेदतं द्विजान् 69 ३०६ साक्ष्यं वितथमुख्यते सहस्रस्य प्रमापणे 116 33 180 सहस्राणि समाहितः साक्ष्यभावे तु चत्वारः १९४ 246 33 साध्यभावे प्रणिधिभिः 903 सहस्रांशुसमप्रभम् 8 1 सहस्राणि शतानि च साक्ष्येऽनृतं वदन्पार्शेः 62 90 सहस्राधिपतिः परम् साक्ष्येषु वदतां मृषा 115 99 सहायं चैव वैरिणः सागरे यान्ति संस्थितिम् १३३ 20 सहासनमभित्रेप्सुः साधित्रेता गरीयसी १८१ २३१ साङ्गोपाङ्गचिकित्सकः स हि कप्टतरो रिपुः 110 १८६ 35 9 स हि धर्मार्थमुत्पन्नः सा च स्वा च विशः स्मृते 86 93 स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः सा चेत्पुनः प्रदुष्येत् **२** 93 \$ 3 900 सा चेदक्षतयोनिः स्यात् स हि स्वाम्यादतिकामेत् ९ ९३ 308 सा तत्राधिगमं प्रति 8 सहेतासंज्वरः सदा 964 240 सहेते संभवे नृणाम् स्रो तेषां पावनाय स्यात् ११ २ २२७ ८५ सारिवकं गुणस्क्षणम् सहोढं सोपकरणम् ९ १२ ३१ ₹७० सहोढ इति चोच्यते सास्विकं धार्मिकं तथा १७३ २६३ 9 सा त्रीन्मासान्परित्याज्या ९ ७८ सहोभी चरतां धर्मम् ३ ३० सा दण्ड्या कृष्णकानि पर् ९ 63 68 स इस्य प्रत्यनन्तरः 90 सांतानिकं यक्ष्यमाणम् साधयन्तीह तत्पदम् 3 ७५ 99 साधयेकार्यमात्मनः सांत्वेन प्रशमय्यादी 208 ३९१ साधयेहेहमात्मनः सांपरायिककल्पेन २४८ १८५ 9 सांवत्सरिकमाप्तैश्च साधुभ्यः संप्रयच्छति 18 Ø 11 69 साकल्येनातिरिच्यते साधुषु व्यपदेशार्थम् 3 3 E C 82 २५ साधूनां संप्रहेण च साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् **₹**99 38 2 साक्षिणः प्रतिभूः कुछम् साध्यानां च गणं स्क्सम् १६९ २२ साक्षिणः सन्ति मेत्युक्त्वा ८ साध्यानां पितरः स्मृताः ३ १९५ 40 साक्षिद्वैषे नराधिपः साध्वाचारः सुसंयतः 188 30 4

| पाद                       | अ०       | <u>ঞ</u> ্চী ০ | पाद                       | अ०       | श्लो०  |
|---------------------------|----------|----------------|---------------------------|----------|--------|
| साध्वी भार्या शिशुः सुतः  | 3 9      | 90             | सारापराधी चालोक्य         | 4        | १२६    |
| सानुगेभ्यो बल्लि हरेत्    | 3        | 60             | सारासारं च भाण्डानाम्     | ९        | 339    |
| सानुज्ञाप्याधिवेत्तव्या   | ९        | ८२             | सार्घ तैरेक एव वा         | ৩        | 9 14 9 |
| सान्वयः षट्शतं दमम्       | 6        | 196            | सार्ववर्णिकमञ्जाद्यम्     | 3        | २४४    |
| सान्वयेऽर्घशतं दमः        | 6        | ३३१            | सावित्राञ्छान्तिहोमांश्र  | ક        | 940    |
| सा प्रशस्ता द्विजातीनाम्  | ं ३      | ષ્             | सावित्रीं च जपेन्नित्यम्  | 93       | २२५    |
| सा असूतिः प्रशस्यते       | ٩        | ३४             | सावित्री नातिवर्तते       | <b>ર</b> | ३८     |
| सा भर्तृलोकानामोति        | <b>९</b> | २९             | सावित्रीपतिता वात्याः     | २        | ३९     |
| सामदण्डौ प्रशंसंति        | ø        | १०९            | सावित्रीमप्यधीयीत         | 2        | 308    |
| सामध्वनावृग्यजुषी         | 8        | १२३            | सावित्रीमात्रसारोऽपि      | Ę        | 996    |
| सामन्तप्रत्ययो ज्ञेयः     | 4        | २६२            | सावित्रीमाऽर्कदर्शनात्    | 7        | 303    |
| सामन्तांश्चैव चोदितान्    | ९        | २७२            | सावित्र्यास्तु परं नास्ति | ą        | ८इ     |
| सामन्तानामभावे तु         | ૮        | २५९            | सा वृत्तिः सद्विगर्हिता   | 90       | 88     |
| सामन्ताश्चेन्सृषा ब्रुयुः | 6        | २६३            | सा सत्या साऽजराऽमरा       | <b>ર</b> | 388    |
| सामवेदः स्मृतः पिश्यः     | 8        | 158            | सा सद्यः संनिरोद्धव्या    | ९        | 63     |
| सामवेदविदेव च             | 12       | 3 9 2          | सा सद्यो मीण्ड्यमहीति     | 6        | ३७०    |
| सामादिभिरुपक्रमैः         | G        | 900            | सा स्यात्पालेऽभृते भृतिः  | 6        | २३१    |
| "                         | ø        | १५९            | साहसस्य नरः कर्त्ता       | 4        | ३४५    |
| सामादीनामुपायानाम्        | હ        | 908            | साहसे वर्त्तमानं तु       | C        | ३४६    |
| सामानि विविधानि च         | 33       | २६४            | साहसेषु च सर्वेषु         | 6        | ७२     |
| सामान्यं संधिविग्रहम्     | ø        | ५६             | साहस्रो मानसः स्मृतः      | २        | ८५     |
| साम्नां वा सरहस्यानाम्    | 3 3      | २६२            | साहस्रो वै भवेहमः         | 6        | ३८३    |
| साम्ना दानेन भेदेन        | ૭        | 986            | सा ह्यस्य कृतकृत्यता      | 90       | १२२    |
| साम्नैव परिसाधयेत्        | 6        | 960            | सिंहवच्च पराक्रमेत्       | •        | १०६    |
| साम्यं सौम्येच्छसीति किम् | 33       | १९५            | सिंहा न्याघा वराहाश्च     | 9 २      | ४३     |
| साम्राज्यकृत्सजात्येषु    | 4        | ३८७            | सिच्यमान इव द्रुमः        | <b>Q</b> | २५५    |
| सायं त्वन्नस्य सिद्धस्य   | 3        | 9 2 9          | सिद्धिं गच्छंति कर्हिचित् | 2        | 90     |
| सायंप्रातर्विधीयते        | <b>ર</b> | 121            | सिद्धिमेकस्य संपदयन्      | Ę        | ४२     |
| सायंप्रातश्च जुहुयात्     | 2        | 168            | सिद्धिश्च परमा यथा        | <b>S</b> | 8      |
| सायं ज्ञायात्प्रगे तथा    | ६        | Ę              | सिच्चर्थमसहायवान्         | Ę        | ४२     |
| सारसं रज्जुवालं च         | ч        | 97             | सिस्धुर्विविधाः प्रजाः    | 9        | 6      |
|                           |          |                |                           |          |        |

| पाद                         | अ०       | श्को०        | पाद                         | Si o     | श्लोट      |
|-----------------------------|----------|--------------|-----------------------------|----------|------------|
| सीताद्रच्यापहरणे            | 9,       | २९३          | सुतां कुर्वीत पुत्रिकाम्    | ٩        | 120        |
| सीदक्षिः कुप्यमिष्डक्षिः    | 90       | 998          | सुदाः पैजवनश्चेव            | •        | 83         |
| सीमां प्रति समुख्ये         | 6        | २४५          | सुधन्वाचार्य एव च           | 90       | २३         |
| सीमाज्ञाने नृणां वीक्ष्य    | 4        | २४९          | सुपरीक्षितमन्नाचम्          | 9        | २१७        |
| सीमायामविषद्यायाम्          | 6        | २६५          | सुपर्णिकश्वराणां च          | ર        | १९६        |
| सीमालिकानि कारयेत्          | 6        | २४९          | सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा | 3        | इध         |
| सीमावादविनिर्णयः            | 6        | २५३          | सुप्ता श्वरवा च भुक्त्वा    | च ५      | 184        |
| सीमाविनिर्णयं कुर्युः       | 6        | २५८          | सुप्रकाशेषु सेतुषु          | 6        | २४५        |
| सीमाविवादधर्मश्र            | 6        | Ę            | सुबीजं चैव सुक्षेत्रे       | 90       | ६९         |
| सीमावृक्षांश्च कुर्वीत      | 6        | २४६          | सुब्रह्मण्यास्वपि स्मृतम्   | ९        | १२६        |
| सीमासंधिषु कार्याणि         | 6        | २४८          | सुभगे भगिनीति च             | <b>ર</b> | 129        |
| सीमासंधिषु रुक्षणम्         | 4        | २६१          | सुमुखो निमिरेव च            | •        | 81,        |
| सीमासेतुविनिर्णयः           | c        | २६२          | सुयुद्धमेव तत्रापि          | હ        | १७६        |
| सुकृतैः शापिताः स्वैः स्वैः | : 4      | २५६          | सुरां पीत्वा द्विजो मोहात   | £ \$ 7   | ९०         |
| सुखं दुःखं च जन्मसु         | 12       | 93           | सुरापः श्यावदन्तताम्        | 99       | 88         |
| सुखं च प्रतिबुध्यते         | २        | १६३          | सुरापानसमानि षट्            | 99       | પ્રદ્      |
| सुखं चरति लोकेऽसिन्         | २        | 9            | सुरापानस्य निष्कृतिः        | 33       | 96         |
| सुखं चेहेच्छता नित्यम्      | 3        | ७९           | सुरापानापनुत्त्यर्थम्       | 8 3      | ९२         |
| सुखं स्विपति निर्दृतः       | 9        | पष्ठ         | सुरापाने सुराध्वजः          | 9        | २३७        |
| सुखं द्यवमतः शेते           | <b>ર</b> | १५३          | सुरापीनां च योषिताम्        | 4        | <b>९</b> ० |
| सुखदुःखसमन्विताः            | 9        | ४९           | सुरापोऽपि विद्युध्यति       | 3 3      | २४९        |
| सुखदुःखादिभिः प्रजाः        | 3        | २६           | सुरापो बाह्मणो बजेत्        | 9 2      | ५६         |
| सुखमक्षयमसदः                | 8        | २२९          | सुरा वै मलमन्नानाम्         | 99       | ५९३        |
| सुखमस्यन्तमश्नुते           | ч        | ४६           | सुरासंस्पृष्टमेव च          | 3 9      | 940        |
| सुखसंयोगमक्षयम्             | Ę        | ६४           | सुरूपं वा विरूपं वा         | ९        | 38         |
| सुखस्य नित्यं दातेह         | 4        | 9 4 3        | सुवर्णं दण्डमहंति           | 4        | 3 8 9      |
| सुखाभ्युदियकं चैव           | 9 2      | 66           | सुवर्णकर्तुचें जस्य         | 8        | २१५        |
| सुखार्थी विचरेदिह           | Ę        | <b>ે ૪ ૧</b> | सुवर्णचौरः कौनस्यम्         | 99       | ४९         |
| सुखार्थी संयतो भवेत्        | ጸ        | 12           | सुवर्णरजतादीनाम्            | 6        | ३२१        |
| सुगुर्वप्यपहन्त्येनः        | 11       | २५६          | सुवर्णस्तेयकृद्विप्रः       | 99       | ९९         |
| सुतं सूते तथाविधम्          | ९        | 2            | सुवर्णस्तेयजं मरूम्         | 99       | 909        |
|                             |          |              |                             |          |            |

| पाद                          | <b>310</b> | श्लो॰       | याद                              | <b>अ</b> ॰ | स्रो०    |
|------------------------------|------------|-------------|----------------------------------|------------|----------|
| सुवर्णस्तेयनिष्कृतिय         | 3 3        | 96          | सूर्योढो मृहमेधिना               | ŧ          | 104      |
| सुवासिनीः कुमारीश्र          | ą          | 338         | सूर्यो नाभ्युदियात्कवित्         | ₹          | 518      |
| सुसंगृहीतराष्ट्रो हि         | 19         | 112         | सूर्यो मामुषदैविके               | 3          | <b>Ģ</b> |
| सुसस्कृतोपस्करया             | 4          | 140         | सगालयोनि चामोति                  | 9          | 30       |
| सुसहायेन धीमता               | 49         | 31          | सृजेद्वित्ति विवर्धिनीम्         | 4          | 180      |
| सुस्थो ज्योतिर्गणान्दिव      | , 8        | 182         | सुज्यमानः पुनः पुनः              | 9          | २८       |
| सुहत्स्वजिह्यः स्निग्धेषु    | •          | ३२          | सृतीश्चास्यांतरात्मनः            | Ę          | ६३       |
| सूक्तं वाब्दैवतं जपेत्       | 33         | 932         | सृष्टं स्थावरजङ्गमम्             | 3          | 81       |
| सूक्ष्मतां चान्ववेक्षेत      | Ę          | <b>દ્</b> પ | सृष्टवन्तः प्रजाः स्वाः स्वाः    | 3          | ६१       |
| सूक्ष्ममप्यर्थमुत्स्वेत्     | C          | 900         | सृष्टिं ससर्ज चैवेमाम्           | 9          | २५       |
| सुक्माभ्यो मूर्तिमात्राभ्यः  | 9          | 3 <b>९</b>  | सृष्टिर्मृष्टिर्द्धिजाश्चाप्रयाः | 3          | २५५      |
| सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसङ्गेभ्यः | 9          | Ŋ           | सृष्ट्वा परिददे पशुन्            | ९          | ३२७      |
| सूक्सोऽब्यक्तः सनातनः        | 9          | 49          | सेकेनोल्लेखनेन च                 | ч          | १२४      |
| सूचकः प्रतिवक्त्रताम्        | 33         | ५०          | सेतौ विवदतां मृणाम्              | 6          | २६३      |
| सूचकोऽशुचिरेव च              | B          | 9 1         | सेनापतिबळाध्यक्षौ                | •          | 968      |
| सूच्या वज्रेण चैवैताम्       | 9          | 393         | सेनापत्यं च राज्यं च             | १२         | 900      |
| सूच्या वा गरुडेन वा          | 9          | 960         | ( सैनापत्यं इति वा पाठः          | )          |          |
| सूतकं मातुरेव स्याव्         | 44         | ६२          | सेवते धर्ममस्पराः                | 35         | २१       |
| सुतकासाद्यमेव च              | 8          | 992         | सेवमानो व्रजत्यधः                | ह          | 34       |
| सूतके च तथोच्यते             | 8          | ५८          | सेवा श्रवृत्तिराख्याता           | 8          | ६        |
| सूतानामश्वसारथ्यम्           | 30         | 80          | सेवितव्यः प्रयत्नतः              | Ę          | 89       |
| सूते दस्युरयोगवे             | 10         | ३२          | सेवेतेमांस्तु निथमान्            | <b>ર</b>   | 9 94     |
| सूतो भवति जातितः             | 30         | 99          | सेह निन्दामवामोति                | 4          | 3 4 3    |
| सुतो वैदेहकश्चैव             | 10         | २६          | सैरिन्धं वागुरावृत्तिम्          | 90         | ३२       |
| सूत्रकार्पासकिण्वानाम्       | 6          | ३२६         | सैसकं चैकमाषकम्                  | 7 7        | १३३      |
| सूनाचक्रध्वजवताम्            | ક          | 82          | सोऽग्निर्भवति वायुश्र            | ø          | 19       |
| सूनादोषैर्न लिप्यते          | Ş          | 40          | सोऽचिराद्धश्यते राज्यात्         | Ġ          | 3 3 3    |
| सूमी ज्वलंती स्वाविलण्येत्   | 199        | 903         | सोऽज्येष्ठः स्यादभागश्र          | 9          | २१३      |
| सूर्ये चैवाचिरोदिते          | ¥          | २८०         | सोदकं च कमण्डसुम्                | 8          | इ६       |
| सूर्येण द्यभिनिर्मुकः        | ?          | 221         | सोदर्था विभजेरंस्तम्             | ٩,         | २१२      |
| (अभिनिम्खुक इति वा प         | ाठः )      |             | सोऽनुज्ञाती हरेदंशम्             | •          | 909      |

| पाद                         | <b>अ</b> ० | स्रो०      | पाद                         | अ०   | श्लो॰        |
|-----------------------------|------------|------------|-----------------------------|------|--------------|
| सोऽमुभूयासुखोदकीन्          | 12         | 96         | स्तेमो नृषु विचेष्टते       | 4    | <b>3</b> 28  |
| सोऽमुयोज्यो यथाविधि         | 6          | 33         | स्तेनो राजनि किस्बिपम्      | 4    | ₹ <b>1</b> 0 |
| सोऽन्तर्याहात्तद् द्रध्यम्  | 6          | २२२        | स्तेनो विप्रः सहस्रकाः      | 12   | 40           |
| सोऽपत्यं आतुरुत्पाद्य       | ٩          | 988        | स्तेयं कृत्वाऽन्यवेश्मतः    | 99   | 958          |
| सोपानत्कश्च यद्धक्तो        | રૂ         | २३८        | स्तेयं गुर्वङ्गनागमः        | 3 3  | 48           |
| सोऽभिध्याय शरीरात्स्वात्    | 1          | 6          | स्तेयं च साहसं चैव          | 6    | Ę            |
| सोमं गन्धांश्च सर्वशः       | 30         | 66         | स्तेयदोषापहर्तृणाम्         | 33   | 989          |
| सोमपा नाम विप्राणाम्        | Ę          | 190        | स्तेयसंग्रहणेषु च           | 6    | ७२           |
| सोमपास्तु कवेः पुत्राः      | ३          | 196        | स्तेयी च गुरुतरूपगः         | 9    | २३५          |
| सोमविक्रयिणे विष्ठा         | ર          | 960        | स्तेये च श्वपदं कार्यम्     | 4    | २३७          |
| सोमाग्न्थर्कानिलेन्द्राणाम् | <b>v</b> ş | <b>५६</b>  | स्तेये भवति किल्विपम्       | 6    | ३३७          |
| सोमाय राज्ञे सत्कृत्य       | 9          | 128        | क्षियं रक्षेट्ययवतः         | 9    | ९            |
| सोमारौद्धं तु बह्वेना       | 99         | २५४        | स्त्रियं स्पृत्रोददेशे यः   | 4    | ३५८          |
| सोऽर्कः सोमः स धर्मशाट      |            | •          | स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु    | ٩    | २६           |
| सोऽसंवृतं नाम तमः           | 8          | 61         | श्चियः सर्वास्तयेव च        | ₹    | 953          |
| सोऽसहायेन मूढेन             | •          | 美の         | स्त्रियमार्त <b>षदर्शने</b> | 8    | ą o          |
| सोस्रजस्प्राणिनां प्रभुः    | 9          | २२         | स्त्रियश्चेव विशेषेण        | 19   | 940          |
| सोऽस्य कार्याणि संपद्येत    | ( 6        | 90         | स्थियां तु यद्भवेद्वित्तम्  | 9    | 396          |
| सौरान्मन्त्रान्यथोत्साहम्   | પ          | ሪቒ         | कियां तु रोचमानायाम्        | 3    | ६२           |
| स्कन्धेनादाय सुसलम्         | 6          | ३१५        | स्त्रिया इडीबेन च हुते      | જ    | २०५          |
| स्तेनः स्तेवाद्विमुच्यते    | 6          | ३१६        | ख्रियाप्यसंभवे कार्यम्      | 6    | 90           |
| स्तेन आत्मापहारकः           | 8          | <b>३५५</b> | क्रिया सम्यङ्युक्तया        | 9    | ५९           |
| स्तेनगायनयोश्चामम्          | 8          | 230        | खियोऽनृतमिति स्थितिः        | •    | 36           |
| स्तेनमस्तेनमानिनम्          | 6          | 390        | द्धियोऽप्येतेन कल्पेन       | 15   | ६९           |
| स्तेनस्यातः प्रवक्ष्यामि    | 6          | 301        | क्षियोऽयुग्मासु रान्निषु    | ર    | 86           |
| स्तेनस्यामोति किल्बिषम्     | 6          | ३१६        | क्कियो रक्ष्या विशेषतः      | 3    | 4            |
| स्तेनानां निम्रहादस्य       | 6          | ३०२        | कियो रहान्यथो विधा          | ₹    | २४०          |
| स्तेनानां निग्रहे नृपः      | 6          | ३०२        | क्षियो रान्निषु वर्जयन्     | Ą    | 40           |
| स्तेनानां पापबुद्धीनाम्     | <b>લ</b>   | २६३        | सीक्षीरं चैव वर्ज्यानि      | પ્યુ | 9            |
| स्तेनान् राजा निगृह्यीया    | त् ९       | 312        | स्रीजितानां च सर्वशः        | 8    | 530          |
| स्तेना स्याद् यदि तं हरे    |            | 99         | भी ज्ञातिगुणदर्पिता         | 6    | ₹७१          |

| पाद                             | अ०       | श्ची० | पाद                        | S, o     | स्रो० |
|---------------------------------|----------|-------|----------------------------|----------|-------|
| स्वीणां क्षेत्रगृहस्य च         | 33       | १६३   | क्षीशूदस्तु सकृत्सकृत्     | ч        | 139   |
| स्रीणां च प्रेक्षणालम्भम्       | 2        | 308   | स्रीशुद्रोच्छिष्टमेव च     | . 99     | 345   |
| स्रीणां धर्माश्चिबोधत           | 4        | १४६   | स्वीष्वनन्तरजातासु         | 90       | É     |
| स्त्रीणां प्रेष्यजनस्य च        | 9        | १२५   | स्त्रीसंग्रहणमेव च         | 6        | Ę     |
| स्त्रीणां भोगे च मैथुने         | 4        | 300   | स्रीसंबन्धे दशैतानि        | 3        | Ę     |
| स्रीणां साक्ष्यं स्नियः कुर्युः | : દ      | ६८    | स्त्रीहन्त्दंश्च न संवसेत् | 33       | 990   |
| श्रीणां सुखोधमक्रम्             | R        | ३३    | स्थलजान्योदकानि च          | 3        | 88    |
| स्त्रीणामसंस्कृतानां तु         | ખ        | ७२    | स्थलजौदकशाकानि             | Ę        | 9 ₹   |
| <b>स्त्रीणामावृद्शेषतः</b>      | ₹        | ६६    | स्थाणुच्छेदस्य केदारम्     | ९        | 88    |
| स्वीधनानि तु ये मोहात्          | ₹        | ५२    | स्थानं कर्मानुरूपतः        | ی        | १२५   |
| स्रीधर्मयोगं तापस्यम्           | 3        | 118   | स्थानं समुद्यं गुप्तिम्    | 9        | ५६    |
| स्त्रीपुंघर्मो विभागश्च         | 6        | G     | स्थानासनाभ्यां विहरेत्     | 99       | २२४   |
| स्वीपुंसौ तु कृतिकयो            | <b>લ</b> | १०२   | ,, ,,                      | ६        | २२    |
| स्रीवालबाह्यणञ्जाश्च            | ९        | २३२   | स्थाने युद्धे च कुशलान्    | Ġ        | 990   |
| स्त्रीबालाभ्युपपत्तौ च          | 90       | ६२    | स्थापयंति तु यां वृद्धिम्  | 6        | 940   |
| ( ऽभ्यवपत्ती इति वा प           | ाउः )    |       | स्थापयेत्तत्र तहंश्यम्     | 9        | २०२   |
| स्रोबालोन्मत्तवृद्धानाम्        | <b>Q</b> | २३०   | स्थापयेदासने तस्मिन्       | ٠        | 888   |
| <b>क</b> ीबुद्धेरस्थिरत्वासु    | 6        | 99    | स्थावरं च पृथग्विधम्       | 9        | 30    |
| स्त्री भवत्यधिके स्नियाः        | ર        | ४९    | स्थावरं जङ्गमं चैव         | પ્યુ     | २८    |
| स्त्रीभिरन्तःपुरे सह            | ড        | २२१   | स्थावराः कृमिकीटाश्च       | 12       | ४२    |
| स्वीभ्यो मनुरकस्पयत्            | <b>ዓ</b> | 9 19  | स्थावराणि च भूतानि         | 99       | २४०   |
| स्त्रीमृक्षः स्तोकको वारि       | 95       | ६ ७   | स्थावराणि चराणि च          | •        | 9 4   |
| स्रीम्लेच्छव्याधितव्यङ्गान्     | છ        | 388   | स्थितं तं ब्याप्य तिष्ठतः  | <b>3</b> | 18    |
| स्रीरतं दुष्कुलादपि             | ₹        | २३८   | स्थितिः कार्यार्थसिद्धये   | 9        | १६७   |
| स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित्     | 9        | ३४    | स्थौललक्ष्यं च सततम्       | <b>v</b> | 299   |
| स्रोविप्राभ्युपपत्ती च          | 6        | ३४९   | स्रातकवतकस्पश्च            | 8        | २५९   |
| ( ऽभ्यवपत्ती इति वा पार         | s: )     |       | स्नातकवतलोपे च             | 3 3      | २०३   |
| स्त्रीविवाहाशियोधत              | 2        | २०    | स्नातकस्य च राज्ञ          | ર        | १३८   |
| स्त्रीवृतोऽन्तःपुरं पुनः        | 9        | २२४   | स्नातकस्य यथोदितान्        | ų        | 3     |
| स्रीश्रद्रपतितांश्रेव           | 9 9      | २२३   | स्नातकस्य वतानि च          | 9        | 998   |
| स्रोशुद्रविट्क्षत्रवधः          | 3 3      | ६६    | <b>स्नातकाचार्ययोस्तथा</b> | 8        | 130   |
| •                               |          |       | •                          |          | -     |

| पाद                              | अ०       | श्को० | याद                           | अ०       | श्लो०        |
|----------------------------------|----------|-------|-------------------------------|----------|--------------|
| ं सातको नृपमानभाक्               | ą        | 139   | स्पयशूर्पशकटानां च            | tg.      | 110          |
| स्नात्वा सु विद्रो दिग्वासाः     | 3 9      | २०१   | स्सृता बर्हिषदोऽत्रिजाः       | 3        | 998          |
| स्नात्वाऽन <b>श्नक्षहःशेष</b> म् | 3 3      | २०४   | स्मृतिमान् देशकालवित्         | 9        | इध           |
| खात्वा पुण्ये जलाशये             | 99       | 128   | स्मृतिशीले च तद्विदाम्        | ₹        | Ę            |
| स्नात्वाऽर्कमर्चयित्वा त्रिः     | <b>ર</b> | 969   | स्यन्द्रनाइवैः समे युध्येत्   | 4        | 992          |
| स्नात्वा विप्रो विशुध्यति        | ų        | ८७    | स्याखारनायपरो छोके            | 9        | 60           |
| स्रात्वा सचैलः स्पृष्टाग्निम्    | 4        | १०३   | स्याचु नासान्तिको विशः        | <b>ર</b> | ४६           |
| स्नानं मैथुनिनः स्मृतम्          | 14       | 188   | स्यात्साहसं त्वन्वयवत्        | 6        | ३३२          |
| स्नानं समाचरेशित्यम्             | 8        | २०३   | स्याद्वाप्यष्टमकालिकः         | ६        | 18           |
| स्नानस्य च परं विधिम्            | 3        | 3 7 3 | स्यान्नरोऽपत्यविकयी           | રૂ       | 49           |
| स्नानासनविहारवान्                | ź        | २४८   | स्रग्विणं तल्प आसीनम्         | Ę        | ₹            |
| स्नानेन स्नी रजस्वला             | ų        | ६६    | स्रग्विणो रक्तवाससः           | 6        | २५६          |
| स्नाने प्रसाधने चैव              | •        | २२०   | स्रजं करकमेव च                | 8        | ६६           |
| स्नापनोध्छिष्टभोजने              | २        | २०९   | स्रवत्यनोंकृतं पूर्वम्        | २        | ७४           |
| स्नास्यंस्तु गुरुणाऽज्ञसः        | २        | २४५   | स्रवन्स्यामाचरन्द्रानम्       | 99       | २५४          |
| स्नुषागगुरुतस्पगौ                | ९        | ६३    | स्रष्टारं द्विजसत्तमाः        | 3        | ३३           |
| स्नुपा ज्येष्ठस्य सा स्मृता      | 9        | 40    | स्रष्टुमिच्छिषामाः प्रजाः     | 3        | <b>ર</b> પ્ક |
| स्नेहांश्च फलसंभवान्             | Ę        | 33    | स्नस्तरेषु कटेषु च            | 3        | २०४          |
| स्नेहेऽपो गां च मूर्तिषु         | 9 २      | १२०   | स्रोतसां भेदको यश्च           | 3        | १६३          |
| स्पर्शयेद् बाह्यणाय गाम्         | 93       | १३५   | स्वं च धर्म प्रयत्नेन         | ९        | હ            |
| स्पर्शेनावरवर्णजः                | 3        | २४१   | स्वं नाम परिकीर्त्तयेत्       | २        | १२२          |
| स्पर्शे मेध्यानि निर्दिशेत्      | ų        | १३३   | स्त्रं रूपमिति धारणा          | 8        | ३८           |
| स्पर्शो भूषणवाससाम्              | 4        | ३५७   | स्वं वस्ते स्वं ददाति च       | 3        | 909          |
| स्प्रशंति बिन्दवः पादौ           | પ્       | १४२   | स्वं स्वं चरित्रं क्रिक्षेरन् | ર        | २०           |
| स्पृशेयुः सुसमाहिताः             | •        | २१९   | स्वकं पितरमाशयेत्             | 3        | २२०          |
| स्पृष्टो वा मर्षयेत्तथा          | ઢ        | ३५८   | स्वकं संसाधयन्धनम्            | ٤        | 40           |
| स्प्रष्ट्वा दस्वा च मदिराम्      | 11       | 386   | स्वकर्म ख्यापयन् व्रुयात्     | 9 9      | ९९           |
| स्पृष्ट्वा स्नानेन शुकाति        | ч        | ८५    | स्वकर्मणां च त्यागेन          | 90       | २४           |
| स्पृष्ट्वैतानशुचिर्नित्यम्       | 8        | 185   | स्वकर्म परिकीर्त्तयम्         | 33       | 122          |
| स्पृष्ट्वीवापो विद्युच्यति       | 4        | ७६    | स्वकर्म परिहापयेत्            | 6        | २०६          |
| स्फिचं वास्यावकर्तयेत्           | 4        | २८१   | स्वकर्म परिद्वापयन्           | 4        | 204          |

| पाद                         | अ०       | श्हो० | पाद                            | अ०       | स्रो०    |
|-----------------------------|----------|-------|--------------------------------|----------|----------|
| स्वकर्मभ्यो निवर्त्तन्ते    | 9        | ५३    | स्वभावेनैव यद्भुयुः            | 4        | 96       |
| स्वकर्मस्था द्विजातयः       | 30       | 9     | स्वमांसं परमांसेन              | 4        | ५२       |
| स्वकादिप च वित्तादि         | 9        | १९९   | स्वमेनोऽवभृथस्नातः             | 9 9      | ८२       |
| स्वकाद्धमीद्धि विच्युतम्    | 9        | २७३   | स्वमेव बाह्यणो भुक्को          | 3        | 808      |
| स्वकार्यपरमोऽस्पृहः         | Ę        | ९६    | स्वयंकृतश्च कार्यार्थम्        | 9        | 188      |
| स्वकाले चापरां चिरम्        | 8,       | ९३    | स्वयं कृत्वानुभाषते            | 3 3      | २२८      |
| स्वकुटुम्बाद्यथार्हतः       | 90       | 158   | स्वयं चैव तथा भवेत्            | 30       | <b>ર</b> |
| स्वकुटुम्बान्महीपतिः        | 33       | २२    | स्वयं दक्षः प्रजापतिः          | ९        | १२८      |
| स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु  | ९        | १६६   | स्वयंदसश्च शौद्रश्च            | ९        | १६०      |
| स्वगुणेनोभयात्मकम्          | ?        | ९२    | स्वयंदत्तस्तु स स्पृतः         | ٩        | 300      |
| स्वजने दुःखर्जीविनि         | 33       | ९     | स्वयं नोपानहीं हरेत्           | 8        | 0 B      |
| स्वजातिं प्रति तत्त्वतः     | 4        | २७७   | स्वयं राजैव धर्मवित्           | 6        | २६५      |
| स्वजातीयगृहादेव             | 33       | १६२   | स्वयं वा शिश्नवृषणी            | 33       | 308      |
| स्वदारनिरतः सदा             | 3        | ४५    | स्वयं षण्णवति पणान्            | G        | २२४      |
| स्वदेशे वा विदेशे वा        | 6        | 986   | स्वयं हित्वा प्रियाप्रिये      | 4        | १७३      |
| स्वधनादेव तद्द्यात्         | 6        | १६२   | स्वयमसस्य वर्धितम्             | ą        | २२४      |
| स्वधर्मं प्रतिपादयेत्       | 4        | 83    | स्वयमीहितलब्धं तत्             | 9        | २०८      |
| >> >>                       | 6        | ३९१   | स्ययमुत्पादयेद्धि यम्          | Q        | 955      |
| स्वधर्ममनुतिष्ठताम्         | ч        | २     | स्वयमेव कृषीवलः                | 30       | ९०       |
| स्वधर्मस्य च शासिता         | २        | 940   | स्वयमेव तु यो दद्यात्          | 6        | १८६      |
| स्वधर्मास चलन्ति च          | 9        | 9 4   | स्वयमेवर्तुपर्यये              | ٩        | ३ ०      |
| स्वधर्मेण नियुक्तायाम्      | ९        | १६७   | स्वयमेव समाचरेत्               | 3        | २२२      |
| स्वधर्में निविशेत वै        | <b>ર</b> | 6     | स्वयमेव स्वयंभुवा              | ч        | ३९       |
| स्वधर्मो विजयस्तस्य         | 10       | 119   | . , ,,                         | <b>લ</b> | १३८      |
| स्वधाकारः परा द्याशीः       | 3        | २५२   | स्वयमेवात्मनो ध्यानात्         | 1        | १२       |
| स्वधानिनयनादते              | <b>ર</b> | 305   | स्वरवर्णेङ्गिताकारैः           | C        | २५       |
| स्वधास्त्वित्येव तं ब्र्युः | Ę        | २५२   | स्वराष्ट्रे न्यायवृत्तः स्यात् | 9        | ₹ २      |
| स्वधैषामसिवति ब्रुवन्       | ३        | २२३   | स्वराष्ट्रे पर एव च            | ٩        | ३१२      |
| स्वप्ने सिक्त्वा ब्रह्मचारी | ર        | 161   | स्वर्गं गच्छत्यपुद्धापि        | دع       | 140      |
| स्त्रप्तोऽन्यगेहवासश्च      | ٩        | 38    | स्वर्ग यान्त्यपराङ्मुखाः       | •        | ٤٩       |
| स्वभाव एष नारीणाम्          | ₹        | ३१३   | स्वर्गमक्षयमिच्छता             | Ę        | 99       |

| पाद                          | अ०        | श्हो॰      | पाद                           | <b>31 o</b> | स्रो॰    |
|------------------------------|-----------|------------|-------------------------------|-------------|----------|
| स्वर्गाच परिद्योयते          | •         | २५४        | स्वाध्यायार्ध्युपतापिनः       | 93          | 1        |
| स्वर्गार्थसुमयार्थं वा       | 90        | 922        | स्वाध्याये चैव नैत्यके        | 7           | 304      |
| स्वर्गे सुखसुपारनुते         | 98        | २०         | स्वाध्याये चैव युक्तः स्थात्  | 8           | ३५       |
| स्वर्म्यं वाऽतिथिपुजनम्      | 3         | १०६        | स्वाध्यायेन वतिहोंमेः         | 2           | २८       |
| स्वर्ग्यायुष्ययशस्यानि       | ¥         | 93         | स्वाध्यायेनाचेथेतर्षीन्       | 3           | 69       |
| स्वर्जिता गोसवेन वा          | 19        | હ          | स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात  | ३           | <u> </u> |
| स्वर्यात्यस्यसनी मृतः        | <b>(9</b> | 43         | ",                            | Ę           | 6        |
| स्वरूपकेनाप्यविद्वान् हि     | 8         | 999        | स्वाध्याये भोजने चैव          | 8           | 46       |
| स्वल्पेनापि स्वयोनिषु        | 7         | १३४        | स्वानि कर्माणि कारयन्         | 4           | 811      |
| स्वरूपेऽप्यर्थे नरो बुधः     | 6         | 999        | स्वानि कर्माणि कारयेत्        | 6           | 816      |
| स्ववित्तस्यांशमष्टमम्        | 4         | ३६         | स्वानि कर्माणि कुर्वाणाः      | 6           | ४२       |
| स्ववीर्यं बलवसरम्            | 99        | ३२         | स्वानि स्वान्यभिपद्यन्ते      | 3           | ३०       |
| स्ववीर्याद्वाजवीर्याञ्च      | 99        | ३२         | स्वान् गुरूनभिवादयेत्         | ₹           | २०५      |
| स्वर्वार्येणैष ताब्छिष्यात्  | 33        | <b>3</b> 9 | स्वामिनः स्वस्य शंसति         | 6           | २३३      |
| स्वक्रिंग परक्षिके च         | ९         | २९८        | स्वामिनां च पशुनां च          | 6           | २४४      |
| स्वस्य च प्रियमात्मनः        | <b>२</b>  | <b>9</b>   | स्वामी तद्रव्यमर्हति          | ઢ           | 33       |
| स्वस्य नाम्नोऽभिवादने        | <b>ર</b>  | 858        | स्वाग्यं च न स्यास्करिंगश्चिर | 7 9         | २१       |
| स्वस्य भर्तुरनाज्ञया         | ९         | १९९        | स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रम्  | 9           | २९४      |
| स्वस्यैवान्तरषूरुषः          | S         | 64         | स्वायंभुवस्यास्य मनोः         | 3           | ₹ \$     |
| स्वस्त्रीयं श्वज्ञुरं गुरुम् | 3         | 386        | स्वायं भुवाचाः सप्तैते        | 3           | ६३       |
| स्वस्रीयां मातुरेव च         | 99        | 303        | स्वायंभुवो मनुर्धीमान्        | 3           | १०२      |
| स्वां प्रसृतिं चरित्रं च     | 9         | G          | स्वाराज्यमधिगच्छति            | 12          | ९ १      |
| स्वा चैव कुर्यात्सर्वेषाम्   | 9         | ८६         | स्वारोचिषश्चोत्तमश्च          | 1           | ६२       |
| स्वाजीव्यं देशमावसेत्        | 9         | ६९         | स्वार्थसाधनतत्परः             | 8           | 395      |
| स्वात्वादंशाचतुर्भागम्       | ९         | 396        | स्वास्क्षण्यपरीक्षार्थम्      | 9           | 19       |
| स्वादानाद्वर्णसंसर्गात्      | 6         | 302        | स्वासु योनिषु शाग्यति         | 9,          | 353      |
| स्वाच्यायं शक्तितोऽन्वहम्    | 2         | 350        | स्वेदजं दंशमशक्म्             | 3           | 84       |
| स्वाध्यायं श्रावयेत्पित्र्ये | 3         | २३२        | स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्यः | 13          | 90       |
| स्वाध्यायभूमि चाशुद्धाम्     | . 8       | 970        | स्वेभ्यों ऽशेभ्यस्तु कन्याभ्य | ۲: <b>۹</b> | 196      |
| स्वाध्यायस्य विरोधिनः        | ß         | 90         | स्वेषु भृत्येषु चैव हि        | 3           | 195      |
| स्वाध्यायाग्न्योः सुतस्य च   | 99        | <b>49</b>  | स्वे स्वे कर्मण सस्वसः        | 9           | २६२      |

## मनुपादानुकमणी।

| पाद                            | अ०       | श्हो०      | पाद                               | अ०  | स्रो०        |
|--------------------------------|----------|------------|-----------------------------------|-----|--------------|
| स्बे स्वे कर्मण्यवस्थिताः      | દ        | ४२         | <b>हरेतैवाविचारयन्</b>            | ९   | 934          |
| स्बे स्वे धर्मे निविष्टानाम्   | •        | રૂ પ્ય     | हरेत्तत्र नियुक्तायाम्            | ٩   | 384          |
| स्वे स्वेऽन्तरे सर्वमिदम्      | 9        | ६३         | हरेद्धिद्याश्व यः प्रपाम्         | ć   | इ१९          |
| स्वैः कर्मभिरगर्हितैः          | 8        | ર          | हरेद्वचभघोडशाः                    | ٩   | <b>3 2</b> 8 |
| स्वैः स्वैर्भर्तृगुणैः ग्रुभैः | 9        | २४         | हर्तब्यं हीनकर्मणः                | 99  | 9 €          |
| स्त्रोऽध्याप्या दश श्रमंतः     | <b>ર</b> | १०९        | <b>हर्षये द्राह्मणांस्तु</b> ष्टः | Ę   | २३३          |
| ₹                              |          |            | हविःशेषं च यद्भवेत्               | ч   | २४           |
| हंसवारणगामिनीम्                | ર        | 10         | हविदानेन विधिवत्                  | Ą   | २११          |
| हतमश्रद्धयेतरत्                | 8        | २२५        | हविर्यश्चिरराश्राय                | ą   | २६६          |
| हतास्तत्र सभासदः               | 4        | 18         | हविषा कृष्णवत्मे व                | ₹   | ९४           |
| हत्वा गर्भमविज्ञातम्           | 99       | 60         | हविष्यान्तीयमभ्यस्य               | 99  | २५१          |
| हत्वा छित्वा च भित्वा च        | <b>ર</b> | ३३         | हविष्मन्तोऽङ्गिरः सुताः           | 3   | 196          |
| हत्वा लोकानपीमांर्स्वान्       | 99       | २६१        | हविष्यभुग्वानुसरेत्               | 9 9 | و و          |
| हत्वा हंसं बलाकां च            | 9 9      | १३५        | हविष्याणि च सर्वशः                | 3   | २५६          |
| हन्ति काष्टमयोमुखम्            | 90       | ८४         | हविष्येण यवाग्वा वा               | 3 7 | १०६          |
| हन्ति जातानजातांश्र            | ሪ        | ५९         | हब्यकब्यानि दातृभिः               | 3   | 926          |
| हन्ति साक्ष्येऽनृतं वदन्       | 6        | <b>९</b> ७ | हञ्यकञ्याभिवाह्याय                | 3   | 98           |
| हन्तुर्भवति कश्चन              | 6        | ३५१        | हब्यकव्यं द्विजोत्तमः             | 3   | 990          |
| हम्स्यरुपदक्षिणो यज्ञः         | 99       | ४०         | हब्यकब्येष्वमन्त्रवित्            | ą   | १३३          |
| हन्यते प्रेक्षमाणानाम्         | 1.       | 18         | हव्यानि तु यथान्यायम्             | ર   | १३५          |
| हन्याचा परिपन्थिनः             | Ġ        | 990        | हव्यानि त्रिदिवौकसः               | 9   | ९५           |
| हन्या <b>चित्रै</b> र्वधोपायैः | ٩        | २४८        | हस्तच्छेदनमिष्यते                 | 4   | ३२२          |
| हन्याश्चौरमिवेश्वरः            | 9        | २७८        | हस्तिगोश्वोष्ट्रदमकः              | રૂ  | १६२          |
| हन्यादेवाविचारयन्              | 6        | ३५०        | हस्तिनश्च तुरङ्गाश्च              | 9 २ | ४३           |
| ** **                          | ዓ        | 260        | हस्तौ पादो च पञ्चमम्              | 6   | १२५          |
| हन्याद् द्विट्सेविनस्तथा       | ٩,       | २३२        | <b>ह</b> स्त्यश्वरथहर्चुश्च       | ٩   | २८०          |
| हन्युः कार्याणि कार्यिणाम्     | ę        | २२१        | हास्यार्थमपि बुद्धिमान्           | ९   | २२७          |
| हयमेधे विमुच्यते               | 99       | ८२         | हिंसया व्याधिभूयस्वम्             | 9 9 | પ્યુ         |
| हरणे वधमहति                    | 6        | ३२३        | हिंसा चैवाविधानतः                 | १२  | <b>v</b>     |
| हरतोऽप्यधिकं वधः               | 6        | ३२०        | हिंसाप्रायां पराधीनाम्            | 9 • | ८३           |
| हरन्ति न च नश्यति              | Ę        | 43         | हिंसायां द्विशतं दमम्             | 6   | २९३          |
|                                |          |            | •                                 |     | -            |

| पाद                         | अ०       | श्रो० | पाद                        | अ०       | स्रो०     |
|-----------------------------|----------|-------|----------------------------|----------|-----------|
| हिंसायां द्विशतो दमः        | 6        | २९७   | हीमजातिस्त्रियं मोहात्     | ą        | 14        |
| हिंसायामिति धारणा           | 4        | २८५   | हीनाङ्गानतिरिक्ताङ्गान् े  | 8        | 181       |
| हिंसारतश्च यो नित्यम्       | 8        | 300   | हीनातिरिक्तगात्रो वा       | Ę        | २४२       |
| हिंसीषधीनां रूयाजीवः        | 99       | ६३    | हीनान्नवस्रवेषः स्थास्     | <b>ર</b> | 198       |
| हिंस्याचे च्छ्रेष्टमन्त्यजः | 6        | २७९   | हीनान्हीनांश्च वर्जयन्     | 8        | २४५       |
| हिंसः सर्वाभिसंधकः          | 8        | 884   | हीना होनान्यसूयन्ते        | 30       | 39        |
| हिंस्राणां च पिशाचानाम्     | 9 2      | ५७    | हीने हीनं समे समम्         | 3        | 900       |
| हिंसाणां चैव सत्त्वानाम्    | 12       | ५६    | हीयेतां शप्रदानतः          | 1 JS     | २११       |
| हिंस्रा भवंति क्रब्यादाः    | 92       | ५९    | हुंकारं बाह्यणस्योक्ता     |          | २०६       |
| हिंसार्थभी च सर्वदा         | ९        | 60    | हुतं विश्रमुखाग्निषु       | 3        | 96        |
| हिंसाहिंस्रे मृदुक्र्रे     | 3        | ् २९  | हुतहोमो जितेन्द्रियः       | Ę        | ३४        |
| हिंस्रो पृषल्प्रैंसिश्च     | 3        | 9 & 8 | हुताभिर्वाह्मणांश्चार्च्य  | 9        | 184       |
| हित चोपदिशस्वपि             | ?        | २०६   | हुत्वामी विधिवद्धोमान्     | 99       | 999       |
| हितेषु चैव लोकस्य           | ९        | ३२४   | ह्यमानश्च यज्ञेषु          | ९        | ३१८       |
| हिनस्ति वतमात्मनः           | <b>ર</b> | 960   | हत्वा दोष मवाप्तुयुः       | 9 2      | ६९        |
| हिनस्त्यज्ञानतो यतिः        | Ę        | ६९    | हत्वाऽपब्ययते च यत्        | 6        | ३३२       |
| हिनस्त्यात्मसुखेच्छया       | 43       | ४५    | हत्वा लोभेन मानवः          | 9 2      | ६१        |
| हिमवद्धिन्ध्ययोर्मध्यम्     | २        | ₹ \$  | हृद्येनाभ्यनुज्ञातः        | २        | 3         |
| हिरण्यं चैव माषकम्          | 4        | ३९३   | हृद्राभिः पूयते विप्रः     | २        | ६२        |
| हिरण्यं तस्य तत्त्वतः       | 4        | 969   | ह्यां द्वादशवार्षिकीम्     | 9        | ९४        |
| हिरण्यं धान्यमन्नं च        | 30       | 118   | (द्विदश इति केचित् पठ      | न्ति)    |           |
| बिरण्यं परिवर्तयेत्         | 6        | 944   | ह्यां रूपगुगान्विताम्      | <b>(</b> | 99        |
| हिरण्यभूमिमदवं गाम्         | 8        | 866   | ह्यानि चैत्र मांसानि       | 3        | २२७       |
| हिरण्यभू मिसंप्राप्त्या     | ø        | २०८   | हष्टं पुष्टं बर्ल स्वकम्   | <b>y</b> | 199       |
| हिरण्यमञ्जसर्पिषाम्         | 2        | २९    | हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विसः | 7        | 33        |
| हिरण्यमायुरन्नं च           | 8        | 969   | हेम (हैमं) रीप्यं च निर्व  | भी ५     | 113       |
| हिरण्यार्थेऽनृतं वदन्       | ઢ        | ९९    | हेमकारं तु पार्थिवः        | 9        | २९२       |
| होनं तमिप निर्दिशेत्        | 6        | ५७    | हेमन्तप्रीष्मवर्षासु       | 3        | २८१       |
| हीनं पुरुषकारेण             | 6        | २३२   | हैतुकान् वकदृत्तीश्र       | 8        | 3.        |
| <b>शीनकतुरसोमपः</b>         | 33       | 3 2   | होता वापि हरेदश्वम्        | 6        | २०९       |
| हीनिकयं निष्पुरुषम्         | Ę        | •     | होता स्यादि। प्रहोत्रस्य   | 11       | <b>34</b> |
|                             |          |       |                            |          |           |

| Ş        | 30) |
|----------|-----|
| <b>T</b> |     |

### मनुपादानुकमची।

| पाद                   | अ   | श्ची० | पाद                          | अर्थ म   |
|-----------------------|-----|-------|------------------------------|----------|
| होता स्याद्वेदपारगः   | 3 3 | ३७    | होमैर्डे <b>वान्यथा</b> विधि | ₹ 4      |
| होममन्त्रेषु चैव हि   | ₹   | 904   | होमो दैवो बलिभौतः            | 2 0      |
| होमाश्च सकका नित्यम्  | 99  | २००   | हियन्ते दस्युभिः प्रजाः      | u 💆 v    |
| होमे प्रदाने भोज्ये च | Ą   | 580   | हियमाणानि विषयैः             | · E / 41 |

& **¾** &



# वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

०२३ २

काल नं॰

काल नं॰

काल नं॰

काल मंग्रावान्य साम्म संख्या

खण्ड

कम संख्या